Иван Тургенев

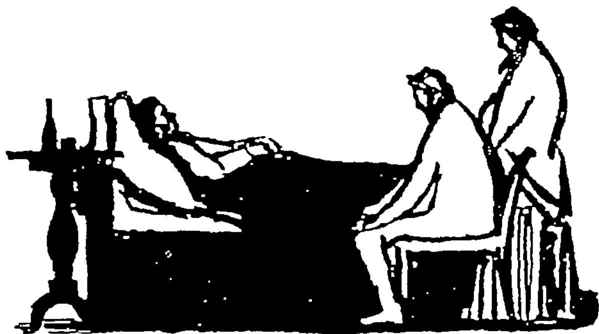
ОТЦЫ и ДЕТИ

Роман



ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ

МОСКВА



इवान तुर्गेनेव

पिता और पुत्र

उपन्यास

विदेशी भापा प्रकाशन गृह

मास्को



१

"क्यो प्योत्र, अभी भी उनका कोई चिन्ह नज़र नही आता?"

चालीस से कुछ ऊपर आयु के एक सज्जन ने जो धूसर कोट और चारखाने की पतलून पहने थे, 'क' सडक पर स्थित एक छोटी-सी देहाती सराय में से नगे सिर वाहर निकल चौखट पर पाव रखते हुए अपने नौकर से पूछा, जिसके गाल गोलमटोल, ठोडी सफेदी लिए और आखें चमक-विहीन थी। यह वीस मई सन् १८५९ की वात है।

नौकर अपने समूचे हाव-भाव मे – चिकने-चुपडे और पट्टिया-कढे वालो, कान में एक फीरोजी मुरकी और शाइस्ता चाल-ढाल से, एकदम

नये साचे में ढली पीढो की उपज मालूम होता था। मटक पर उसने एक नज़र डाली और जवाव दिया

"नही मालिक, अभी तो कुछ नजर नही आता।"

"कुछ भी नज़र नही आता?" मालिक ने फिर दोहराया।

"नही मालिक।"

उसास छोडकर मालिक एक छोटी-सी वेंच पर वैठ गए, पावो को उन्होने समेट लिया और उदास भाव से अपने इर्द-गिर्द नज़र डालने लगे।

आइए, इस बीच आपसे उनका परिचय करा दें।

निकोलाई पेत्रोविच किरसानोव उनका नाम है। सराय से दसेक मील दूर दो सौ प्राणियो से युक्त एक भरी-पूरी जागीर के वह मालिक हैं—अथवा, जैसा कि वह खुद कहना पसद करते है, पाच हज़ार एकड की उनके पास जायदाद है। काश्तकारी के अधिकार देकर अपने किसानो को उन्होने मुक्त कर दिया है और अपना एक निजी 'फार्म' वह अव चलाते हैं। उनके पिता एक फौजी जेनरल थे और सन् १८१२ की लडाई में लड चुके थे। उजड्ड और अनपढ होते हुए भी वह हृदय के अच्छे थे। सारी उम्र काठी कसे रहे। पहले ब्रिगेड का कमान किया, फिर डिवीजन का। हमेशा सूवो में ही रहे और उनके ओहदे ने उन्हे महत्वपूर्ण वनाए रखा। अपने भाई पावेल की भाति, जिनसे परिचित होने का अवसर आपको जब-तव मिलता रहेगा, निकोलाई पेत्रोविच भी दक्खिनी रूस में पैदा हुए थे। चौदह वर्ष की आयु तक घर पर ही उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। सस्ते मास्टरो, शेखी बघारनेवाले और जी हजूरी करनेवाले सहकारियो तथा रेजीमेण्ट और स्टाफ के लोगो के बीच उनका जीवन वीतता। उनकी मा कोल्याज़िन परिवार की लडकी थी। कुवारेपन में उसका नाम अगाथी था और जेनरल की पत्नी वनने पर अगाफोक्लेया कुज्मीनिश्ना किरसानोवा कहलाने लगी। वह उन भली स्त्रियो में से थी

जो घरेलू ही नही, बल्कि दफ्तर के मामलो का भी सूत्र-सचालन करती हैं। वह खूब सजधज से रहती,—भडकीली टोपिया और सरसराते रेशम के कपडे पहनती, गिरजे में सबसे पहले क्रास के पास पहुचती, ज़ोर से और खूब जल्दी जल्दी बोलती, रोज़ सुबह बच्चो से अपना हाथ चुमवाती और रात को आशीर्वाद देकर उन्हे सुलाती। थोडे में यह कि जीवन सुख से बीत रहा था। जेनरल का बेटा होने के नाते, अपने भाई पावेल की भाति, निकोलाई पेत्रोविच को भी फौज में भेजने का निश्चय किया गया था, हालाकि साहस से उसका दूर का भी वास्ता नही था, यहा तक कि लोग उसे दब्बू और कायर कहते थे। लेकिन ठीक उसी दिन जबकि उसे फौजी कमीशन मिलने की खबर आई, उसने अपनी टाग तोड डाली, दो महीने तक चारपाई को सेता रहा और अच्छा होने पर भी, जीवन भर के लिए, हल्का-सा लगडापन उसके पाव में रह गया। तग आकर पिता ने उसे फौजी बनाने की उम्मीद छोड दी और उसे सिविल सर्विस में धकेलने का बीडा उठाया। अठारह वर्ष का होते ही उसे पीतर्सबर्ग ले जाकर विश्वविद्यालय में भर्ती करा दिया। उसका भाई पावेल, लगभग इसी समय, गारद-सेना का अफसर नियुक्त हुआ। दोनो युवक, अपने मामा इल्या कोल्याज़िन की दूर की निगरानी में, जो एक बडा अफसर था, एक साथ रहने लगे। लडको का वहा बन्दोबस्त कर पिता अपने डिवीजन और पत्नी के पास लौट आए। बीच बीच में, खाकी कागज़ के तावो में, खूब बडे बडे अक्षरो और क्लर्कों-जैसी लिखावट में, अपने लडको के नाम वह खरीते भेजते जिनके अन्त में—बहुत ही सजावट और शान के साथ—वह अपना नाम टाकते "प्योत्र किरसानोव, मेजर जेनरल"। १८३५ में निकोलाई पेत्रोविच ने विश्वविद्यालय से अपनी डिग्री प्राप्त की। उसी साल, एक दुर्भाग्यपूर्ण मुआइने के फलस्वरूप, जेनरल किरसानोव को अपनी नौकरी से अवकाश

लेना पडा और अपनी पत्नी के साथ वह भी सन्त-पीतर्सवर्ग चले आए। तव्रीचेस्की उद्यान के पास उन्होंने मकान लिया और एक इंग्लिश क्लव के वह सदस्य वन गए। लेकिन तभी, अचानक, पक्षाघात का शिकार हो वह इस दुनिया से चल वसे। इसके शीघ्र वाद ही अगाफोक्लेया कुज्मीनिश्ना ने भी उनका अनुसरण किया। राजधानी मे एकाकी और सूने जीवन को वह वरदाश्त न कर सकी, विरक्त जीवन की भयानकता ने उसकी कमर तोड दी। इस वीच निकोलाई पेत्रोविच, अपने माता-पिता के जीवन-काल में ही, अपने भूतपूर्व मकान-मालिक तथा सरकारी अफसर प्रेपोलोवेन्स्की की लडकी के प्रेम में फस गया। इससे उनके हृदय को काफी चोट पहुची। वह एक सुन्दर और तथाकथित अग्रगामी विचारो की लडकी थी—पत्रो में प्रकाशित ज्ञान-विज्ञान सम्वधी भारी-भरकम लेख पढा करती थी। मातम की अवधि पूरी होते ही निकोलाई ने उससे विवाह कर लिया, प्रतिपालन मत्रालय की उस नौकरी को उसने छोड दिया जिसे अपने पिता के प्रभाव से उसने प्राप्त किया था, और अपनी माशा के साथ लोकोत्तर आनन्द में रम गया। पहले उसने जगल-विद्या-भवन के निकट एक छोटे से वगले मे अपना मधु-स्वर्ग वसाया, फिर नगर में एक छोटा-सा सुन्दर फ्लैट लिया जिसका जीना खूव साफ-सुथरा और ड्राइग-रूम खूव शीतल था। इसके वाद उसने देहात की ओर रुख किया और स्थायी रूप से वही वस गया। यहा, कुछ ही दिन वाद, उसके लडके आरकादी ने जन्म लिया। युवा दम्पति के दिन वहुत ही सुख से वीत रहे थे। न कोई विघ्न था, न वाधा। दोनो, करीव करीव, एक-दूसरे के साथ इस तरह जुडे थे कि कभी अलग न होते—वे एक साथ पढते, एक साथ पियानो वजाते और साथ साथ गाते। वह फुलवाडी को सींचती-पोसती, मुर्गीखाने की देख-भाल करती। पति जव-तव शिकार के लिए जाते और जागीर के मामलो को सुलझाते।

सुख के इसी उतार-चढाव विहीन वातावरण में आरकादी अनवरत बढ और बडा हो रहा था। दस वर्ष यो ही सपने की भाति गुज़र गए। सन् १८४७ में किरसानोव की पत्नी चल बसी। इस आघात ने उन्हे बेदम कर दिया। कुछ ही सप्ताह के भीतर उनके बाल सफेद हो गए। जी को बहलाने के लिए वह विदेश जानेवाले ही थे कि सन् १८४८ बीच मे आ गया उन्हे फिर अपने देहात लौटना पडा और बहुत अधिक लम्बी अवधि तक निष्क्रिय रहने के बाद अपनी जागीर का सुधार करने का काम उन्होने अपने हाथो में उठाया। १८५५ में अपने बेटे को विश्वविद्यालय में भर्ती कराने वह पीतर्सबर्ग गए और वहा तीन जाडे उसके साथ बिताए। वह कभी बाहर न निकलते, सदैव आरकादी के युवा मित्रो से जान-पहचान बढाने का प्रयत्न करते। पिछले जाडो में वह उसके पास नही जा सके और इसी लिए, सन् १८५९ के मई के महीने में, हम उन्हे अपने लडके की प्रतीक्षा करते देखते है। उनके बाल अब एकदम पक चुके हैं, काया भी स्थूल हो गई है और कधे कुछ झुक आए हैं। लडका अपनी डिग्री लेकर घर लौट रहा है, ठीक वैसे ही जैसे कभी वह अपनी डिग्री लेकर लौटे थे।

नौकर, अदब के खयाल से या शायद इसलिए कि अपने मालिक की नज़रो से वह बचना चाहता था, फाटक की ओर खिसक गया और वहा पहुचकर उसने अपना पाइप सुलगाया। निकोलाई पेत्रोविच सिर नीचा किए जीर्ण-शीर्ण पैडियो की ओर ताक रहे थे। मुर्गी का एक अतिपुष्ट चूज़ा, अपने पीले पजो से ज़ोरो की आवाज़ करता, पोर्च की पैडियो को नाप रहा था। मुडेर पर, बहुत ही चुपचाप, एक मैली-कुचैली बिल्ली बैठी थी और चूज़े की ओर बैर भाव से ताक रही थी। सूरज आग उगल रहा था और गलियारे की धुधली परछाइयो मे से राई की गर्म रोटियो की महक आ रही थी। निकोलाई पेत्रोविच तन्मयता में खो गए।

"मेरा लडका विश्वविद्यालय का स्नातक मेरा आरकाशा " हेर-फेर कर यही बात उनके दिमाग में चक्कर लगा रही थी। उन्होंने प्रयत्न किया कि कुछ और सोचें, लेकिन अदवदाकर फिर उन्हीं विचारो की ओर लौट आते। उन्होंने अपनी मृत पत्नी की याद को ताज़ा किया "काश कि वह आज का दिन देखने के लिए जीवित रहती," उदास भाव में उन्होंने फिर उसास छोडी।

एक मोटा-ताज़ा कबूतर उडकर सडक पर उतरा और पानी पीने के लिए कुवे के निकट एक गढे की ओर बढ चला। निकोलाई पेत्रोविच इस दृश्य को देखने मे डूबे थे। तभी उन्हे निकट आती गाडी के पहियो की आवाज़ सुनाई दी

"मालूम होता है कि वे आ रहे है, मालिक।" फाटक की ओट में से प्रकट होते हुए नौकर ने कहा।

निकोलाई पेत्रोविच उछलकर खडे हो गए और सडक की ओर उन्होंने नजर डाली। एक तरन्तास आती दिखाई दी जिसमें डाक के तीन घोडे जुते थे। फिर विश्वविद्यालय की टोपी के नीले फीते की झलक दिखाई दी और प्रिय चेहरे की परिचित रेखाए उभरने लगी

"आरकाशा। आरकाशा।" अपनी बाहो को हिलाते और चिल्लाते किरसानोव दौडकर आगे बढ चले कुछ ही क्षण बाद उनके होठ युवा स्नातक के दाढी-विहीन, धूल-धूसरित, तपे ताम्बे-से गालो का चुम्बन कर रहे थे।

२

"ओह पिताजी," अपने पिता के दुलार के जवाब में प्रसन्नता से हुमकते हुए आरकादी ने सफर से कुछ खसखसी, किन्तु किशोर-सुलभ और ताज़गी-भरी आवाज़ में, कहा, "मुझे ज़रा धूल तो झाड लेने दीजिए। देखिए न, मैंने आपको भी कितना गदा बना दिया है।"

"ठीक है, ठीक है," सुखद मुसकान के साथ निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और अपने तथा अपने लडके के कोट के कालर से धूल को झटकाते और एक डग पीछे हट उसे देखते हुए बोले, "ज़रा देखें तो, कैसा लग रहा है तू!" फिर उतावली से सराय की ओर बढ चले, बराबर यह कहते हुए, "इधर भाई, इधर। जल्दी ही हमें घर भी पहुचना है।"

निकोलाई पेत्रोविच अपने पुत्र से भी अधिक विह्वल हो उठे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वह सकपका और घबरा गए हो। आरकादी ने उन्हे टोका।

"पिता," उसने कहा, "यह देखो, ज़रा इनसे भी तो मिल लो। यह हैं मेरे अच्छे मित्र बज़ारोव। अपने पत्रो मे अक्सर इन्ही का मैं ज़िक्र किया करता था। यह इनकी कृपा है जो इन्होंने फिलहाल हमारे मेहमान होना स्वीकार किया है।"

निकोलाई पेत्रोविच झट मुडे और गाडी से अभी-अभी उतरकर बाहर आए लम्बे कद के एक आदमी के निकट पहुचे जो फुदनेदार सफरी कोट पहने था। उसके लाल हाथ को—जिसमें वह दस्ताने नही पहने था और जिसे वह तुरत आगे नही बढा सका—अपने हाथ में लेकर बडी हार्दिकता से उन्होंने दबाया।

"हार्दिक खुशी हुई आपसे मिलकर," उन्होंने कहा, "बडी कृपा की जो यहा आए। मै कृतज्ञ हू। आशा है भला क्या नाम है आपका—अपना पूरा नाम बताइएगा।"

"येवगेनी वसीलियेविच," अपने कोट का कालर उलटते हुए, अलस किन्तु परुष आवाज़ में, बज़ारोव ने कहा। निकोलाई पेत्रोविच को अब उसका पूरा चेहरा दिखाई दिया। लम्बा और दुबला। चौडा ललाट। नाक ऊपर मे चौडी और सिरे पर पतली। थोडा हरापन लिए बडी बडी

आखें। नीचे को झुके हुए रेतीले गलमुच्छे। स्थिर मुसकान मे दीप्त चेहरा, आत्म-विश्वास और प्रखर बुद्धि की झलक लिए।

"हा तो प्रिय येवगेनी वसीलियेविच," निकोलाई पेत्रोविच कह रहा था, "मुझे उम्मीद है कि हम लोगो के साथ तुम्हारा जी नही उचटेगा।"

बजारोव के होंठ कुछ हिलकर रह गए। उसने जवाब मे कुछ नही कहा। अपनी टोपी को थोडा-सा उठाया, और बस। भूरे रग के लम्बे और घने बाल उसकी लम्बी-चौडी खोपडी के ऊबड-खाबडपन को छिपाने में असमर्थ थे।

"क्यो, तुम्हारी क्या राय है, आरकादी ?" अपने लडके की ओर मुडते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने फिर कहना शुरू किया। "घोडो को जोतवाकर अभी सीधे ही चले चले या कुछ देर सुस्ताना चाहोगे ?"

"घोडे जोतवा लो। घर चलकर ही दम लेगे।"

"बहुत ठीक, बहुत ठीक," पिता ने हामी भरी, "अरे ओ प्योत्र, कहा मर गया ? ज़रा फुर्ती से काम लो, मेरे भाई! जल्दी करो।"

प्योत्र ने—आखिर नये नमूने का नौकर तो वह था ही—छोटे मालिक का हाथ चूमकर नही, बल्कि दूर से ही केवल सिर झुकाकर, अभिवादन किया था। मालिक का आदेश सुनकर वह एक बार फिर फाटक के पार ओझल हो गया।

सराय-मालिक की बीवी इस बीच लोहे की डोलची में पानी ले आई थी और आरकादी अपना गला तर कर रहा था। बज़ारोव अपना पाइप सुलगाकर गाडीवान के पास पहुच गया था जो घोडो की जोत उतार रहा था।

"मै गाडी ले आया था," निकोलाई पेत्रोविच ने व्यग्र भाव से कहा। "तुम्हारी तरन्तास के लिए भी तीन सुस्ताये हुये घोडो का प्रवध हो जाएगा। लेकिन मेरी गाडी में केवल दो के वैठन की जगह है। कही ऐसा तो नही कि तुम्हारे मित्र ..."

"वह तरन्तास में चला चलेगा," दवे हुए स्वर में आरकादी ने वीच में ही कहा। "उसके साथ इतना तकल्लुफ वरतने की कोई आवश्यकता नही। वह वहुत ही वढिया आदमी है। एकदम सरल तुम्हे खुद पता चल जाएगा।"

निकोलाई पेत्रोविच का कोचवान घोडे ले आया।

"हा तो अव ज़रा चेतन हो जाओ, लम्व-दाढी!" वज़ारोव ने अपनी भाडा-गाडी के कोचवान से कहा।

"कुछ सुना मित्या?" गाडीवान के साथी ने जो भेड की खाल के अपने कोट की जेवो में हाथ खोंसे पास ही खडा था चिल्लाकर कहा। "ज़रा देख तो इन साहव ने क्या नाम रखा है तेरा,—लम्व-दाढी। सच, वहुत ही ठीक नाम है!"

मित्या ने केवल सिर हिलाया और गर्म हुए वम पर से घोडे की रास खीची।

"हा तो अव तेजी से लपक चलो," निकोलाई पेत्रोविच न चिल्लाकर कहा। "देखें, तुम मे से कौन कितने इनाम का हकदार होता है!"

देखते न देखते घोडे जुत गए। पिता और पुत्र गाडी मे सवार हुए। प्योत्र वोक्स पर जा वैठा। वज़ारोव लपककर तरन्तास में सवार हुआ और चमडे की गुदगुदी गद्दी में धस गया। दोनो गाडिया चल पडी।

"हा तो तुम आ गए," कभी आरकादी के कंधो और कभी उसके घुटनों का स्पर्श करते हुए निकोलाई पेत्रोविच कह रहे थे, "विश्वविद्यालय की डिग्री मे लैस, आखिर तुम अपने घर आ गए!"

"चाचा कैसे है? अच्छी तरह तो है न?" आरकादी ने पूछा। बावजूद इसके कि उसका हृदय एकदम सच्ची–बालको जैसी–खुशी से छलछला रहा था, वह बातचीत के सिलसिले को भावुकता से मुक्त, यथार्थ चीज़ो की ओर, मोडने के लिए उत्सुक था।

"अच्छी तरह है। तुमसे मिलने वह भी मेरे साथ आना चाहते थे, लेकिन फिर किसी वजह से इरादा बदल दिया।"

"क्या तुम्हे बहुत राह देखनी पडी?" आरकादी ने पूछा।

"ओह, और कुछ नही तो करीब पाच घटे तो हो ही गए होंगे!"

"ओह मेरे दद्दा, तुम कितने अच्छे हो!"

अनायास ही आरकादी अपने पिता की ओर मुडा और हार्दिकता के साथ गालो पर उन्हे चुम्मा दिया। निकोलाई पेत्रोविच का चेहरा गुलाबी हसी से खिल गया।

"यह देखो, कितना शानदार घोडा मैंने तुम्हारे लिए लिया है," उन्होने कहा। "देखकर खुश हो जाओगे। और तुम्हारे कमरे में मैंने नयी अबरी चढवा दी है।"

"और बज़ारोव? उसके लिए भी तो कमरा चाहिए न?"

"उसे भी मिल जाएगा। चिन्ता न करो।"

"दद्दा, उसका पूरा खयाल रखना। मैं कह नही सकता कि उसकी मित्रता को मैं कितना अधिक मूल्यवान समझता हू।"

"क्या तुम्हारी उससे पुरानी जान-पहचान है?"

"नही, ऐसी वहुत पुरानी तो नही।"

"यही मैं भी सोचता था। पिछले जाडो में जब मै तुम्हारे पास गया था तो उसे देखने का मौका नही मिला। उसने कौन-सा विपय लिया है?"

"पदार्थ-विज्ञान। यो वह हरफन मौला है। उसका इरादा अगले साल डाक्टर की डिग्री लेने का है।"

"तो यह कहो कि वह चिकित्सा-विज्ञान का अध्ययन कर रहा है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और यह कहकर वह चुप हो गए। इसके वाद, तुरत ही, अपने हाथ से आगे दिखाते हुए वोले, "उधर देखो प्योत्र, ये हमारे ही किसान है न?"

प्योत्र ने उस दिशा में देखा जिधर मालिक ने इशारा किया था। सकरी देहाती गली में से अनेक गाडिया हचकोले खाती लपकी जा रही थी। वेलगाम घोडे उन्हे खीच रहे थे। हर गाडी में एक, या अधिक से अधिक दो, किसान वैठे थे। भेड की खाल के अपने कोटो के पल्ले उन्होने खोल रखे थे।

"हा मालिक," प्योत्र ने जवाव दिया।

"ये कहा जा रहे है? नगर की ओर?"

"ऐसा ही मालूम होता है। वहुत सम्भव है, दारूघर जा रहे हो!" प्योत्र ने भौंह चढाते और कोचवान की ओर झुकते हुए कहा, मानो उसे भी वह साक्षी वनने के लिए उसका रहा हो। लेकिन वह हिला तक नही। वह पुरानी छाप का आदमी था और नये विचारो को अपने से दूर ही रखता था।

"इस साल इन किसानो ने वुरी तरह तग कर डाला है," अपने पुत्र की ओर मुडते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया। "अपना लगान तक नही देते। न उन्हे उठाए वनता है, न रखते!"

"क्या तुम अपने खेत-मजूरो से सन्तुष्ट हो?"

"हा," निकोलाई पेत्रोविच ने बुदबुदाते हुए कहा। "परेशानी यही है कि उन्हे भी भीतर ही भीतर गडबडाया जा रहा है। इतने दिन हो गए, लेकिन ढग से काम में जुटने की उन्हे ग्रादत नही पडी। जोत खराब कर देते हैं। फिर भी यह मानना पडेगा कि उन्होने जोताई बुरी नही की। लगता है, ग्रन्त में सब ठीक हो जाएगा। लेकिन खेती-बारी में तुम्हारी भला ग्रब क्या दिलचस्पी हो सकती है? क्यो, ठीक है न?"

"ग्रपने यहा कोई सायादार जगह नही है," पिता के ग्राखिरी प्रश्न का कोई जवाब न दे ग्रारकादी ने कहा। "यह बात बुरी तरह ग्रखरती है।"

"उत्तर की ग्रोर, बाल्कनी के ऊपर, मैंने एक बडा-सा सायबान तनवा दिया है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "ग्रब हम खुले में भोजन कर सकते हैं।"

"यह तो कुछ ज़रूरत से ज्यादा बगलेनुमा हो गया लेकिन कोई हर्ज नही। ग्रोह, यहा की हवा कितनी प्यारी है! कितनी भीनी सुगध है! सच, यहा जैसी महक कही ढूढे नही मिलेगी। ग्रौर यहा का ग्राकाश "

ग्रारकादी एकाएक रुक गया, नज़र बचाकर उसने पीछे की ग्रोर देखा, ग्रौर इसके बाद ग्रौर कुछ नही बोला।

"बेशक," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "ग्राखिर तुमने यहा जन्म लिया है न! यहा की हर चीज तुम्हे ग्रद्भुत नही मालूम होगी तो ग्रौर किसे मालूम होगी "

"क्या सचमुच? नही दद्दा, जन्म लेने या न लेने से कोई ग्रन्तर नही पडता।"

"फिर भी "

"नही, इससे कतई अन्तर नही पडता।"

निकोलाई पेत्रोविच ने कनखियो से अपने पुत्र की ओर देखा। इस बीच गाडी आधा मील निकल गई थी। दोनो में से किसी ने कुछ नही कहा।

"मुझे याद नही पडता कि मैंने तुम्हे लिखा था या नही," निकोलाई पेत्रोविच ने फिर कहना शुरू किया, "कि तुम्हारी बूढी आया येगोरोव्ना, अब इस दुनिया में नही रही।"

"अरे? बेचारी बुढिया! लेकिन प्रोकोफिच तो अभी जिन्दा है न?"

"हा, और बिल्कुल वैसा ही—जरा भी नही बदला। अब भी वैसे ही झीकता रहता है। सच पूछो तो मारिनो में तुम्हे ऐसे कोई खास परिवर्तन नजर नही आयेंगे।"

"तुम्हारा कारिन्दा तो अभी भी वही है न?"

"बस, एक यही तब्दीली मैंने की है। मैंने निश्चय किया कि जागीर में काम करनेवाले अपने उन्मुक्त बन्धक-दासो में से किसी को भी मैं अपनी नौकरी में नही रखूगा, या कम से कम, उनमें से किसी को भी जिम्मेदारी का काम नही सौंपूगा।" (आरकादी ने प्योत्र की ओर इशारा किया) "Il est libre, en effet,"* निकोलाई पेत्रोविच ने दबी आवाज में कहा, "लेकिन यह तो केवल मेरा टहलुवा है। मेरा नया कारिन्दा नगर से आया है। अपने काम का जानकार मालूम होता है। ढाई सौ रूबल सालाना मैं उसे दे रहा हू। लेकिन," हाथ से अपने माथे और भौंहो को खरोचते हुए—भीतर परेशानी अनुभव होने पर सदा वह ऐसा ही करते थे—निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "जैसा कि मैंने अभी तुम्हे

---

* बेशक यह उन्मुक्त है। (फ्रेंच) —स०

वताया, मारिनो में तुम्हे कोई खास परिवर्तन नज़र नही आयेंगे इसे तुम एकदम सच ही न ममझ लेना। सो मैं तुम्हे पहले मे ही चेताए "

एक क्षण के लिए वह अचकचाए, फिर फ्रेंच भापा मे कहना शुरू किया

"नैतिकता के कट्टर पुजारी को मेरी माफगोई वेजा मालूम हो मकती है। लेकिन, सर्वप्रथम तो यह कि चीज़ो को छिपाकर नही रखा जा सकता। दूसरे, तुम जानते ही हो कि पिता-पुत्र के सम्बधो के वारे में मेरे कुछ अपने विचार है। फिर भी, मुझमे असहमति प्रकट करने का पूरा अधिकार है। मेरी इस उम्र मे, तुम जानते ही हो थोडे में यह लडकी जिसके वारे में शायद तुम सुन भी चुके हो "

"फेनिचका?" आरकादी ने वेमन से पूछा।

निकोलाई पेत्रोविच के चेहरे पर लाली दौड गई।

"अरे नही! उसका नाम इतने ज़ोर से न लो हा तो वही अब मेरे साथ रह रही है। उसे मैंने घर में ही जगह दे दी है दो छोटे कमरे थे, उसे दे दिए। लेकिन, कहने की आवश्यकता नही, इस सब में उलट-फेर किया जा सकता है।"

"नही दद्दा, नही। इसकी भला क्या ज़रूरत है?"

"तुम्हारा मित्र भी तो हमारे साथ ठहरेगा न सो, यह कुछ अटपटा मालूम होगा अगर "

"जहा तक वज़ारोव का सम्वध है, उसके वारे में चिन्ता करने की ज़रूरत नही। वह इन सव चीज़ो से ऊपर है।"

"लेकिन तुम भी तो हो," निकोलाई पेत्रोविच ने कहना जारी रखा। "छोटा वाजू मनहूस-सा है। यही उसमें सवसे वडी खरावी है।"

"अरे नही दद्दा," आरकादी ने बीच मे ही कहा, "अगर कोई सुने तो क्या कहे। लगता है जैसे माफी माग रहे हो। कुछ तो लाज करो।"

"सचमुच, मुझे लज्जित होना चाहिए—मैं इसी योग्य हू," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा और उसके चेहरे की लाली और भी अधिक गहरी होती गई।

"बस भी करो, दद्दा! तुम तो सचमुच अण्ड-वण्ड बहकने लगे!" आरकादी ने कहा और उसके चेहरे पर प्रेमपूर्ण मुसकान खेल गई। "भला यह भी कोई अनुताप करने की बात है," उसने मन ही मन सोचा और अपने भले, कोमल-हृदय पिता के प्रति एक तरह की गुप्त श्रेष्ठता से अनुरजित सहज मुद्रा की भावना से उसका हृदय छलछला उठा। "क्या बकवास है," उसने दोहराया और समझदारी तथा आज़ादी की भावना अनायास ही उसके रोम रोम मे हिलोरे लेने लगी।

निकोलाई पेत्रोविच का हाथ माथा खरोच रहा था। उगलियो के बीच दराज़ो के भीतर से उन्होने अपने पुत्र पर एक नज़र डाली और उनका हृदय जैसे किसी पैनी चीज़ से बिध गया लेकिन उन्होने तुरत अपने आपको सभाल लिया।

"यह देखा, हमारे खेत यहा से शुरू होते है," एक लम्बी ख़ामोशी के बाद उसने कहा।

"और इनसे आगे, अगर मैं भूलता नही तो, हमारा जगल ही है न?" आरकादी ने पूछा।

"हा। केवल इतना ही कि उसे मैंने बेच दिया है। इस साल यह कट जाएगा।"

"क्यो, उसे बेच क्यो दिया?"

"मुझे पैसो की जरूरत थी। इसके अलावा, यह ज़मीन अब किसानो की होने जा रही है।"

"उन्ही किसानो की जो तुम्हे लगान तक नही देते ?"

"यह तो उनके समझने की बात है। जो हो, लगान तो वे देंगे ही, आज नही तो फिर किसी दिन!"

"फिर भी जगल का जाना कतई अच्छा नहीं मालूम होता," आरकादी ने कहा और अपने चारो ओर नज़र डालकर देखने लगा।

देहात के जिस इलाके में से वे गुज़र रहे थे, उसे मुश्किल मे ही चित्रमय कहा जा सकता है। एक के बाद एक, दूर क्षितिज तक, खेत ही खेत नज़र आते थे—लहरो की भाति उठते और फिर गिरते हुए। जहा-तहा जगलो की पट्टिया और चक्करदार खाइया नज़र आती थी जिनपर नीची विरल झाडिया उगी थी। लगता था जैसे कैथरीन महान के काल का पुरानी चाल का नक्शा आखो के सामने खुल रहा हो। नीचे पानी से कटे, कगारे निकले तटो से युक्त नदी-नाले, गिरे-ढहे छोटे बाध-टीले, काले पडे अधनगे छप्परो वाली चपटी झोपडियो से युक्त छोटी बस्तिया, पेड की कटी डालियो से घिरे छोटे छोटे दीन-हीन खलिहान, परित्यक्त खलिहानो के मुह बाए फाटक, गिरजे जिनमें कुछ ईंटो के थे, जिनका पलस्तर जहा-तहा से झड गया था, बाकी लकडी के, जिनके सलीबो के घुटने टूटे थे और कब्रें ढह गई थी— एक एक कर गुज़रते जा रहे थे। आरकादी का हृदय भीतर ही भीतर बैठा जा रहा था। दुर्भाग्य से राह में जो भी किसान मिले वे सब चिथडो के पुतले मालूम होते थे—बेजान और बुझे हुए। उनके घोडे भी वैसे ही मरियल थे। बेद वृक्षो की टहनिया टूटी थी और उनके तनो की छाले उतरी हुई थी—जीर्ण-शीर्ण भिखारियो की भाति वे सडक के किनारे खडे थे। पिचकी-पिचकाई-सी

गाए, जिनके अजर-पजर ढीले हो चुके थे और हाड उभर आए थे, खाइयो के किनारे उगी घास में मुह मार रही थी। ऐसा मालूम होता था जैसे वे अभी किसी भयानक कसाई के हाथो से छटकर आई हो। वसन्त की उस मनोहारी छटा के वीच, जीर्ण-शीर्ण पशुओ का दयनीय दृश्य ऐसा मालूम होता था जैसे वसन्त को ऊजड अन्तहीन शिशिर और उसके प्रचण्ड तूफानो, धुध-पालो और वर्फ के ववण्डरो ने ग्रस लिया हो। "नही," आरकादी ने सोचा, "यह उपजाऊ प्रदेश नही है। सम्पन्नता या उद्यमशीलता की यह हृदय पर ज़रा भी छाप नही छोडता। नही, इस तरह नही चलेगा—चल नही सकता। सुधार अनिवार्य है लेकिन सुधार किए कैसे जाए, कहा से और कैसे उनका शुरूआत हो? "

आरकादी यही सब सोच रहा था. वह सोच में डूवा था और उधर वसन्त अपना पूरा उभार दिखा रहा था। उसके चारो ओर वसन्त की सुनहरी आभा तथा हरियाली की छटा छाई थी। पेड, झाडिया, घास—हर चीज़ में एक चमक, जीवन का स्पन्दन दिखाई पडता था। सुखद मृदु वायु की कोमल सरसराहट सवमें व्याप्त थी। हर कही लवे पक्षी चहचहा रहे थे। लगता था जैसे गूजदार सगीत की वेगवती निर्झरिया फूट रही हो। निचली चरागाहो के ऊपर पख फडफडाते या पहाडियो के ऊपर निःशब्द उडते लैपविग पक्षियो की विलाप-ध्वनि वायु को वीध रही थी। वसन्त कालीन अन्न की अधपकी फसलो की कोमल हरियाली पर अपनी काली छाया डालते कौवे भी पीछे नही थ। राई के पके खेतो में वे डुवकी लगाते और लहराती हुई वालो के वीच केवल उनके सिर जव-तव उतराते हुए नज़र आते।

आरकादी देर तक इस दृश्य को देखता रहा, देखते देखते उसका सोच-विचार—उसके चिन्तन की रेखाएं—धुधली पडती गई और अन्त

में बिल्कुल ही विलीन हो गई उसने अपना कोट उतार डाला और अपने पिता की ओर कुछ इतनी मोहक बालसुलभ नजर से देखा कि पिता से न रहा गया – उन्होंने फिर उसे अपने दुलार में समेट लिया।

"बस, अब अधिक दूर नहीं है," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "बस, इस पहाडी के निकट पहुचते न पहुचते घर दिखाई देने लगेगा। देखना, हम दोनो मिलकर किस तरह जीवन को अपने साचे मे ढालते हैं। अगर तुम्हारा जी न ऊबे तो खेती-बारी के काम मे मेरा हाथ बटाना। मित्र की भाति हम दोनो रहे, एक-दूसरे मे घनिष्ठता प्राप्त करे। क्यो, ठीक है न?"

"बेशक," आरकादी ने कहा। "ओह, कितना सुहावना मौसम है आज!"

"तुम आए हो न, इसलिए। वसन्त, अपने पूरे निखार के साथ, तुम्हारा स्वागत कर रहा है। जो हो, मैं तो पुश्किन की बात से सहमत हू। तुम्हें याद है न 'येवगेनी ओनेगिन' की वे पक्तिया

"वसन्त! प्रेम और प्यार का मौसम!
वसन्त, तुम्हारा आगमन
मुझे कितना उदास बना देता है,
कितना "

"आरकादी!" सहसा तरन्तास में से बजारोव की आवाज़ आई। "भई, ज़रा दियासलाई तो भेजो। पाइप सुलगाने के लिए यहा मेरे पास कुछ नही है।"

निकोलाई पेत्रोविच का कविता-पाठ बीच में ही रुक गया और आरकादी ने, जिसने अचरज लेकिन कुछ सहानुभूति से पुश्किन की पक्तिया सुननी शुरू की थी, तुरन्त अपनी जेब में से दियासलाई की चादी की डिबिया निकाली और प्योत्र के हाथ उसे बजारोव के पास भेज दिया।

"तुम्हे चुरुट तो नही चाहिए?" वज़ारोव ने फिर चिल्लाकर पूछा।

" अच्छा अच्छा, भेज दो," आरकादी ने जवाव दिया।

दियासलाई की डिविया और एक काला-मा मोटा चुरुट लिए हुए प्योत्र लौट आया। आरकादी ने उसे सुलगा लिया। कडे तम्वाकू की तेज़ और तीखी गध उमके इर्द-गिर्द फैल गई, यहा तक कि निकोलाई पेत्रोविच को, जिसने अपने जीवन में कभी तम्वाकू नही पिया था, अपनी नाक फेर लेनी पडी। और यह उसने वहुत ही अप्रकट रूप में किया, जिसमे उसके पुत्र के हृदय को कोई ठेस न पहुचे।

पद्रह मिनट वाद दोनो गाडिया लकडी के एक नये घर की पैडियो के सामने जा लगी। घर भूरे रग में रगा था और लोहे की लाल चद्दरो की उसकी छत थी। यही मारिनो था। इसे 'नव कुटीर' या किसानो के शव्दो में 'ऊजड फार्म' भी कहा जाता था।

४

मालिको का अभिनन्दन करने के लिए पोर्च में वन्धक-दासो की कोई भीड उमडकर नही आई। ले-देकर वारह वर्ष की एक छोटी लडकी और उसके पीछे एक नौजवान प्रकट हुआ जो शक्ल-सूरत मे प्योत्र से अत्यधिक मिलता था और सुरमई रग की जाकेट पहने था जिममें मफेद ज़िरहवस्तरी वटन टके थे। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव का नौकर था। उमने चुपचाप गाडी का दरवाज़ा और तरन्ताम के पर्दे के वन्द खोल दिए। अपने लडके और वज़ारोव के माथ निकोलाई पेत्रोविच ने एक अधेरे, क़रीव करीव एकदम मूने, हॉल में प्रवेश किया। हॉल के दरवाज़े में से उन्हे एक युवती स्त्री के

चेहरे की क्षणिक झलक दिखाई दी। इसके वाद वे दीवानख़ाने में पहुचे जो नवीनतम ढग के साज़-सामान से लैस था।

"हा तो यह लो, हम अब अपने घर आ गए," अपनी टोपी उतारते और वालो को झटककर पीछे फेंकते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "और अब सवसे मुख्य वात यह है कि पेट में कुछ डाल-कर आराम कर लिया जाए।"

"खयाल तो वुरा नही है," सोफे पर पसरते और अपने वदन को सीधा करते हुए वज़ारोव ने कहा, "ज़रूर कुछ खा लिया जाए।"

"ठीक है। भोजन – अच्छा तो भोजन ही कर लिया जाए," निकोलाई पेत्रोविच ने, विना किसी प्रत्यक्ष कारण के, अपना पाव पटकते हुए कहा। "और यह देखो, प्रोकोफिच भी आ गया। इस वक्त ठीक इसी की ज़रूरत भी थी।"

पीतल का वटन लगा अवावील की दुमनुमा कत्थई कोट पहने और गले में गुलावी रूमाल वाधे करीव साठ वर्ष के एक दुवले-पतले, सावले और सफेद वालोवाले आदमी ने प्रवेश किया। उसने खीसें निपोरी, आरकादी के पास पहुच उसका हाथ चूमा और, मेहमान के सामने दोहरा होने के वाद, उलटे पाव दरवाज़े पर लौटा और कमर के पीछे हाथ वाघकर खडा हो गया।

"हा तो प्रोकोफिच," निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "देखा तुमने आखिर आ ही, गया कहो, कैसा लगा?"

"छोटे सरकार वहुत ही अच्छे मालूम हो रहे हैं, मालिक," कहते हुए वृद्ध ने फिर अपनी खीसें निपोरी और इसके वाद, तुरत ही, अपनी झाडीनुमा पलको को सिकोडकर वह गम्भीर हो गया। फिर रोवदार अन्दाज़ में वोला, "कहे तो मेज़ पर खाना लगा दू, मालिक?"

"हा हा, ज़रूर। लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, शायद तुम पहले अपने कमरे में जाना चाहो?"

"नही, धन्यवाद, इसकी कोई ज़रूरत नही," बज़ारोव बोला, "बस, इनसे मेरा वह पुराना सूटकेस और लवादा मेरे कमरे में पहुचा देने के लिए कह दीजिए," अपना मुसाफिरी चोगा उतारते हुए उसने कहा।

"बहुत अच्छा। प्रोकोफ़िच, इनका कोट ले लो।" (अचकचाकर प्रोकोफिच ने अपने दोनो हाथो में उसका लबादा थाम लिया और उसे अधर में उठाए पजो के बल बाहर चला गया।) "और तुम, आरकादी, तुम क्या कहते हो? कुछेक देर के लिए अपने कमरे में जाओगे न?"

"हा, हाथ-मुह धोना जरूरी है," दरवाज़े की ओर बढते हुए आरकादी ने जवाब दिया। लेकिन तभी काले रग का अग्रेज़ी कोट, फैशनदार नीचा गुलूबद और चमकदार चमडे के जूते पहने मझोले कद के एक आदमी ने दीवानखाने में प्रवेश किया। यह पावेल पेत्रोविच किरसानोव थे। आयु क़रीब पैंतालीस के तो अवश्य होगी। छोटे छटे हुए सफेद बाल नयी चादी की भाति खूब चमक रहे थे। चेहरा कुछ बुझा हुआ किन्तु झुर्रियो से मुक्त था। नाक-नक्श बहुत ही साफ-सुथरे और उभरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे महीन छेनी से उन्हे गढा गया हो। असाधारण सौन्दर्य के चिन्ह उनमें अभी भी मौजूद थे। निर्मल, स्याह और बादाम जैसी उनकी आखें खासतौर से आकर्षक थी। कुलीनता और नफासत में पगे आरकादी के ताऊजी के समूचे आकार-प्रकार में किशोर-सुलभ चपलता और ऊपर-धरती से खूब ऊचे-उठने की आकाक्षा का वह भाव अभी तक मौजूद था जो, आमतौर से, बीस साल की आयु के बाद मानव का साथ छोड देता है।

पावेल पेत्रोविच ने अपनी पतलून की जेब मे हाथ निकालकर अपने भतीजे की ओर वढा दिया। वहुत ही नफीस हाथ था वह–गुलावी नाखूनो मे युक्त जो आगे की ओर पतले होते गए थे। कमीज के सफेद कडे कफ ने–जिसमे दूधिया रग का एक वडा नगदार वटन लगा था–हाथ के सौन्दर्य मे और भी अधिक वृद्धि कर दी। यूरोपीय ढग से प्रारम्भिक शिष्टाचार–हाथ आदि मिलाने–के वाद रूसी ढग से उसने चुम्मा लिया, वल्कि कहिए कि इत्र में वसी अपनी मूछो से तीन वार उसके गालो पर कूची-सी फेरते हुए उसका 'स्वागत' किया।

निकोलाई पेत्रोविच ने वज़ारोव से उनका परिचय कराया। अपने चपल वदन को थोडा झुकाकर और होठो पर धुधली मुसकान के साथ उन्होने उसका अभिवादन किया, लेकिन अपना हाथ नही वढाया, जिसे उन्होने फिर अपनी पतलून की जेव में डाल लिया।

"मुझे तो आशका हो चली थी कि आज तुम नही आओगे," शिष्टतापूर्वक अपने वदन को झुलाते, कधो को विचकाते और अपने शानदार सफेद दातो को चमकाते हुए मधुर स्वर मे उन्होने कहा। "क्या रास्ते में कोई गडवड हो गई थी?"

"नही, ऐसी कोई वात नही हुई," आरकादी ने जवाव दिया। "हमें थोडा रुक जाना पडा, वस। लेकिन फिलहाल तो पेट में चूहे कूद रहे है। प्रोकोफिच से कहो कि ज़रा जल्दी करे, मैं अभी लौट आऊगा, दद्दा।"

"ज़रा ठहरो, मै भी तुम्हारे साथ चलता हू," सहसा सोफे से उठते हुए वज़ारोव ने चिल्लाकर कहा। दोनो युवक एक साथ चल दिए।

"यह कौन है?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"आरकादी का मित्र। आरकादी के शब्दो में बहुत ही चतुर जीव।"

"क्या हमारे साथ ही रहेगा?"

"हा।"

"क्या कहते हो–यह भालू हमारे साथ रहेगा?"

"क्यो, हा।"

पावेल पेत्रोविच ने अपनी उगलियो की नोक से मेज को ठकठकाया।

"मेरे खयाल में आरकादी s'est degourdı*," उन्होंने कहा, "मुझे खुशी है कि वह घर लौट आया।"

भोजन के समय बातचीत भूले-भटके हुई। खासतौर से बज़ारोव ने बात कम की, खाया अधिक। निकोलाई पेत्रोविच ने, खुद उसी के शब्दो में, अपने किसान-जीवन की छुटपुट घटनाए सुनाई, शीघ्र ही चालू होनेवाली सरकारी योजनाओ की चर्चा की, कमेटियो, डेप्युटेशनो और मशीनो से काम लेने की आवश्यकता का ज़िक्र किया। पावेल पेत्रोविच ने खाने को हाथ नही लगाया। वह कमरे में इधर से उधर टहलते रहे। कभी कभी लाल मदिरा का गिलास उठाकर एकाध चुस्की ले लेते। उनके मुह से कोई टिप्पणी या "आह, अहा, हू" जैसे उद्गार और भी कम–विरले ही– निकलते। आरकादी ने सन्त-पीतर्सबर्ग का नया हाल-चाल सुनाया। लेकिन वह बराबर एक हल्की-सी झिझक का अनुभव करता रहा जो आमतौर से उन युवको को उस समय घेर लेती है जब वे अपने बचपन की देहरी को अभी अभी लाघ उस

---

*अधिक बेतकल्लुफ हो गया है। (फ्रेंच)–स०

जगह लौटते है जहा उन्हे सदा वच्चा ही समझा जाता रहा है। वह शब्दो को खीचकर वोल रहा था। 'दद्दा' सम्बोधन मे उसने वचने का प्रयत्न किया, 'पिता' का भी उसने एक वार ही प्रयोग किया—सो भी वुदवुदाकर, स्पष्ट रूप मे नही। और अतिरजित 'वहादुरी' का भाव दिखलाते हुए वस्तुत अपनी इच्छा से भी अधिक उसने मदिरा उडेली और उसे गले के नीचे उतार गया। प्रोकोफिच वरावर उस-पर नज़र जमाए था। उसका मुह वरावर चल और फुसफुसा रहा था। भोजन खत्म होते ही सब चल दिए।

"अजीव आदमी हैं तुम्हारे यह ताऊजी," वज़ारोव ने आरकादी से कहा। वह अव सोने का चोगा पहने था और आरकादी के पलग की पाटी पर वैठा छोटे-से पाइप से कश ले रहा था। "देहात में भी यह वनाव-सिगार—है न अद्भुत! और उसके नाखून,—ओह, वे तो नुमाइश में रखने लायक है!"

"वेशक तुम्हे नही मालूम," आरकादी ने जवाव दिया, "अपने ज़माने में वह समाज के सिरताज थे। किसी दिन उनकी कहानी सुनाऊगा। वहुत ही जानमार सौन्दर्य था उनका, और स्त्रिया तो उनके पीछे पागल थी।"

"ओह, यह वात है। तो यह सव उस गुज़रे ज़माने की खुरचन है। काश कि यहा भी कोई होती—अपने सिरताज पर न्योछावर होने के लिए। जो हो, कम से कम मुझे तो उन्होने मत्रमुग्ध कर ही लिया—लकडी की तरह सख्त उनका वह लाजवाव कालर, और एकदम सफाचट ठोडी। क्या तुम्हे यह सब हास्यास्पद नही मालूम होता, आरकादी निकोलायेविच?"

"सो तो है। लेकिन सच, आदमी वहुत अच्छे हैं।"

"अजायवघर में रखने लायक! लेकिन तुम्हारे पिता खूब हैं।

हालाकि कविता-पाठ को अगर वह वख्श दें तो ज्यादा अच्छा हो। और मुझे तो लगता है कि खेती-वारी में भी उनका कोई खास दखल नही है। जो हो, वह नेक हैं।"

"एकदम हीरा ही समझो!"

"पता नही, तुमने उस समय ध्यान दिया या नही—लगता था जैसे एकदम अपनापन भूल गए हो?"

आरकादी ने सिर हिलाकर हामी भरी, मानो वह खुद विह्वलता से मुक्त रहा हो।

"इन रोमाण्टिक वूढो का भी जवाव नही," वज़ारोव कहता गया। "अपने स्नायु-तत्र को ये इतना तानते हैं कि वह चरचरा उठता है . और, जैसा कि स्वाभाविक है, सन्तुलन गडवडा जाता है। जो हो, अव सोया जाए। मेरे कमरे में अग्रेज़ी ढग का हाथ-मुह धोने का नल तो है, लेकिन दरवाज़े में खटका नही है—वह वद नही किया जा सकता। फिर भी इन चीज़ो को—मेरा मतलव अग्रेज़ी ढग के हाथ-मुह धोने के नल से है—वढावा मिलना चाहिए। ये प्रगति के सूचक हैं।"

वज़ारोव चला गया और आरकादी उल्लास की तरगो में डूवने-उतराने लगा। खुद अपने घर में, परिचित विस्तरे पर और चाव-भरे हाथो से संजोई रज़ाई के नीचे सोना कितना मधुर मालूम होता है। शायद वे चाव-भरे हाथ—मृदु, कोमल और अनथक हाथ—उसकी प्यारी नर्स के हो। आरकादी को येगोरोवना का ध्यान हो आया, एक उसास उसके हृदय से निकली, उसे दुआए दी लेकिन अपने लिए उसने न कोई प्रार्थना की, न दुआ।

वह और वज़ारोव, दोनो शीघ्र ही सो गए। लेकिन घर में अन्य लोग भी थे जो काफी देर तक नही सो सके। पुत्र के घर-आगमन ने निकोलाई पेत्रोविच को उद्वेलित कर दिया था। विस्तरे पर वह गए,

लेकिन बत्ती न बुझाई। सिर को हथेली पर टेके लम्बे ख़यालो मे डूब गए। उनके भाई, आधी रात के बाद भी काफी देर तक, अपने अध्ययन कक्ष में अगीठी के पास एक चौडी कुर्सी पर बैठे रहे। अगीठी के कोयले जल चुके थे और राख की तह से ढके रिस रहे थे। पावेल पेत्रोविच ने कपडे नही बदले थे, सिवा इसके कि चमकदार जूतो की जगह अब उनके पावो में लाल रग के चीनी फर्शी स्लीपर दिखाई पड रहे थे। हाथ में 'गालिग्नानी-दूत' का नवीनतम अक था, लेकिन उसे पढ नही रहे थे। आखें एकटक अगीठी की जाली पर जमी थीं जिसमें, कभी कभी, एक नीली-सी लपक दिखाई पड जाती थी कौन जाने, उनका दिमाग कहा कहा के चक्कर लगा रहा था। लेकिन वह केवल अतीत में ही नही रम रहा था। केवल स्मृतियो में डूबे आदमी से भिन्न उनके चेहरे पर एक घनीभूत और गम्भीर भाव छाया था। और पिछवाडे के छोटे-से कमरे में, बिना आस्तीन की नीली जाकेट पहने, बडे-से सन्दूक पर एक युवा स्त्री बैठी थी। उसके काले बालो पर सफेद रूमाल बधा था। यह फेनिचका थी। कभी वह आहट लेती, कभी ऊघ जाती, कभी खुले दरवाज़े की ओर नज़र डालती जिसमें से बच्चे का छोटा पलग दिखाई देता था और सोए हुए बच्चे की सासो की क्रमबद्ध आवाज वह सुन सकती थी।

५

अगली सुबह बज़ारोव उठा और बाहर घूमने निकल गया। तब तक घर में और कोई नही जगा था। "ऊह," अपने चारो ओर के दृश्य को निहारते हुए उसने सोचा, "जगह कोई खास बढ़िया तो नही कि देखने के लिए मन ललचे।" किसानो की भूमि की हद्द-बदी

करते समय एक नयी हवेली बनवाने के लिए निकोलाई पेत्रोविच ने दस एकड की एकदम सपाट परती भूमि अलग निकाल ली थी। घर और उसके इर्द-गिर्द की इमारते उसने बनवा ली थी, बाग लगवा लिया था, एक तालाब और दो कुवे खोदवा लिए थे, लेकिन पौधे ठीक से बढ नही सके। तालाब में पानी कम था और कुवे खारे निकले। केवल लिलक की झाडिया और बबूल ही कुछ दमदार निकले। इन्ही की छाया में कभी कभी चाय-पान या भोजन किया जाता था। कुछ मिनटो में ही बज़ारोव ने बाग को छान डाला, मवेशी-घर और अस्तबल का चक्कर लगाया, दो छोटे लडको से भेंट की, जिन्हे उसने तुरत अपना मित्र बना लिया और उन्हे लेकर, घर से एक मील के भीतर, मेंढको का शिकार करने एक छोटे-से दलदली भूखण्ड की ओर निकल गया।

"मेंढको का आप क्या करेगे, मालिक?" लडको में से एक ने पूछा।

"सुनो, मैं तुम्हे बताता हू," बज़ारोव ने जवाब दिया जो निम्न स्तर के लोगो का विश्वास पाने का नुस्खा जानता था, हालाकि उन्हे खुश करने के लिए वह कभी कोई प्रयत्न नही करता था और लापर्वाही से उनके साथ पेश आता था। "मै मेंढको को चीरकर देखूगा कि उनके भीतर क्या कुछ हो रहा है। और चूकि हम और तुम मेंढको के समान ही है–सिवा इसके कि हम दो पावो पर चलते हैं–इसलिए मुझे यह भी पता चल जाएगा कि हमारे भीतर क्या हो रहा है।"

"यह सब आप क्यो जानना चाहते है?"

"इसलिए कि अगर तुम बीमार पड जाओ और मुझे तुम्हारा इलाज करना पडे तो कोई भूलचूक न हो।"

"तो आप डाक्टर है, क्यो?"

"हा।"

"वास्का, सुना तुमने, ये कहते है कि हम और तुम मेढको के समान हैं। है न मजे की बात?"

"ना बावा, मुझे तो मेंढको से डर लगता है!" वास्का ने कहा। वह सात साल का लडका था—नगे पाव, सुनहरे बाल, खडे कालर का सलेटी कोट पहने हुए।

"क्यो, उनमे डरने की क्या बात है? वे किसी को नही काटते।"

"हा तो मेरे दार्शनिको," बजारोव ने कहा, "अब जरा पानी में उतर चलो।"

इस बीच निकोलाई पेत्रोविच भी जाग गए और आरकादी से मिलने चल दिए। वह पहले से जागा हुआ था और कपडे पहनकर तैयार था। पिता और पुत्र बरामदे पर निकल आये जिसके ऊपर तनौवा तना था। मुडेर के पास, लिलक की घनी टहनियो के बीच, समोवर में पानी खौल रहा था। एक छोटी लडकी आई, वही जो यहा आने पर सबसे पहले उन्हें मिली थी, और कर्णवेधी आवाज में बोली

"फेदोसिया निकोलायेवना की तबीयत ठीक नही है। वह नही आ सकती। कहा है कि अपनी चाय खुद बना ले, नही तो फिर दुन्याशा को वह भेज दें।"

"ठीक है। हम खुद बना लेगे," निकोलाई पेत्रोविच ने झट से कहा। "क्यो आरकादी, तुम अपनी चाय में क्या लेना पसद करोगे—नीबू या क्रीम?"

"क्रीम," आरकादी ने जवाब दिया और फिर, कुछ क्षण की चुप्पी के बाद, प्रश्नसूचक अन्दाज में बोला "दद्दा?"

निकोलाई पेत्रोविच ने, कुछ परेशानी का अनुभव करते हुए, सिर उठाकर देखा।

"क्यो, क्या बात है?"

आरकादी ने अपनी आखें झुका ली।

"अगर मेरा सवाल कुछ अटपटा मालूम हो तो मुझे माफ करना, दद्दा," आरकादी ने कहना शुरू किया, "लेकिन कल जिस साफगोई का आपने परिचय दिया था, वह मुझे उकसा रही है कि मै भी उतनी ही साफगोई का परिचय दू आप नाराज़ तो न होगे?"

"कहो जो तुम्हारे मन में हो।"

"आपसे साहस पाकर ही मैं यह पूछ रहा हू क्या इसी कारण न फेनिच क्या मेरी मौजूदगी की वजह से ही वह चाय डालने के लिए यहा नही आना चाहती?"

निकोलाई पेत्रोविच ने अपना सिर थोडा उसकी ओर से फेर लिया।

"शायद," उसने फिलहाल कहा, "हो सकता है कि वह शरमाती हो "

आरकादी की आखें तेज़ी से अपने पिता के चेहरे की ओर उठ गईं।

"सच पूछो तो उसके लिए शरमाने की कोई बात नही है। सर्व-प्रथम इस सम्बध में मेरे विचारो को आप जानते ही है," (आरकादी रस लेकर बोल रहा था), "और दूसरे, आपके जीवन के तौर-तरीको और आपकी आदतो में दखल देने के लिए मै किसी भाव पर तैयार नही हूगा। इसके अलावा मेरा विश्वास है कि आप ग़लत चुनाव नही कर सकते। अगर आपने उसे अपने घर में जगह दी है तो मानना होगा कि वह इसके योग्य है। और सबसे बढकर यह है कि एक पुत्र अपने पिता का न्यायकर्ता नही हो सकता—खासतौर से मै, ख़ासतौर से आप जैसे पिता का जिसने कभी भी, किसी रूप में भी, मेरी आज़ादी पर कोई रोक नही लगाई।"

थरथराती आवाज मे आरकादी ने अपनी बात शुरू की थी। उसे ऐसा लगा जैसे वह उदारता का परिचय दे रहा है। साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि वह अपने पिता को एक तरह का उपदेश-सा दे रहा है। लेकिन अपनी आवाज का भी आदमी पर गहरा असर पडता है, और आरकादी ने अपने अन्तिम शब्दो का दृढता के साथ—यहा तक कि शान के साथ—उच्चारण किया।

"शुक्रिया, आरकादी, शुक्रिया!" निकोलाई पेत्रोविच ने फुसफुसी आवाज़ में कहा। उनकी उगलिया अब फिर उनकी भौहो और माथे को खरोच रही थी, "तुमने जो कहा वह बिल्कुल ठीक है। निश्चय ही अगर लडकी इस योग्य न होती   यह कोई मेरे उथले मन की तरग नही है। इस सम्बध मे तुमसे बाते करना बडा अटपटा-सा लगता है। लेकिन, तुम समझते ही हो, वह तुमसे लजाती है—खासतौर से इसलिए कि तुम्हारे यहा आने का आज पहला दिन ही है।"

"अगर ऐसा है तो मै खुद उसके पास जाऊगा," उदारता के नये उभार के साथ और अपनी कुर्सी से उछलकर खडे होते हुए आरकादी ने कहा, "मै उसके सामने यह एकदम साफ कर दूगा कि उसे मुझसे लजाने की ज़रा भी ज़रूरत नही है।"

निकोलाई पेत्रोविच भी उठकर खडे हो गए।

"आरकादी," उसने कहना शुरू किया, "देखो, उधर न जाना सच   असल मे   मुझे पहले ही तुम्हे बता देता चाहिए था कि   "

लेकिन आरकादी ने अब कुछ नही सुना और भागकर बरामदे से चला गया। निकोलाई पेत्रोविच ने आखो से उसका पीछा किया और फिर कुर्सी में ढह गए। उनकी समझ ने जवाब दे दिया था और उनका हृदय धडक रहा था   क्या वह, उस क्षण, यह अनुभव कर सके कि अपने

पुत्र के साथ उनके भावी सम्वध अनिवार्यत कितने विचित्र होने जा रहे है? क्या यह वात उनके दिमाग में आई कि आरकादी, इस पचडे से अलग रहकर, शायद उनके प्रति अविक सम्मान प्रकट कर सकता है? क्या उन्होंने, ज़रूरत से ज्यादा कमज़ोरी दिखाने के कारण, अपने आपको कोचा? यह सव कहना कठिन है। वह इन सभी भावनाओ का अनुभव कर रहे थे, लेकिन केवल सनसनियो के रूप में, सो भी अस्पष्ट और धुवली। उनका चेहरा अभी भी तमतमाया हुआ था, उनका हृदय अव भी धडक रहा था।

तभी तेज़ी से आते डगो की आवाज़ सुनाई दी और आरकादी वरामदे में आ गया।

"हम दोनो में जान-पहचान हो गई, पिता!" आरकादी ने चिल्लाकर कहा। उसके चेहरे पर जैसे मृदु और कृपापूर्ण विजय के भावो की झलक थी। "फेदोसिया निकोलायेवना की तवीयत आज सचमुच ठीक नही है। वह कुछ देर वाद आएगी। लेकिन तुमने यह क्यो नही वताया कि मेरा एक भाई भी है? कल रात ही मै उसे प्यार करता, जैसा कि अव करके आ रहा हू।"

निकोलाई पेत्रोविच कुछ कहना चाहते थे, उठना चाहते थे, अपनी वाहो को फैलाना चाहते थे। तभी आरकादी लपककर उनके गले मे लिपट गया।

"ओहो, अव फिर दुलार हो रहा है?" पीछे से पावेल पेत्रोविच की आवाज सुनाई दी।

इस क्षण उनके आ जाने मे पिता और पुत्र दोनो को समान रूप से राहत मिली। कभी कभी भावावेश की स्थितिया ऐसी हो जाती है कि उनमे पीछा छुडाकर मानव सुख का अनुभव करता है।

"क्या तुम्हे यह अचरज की वात मालूम होनी है?" निकोलाई

पेत्रोविच ने खुशी से हुमकते हुए कहा। "न जाने कब से मैं आरकादी की प्रतीक्षा कर रहा था और जब से यह आया है, इसे जी भर देख तक नही सका हू।"

"नहीं, मैं अचरज जरा भी नही करता," पावेल पेत्रोविच ने कहा। "मैं खुद भी इसे दुलराने से कन्नी काटना नही चाहूगा।"

आरकादी अपने ताऊजी के निकट पहुचा और इत्र में बसी उनकी मूछो की सरसराहट का एक बार फिर अपने गालो पर अनुभव किया। पावेल पेत्रोविच मेज पर बैठ गए। वह अंग्रेजी काट का प्रात कालीन सूट पहने थे। सिर पर एक छोटी फैज़ टोपी सुशोभित थी। फैज़ टोपी और लापर्वाही से बधा एक छोटा गुलूबद देहाती जीवन की अकृत्रिमता के सूचक थे, लेकिन उनकी कमीज़ का कडा कालर—अब वह रगीन कालर पहने थे जो सुबह के इस वक्त के लिए उपयुक्त था—उनकी चिकनी सफाचट ठोडी को दुर्निवार रूप में ऊचा ताने था।

"तुम्हारा वह नया मित्र कहा है?" उन्होंने आरकादी से पूछा।

"घूमने चला गया है। आमतौर से वह जल्दी, तडके ही, उठ जाता है। मुख्य बात यह है कि उसकी ओर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं। तकल्लुफ और दिखावे से वह दूर भागता है।"

"यह तो साफ ज़ाहिर है," फुरसत के अन्दाज़ से अपनी रोटी पर मक्खन लगाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। "क्या वह काफी दिनो तक रहेगा?"

"यह परिस्थितियो पर निर्भर है। वह अपने पिता के घर जा रहा है। रास्ते में यहा रुक गया।"

"उसके पिता कहा रहते है?"

"हमारे इसी ज़िले में, यहा से करीब ५० मील दूर। वहा उनकी एक छोटी-मोटी-सी जागीर है। कभी वह फौज में सर्जन थे।"

"ओह, अब याद आया। काफी देर से मै इस उलझन मे था कि यह नाम–वजारोव–मैंने कही सुना है। निकोलाई, अगर मै भूलता नही तो हमारे पिता के डिवीज़न में एक डाक्टर था। उसका नाम भी वज़ारोव था। क्यो था न?"

"हा, याद तो पडता है।"

"यकीनन। सो वह डाक्टर ही इसका पिता है। हु!" अपनी मूछो में ताव देते और अपनी आवाज़ को खीचते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "और यह पुत्र वज़ारोव–यह खुद क्या है?"

"वज़ारोव क्या है?" आरकादी ने कौतुक का भाव झलकाते हुए कहा। "क्या तुम सचमुच जानना चाहते हो कि वह क्या है, ताऊजी?"

"हा हा, कहो न, भतीजे!"

"वह निहिलिस्ट है–ध्वसवादी!"

"ऐं, क्या?" निकोलाई पेत्रोविच के मुह से निकला। और पावेल पेत्रोविच को तो जैसे एकदम सकता मार गया। चाकू की नोक पर मक्खन का लोदा थामे उनका हाथ हवा में ही स्थिर रह गया।

"वह निहिलिस्ट है," आरकादी ने फिर दोहराया।

"निहिलिस्ट," निकोलाई पेत्रोविच ने स्पष्ट उच्चारण के साथ कहा। "जहा तक मैं समझता हू, यह लैटिन भाषा का शब्द है। निहिल, अर्थात् 'कुछ नही'। तो क्या इसका मतलब ऐसे आदमी से है जो किसी चीज़ में विश्वास नहीं करता?"

"कहिए 'जो किसी चीज़ का मान नही करता'," पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर मक्खन लगाने के काम में जुट गए।

"जो हर चीज़ को आलोचक की नज़र से देखता है," आरकादी ने कहा।

"यह भी तो वही बात हुई न?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नहीं। एक ही बात नहीं है। निहिलिस्ट वह है जो किसी भी अधिकारी का मुह नहीं जोहता, आस्था के नाम पर किसी भी — चाहे वह कितना ही ऊचा क्यो न माना जाता हो — सिद्धान्त को नहीं स्वीकार करता।"

"सो तो ठीक। लेकिन क्या यह कोई अच्छी बात है?" पावेल पेत्रोविच ने टोका।

"यह परिस्थितियो पर निर्भर करता है, ताऊजी। कुछ लोगो के लिए यह अच्छा हो सकता है, और कुछ के लिए बहुत बुरा।"

"समझा। लेकिन यह मै साफ देखता हू कि यह हमारा रास्ता नही है। पुराने ढर्रे के हम लोग — हमारा विश्वास है कि बिना सिद्धान्तो के," (उन्होने इस शब्द का फ्रेंच लहजे मे बहुत ही नरमाई के साथ, उच्चारण किया, जबकि आरकादी ने फटाक से और पहले अक्षर पर ज़ोर देते हुए इसका उच्चारण किया था) "तुम्हारे ही शब्दो में कहना हो तो आस्था के साथ स्वीकार किये गये सिद्धान्तो के बिना एक डग भी नहीं हिला जा सकता, या एक सास तक नही ली जा सकती। Vous avez change tout cela*, खुदा तुम्हे अच्छा स्वास्थ्य और जेनरलशिप प्रदान करे। हम लोगो के लिए इतना ही बहुत है कि अलग खडे देखते और सुख लेते रहे, मौसिये ला   भला क्या कहते हैं उन्हे?"

"निहिलिस्ट," आरकादी ने पूरी स्पष्टता के साथ उच्चारण किया।

"हा, ठीक। हमारे ज़माने में हेगेलवादी हुआ करते थे, अब निहिलिस्ट होते है। देखना है कि तुम लोग नास्ति मे, शून्य में, किस तरह जीवन का ठाठ बाधते हो। लेकिन भैया निकोलाई पेत्रोविच, अब तुम ज़रा घटी तो बजा दो। मेरे कोको पीने का वक्त हो गया।"

---

* तुम उलटी गगा बहा चुके हो। (फ्रेंच) — स०

निकोलाई पेत्रोविच ने घटी वजाते हुए आवाज़ दी "दुन्याशा!" लेकिन दुन्याशा की जगह खुद फेनिचका वरामदे पर आ मौजूद हुई। युवती स्त्री—करीव तेईस वर्ष की आयु। गोरी-चिट्टी, नाज़ुक साचे में ढली। काले वाल और काली आखें। वालको जैसे भरे-पूरे होठ और छोटे छोटे नाज़ुक हाथ। छीट की खूव साफ-सुथरी पोशाक पहने। गोल-मटोल कधो पर नीले रग का नया रूमाल अछुवाया-सा पडा हुआ। हाथ में कोको का एक वडा-सा प्याला लिए। प्याला उसने पावेल पेत्रोविच के सामने रख दिया और लाज की पुतली वनी, सुन्दर चेहरे की अपनी कोमल त्वचा को गर्म रक्त के आवेग से गहरा लाल लिए, वही खडी रह गई। उसने अपनी आखें झुका ली, और उगलियो की कोरो पर हल्के से झुकी, मेज़ के पास खडी हो गई। लगता था जैसे वह इस लाज के मारे गडी जा रही हो, कि वह यहा आई क्यो, साथ ही यह भी जैसे वह अनुभव कर रही हो कि उसका अधिकार था इसी लिए वह यहा आई है।

पावेल पेत्रोविच ने आक्रोश से अपनी भौहे चढा ली और निकोलाई पेत्रोविच ने उलझन का अनुभव किया।

"गुडमौर्निग, फेनिचका," वह वुदवुदाए।

"गुडमौर्निग," सुस्पष्ट किन्तु स्थिर आवाज़ में फेनिचका ने कहा और आरकादी की ओर कनखियो मे एक नजर डाली। आरकादी भी मित्र-भाव मे मुस्करा दिया। इसके वाद वह चुपचाप लौट गई। उसकी चाल में एक हल्की डगमगाहट थी, लेकिन वह भी भली मालूम हो रही थी।

कुछ क्षणो तक वरामदे में निस्तव्धता छाई रही। पावेल पेत्रोविच ने अपनी कोको की चुस्की ली। फिर सहसा सिर उठाकर मन्द स्वर में कहा

"यह लीजिए, मिस्टर निहिलिस्ट भी आ रहे है।"

और सचमुच बाग मे लम्बे डग भरता, फूलों की क्यारियो को लाघता, बज़ारोव चला आ रहा था। उसका टक-कोट और पतलून दोनो कीचड में सने थे। उसके पुराने गोल हैट के कुल्ले के इर्द-गिर्द दलदली सरपत लिपटी हुई थी। दाहिने हाथ में वह एक छोटा-सा थैला लिए था जिसमें कोई जानदार चीज़ किलबिला रही थी। वह जल्दी ही बरामदे के पास आ गया और थोडा सिर झुकाकर अभिवादन करते हुए बोला

"गुडमौर्निंग, सज्जनो। अफसोस कि चाय पर आने में मुझे देर हो गई। मै अभी आया, ज़रा इन बदियो को ठीक-ठिकाने से रख आऊ।"

"क्या है उसमें – जोके?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही, मेंढक।"

"क्या तुम उन्हे खाते हो या पालते हो?"

"अपने प्रयोगो के लिए मैं इनका इस्तेमाल करता हू," बज़ारोव ने असलग्न भाव से कहा और भीतर घर में चला गया।

"वह इनकी चीर-फाड करेगा," पावेल पेत्रोविच ने कहा। "वह सिद्धान्तो में विश्वास नही करता, मेंढको में विश्वास करता है।"

आरकादी ने कुछ इस तरह अपने ताऊजी की ओर देखा जैसे उनपर तरस खा रहा हो। निकोलाई पेत्रोविच ने नमालूम-से अन्दाज़ में अपने कधे बिचकाए। पावेल पेत्रोविच को खुद यह अनुभव करते देर नही लगी कि उनका वार खाली गया है। बात बदलते हुए उन्होने फार्म और नये कारिन्दे का ज़िक्र छेड दिया जिसने हाल ही में उनसे शिकायत की थी कि फोमा – जो किराये पर काम करनेवाले मजूरो में से एक था – "झगडालू आसामी" है और काबू से एकदम बाहर हो गया है। "वह पूरा फितरती है," अन्य बातो के अलावा उसने कहा था, "उसने अपने आपको एक बदनाम 'शोहदा' बना रखा है। बहुत ही बुरा अजाम होगा उसका, मेरी यह बात गाठ बाध लो।"

वजारोव लौट आया, मेज़ पर वैठा और जल्दीवाज़ी के साथ चाय पीने लगा। दोनो भाई चुपचाप उसको देखते रहे। उधर आरकादी की आखें, छिपे तौर से, ताऊजी से पिता और पिता से ताऊजी की ओर चक्कर लगाती रही।

"क्या दूर निकल गए थे?" आखिर निकोलाई पेत्रोविच ने वज़ारोव से पूछा।

"चिनार के झुरमुट के पास यहा एक छोटा-सा दलदल है। मेरी आहट पाते ही पाच चाहा पक्षी फुर्र से उड गए। तुम्हारे लिए शिकार का अच्छा मौका है, आरकादी।"

"क्या तुम्हे शिकार का शौक नही है?"

"नही।"

"सुना है, तुम भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो?"

"हा, भौतिक विज्ञान का, मोटे तौर से समूचे पदार्थ-विज्ञान का।"

"ग्रूश्लादरो ने इस क्षत्र में काफी प्रगति की है।"

"हा, इस विषय में जर्मन हमारे गुरु हैं," वजारोव ने अनमनेपन से जवाव दिया।

पावेल पेत्रोविच ने जर्मनो के वजाय ग्रूश्लादरो शब्द का प्रयोग व्यग के लिए किया था। लेकिन उसपर किसी का ध्यान नहीं गया।

"क्या आपकी राय में जर्मन इतने ऊचे हैं?" पावेल पेत्रोविच ने जैसे-तैसे अपनी आवाज़ को नर्म वनाते हुए पूछा।

उनके हृदय में, भीतर ही भीतर, झुझलाहट ने सिर उठाना शुरु कर दिया था। वजारोव की निरी अमलग्नता ने उनकी रईसाना

प्रवृत्ति को भडका दिया था। फौजी जर्राह का यह छोकरा, अदब-लिहाज़ तो दूर, वेमन से और मुहफट जवाव देता था, और उसके लहजे से गवारपन की–करीव करीव गुस्ताखी पर उतरी–ध्वनि निकलती थी

"उनके वैज्ञानिक असली जीव होते है।"

"वस, वस। और मै समझता हू कि रूसी वैज्ञानिको के वारे में तुम्हारी राय वहुत अच्छी न होगी। क्यो, ठीक वात है न?"

"है तो ऐसा ही।"

"वाह, कितनी सराहनीय निःस्वार्थता है!" अपने वदन को सीधा तानते और सिर को पीछे की ओर फेंकते हुए पावेल पेत्रोविच ने पलटकर जवाव दिया। "लेकिन आरकादी निकोलायेविच हमें अभी अभी वता रहे थे कि आप किसी अधिकारी को–चाहे जो भी वह हो–नही मानते और उनका विश्वास नही करते।"

"मानने और विश्वास करने की इसमें क्या वात है, मै क्यो उन्हे मानू, क्यो किसी पर विश्वास करू? जब कोई समझ की वात करता है तो मै सहमत हो जाता हू। सीधी-सी वात है।"

"क्या जर्मन सव समझ की वात करते है?" पावेल पेत्रोविच ने वुदवुदाकर कहा और उनके चेहरे पर एक ऐसा निर्लिप्त और निस्सगता का भाव छा गया, मानो उनके विचार गूलर के फूल बटोरने चले गए हो।

"नही, सब नही करते," बज़ारोव ने जमुहाई को दबाते हुए जवाव दिया। स्पष्ट था कि शब्दो के इस खिलवाड को वह जारी नही रखना चाहता था।

पावेल पेत्रोविच ने आरकादी की ओर इस तरह देखा मानो कहना चाहते हो "तुम्हारे इस मित्र के सलीके की दाद देनी चाहिए!"

फिर, प्रयास के साथ वह कहते गये

"जहा तक मेरा अपना सम्बध है, मुझे अपना भी अपराध स्वीकार करना चाहिए कि मै जर्मनो को नापसद करता हू। रूसी जर्मनो को मै छोड़े देता हू। उनके कैण्डे से हम परिचित हैं। यहा तक कि जर्मनी के जर्मनो को भी मै बरदाश्त नही कर सकता। पुराने जमाने के तो फिर भी गनीमत थे– उन्हे एक हद तक बरदाश्त किया जा सकता था, तब उनके पास अपने तुम जानते ही हो, शिलर और ग्येटे थे मेरे यह भाई साहब, मिसाल के लिए, उन्हे बहुत बड़ा मानते हैं लेकिन अब तो वे सब रसायनशास्त्री और भौतिकवादी बन गए है "

"बढिया रसायनशास्त्री किसी भी कवि से बीस गुना अधिक उपयोगी होता है," बज़ारोव ने बीच में ही कहा।

"क्या सचमुच?" अपनी पलको को थोडा उठाते और उनीदेपन का भाव दिखाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। "तो, मेरी समझ में, कला को आप नही मानते?"

"धन कमाने की कला, या बवासीर को मार भगाने की कला!" खिल्ली-सी उडाते हुए बज़ारोव ने कहा।

"बस बस, जनाब। समझा, आपको मज़ाक सूझा है। तो आप हर चीज का खण्डन करते हैं–क्यो, ठीक है न? अच्छा ऐसा ही सही। इसका मतलब यह कि आप केवल विज्ञान में विश्वास करते है?"

"पहले ही बता चुका हू कि मै किसी चीज़ में विश्वास नही करता। और विज्ञान–सामान्य विज्ञान–है क्या? जैसे अन्य धधे और पेशे है, वैसे ही भाति के विशेष विज्ञान है। इनके अलावा सामान्य विज्ञान जैसी चीज़ का कही कोई अस्तित्व नही है।"

"बहुत खूब, जनाब। लेकिन अन्य मान्यताओ के बारे में आप क्या कहेगे – उनके बारे में जिन्हे मानव समाज अपनी परम्परा मे स्वीकार कर चुका है। क्या उनके प्रति भी आप वही नकारात्मक रवैया बरतते है?"

"आखिर मामला क्या है, कटघरे का जीव समझकर क्या जिरह की जा रही है?" बज़ारोव ने प्रतिवाद किया।

पावेल पेत्रोविच का रग कुछ पीला पड गया निकोलाई पेत्रोविच को लगा कि अब बीचबचाव करना ज़रूरी है।

"प्रिय येवगेनी वसीलियेविच, इस विषय पर और किसी दिन तुमसे अधिक विस्तार के साथ बाते करेगे। तुम्हारे विचार सुनेगे, अपने सुनाएगे। जहा तक मेरा अपना सम्बध है, यह जानकर मै बहुत खुश हू कि तुम पदार्थ-विज्ञान का अध्ययन कर रहे हो। सुना है कि धरती की उत्पादनशीलता के बारे में लीबिग ने कुछ शानदार आविष्कार किये है। कृषि-कार्य में तुम मेरी मदद कर सकते हो। तुम्हारी सलाह मेरे लिए उपयोगी हो सकती है।"

"मै तो आपकी सेवा में हाज़िर हू, निकोलाई पेत्रोविच। लेकिन लीबिग तक पहुचना अभी बहुत दूर की बात है। पढना शुरू करने से पहले क-ख-ग सीखना होता है। हमने तो अभी अक्षरो पर नजर जमाना भी नही सीखा।"

"इसमें शक नही, हो तुम निहिलिस्ट," निकोलाई पेत्रोविच ने सोचा। फिर कहा

"फिर भी, मौका आने पर, मै तुम्हे परेशान किये बिना न रहूगा। उम्मीद है, इसका तुम मुझे अधिकार दोगे। हा तो भाई साहब, मैं समझता हू कि कारिन्दे से मिलने का समय हो गया। चलिए, उधर चले।"

पावेल पेत्रोविच अपनी जगह से उठकर खडे हो गये।

"हा," किसी की भी ओर खासतौर से न देखते हुए बोले, "हमारी तरह, युग के महान मस्तिष्को के सम्पर्क मे वचित, पाच पाच या इससे भी अधिक सालो तक देहात में रहना वडी वदकिस्मती है। अनायास-अनजाने ही आदमी गवा वन जाता है। चाहे जितनी कोशिश करो कि जो कुछ सीखा है वह भूल न जाओ, लेकिन तभी – एक दिन पता चलता है – कि तुम्हे जग लग गया है, लोग कहते है कि इस तरह की मामूली मामूली वातो पर समय वरवाद करना समझदारी का लक्षण नही, और यह कि तुम खुद, वुढभस का शिकार हो गए हो। आह, लगता है जैसे युवा पीढी ने चतुराई में हमे पछाड दिया है।"

पावेल पेत्रोविच धीरे धीरे अपनी एडियो के वल मुडे और धीरे ही धीरे वाहर चले गए। निकोलाई पेत्रोविच ने भी उनका अनुसरण किया।

"क्या वे हमेशा से ही ऐसे है," दोनो भाइयो के जाने के वाद दरवाज़े के वद होते ही वज़ारोव ने शान्त भाव से पूछा।

"सुनो येवगेनी," आरकादी ने कहा, "इससे इन्कार नही किया जा सकता, और तुम भी यह जानते हो कि तुमने उन्हे वुरी तरह रौंद डाला है। तुमने उनका अपमान किया है।"

"नही वावा, इन गवार रईसो को गुदगुदाना, उनकी लल्लो-चप्पो करना मेरे वूते की वात नही। खोखले दम्भ, खोखली आदतो और खोखली टीमटाम के सिवा इनमें और कुछ नही है। अगर वह अपने को इतना गिनता है तो पीतर्सवर्ग में ही क्यो नही वना रहा लेकिन वहुत हो चुका, अव छोडो उसे। मैंने एक पनियल गोवरैला पकडा

है, एक दुर्लभ नमूना, Dytiscus marginatus, कभी सुना है यह नाम? मै तुम्हे दिखाऊगा।"

"मैंने वायदा किया था कि तुम्हे उनकी कहानी सुनाऊगा " आरकादी ने कहना शुरू किया।

"गोबरैले की कहानी?"

"बस बस, बहुत बनो नही, येवगेनी। अपने ताऊजी की कहानी। तुम खुद जान जाओगे कि जैसा तुम समझे हो, वैसे आदमी वह नही है। उपहास और तानो के नही, वह सहानुभूति के अधिकारी है।"

"मैं कब इससे इन्कार करता हू। लेकिन तुम उनका राग अलापने के लिए क्यो इतना तुले हो?"

"हमें किसी के प्रति अन्याय नही करना चाहिए, येवगेनी।"

"मतलब ?"

"सो कुछ नही। बस सुनो "

और आरकादी ने उसे अपने ताऊजी की कहानी सुनाई। यह कहानी पाठको को अगले परिच्छेद में मिलेगी।

७

अपने छोटे भाई निकोलाई की भाति पावेल पेत्रोविच किरसानोव की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर हुई थी, और इसके बाद सामन्तो के सैन्य प्रशिक्षण-केन्द्र में। छुटपन से ही वह अत्यन्त सुन्दर था। इसके अलावा उसमें आत्मविश्वास था, एक तीखा मसखरापन था, वह लोगो को, बिना चूके खुश करना जानता था। फौजी अफसरी का कमीशन मिलते ही उसने समाज में पाव रखना शुरू किया। लोगो ने उसे खूब बढाया-चढाया और वह दुनिया-भर के मनमाने कौतुक

रचता, अपनी हर प्रकार की उचित-अनुचित इच्छा पूरी कर लेता, खूब नकले उतारता, और इन सबके लिए भी उसे वाहवाही मिलती। स्त्रिया उसे देखकर पागल हो उठती, पुरुष उसे 'कुक्कड-मुर्ग' कहते और मन ही मन उससे जलते। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, वह अपने भाई के साथ उसी घर में रहता था। वह उसे हृदय से चाहता था, हालाकि दोनो में जरा भी साम्य नही था। निकोलाई पेत्रोविच के पाव में एक हल्का-सा कज था, उसका चेहरा-मोहरा छोटा, देखने में सुहावना लेकिन कुछ उदास-सा था। उसकी आखें छोटी और काली थी, बाल मुलायम और महीन। वह चीजो को सहज भाव से ग्रहण करना पसद करता था, लेकिन वह पढने का शौकीन था और सोसायटी से बचता था। पावेल पेत्रोविच साझ होते ही कभी घर पर न टिकता, साहस और चुस्ती में वह मशहूर था (सोसायटी के युवको में जिमनास्टिक का शौक उसी ने चलाया था) और पाच या छे से अधिक फ्रेंच पुस्तके उसने नही पढी थी। अठारह वर्ष की आयु में ही उसने कप्तानी प्राप्त कर ली थी और भविष्य का शानदार मानचित्र उसकी आखो के सामने खुला था। सहसा सभी कुछ उलट गया।

उन दिनो सन्त पीतर्सबर्ग की सोसायटी में एक स्त्री थी जो विरल मौको पर ही प्रकट होती थी। यह थी राजकुमारी 'र' जिसकी याद अभी भी बहुतो के हृदय में ताजा है। उसका पति बहुत ही सलीकेदार, प्रतिष्ठित, लेकिन अपेक्षाकृत भावशून्य था। उसके बच्चे नही थे। मोटे तौर पर यह कि वह कुछ अजीब जीवन बिताती थी। अचानक विदेशो के लिए चल पडती, और फिर अचानक ही रूस लौट आती। वह एक छिछली स्वच्छन्द युवती के रूप में प्रसिद्ध थी, मौज-मजे के भवर में बरबस कूद पडती, इतना नाचती

कि निढाल हो जाती, युवा लोगो से हसी-ठिठोली करती, धुधली रोशनी से युक्त अपने ड्राइगरूम में —दावत से पहले —उनका मन वहलाती। लेकिन रात को वह रोती और प्रार्थना करती। उसे चैन न मिलता। वह, आवेग-उद्वेग से भरी, अपने कमरे में चक्कर लगाते लगाते बहुधा सुवह कर देती, वेदना से अपने हाथो को मरोडती, या धर्म-पुस्तक खोले, पीली और सर्द, स्थिर बैठी रहती। दिन निकलता और वह एक वार फिर फैशन की पुतली बन जाती, मित्रो के यहा चक्कर लगाती, हसती और वतियाती, जी बहलाने का ज़रा-सा भी अवसर पाने पर उसमें कूदने के लिए तैयार नज़र आती। उसका आकार-प्रकार वहुत ही शानदार था। उसके बाल घने और सुनहरे थे। गुथी हुई चोटिया जव घुटनो के नीचे तक लटकती तो ऐसा मालूम होता जैसे सोने की नागिने वल खा रही हो। लेकिन फिर भी उसे कोई सुन्दर नही कह सकता था। उसके चेहरे में केवल एक ही चीज़ अच्छी थी—उसकी आखें, और आखें भी इतनी नही—इसलिए कि वे कजी और कुछ वडी नही थी—वल्कि उनकी नज़र, जो बहुत ही गतिशील और गहरी थी, दुनिया से बेपरवाह उपेक्षा का भाव लिए, उदासीनता की हद तक असम्भव उमगो-आकाक्षाओ में डूबी— एक ऐसी नज़र जिसकी थाह नही मिलती थी। उनमें, उसकी उन आखो में, एक अजीब चमक थी जो उस समय भी उसका साथ नही छोडती थी जब वह बेमानी लतीफो का तूमार बाधती थी। अत्यन्त नफासत के साथ वह कपडे पहनती थी। एक नृत्य-समारोह में पावेल पेत्रोविच की उससे मुठभेड हुई, उसके साथ माज़ुर्का नृत्य में वह शामिल हुआ और इस नृत्य के दौरान में एक भी शब्द उसके मुह से ऐसा नही निकला जिसमें कोई तत्व हो। पावेल पेत्रोविच जी-जान से उसपर न्योछावर हो गया। सहज विजय पाने में वह माहिर था। यहा

भी जल्दी ही उसने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। लेकिन मफलता से उसका जोश ठडा न पडा, वल्कि इस स्त्री के साथ उसका लगाव और भी अधिक प्रवल तथा कसकपूर्ण हो गया। कारण कि इस स्त्री में, पूर्ण आत्मसमर्पण के क्षणो में भी, कोई ऐसी चीज़ वच रहती थी जो अनुल्लघनीय तथा पहुच से वाहर रह जाती थी, ऐमी जिमे कोई नही छू मकता। उमकी आत्मा में कुछ था जो रहस्यमय था, सिवा परमात्मा के जिसे अन्य कोई नही जान सकता था। ऐसा लगता था जैंमे उसमें किन्ही दैवी शक्तियो का वास हो जिनकी थाह वह खुद भी नही पा सकती थी, जो उसे अपने इशारे पर नचाती थी और जिनकी मनमानी के सामने उसकी दीन-हीन समझ की कोई हस्ती नही थी। उसका आचरण क्या था, असगतियो का वेतुक मेल था। वह पत्र भी लिखती तो एक ऐसे आदमी को जो उसके लिए करीव करीव अपरिचित था। इन पत्रो के मिवा और कोई ऐमी चीज़ नही थी जो उमके पति के जायज़ सन्देहो को उकसाती। उमका प्रेम शोक में डूवा होता। जिसे वह अपने प्रेम का पात्र चुनती, उनके माथ न कभी वह हमती, न मज़ाक करती, वस चुपचाप सुनती और अचरज का भाव लिए उसकी ओर ताकती रहती। कभी कभी, और अधिकाशत अचानक, अचरज का यह भाव कण्टकित कर देनेवाले भय मे वदल जाता। उमके चेहरे पर एक मुर्दनी-सी छा जाती, वहशियो जैसी वह दिखने लगती। वह अपने आपको शयनकक्ष में वद कर लेती और उमकी दामी, ताली के छेद पर कान लगाकर, घुटी हुई उसकी सुवकियो की आवाज़ सुनती। मृदु प्रेम-क्रीडा के वाद जव कभी किरसानोव उमके पास मे अपने कमरे में लौटकर आता तो, अदवदाकर, पूर्ण विफलता की भावना मे उमका हृदय मरोड खाता, प्रतारणा की भावना उमके हृदय को वुरी तरह कचोटती। उमका हृदय वेदना में डूव जाना और

वह अपने से पूछता "आखिर मै और क्या चाहता हू?" एक वार उसने उसे एक अगूठी भेंट की जिसके नग पर स्फिक्स* का चित्र अकित था।

"यह क्या है?" उसने पूछा। "स्फिक्स है?"

"हा," उसने कहा, "और यह स्फिक्स तुम हो।"

"मै?" उसने प्रश्न किया और, धीरे धीरे, अपनी उमी अभेद्य नज़र से उसकी ओर देखा। फिर, अपनी उसी विचित्र नज़र से देखते हुए, अस्पष्ट व्यग्य के स्वर में वोली "यह वहुत अधिक चापलूसी का प्रदर्शन है, समझे!"

पावेल पेत्रोविच उस समय भी यत्रणा पाता था जव राजकुमारी 'र' उससे प्रेम करती थी, लेकिन जव वह उसकी ओर से ठडी पड गई — और यह जल्दी ही हुआ — तो इसने उसे करीव करीव पागल ही बना दिया। प्रेम और ईर्ष्या ने उसे झझोड डाला। वह उसे सताता, जहा भी वह जाती उसका पीछा करता। उसकी हरकतो से तग आकर वह विदेश चली गई। उसने अपने कमीशन से त्यागपत्र दे दिया। मित्रो ने समझाया, अफसरो ने हुज्जत की, लेकिन वेकार। वह भी राजकुमारी के पीछे पीछे चल दिया। चार साल तक उसने विदेशो की खाक छानी — कभी राजकुमारी के साथ लगा रहता, कभी उसे जान-वूझकर आखो से ओझल हो जाने देता। वह अपने आपको खुद अपनी नज़रो में गिरा हुआ अनुभव करता, अपने हृदय की इस अस्थिरता से घृणा करता लेकिन सव वेकार। उसकी वह छवि —

---

*ग्रीक पौराणिक गाथाओ में वर्णित एक ऐसा प्राणी जिसका धड शेरनी का और सिर स्त्री का है। — स०

चकरा देनेवाली, करीव करीव वेहूदा, लेकिन मुग्धकारी छवि—उसके हृदय में खूव गहरे उतर चुकी थी। वाडेन में, सयोगवश, पुराने स्तर पर वे फिर एक-दूसरे के निकट आ गए। ऐसा मालूम होता था जैसे राजकुमारी ने इतना प्यार पहले कभी उसपर न्योछावर नही किया था लेकिन अभी मुश्किल से एक महीना भी न वीता होगा कि सव कुछ गायव हो गया—प्रेम की लौ जैसे आखिरी वार भडककर सदा के लिए वुझ गई। यह अनुभव कर कि विच्छेद के सिवा अव और कोई चारा नही है, उसने चाहा कि वह, कम से कम, उसका मित्र ही वना रहे, मानो उस जैसी स्त्री से मित्रता वनाए रखना सम्भव हो लेकिन वह वाडेन में उसे चकमा देकर खिसक गई और इसके वाद उससे कतराती रही। किरसानोव रूस लौट आया। उसने कोशिश की कि अपने पुराने जीवन को फिर शुरू करे, लेकिन पुरानी चूल में वैठना उसके लिए सम्भव नही हुआ। अभिशप्त की भाति कभी वह यहा जाता, कभी वहा। सभा-सोसायटी में भी वह निकलता, दुनियादारी का भी परिचय देता, यहा तक कि दो या तीन नयी विजयो का सेहरा वाधने में भी वह सफल हुआ, लेकिन खुद अपने या दूसरो के लिए भरी-पूरी आशा-आकाक्षाओ से—उमगो की रवानी से—उसका हृदय सूना हो चुका था, और अपनी स्थिति को वेहतर वनाने का वह कोई प्रयास नही करता था। वह वूढा हो चला, सिर के वाल सफेद होने लगे। साझ को किसी क्लव मे जाकर वैठना, झुझलाहट भरी ऊव या घरवाली-विहीन मित्रो के साथ गप्पें हाकने में समय विताना उसके लिए जरूरी हो गया। निश्चय ही यह कोई अच्छा लक्षण नहीं। ऐसी हालत में, कहने की आवश्यकता नही, घर वसाने का सवाल ही नही उठता—यह वात उसके मन से कोसो दूर थी। इस तरह दस साल गुजर गए—वेरग, वजर, और गतिवान—

भयानक रूप से गतिवान। रूस में समय जितनी तेज़ी से गुज़रता है, उतनी तेज़ी से अन्य कही नही, और कैदखाने में—लोग कहते है—वह और भी तेज़ी से गुज़रता है। एक दिन, उस समय जबकि वह क्लव में भोजन कर रहा था, पावेल पेत्रोविच ने राजकुमारी 'र' की मृत्यु का समाचार सुना। करीव करीव पागलपन की स्थिति में पेरिस में उसकी मृत्यु हुई थी। वह मेज़ पर से उठ गया और क्लव के कमरो में इधर से उधर टहलने लगा। फिर, उस जगह जहा लोग ताश खेल रहे थे, वह इस तरह रुककर खडा हो गया मानो पत्थर की मूर्ति हो। यह सब होने पर भी उस दिन, अन्य दिनो की अपेक्षा, वह कुछ पहले घर नही लौटा। इसके कुछ दिन वाद उसे एक छोटा-सा पारसल मिला। इसमें वही अगूठी थी जो उसने राजकुमारी 'र' को दी थी। स्फिक्स के चित्र पर क्रास का चिन्ह बना था और पावेल पेत्रोविच के लिए उसने कहला भेजा था कि क्रास ही उसकी पहेली का जवाब है।

यह १८४८ के प्रारम्भ की घटना है। ठीक उन्ही दिनो अपनी पत्नी की मृत्यु के वाद, निकोलाई पेत्रोविच सन्त पीतर्सबर्ग पहुचा। देहात में जाकर निकोलाई पेत्रोविच के बसने से लेकर अब तक पावेल पेत्रोविच अपने भाई की खैर-खबर से करीब करीब एकदम बेगाना था। निकोलाई पेत्रोविच का विवाह, सयोग की बात, उन्ही दिनो हुआ था जिन दिनो कि राजकुमारी 'र' के साथ पावेल पेत्रोविच के परिचय का शुरूआत चल रहा था। विदेशो में भटकने के बाद वह अपने भाई के पास गया था। उसका इरादा था कि अपने भाई के दाम्पत्य सुख की छाया में कुछ महीने वह गुज़ार देगा। लेकिन वह इसे एक सप्ताह से अधिक नही सह सका। दोनो भाइयो की स्थिति का अन्तर ज़रूरत से ज्यादा उभर आया। १८४८ में यह अन्तर उतना नही उभरा। निकोलाई पेत्रोविच

अपनी पत्नी को गवा चुका था, पावेल पेत्रोविच की स्मृतियो का भी अव कोई अवशेष नही रहा था। राजकुमारी की मृत्यु के वाद उसने उसे अपनी स्मृति से निर्वासित करने की भरसक कोशिश की थी। लेकिन निकोलाई पेत्रोविच को यह सुख-सन्तोष तो था कि उसका जीवन भली भाति गुज़रा – एक वेटा था जो उसकी आखो के सामने वढ रहा था। उधर पावेल – ठीक इसके प्रतिकूल – एकाकी और विधुर, जीवन के उस धुधलके में प्रवेश कर रहा था जिसमें आशाए खेद का स्थान ले लेती है और खेद आशाओ का स्थान ले लेता है, जव कि युवावस्था तो विदा हो जाती है लेकिन वृद्धावस्था का अभी पदार्पण नही होता।

जीवन का यह काल यो सभी के लिए कठिन होता है, लेकिन पावेल के लिए तो और भी भारी पडा। कारण कि अतीत के साथ उसने अपना सर्वस्व – अपना सभी कुछ – खो दिया था।

"तुम्हे अव मारिनो चलने का न्योता नही दूगा," निकोलाई पेत्रोविच ने एक समय उनसे कहा (जागीर का यह नाम उसने अपनी पत्नी के सम्मान में रखा था), "जव मेरी प्रिय पत्नी जीवित थी, तभी तुम वहा ऊव उठे थे, और अव तो मुझे डर है कि तुम्हारा एकदम दिल ही वैठ जाएगा।"

"उन दिनो न तो मेरा चित्त ठिकाने था न वुद्धि," पावेल पेत्रोविच ने जवाव दिया था, "अव वुद्धि चाहे ठिकाने पर न आई हो, लेकिन चित्त जरूर आ गया है। अव वह वात नहीं, और अगर तुम्हे ऐतराज न हो मैं हमेशा के लिए तुम्हारे साथ रहना पसद करूगा।"

निकोलाई पेत्रोविच ने इसका जवाव उसे अपनी वाहो में भर-कर दिया। लेकिन, इस वातचीत के वाद भी डेढ साल गुज़र गया,

तव कही जाकर पावेल पेत्रोविच ग्रपने इरादे को कार्यरूप मे परिणत कर सका। ग्रौर एक वार जव वह देहात मे ग्राकर वस गया, उसके वाद वह फिर कभी वहा से नही हिला – उन तीन जाडो में भी नही जव कि निकोलाई पेत्रोविच ग्रपने पुत्र के पास पीतर्सवर्ग में जाकर रहा था। उसने पुस्तकें – ग्रधिकाशत ग्रग्रेज़ी – पढने में मन लगाया। यो, सच पूछो तो उसका समूचा जीवन ही ग्रग्रेज़ी साचे मे ढला था। वह विरले ही ग्रपने पडोसियो से मिलता था, केवल चुनाव के दिनो में ही वाहर निकलता था, ग्रौर तव भी – ग्रामतौर से – ग्रपना मुह नही खोलता था, ग्रौर ग्रगर खोलता भी था तो उस समय जव ग्रपनी उदार फब्तियो से वह पुराने ज़माने के जागीरदार कुलीनो को चिढाना ग्रौर चौंकाना चाहता था। इसी के साथ साथ वह नयी पीढी से भी कन्नी काटता था। दोनो ही दल उसे ग्रहकारी समझते, लेकिन दोनो ही उसकी इज़्ज़त भी करते। उनके ऊपर उसकी वेदाग कुलीन नफासत का, उसकी 'विजयो' की ख्याति का, कपडे पहनने के उसके उत्कृष्ट ढग ग्रौर सर्वश्रेष्ठ होटलो के उत्कृष्ट कमरो में उसके ठहरने का, भोजन करने के उसके वढिया तौर-तरीके का ग्रौर इस तथ्य का कि एक वार लुई फिलिप की मेज़ पर वह वैलिगटन के साथ भोजन कर चुका था, रौव छाया हुग्रा था। वह हमेशा ग्रपने साथ ग्रसली चादी का ड्रैसिग केस ग्रौर मुसाफिरी वाथ-टव (स्नान करने का पात्र) लेकर चलता था, उसका वदन एक खास – वहुत ही शानदार – इत्र में वसा रहता था, ताश खेलने में वह वेजोड था ग्रौर मज़ा यह कि हमेशा उसमें हारता था – इन सव वातो के लिए, ग्रौर ग्रन्त में इस वात के लिए भी कि वह ग्रपने ईमान का एकदम पक्का था, सव उसका मान करते थे। स्त्रिया उसे उदासी में खोया एक ग्राकर्षक व्यक्ति समझती, लेकिन वह उनकी सगत पाने का प्रयत्न न करता

"सो देखा, येवगेनी," अपने वर्णन को पूरा करते हुए आर्कादी ने कहा, "अब तुम खुद समझ सकते हो कि ताऊजी के साथ तुमने कितना अन्याय किया है। इस बात का मैं ज़िक्र नही करूँगा कि कितनी बार उन्होंने मेरे पिता को कठिनाइयों में से उबारा, अपनी सारी पूँजी उन्हें सौंप दी – तुम्हें शायद मालूम न हो, लेकिन जागीर का हिस्सा-बाँट नही हुआ है – फिर भी वह हर किसी की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं और हमेशा किसानों की तरफदारी करते हैं। हाँ, यह सच है कि जब वह किसानों से बात करते हैं तो नाक बिचकाते और इत्र की महक छोड़ते हैं "

"दिमागी सनक – इसमें शक नहीं!" बज़ारोव ने बीच में ही कहा।

"हो सकता है, लेकिन उनका हृदय ठिकाने पर है। इसके अलावा, उन्हें मूर्ख भी किसी तरह नहीं कहा जा सकता। उन्होंने जाने कितनी नेक सलाहें मुझे दी हैं खासतौर से खासतौर से स्त्रियों के बारे में।"

"ओह, अपने दूध से खुद को जलाने के बाद दूसरों के ठंडे पानी पर फूँक मारना। यह सब हम खूब जानते हैं।"

"संक्षेप में यह कि," आर्कादी कहता गया, "विश्वास करो, वह बेहद दुःखी हैं। उनसे घृणा करना शर्म की बात है।"

"लेकिन उनसे घृणा कौन करता है?" बज़ारोव ने प्रतिवाद किया। "फिर भी, यह तो मानना ही पड़ेगा कि वह आदमी जिसने एक स्त्री के प्रेम के दाँव पर अपना समूचा जीवन लगा दिया और जो, दाँव में हार जाने के बाद टुकड़े टुकड़े हो जाता है और अपने आपको बर्बाद होने देता है – इस तरह का जीव आदमी नहीं है, उसे मर्द नहीं कहा जा सकता। तुम कहते हो कि वह दुःखी है।

तुम से ज्यादा यह और कौन जानेगा। लेकिन उस सारी खुराफात मे अभी तक उनका पीछा नही छूटा है। मेरा यह पक्का विश्वास है कि वह अपने आपको सचमुच चतुर समझते है। सिर्फ इसलिए कि वह गालिगनानी जैसे चियडा-पत्र पढते है और कभी कभी, भूले-भटके, किसी दहकान को कोडो की मार से वचा लेते हैं।"

"लेकिन तुम्हे यह भी याद रखना चाहिए कि किस तरह की शिक्षा-दीक्षा उन्हे मिली है और किस ज़माने में उन्हे जीवन विताना पडा है।" आरकादी ने कहा।

"शिक्षा-दीक्षा?" वज़ारोव वोल उठा। "हर आदमी खुद अपने को शिक्षित करता है—मिसाल के लिए जैसे कि मै और जहा तक ज़माने का सम्वध है, मै क्यो उसपर निर्भर रहू? अच्छा यही है कि वह मुझपर निर्भर रहे। नही, मेरे प्यारे साथी, यह सव कुछ नही। यह निरा ह्रास है, खोखलापन है। और ज़रा यह तो वताओ कि पुरुप और स्त्रियो के वीच के उन रहस्यमय सम्वधो का भला इससे क्या वास्ता? हम शरीर-विज्ञानशास्त्री इन सम्वधो का सारा रहस्य जानते है। ज़रा आख की वनावट का अध्ययन करके तो देखो, वह भेद-भरी चितवन तुरत हवा हो जायेगी जिसके पीछे तुम मरते हो। यह सव रोमाण्टिकता है, वकवास है, कूडा-करकट और मन का भुलावा है। इससे तो यह कही अच्छा है कि चलो, ज़रा अपने गोवरैले को देखें।"

और वे दोनो वज़ारोव के कमरे की ओर चल दिए। कमरे से एक विचित्र प्रकार की अस्पताली तथा सस्ते तम्वाकू की मिश्रित गघ आ रही थी।

जागीर के कारिन्दे के साथ अपने भाई की बातचीत के समय पावेल पेत्रोविच अधिक देर तक वहा नही टिके। कारिन्दा लम्बे कद और छरहरे बदन का आदमी था। क्षयग्रस्त-सी मीठी उसकी आवाज़ थी और आखो से पाजीपन झलकता था। अपने मालिक की सभी बातो के जवाब में एक ही अलाप उसके मुह से निकलता – "क्यो नही, मालिक! बेशक, मालिक!" और सभी किसानो को वह पियक्कड तथा चोर जताने का प्रयत्न करता। हाल ही में नये ढर्रे पर ढाला गया फार्म बिना तेलियाए छकडे की भाति चू-चरर करता और घर के बने कच्ची लकडी के सामान की भाति तडक चला था। निकोलाई पेत्रोविच नाउम्मीद तो नही हुए, लेकिन वह रह रहकर उसासें छोडते और सोच में पड जाते। उन्होने अनुभव किया कि बिना पूजी के गाडी नही चल सकती, लेकिन पास की जमा-पूजी करीब करीब सब खत्म हो चुकी थी। आरकादी ने सच ही कहा था। पावेल पेत्रोविच एक से अधिक बार अपने भाई को उबार चुके थे। अधिकतर जब वह उन्हे चूर चूर होते तथा मुसीबतो से छूटने के लिए सिर खपाते देखते तो वह धीमे डगो से खिडकी के पास जाकर खडे हो जाते और अपनी जेबो में हाथ खोसते हुए बुदबुदाते – "Mais je puis vous donner de l'argent*," और उन्हे कुछ धन दे देते। लेकिन उस दिन खुद उनके पास कुछ नही था, इसलिए उन्होने वहा से खिसक जाना ही अच्छा समझा। कारबार की चिन्ताओ से उन्हें बेहद ऊब मालूम होती थी। इसके अलावा यह सन्देह भी उन्हें बराबर कुरेदता रहता था कि अपने

---

*मेरी जेब तुम्हारे लिए बराबर खुली रहेगी। (फ्रेंच)– स०

तमाम जोश और क्रियाशीलता के बावजूद निकोलाई पेत्रोविच चीज़ो को ठीक ढग से नही सभाल पाते। हालाकि यह वह खुद भी नही बता सकते थे कि वह कहा गलती करते है। "मेरा भाई काफी व्यवहार कुशल नही है," वह मन ही मन अपने से कहते, "उसे धोखा दिया जा रहा है।" इसके प्रतिकूल निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की समझ-बूझ की भारी कद्र करते थे और हमेशा उनसे सलाह लेते थे। "मै एक मुलायम और कमज़ोर इरादे का आदमी हू। मेरा सारा जीवन इन पिछडे इलाको में ही गुज़रा है," वह कहते, "जबकि तुम्हारा लोगो मे खूब रब्त-ज़ब्त रहा है और तुम उनकी रग रग पहचानते हो। तुम्हारी दृष्टि गिद्ध की भाति पैनी है।" जवाब में पावेल पेत्रोविच केवल मुह फेर लेते, अपने भाई के मस्तिष्क को ठिकाने पर लाने का प्रयत्न न करते।

निकोलाई पेत्रोविच को अपने अध्ययन कक्ष में छोड वह उस गलियारे में निकल आए जो घर के अग्रभाग को उसके पिछले हिस्से से अलग करता था और एक नीचे दरवाज़े के सामने चिन्तित मुद्रा में ठिठककर खडे हो गए। उन्होने अपनी मूछो को नोचा और दरवाज़े को खटखटाया।

"कौन है? आइए, भीतर चले आइए," फेनिचका की आवाज़ आई।

"मै हू," दरवाज़े को खोलते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा।

फेनिचका कुर्सी पर अपने बच्चे को लिए हुए बैठी थी। वह उछलकर खडी हो गई। उसने बच्चे को एक लडकी के हाथो में थमा दिया जो उसे लेकर तुरत कमरे मे बाहर चली गई। फेनिचका ने फुर्ती से अपने सिर का रूमाल ठीक किया।

"बाधा देने के लिए क्षमा करे," उसकी ओर देखे बिना ही पावेल

पेत्रोविच ने कहना शुरु किया, "मुझे तुमसे केवल एक बात कहनी थी   मेरा विश्वास है कि आज कोई न कोई शहर जा रहा होगा मेहरबानी हो अगर मेरे लिए कुछ हरी चाय मगवा दो।"

"बहुत अच्छा, मालिक," फेनिचका ने जवाब दिया, कितनी चाहिए?"

"ओह, मेरे खयाल में आधा पौंड काफी होगी," पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर इर्द-गिर्द तथा फेनिचका के चेहरे पर भी एक उडती-सी नजर डालते हुए बोले, "आज तो यहा कुछ परिवर्तन नज़र आ रहा है।" यह देखकर कि वह समझ नही पाई है, उन्होने फिर कहा—"ये पर्दे "

"अरे हा, ये पर्दे, मालिक! निकोलाई पेत्रोविच ने मुझे दिए थे। लेकिन ये तो काफी दिनो मे टगे है।"

"हा, और तुम्हारे कमरे में आए भी मुझे काफी दिन हो गए। अब यह बढिया हो गया।

"यह सब निकोलाई पेत्रोविच की कृपा का फल है," फेनिचका ने बुदबुदाकर कहा।

"अपने पुराने कमरे के मुकाबिले में यहा तो ज्यादा आराम से हो न?" बहुत ही विनम्रता के साथ, अपने होठो पर ज़रा-सी मुसकराहट लाए बिना, पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"हा, मालिक।"

"तुम्हारे पुराने कमरे में अब कौन है?"

"धोबीघर की दासिया।"

"ओह!"

पावेल पेत्रोविच चुप हो रहे। "अब ये जा रहे है," फ़ेनिचका ने सोचा, लेकिन वह गए नही। फेनिचका उनके सामने, अपनी

उसी जगह पर, स्थिर खडी अपनी उगलियो को तोडती-मोडती रही।

"बच्चे को तुमने वाहर क्यो भेज दिया?" आखिर पावेल पेत्रोविच ने कहा। "वच्चो का मुझे शौक है। ज़रा वुलवाओ न उसे।"

घवराहट और आनन्द से फेनिचका के गालो पर लाली दौड गई। पावेल पेत्रोविच से उसे डर लगता था। विरले ही वह उससे वोलते थे।

"दुन्याशा!" उसने आवाज़ दी, "ज़रा मित्या को यहा ले आओ!" (घर में किसी को भी वह 'तू' से सम्वोधित नही करती थी), "नही, ज़रा ठहरो। पहले उसे कपडे तो पहना लो।" फेनिचका दरवाज़े की ओर वढी।

"अरे छोडो भी।"

"अभी आई। वस, एक मिनट।" फेनिचका ने जवाव दिया और ओझल हो गई।

अकेले रह जाने पर पावेल पेत्रोविच ने कमरे का सावधानी से पर्यवेक्षण किया। छोटा-सा नीची छतवाला यह कमरा वहुत ही सुहावना और साफ-सुथरा था। ताजा रगे हुए फर्श के तख्तो से, कामोमिले तथा मेलिसा की खुशवू आ रही थी। दीवारो के सहारे पखेनुमा पीठवाली कुर्सिया रखी थी। स्वर्गीय जेनरल ने इन्हें लडाई के दिनो में पोलैण्ड में खरीदा था। एक कोने में पलग बिछा था जिसके ऊपर मसलिन का चदोवा तना था। उसी से सटा मेहराबदार ढक्कनवाला एक सन्दूक था जिसमें पत्तिया जडी थी। इसके सामनेवाले कोने में, सन्त निकोलाई की एक बडी काली प्रतिमा के आगे एक छोटा-सा दीप जल रहा था। आलोक-मण्डल से एक लाल फीता लटका था। इसके दूसरे छोर पर चीनी का एक छोटा-सा

कुमकुमा वधा था जो मन्त के वक्ष पर झूल रहा था। खिडकियो की ग्रोटक पर, जिनका हरा रग चमक रहा था, मर्तवान रखे थे। इनमें पिछले साल के अचार-मुरब्बे भरे थे। इनके मुह, वडी सावधानी से, कागज से वद थे और फेनिचका ने, अपनी टेढी-मेढी लिखावट में, कागज पर लिख रखा था "गूज़वेरी"। निकोलाई पेत्रोविच को यह मुरब्बा खासतौर से पसद था। छत से वधी रस्सी में एक पिजरा लटका था। उसमें टुडी दुमवाला सिसकिन पक्षी निरन्तर चहचहा रहा था, इधर से उधर फुदक रहा था, और पिजरा लगातार हिल और डोल रहा था। पटुवा के बीज फर्श पर गिरकर पटापट की आवाज़ कर रहे थे। खिडकियो के बीच की दीवार पर, खानेवाली एक छोटी अलमारी के ऊपर, विभिन्न मुद्राओ में निकोलाई पेत्रोविच के कुछ रद्दी-से फोटो लटके थे। उन्हे किमी मामूली फोटोग्राफर ने उतारा था। इनकी वग़ल में ही खुद फेनिचका का एक फोटो लटका था जो एकदम वाहियात था। छोटे-से काले चौखटे के भीतर से एक अधा और अस्वाभाविक मुसकान से युक्त चेहरा झाक रहा था, वाकी सव लिप-पुतकर वरावर हो गया था। फेनिचका के चित्र के ऊपर सिरकामी ढग का नम्दे का चोगा पहने जेनरल येरमोलोव का चित्र था। अपनी भौंहो को सिकोड, दूर हवा में अटके काकेशी पहाडो को वह घूर रहे थे। जूते की शक्ल का एक रेशमी पिनकुशन उनकी भौंहो के आगे झूल रहा था।

पाच मिनट हो गए। वरावरवाले कमरे में सरसराहट और फुसफुसाहट-सी हो रही थी। पावेल पेत्रोविच ने अलमारी में से एक किताव उठाई जो अगूठे के धब्बो से भरी थी। यह मस्माल्स्की कृत 'शाही स्त्रेल्त्सी' की कोई जिल्द थी। उन्होने उसके पन्ने पलटने शुरु किए तभी दरवाजा खुला और अपनी वाहो में मित्या को लिए

हुए फेनिचका ने प्रवेश किया। उसने उसे एक छोटी-सी लाल कमीज़ पहना रखी थी जिसके कालर में ज़री की बेल कढी थी। उसके बाल सवारे हुए थे और मुह साफ किया हुआ था। वह हाफ रहा था, अपने बदन को किलबिला और छोटे-छोटे हाथो को हिला रहा था जैसा कि सभी स्वस्थ बच्चे करते है। अपनी लकदक कमीज़ में, साफ मालूम होता था, कि वह एक रोब का अनुभव कर रहा है —उसका नन्हा गुदगुदा बदन आनन्द से खिला पडता था। फेनिचका ने भी अपने बालो को सवार लिया था और रूमाल भी बदल डाला था, हालाकि इतना कष्ट करने की कोई आवश्यकता नही थी। कारण स्पष्ट है। गोद में हृष्ट-पुष्ट शिशु लिए सुन्दर युवती मा से अधिक मुग्धकर चीज़ इस दुनिया में और क्या हो सकती है?

"वाह, मेरे नन्हे पहलवान!" दुलार में भरकर मित्या की दोहरी ठोडी को अपनी तर्जनी उगली के नाखून से गुदगुदाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा। बच्चे ने मिसकिन पक्षी की ओर ताकते हुए हुमक-कर किलकारी भरी।

"अरे देख, ताऊजी है," उसे एक हल्का-सा झटका देते और अपना मुह झुकाकर उसके निकट ले जाते हुए फेनिचका ने कहा। दुन्याशा ने खिडकी की ओटक के ऊपर ताम्बे की मुद्रा पर धूपबत्ती जलाकर रख दी।

"यह कितने महीने का है?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"छै महीने का। ग्यारह तारीख मे सातवा लग जाएगा।"

"सातवा क्यो, आठवा नही लगेगा, फेदोसिया निकोलायेवना?" दुन्याशा ने दबे अन्दाज़ में कहा।

"नही, एकदम सातवा!"

बच्चा फिर गुदगुदा उठा। सन्दूक मे उसकी आखें जा चिपकी

और फिर, अचानक, एक साथ अपनी पाचो उगलियो से मा की नाक तथा होठो को पकड लिया।

"पाजी, पाजी कही का!" अपना मुह हटाने का प्रयत्न न करते हुए फेनिचका ने कहा।

"अरे यह तो मेरे भाई जैसा है," पावेल पेत्रोविच ने कहा।

"उन जैसा नही होगा तो कैसा होगा?" फेनिचका ने मन में कहा।

"हा," पावेल पेत्रोविच कहता गया, जैसे अपने से ही वाते कर रहा हो, "सच, रत्ती-भर भी फर्क नही!"

उन्होने वडे ध्यान से, करीव करीव उदासी पर उतरे भाव से, फेनिचका की ओर देखा।

"इधर देख ताऊजी!" फेनिचका ने दोहराया, इस वार फुसफुसाती आवाज़ में।

"ओह, पावेल। सो आप यहा है!" महसा निकोलाई पेत्रोविच की आवाज़ सुनाई दी।

पावेल पेत्रोविच, भौंहो में वल डाले, घूमकर मुड गए। लेकिन उनका भाई कुछ इतने अकृत्रिम उल्लास तथा गदगद भाव से उनकी ओर देख रहे थे कि जवाव में वह भी मुसकराए विना नही रह सके।

"तुम्हारा यह नन्हा वहुत ही प्यारा है," कहते हुए उन्होने अपनी घडी की ओर देखा। "अपने लिए थोडी चाय मगानी थी। सोचा, कहता चलू।"

और लापरवाही का सा भाव दिखाते हुए तुरत कमरे से चले गए।

"वह खुद अपने आप आए थे?" निकोलाई पेत्रोविच ने फेनिचका से पूछा।

"हा। उन्होने दरवाज़ा खटखटाया, और वस भीतर आ गए।"

"ठीक। और क्या आरकादी भी फिर तुम्हारे पास आया था?"

"नही। लेकिन, निकोलाई पेत्रोविच, क्या यह अच्छा न होगा कि मै फिर अपने पुराने कमरे मे लौट जाऊ?"

"सो किस लिए?"

"मै सोच रही थी कि मौजूदा सूरत में यह सबसे अच्छा होगा।"

"नही नही," कुछ हकलाते और अपने माथे पर उगलिया फेरते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "ऐसा ही था तो सब पहले सोच लेना चाहिए था।" फिर, सहसा हुमकते और बच्चे के पास जाकर उसके गाल का चुम्बन लेते हुए कह उठे, "हैल्लो, मेरे लोटन कबूतर!" इसके बाद, थोडा झुककर, उन्होने अपने होठो से फेनिचका के हाथ का स्पर्श किया जो बच्चे की लाल कमीज़ से सटा मक्खन की भाति सफेद मालूम होता था।

"ओह नही, यह आप क्या कर रहे है, निकोलाई पेत्रोविच?" अपनी आखो को नीचे गिराते और उन्हे फिर धीरे धीरे उठाते हुए फेनिचका ने उखडी-सी आवाज़ में कहा उस समय उसके चेहरे की मुद्रा बहुत ही प्यारी लग रही थी। उसकी पलके झुकी थीं, होठो पर मुसकान काप रही थी और वह, हत-बुद्धि-सी झुकी पलको के झरोखे में से झाक रही थी।

जिन परिस्थितियो में निकोलाई पेत्रोविच का फेनिचका से मिलन हुआ, वे इस प्रकार हैं

कोई तीन साल पहले की बात है। एक दिन, किसी दूरस्थित देहाती कस्बे की सराय में, उन्हें रात बितानी पडी। अपने कमरे की सफाई और बिछावन की ताज़गी देखकर वह मुग्ध रह गए। "सराय की मालकिन निश्चय ही जर्मन होगी," उन्होने मन में सोचा, लेकिन

वह रूसी ही निकली। आयु करीब पचास वर्ष, साफ-सुथरे कपडे पहने, चेहरे पर बुद्धिमानी की झलक, बोलने में गम्भीर। चाय के समय उससे बातचीत करने का मौका मिला। वह उनपर रीझ गई। उन दिनो निकोलाई पेत्रोविच ने अपन नये घर मे रहना शुरू किया ही था। और चूकि अपने इर्द-गिर्द वह वधक-दासो की फौज खडी करना नही चाहते थे, इसलिए उन्हे वेतन पर काम करनेवाले नौकरो की तलाश थी। उधर सराय की मालकिन मुसाफिरो की कमी से परेशान और बुरे दिनो से तग थी। निकोलाई पेत्रोविच ने प्रस्ताव किया कि वह घर का काम-काज सभाल ले। उसने स्वीकार कर लिया। उसका पति बहुत पहले ही मर गया था और सन्तान के नाम पर केवल एक लडकी–फेनिचका –छोड गया था। एक पखवारे के भीतर ही अरीना साविशना (नयी भण्डारिन का यही नाम था) अपनी लडकी के साथ मारिनो आ गई और घर के छोटे हिस्से में उसने अपना आसन जमा लिया। निकोलाई पेत्रोविच की पसद अच्छी सिद्ध हुई। देखते-न-देखते अरीना ने घर की शक्ल निखार दी। फेनिचका तब सत्रह साल की थी। वह विरले ही दिखाई देती, और न ही उसका कभी कोई जिक्र चलता। वह अलग-थलग और चुपचाप रहती और केवल रविवार के दिनो में ही, वस्ती के गिरजाघर के किसी कोने में, निकोलाई पेत्रोविच को ताजगी लिए उसके चेहरे की कोमल रेखाओ की झलक मिलती। इस तरह एक साल से भी कुछ अधिक गुजर गया।

एक दिन, सुबह के समय, अरीना उनके अध्ययनकक्ष मे आई और अपनी आदत के अनुसार नीचे तक झुककर अभिवादन करते हुए बोली कि उसकी लडकी की आख में तन्दूर से उडकर एक चिगारी गिर गई है। जरा उसे देख ले। सभी घर-जीवियो की भाति निकोलाई

पेत्रोविच भी थोडी-बहुत घरेलू डाक्टरी कर लेते थे और होमियोपैथी की दवाइयो का एक बकसा भी उन्होंने अपने पास रख छोडा था। उन्होने हुक्म दिया कि रोगी को तुरत उनके पास लाया जाय। फेनिचका ने जब यह सुना कि मालिक उसे बुला रहे है तो वह डर के मारे सिकुड गई, लेकिन फिर भी अपनी मा के साथ चली गई। निकोलाई पेत्रोविच उसे खीचकर खिडकी के पास ले गए और अपने दोनो हाथो मे उसका सिर थाम लिया। उसकी सूजी हुई आख को सावधानी से देखने के बाद उन्होने एक लोशन तजवीज़ा, उसे खुद तैयार किया और अपने रूमाल से धज्जिया फाडकर बताया कि उसे किस तरह इस्तेमाल करना होगा। सब कुछ सुन लेने के बाद फेनिचका जाने के लिए मुडी। "अरी पगली, मालिक का हाथ तो चूम।" अरीना ने कहा। निकोलाई पेत्रोविच ने अपना हाथ नही बढाया और, वह खुद भी सकपका उठे थे,—उन्होने उसके झुके हुए सिर की माग पर एक चुम्बन अकित कर दिया। फेनिचका की आख जल्दी ही ठीक हो गई। लेकिन निकोलाई पेत्रोविच के मन पर उसने जो छाप छोडी थी, वह जल्दी मिटनेवाली नही थी। उसका वह निश्छल, मधुर और ऊपर को उठा हुआ कम्पनशील चेहरा भुलाए न भूलता। हर घडी उसकी याद आती, अपनी हथेलियो मे उसके मुलायम बालो के स्पर्श का वह अभी भी अनुभव करते, उसके उन अद्भुत, थोडे खुले हुए होठो का चित्र उनकी आखो के सामने मूर्त हो उठता जिनके भीतर से ओस के मोतियो की भाति उसके दूधिया दात सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। गिरजे में उन्होने उसे अब और भी लगन के साथ देखना शुरू किया, उससे बातचीत करने की भी कोशिश की। पहले-पहल तो वह लाज के मारे जैसे धरती में समा जाना चाहती। एक साझ—उस समय जब वह राई के खेत में से निकली एक सकरी

पगडडी पर चले आ रहे थे–तो वह राई, वर्मवुड और कौर्नफ्लावर के एक घने ऊचे झुरमुट में छिप गई, इस डर से कि कही वह उनके सामने न पड जाय। लेकिन राई की सुनहरी जाली के बीच से उन्हे उसके सिर की झलक दिखाई दी। किसी नन्हे जगली जीव की भाति वह उनकी ओर ताक रही थी।

"गुडईवनिग, फेनिचका! डरो नही, मैं तुम्हे काट नही खाऊगा!" उन्होने मुलायम स्वर में कहा।

"गुडईवनिग," उसने अस्फुट आवाज में कहा और वही दुबकी रही।

धीरे-धीरे वह उनकी अभ्यस्त हो गई, लेकिन उनकी उपस्थिति में उसका शरमाना अभी दूर नही हुआ। सहसा उसकी मा अरीना हैज़े में चल वसी। अब वह क्या करती? कायदे से रहना, सहज वुद्धि, और गम्भीरता उसने अपनी मा से प्राप्त की थी, लेकिन वह इतनी कम-उम्र, इतनी अकेली और निकोलाई पेत्रोविच इतने भले और इतने नम्र थे   इसके वाद जो हुआ सो प्रत्यक्ष है

"हा तो भाई साहव दर असल तुमसे मिलने आए थे?" निकोलाई पेत्रोविच ने उससे पूछा। "दरवाज़ा खटखटाया और वस चले आए?"

"हा, मालिक।"

"सच, यह वहुत अच्छा हुआ। लाओ, ज़रा मित्या से खेल लिया जाय।"

और निकोलाई पेत्रोविच ने उसे उछालना शुरू किया–इतना कि वह छत को छूता मालूम होता। वच्चा तो खुशी से किलकारी मारता और मा की जैसे जान सूख जाती। हर वार, जब भी वह

ऊपर जाता, वह उनके उघरे हुए छोटे छोटे पावो को पकड़ने के लिए अपनी बाहें फैलाकर रह जाती।

उधर पावेल पेत्रोविच लौटकर अपने ठाटदार अध्ययन कक्ष में चले आए जिनकी दीवारो पर बहुत ही नफीस सलेटी अबरी चटी थी और रगबिरगे ईरानी कालीन पर हथियार लटके थे। गहरे रग के हरे नुमाइशी मखमल की गद्दियो से लैस अखरोट की लकड़ी का फर्नीचर सजा था। एक रिनेसा किताबघर था जो पुराने काले बलूत की लकड़ी का बना था। एक शानदार डैस्क पर कासे की मूर्तिया सजी थी और आगदानी के पास बैठने की बहुत ही सुहावनी जगह थी। अध्ययन कक्ष में आकर वह एक सोफे पर ढह गए और हाथो को सिर के नीचे रख निश्चल पड़े रहे और करीब करीब गहरी निराशा में डूबी नजर से छत की ओर ताकते रहे। फिर, शायद दीवारो तक से अपने चेहरे का भाव छिपाने के लिए—या अन्य किसी वजह से— वह उठे और खिड़कियो के भारी पर्दे गिराने के बाद सोफे पर आ पड़े।

९

उसी दिन बजारोव का भी फेनिचका से परिचय हो गया। आरकादी के साथ वह बाग में टहल रहा था और उसे यह बताने का प्रयत्न कर रहा था कि कुछ पेड़, खासतौर से बलूत के पौधे, क्यो अच्छी तरह नहीं पनप सके।

"तुम्हे यहा अधिकतर सफेद चिनार, फर और शायद लैम के पेड़ लगाने और उनमें चिकनी उपजाऊ मिट्टी डालनी चाहिए थी। तुम्हारा वह कुज अच्छा हरा-भरा है," उसने कहा, "कारण कि बबूल और लिलक के पौधो में अपने आपको स्थिति के अनुकूल ढालने की क्षमता

होती है। उन्हें अधिक पालने-पोसने की आवश्यकता नही होती। लेकिन ठहरो, उधर कोई मालूम होता है!"

कुज में फेनिचका, दुन्याशा और मित्या मौजूद थे। वज़ारोव ठिठककर खडा हो गया। आरकादी ने, पुराने जान-पहचानी की भाति, अभिवादन में थोडा सिर झुका दिया।

"यह कौन है?" आगे वढ जाने पर वजारोव ने पूछा। "ओह कितनी सुन्दर!"

"कौन?"

"विल्कुल प्रत्यक्ष है। केवल एक ही सुन्दर लडकी तो वहा है।"

आरकादी ने, कुछ परेशानी के माथ ही मही, थोडे में उसे वता दिया कि फेनिचका कौन है।

"ओह्," वजारोव ने कहा, "वडे मार्के की परख है उनकी—तुम्हारे पिता की। मच, मै मुग्ध हू उनपर। यह वही कर सकते थे। लेकिन छोडो," उसने कहा और उमके पाव कुज की ओर लौट चले, "उममे परिचय तो कर लें।"

"येवगेनी!" आरकादी ने मकपकाते हुए कहा। "खुदा के लिए इसमें अपनी टाग न अडाओ।"

"घवराओ नही," वजारोव ने कहा, "हम लोग कोई नये रगरूट नही है, शहर के रहनेवाले है।"

फेनिचका के निकट पहुच उमने अपनी टोपी उतारी और मलीके मे झुककर अभिवादन करते हुए बोला.

"इजाजत हो तो अपना परिचय दू। मै हू आरकादी निकोलायेविच का मित्र—एक वहुत ही निरीह जीव!"

फेनिचका वैच पर मे उठ खडी हुई और चुपचाप उमकी ओर देखती रही।

"बहुत ही प्यारा बच्चा है," वज़ारोव कहता गया। "चिन्ता न करो, इसे मेरी नज़र नही लग सकती। अरे, इसके गाल इतने लाल क्यो है। क्या दात निकल रहे है ?"

"हा, श्रीमान," फेनिचका बुदबुदाई, "चार निकल चुके हैं, और अब फिर इसके मसूडे फूले है।"

"जरा देखू   डरो नही, मै डाक्टर हू।"

वज़ारोव ने बच्चे को अपनी बाहो में ले लिया। फेनिचका और दुन्याशा दोनो हैरान थी कि बिना किसी प्रतिरोध या भय के वह उसके पास चला गया।

"ओह ठीक   सब ठीक। इसके दात बडे सुन्दर होगे। अगर कुछ गडबड हो तो मुझे खबर करना। और तुम   तुम तो अच्छी तरह हो न ?"

"हा बिल्कुल अच्छी तरह। खुदा का शुक्र है।"

"खुदा का शुक्र   इससे बढकर और कुछ नही। और तुम कैसी हो ?" दुन्याशा की ओर मुडते हुए उसने पूछा।

दुन्याशा जो घर के भीतर भारी-भरकम तथा बाहर बहुत ही शैतान बन जाती थी, जवाब में खिलखिलाकर रह गई।

"बहुत खूब! अच्छा तो यह लो, अब अपने पहलवान को सभालो।"

फेनिचका ने बच्चे को उससे ले लिया।

"तुम्हारी गोद में यह कितना शान्त था," फेनिचका ने धीमी आवाज़ में कहा।

"मेरे साथ सभी बच्चे शान्त रहते हैं," बज़ारोव ने जवाब दिया। "एक नन्ही चिडिया मेरे कान में इसका मत्र फूक गई थी।"

"बच्चे भाप जाते है कि उन्हे कौन प्यार करता है," दुन्याशा ने कहा।

"यही बात है," फेनिचका ने समर्थन किया। "मित्या को ही लो। कुछ लोगो के पास वह कभी नही जाएगा, चाहे कितना ही फुसलाओ।"

"मेरे पास आएगा?" आरकादी ने पूछा। वह कुछ दूर खडा था, अब उनके निकट आ गया। उसने हाथ पसारकर उसे अपनी गोदी में लेना चाहा। लेकिन मित्या ने सिर झटककर पीछे कर लिया और ज़ोरो से चीख उठा। फेनिचका बुरी तरह त्रस्त हो उठी।

"अगली बार आएगा, जब मुझे ज़रा और अच्छी तरह पहचान लेगा," आरकादी ने दुलार जताते हुए कहा, और दोनो मित्र वहा से चल दिए।

"भला क्या नाम बताया था तुमने उसका?" बज़ारोव ने पूछा।

"फेनिचका   फेदोसिया," आरकादी ने जवाब दिया।

"और उसका पितृ नाम? वह भी जानना चाहिए न?"

"निकोलायेवना।"

"Bene*। उसकी यह बात मुझे बडी पसद आई कि वह सकपकाती नही। हो सकता है कि कुछ लोग इसे दोष समझें। एकदम वाहियात! भला वह क्यो सकपकाए? वह मा है—और यह बिल्कुल वाजिब है।"

"सो तो है," आरकादी ने कहा, "लेकिन मेरे पिता, तुम्ही देखो   "

"वह भी ठीक है," बज़ारोव ने बीच में ही कहा।

"लेकिन मैं ऐसा नही कह सकता।"

"समझा, एक अतिरिक्त वारिस तुम्हे पसद नही।"

"मेरे सिर पर ऐसे विचारो को थोपते तुम्हे शर्म भी नही मालूम

---

*अच्छा। (लैटिन)—स०

होती?" आरकादी ने गर्म होते हुए जवाब दिया। "अपने पिता को इस वजह से मैं गलत नहीं कहता। मैं समझता हूँ कि उन्हें उससे विवाह कर लेना चाहिए था।"

"ओह-ओ!" बज़ारोव ने शान्त भाव से कहा। "सो यही है हमारे विचारों की उदारता। तुम अब भी विवाह पर आस लगाए बैठे हो। मुझे तुमसे इसकी उम्मीद न थी!"

कुछ देर तक दोनों मित्र चुपचाप चलते रहे।

"मैंने तुम्हारे पिता का समूचा धंधा देखा है," बज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया। "फार्म के मवेशी गए-बीते हैं, घोड़े मरियल टट्टू बने हैं, इमारतें उन दिनों को पार कर चुकी हैं जब कि वे अच्छी थीं, नौकर-चाकर एकदम लोफरों का झुंड मालूम होते हैं, और तुम्हारा कारिन्दा–या तो वह पक्का बदमाश है या मूर्ख,–मैं कुछ ठीक से नहीं समझ सका कि वह क्या है।"

"आज तो तुम सबकी खबर लेने पर तुले हो, येवगेनी वसीलियेविच।"

"और तुम्हारे ये किसान जो इतने सीधे-सादे नज़र आते हैं, यह तुम निश्चय ही समझ रखो कि वे तुम्हारे पिता के कपड़े तक उतार लेंगे। यह कहावत तो तुम जानते ही हो–'रूसी दहकान ख़ुदा को भी अपनी अण्टी में लिए घूमता है।'"

"ताऊजी की राय से मैं भी अब सहमत हो चला हूँ," आरकादी ने कहा, "कि रूसियों के बारे में तुम्हारी राय सिवा काले पुचारे के और कुछ नहीं है।"

"इससे क्या? रूसियों के पक्ष में सबल बात यही है कि वह अपने बारे में बहुत ही बुरी राय रखता है। असल में तत्व की बात यह है कि दो और दो मिलकर चार होते हैं। बाकी सब भुलावा है।"

"तो क्या प्रकृति भी भुलावा है?" दूर क्षितिज के पास नीचे उतरते सूरज के मृदु आलोक से रजित खेतो की पट्टियो की ओर उदास भाव से देखते हुए आरकादी ने पूछा।

"हा, यह प्रकृति भी भुलावा है–जिस रूप में कि तुम उसे समझते हो। प्रकृति उपासना का मन्दिर नही बल्कि एक कारखाना है और मानव इस कारखाने का एक मज़दूर है।"

तभी, घर की ओर से आते, सगीत के अलस स्वर उन्हे सुनाई दिए। कोई वायोलीन पर शुबर्ट कृत 'प्रत्याशाए' की धुन बजा रहा था। बजाने में अनाडीपन भले ही हो, लेकिन हृदय जैसे उमडा पड रहा था। मनोहर गीत के रुपहले स्वर हवा में तैर रहे थे।

"यह क्या?" बज़ारोव ने पूछा।

"मेरे पिताजी है।"

"क्या तुम्हारे पिता वायोलीन बजाते हैं?"

"हा।"

"खूब। उनकी अब उम्र क्या होगी?"

"चवालीस।"

बज़ारोव सहसा हस पडा।

"क्यो, हस क्यो पडे?"

"बाप रे! चवालीस वर्ष की उम्र, pater familias,* देहात का जीवन, और वायोलीन-वादन!"

बज़ारोव अभी भी हस रहा था। लेकिन आरकादी–इस आदर्श मित्र का चाहे जितना भी गौरव उसपर छाया हो–इस बार मुसकराया तक नहीं।

---

*परिवार का मुखिया। (लैटिन)–स०

करीव दो सप्ताह गुजर गए। मारिनो का जीवन पूर्ववत अपने उसी ढर्रे पर चलता रहा। आरकादी ऐश व आराम के जीवन में मगन था और वजारोव काम करता था। घर के लोग उसके, उसकी आकस्मिक हरकतो और रग-ढग के, उसकी दो-टूक और मुहफट वोल-चाल के, आदी हो गए थे। सच तो यह है कि खुद फेनिचका इस हद तक उससे अपनत्व वरतती कि एक रात—उस समय जवकि मित्या को ऐंठन हो रही थी—उसने उसे सोते से जगवाया। उसने भी चू-चा नही की, करीव दो घटे तक वह उसके पास वैठा रहा, अपनी आदत के अनुसार आधा वतियाता और आधा जमुहाइयाँ लेता रहा, और वच्चे को उसने चगा कर दिया। लेकिन पावेल पेत्रोविच, अपने हृदय की समूची शक्ति से, उससे घृणा करते थे। वह उसे दम्भी, गुस्ताख, मानव-द्रोही और कमीना समझते थे। उन्हे शक था कि वजारोव उनकी इज्जत नही करता—वल्कि कहिए कि वह उन्हे, पावेल किरसानोव को, नीची नज़र से देखता है, उन्हे तुच्छ समझता है। निकोलाई पेत्रोविच पर उसका—इस युवक निहिलिस्ट का—कुछ रौव-सा छाया था। साथ ही उन्हे यह भी आशका थी कि आरकादी पर उसकी सगत का कोई भला असर नही पड रहा है। लेकिन फिर भी वह उसकी वाते सुनने के लिए खुशी से तैयार हो जाते, उसके भौतिक तथा रासायनिक प्रयोगो के दर्शक वनने से आनाकानी न करते। वजारोव अपने साथ एक खुर्दवीन लाया था और घटो उसके साथ चिपका रहता था। नौकर-चाकर भी—वावजूद इसके कि उन्हे चिढाने में उसे मजा आता था—उससे हिलमिल गए थे और उन्हे लगता जैसे वह उन्ही की पात का जीव हो, कुलीनो की पात का नही। दुन्याशा उसके साथ

खिलखिलाने से बाज़ न आती और जब कभी उधर से गुज़रती तो कनखियो से भेदभरी नज़र उसपर डालती। प्योत्र, जो ज़रूरत से ज्यादा घमडी और मूर्ख था, जो तुनुक मिज़ाजी में भौहे चढाए मडराता रहता था, जिसकी एक मात्र खूबी यह थी कि वह सलीके से पेश आना जानता था, एक एक अक्षर मिलाकर पढ लेता था और जो अपनी आदत से मजबूर रह रहकर अपने कोट को कपडे के झाडन से बडी लगन से झाडता रहता था – इस प्योत्र तक की बत्तीसी चमक उठती जब बज़ारोव उसकी ओर नज़र डालता। और फार्म में बसनेवाले बच्चो की बरात पिल्लो के झुड की भाति, 'डाक्टर बाबू' के साथ साथ लगी रहती थी। सिर्फ बूढा प्रोकोफिच उसे कतई पसद नही करता था, उसे 'पाजी' और 'लुच्चा' कहता था और उसके गलमुच्छो की ओर सकेत कर झाडी में छिपे सुअर से उसकी तुलना करता था। प्रोकोफिच, अपने ढग से, पूरा रईस था – एकदम पावेल पेत्रोविच का जोडीदार।

साल के सबसे अच्छे, जून के प्रारम्भिक दिन शुरू हो गए। मौसम असाधारण रूप से बढिया था। खतरा था कि हैज़े का प्रकोप फिर से न फूट पडे, लेकिन ज़िले के लोग उसके आदी-से हो गए थे। बज़ारोव आमतौर से तडके ही उठता और डेढ-दो मील तक निकल जाता – घूमने के लिए नही, खाली, बिना किसी मतलब, सैर करने का वह शौकीन नही था – बल्कि जडी-बूटिया और कीडे-मकोडे बटोरने के लिए। कभी कभी वह आरकादी को भी अपने साथ ले जाता। लौटते समय अक्सर कोई बहस छिड जाती जिसमें, अधिकतर, आरकादी को बुरी तरह मात खानी पडती, बावजूद इसके कि वही सबसे ज्यादा बोलता था।

एक दिन वापिस लौटने में उन्हे अपेक्षाकृत देर हो गई। उन्हे खोजने निकोलाई पेत्रोविच बाग की ओर गए। कुज की बगल में पहुचे ही थे कि सहसा उन्हे तेज़ी से उठते डगो और दोनो युवको के बोलने

की आवाज़ सुनाई दी। वे कुंज की दूसरी ओर से आ रहे थे और निकोलाई पेत्रोविच को देख नही सकते थे।

"तुम मेरे पिताजी को अभी ढग से जानते ही कहा हो?" आरकादी कह रहा था।

निकोलाई पेत्रोविच एकदम स्थिर खड़े हो गए।

"तुम्हारे पिता बहुत ही भले आदमी है," बज़ारोव ने कहा, "लेकिन पिछडे हुए है। अब उनकी फाखता नही उड सकती।"

निकोलाई पेत्रोविच ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की आरकादी खामोश रहा।

'पिछडे हुए' निकोलाई पेत्रोविच एक या दो मिनट तक निश्चल खडे रहे, फिर उनके डग धीरे धीरे लौट चले।

"उस दिन मैंने देखा कि वह पुश्किन पढ रहे थे," बज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया। "तुम्ही उन्हे समझाओ कि यह एकदम समय को बरबाद करना है। आखिर वह बच्चे नही है, कम से कम अब तो इन वाहियातो से बाज़ आए। हमारे इस युग में भी यह रोमाटिकता! उन्हे कोई ऐसी चीज़ पढने को दो जो किसी मसरफ की हो।"

"तुम उन्हे क्या देते?" आरकादी ने पूछा।

"मेरी पूछते हो? मैं शायद बुखनर कृत 'स्टौफ उण्ड क्राफ्ट'* से शुरू करता।"

"ठीक, मेरी भी यही राय है," आरकादी ने रज़ामन्दी प्रकट की। "'स्टौफ उण्ड क्राफ्ट' लोकप्रिय शैली में लिखी हुई है।"

---

*'पदार्थ और शक्ति'। (जर्मन) – स०

"कुछ सुना तुमने," उसी दिन, भोजन के वाद, अपने भाई के अध्ययन कक्ष में निकोलाई पेत्रोविच उन्हे वता रहे थे, "कि हम, तुम और मै, अव क्या हो गए हैं? हम अव पिछडे हुए वन गए है, फाख़ता उडाने के हमारे दिन हवा हो चुके है। अच्छा, यही सही। हो सकता है कि वज़ारोव का कहना ठीक हो। लेकिन एक वात मुझे कहनी पडेगी जिसका मुझे भारी दु ख है। आशा करता था कि ठीक यही वह मौका है जवकि आरकादी और मै घनिष्ठ मित्र वन सकते है। लेकिन लगता है कि मै पीछे पड गया हू और वह आगे निकल गया है, और अव हम एक-दूसरे को समझ भी नही सकते।"

"तुमने कैसे जाना कि वह आगे निकल गया है?" पावेल पेत्रोविच ने व्यग्रता से कहा। "और ज़रा यह भी वताने की कृपा करो कि वह किस प्रकार हमसे भिन्न है? यह सारी ख़ुराफात उसके दिमाग में उस तुर्क ने — उस निहिलिस्ट ने — भरी है। मै उससे — डाक्टर की उस मनहूस दुम से — घृणा करता हू। अगर मुझसे पूछो तो वह निरा ढोंगी है। सच मानो कि अपने समूचे मेंढक-प्रेम के वावजूद शरीर-विज्ञान में भी उसकी कोई ख़ास गति नही है।"

"नही, भैया, नही, इतनी आसानी से उसे रद्द नहीं किया जा सकता। वज़ारोव चतुर और काफी पढा-लिखा आदमी है।"

"और भयानक रूप में स्वाभिमानी!" पावेल पेत्रोविच ने फिर अधीरता से कहा।

"हा," निकोलाई पेत्रोविच ने सहमत होते हुए कहा, "वह स्वाभिमानी वहुत है। लेकिन, मेरी समझ से, यह कोई ऐसी अनहोनी वात नही। फिर भी एक चीज़ मेरी समझ मे नही आती। समय का साथ देने के लिए अपनी ओर से मैने कुछ भी उठा नही रखा — किसानो को मैने वसा दिया है, एक फार्म भी मैने शुरू किया है, समूचा

ज़िला मुझे 'लाल' कहता है, मैं पढता हू, अध्ययन करता हू और, आमतौर से, हर आधुनिक चीज़ के लिए अपना दिमाग खुला रखता हू, फिर भी वे कहते है कि मेरे फाखता उडाने के दिन बीत गए। और सच भाई, मैं खुद भी कुछ ऐसा ही सोचने लगा हू।"

"सो कैसे?"

"हा तो सुनो। तुम खुद ही फैसला करना। आज बैठा हुआ मैं पुश्किन की रचना पढ रहा था मुझे याद है, रचना का नाम था 'खानाबदोश' तभी, एकदम अचानक, आरकादी मेरे पास आया और बिना कुछ कहे, और अपनी उसी सहृदय अनुकपा-भरी नजर से देखते हुए, कुछ ऐसी मुलायमियत से उसने मेरे हाथ से किताब ले ली मानो मैं कोई बच्चा हू, और मेरे सामने एक दूसरी–जर्मन–पोथी रख दी फिर वह मुसकराया और चला गया। पुश्किन की पुस्तक भी वह अपने साथ लेता गया।"

"बाप रे! और वह कौन-सी पुस्तक थी जो तुम्हे दे गया?"

"यह देखो।"

और निकोलाई पेत्रोविच ने अपनी पिछली जेब से बुखनर की बदनाम पुस्तक का नवा सस्करण निकालकर सामने कर दिया।

पावेल पेत्रोविच ने पुस्तक को अपने हाथो में लेकर उलट-पुलट कर देखा।

"हु!" वह भुनभुनाया। "आरकादी निकोलायेविच को तुम्हे शिक्षित करने की चिन्ता है, इसमें सन्देह नही। हा, तो तुमने इसे पढने की कोशिश की?"

"की।"

"तो ?"

"या तो मैं खुद मूर्ख हू, या यह पुस्तक निरी वकवास है। शायद मै ही मूर्ख हू।"

"तुम्हारा जर्मन का अभ्यास कुन्द तो नही हो गया, क्यो?"

"नही, मैं जर्मन समझ लेता हू।"

पावेल पेत्रोविच ने पुस्तक को फिर अपने हाथो में उलटा-पलटा और भौंहो के नीचे से अपने भाई पर एक नज़र डाली। लेकिन कहा कुछ नही। दोनो चुप रहे।

"हा, याद आया," आख़िर निकोलाई पेत्रोविच ने ख़ामोशी तोडी और, स्पष्ट ही, विषय को वदलने के लिए कहा "कोल्याज़िन का मेरे पास एक पत्र आया है।"

"मातवेई इलिच का?"

"हा। ज़िला का सरकारी मुआइना करने की ग़रज़ से वह शहर आया है। अव वह एक वडा आदमी वन गया है। लिखा है कि कुटुम्वी के नाते वह हमसे मिलने के लिए इच्छुक है। उसने हम दोनो और आरकादी को शहर आने का वुलावा दिया है।"

"क्या तुम जा रहे हो?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही। और तुम?"

"मैं भी नही। मेरे सिर पर क्या भूत सवार हुआ है जो विना मतलव तीस-चालीस मील की धूल फाकू। यह Mathieu* पूरी शान के साथ हमें अपना रौव दिखाना चाहता है। शैतान कही का। हमारे गए विना भी उसकी आरती उतारनेवाले लोग वहा ढेरो मिल जाएगे। वडा आदमी, प्रीवी कौन्सिलर, वाह! अगर मैंने नौकरी न छोडी होती और उसी मूर्खतापूर्ण घिस घिस में जुता रहता तो मैं अव तक एडजुटैण्ट जेनरल

---

* मातवेई। (फ्रेंच) – स०

हो जाता। फिर भी, यह न भूल जाना, कि तुम और मैं अब पिछडे हुए लोग हैं।"

"हा भाई, अब समय आ गया है कि तावूतसाज़ को वुलाकर अपने नाप का तावूत वनवा डाले।" एक उसास-सी छोडते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा।

"कुछ भी हो, मैं इतनी जल्दी कब्र में सोने के लिए तैयार नही हू," उनके भाई ने वुदवुदाकर कहा। "मुझे लगता है कि डाक्टर की उस दुम से अभी दो दो हाथ होना वाकी है।"

और दो दो हाथ उनमें हुए, उसी साझ, चाय पीने के दौरान में। पावेल पेत्रोविच पहले से ही आस्तीन चढाकर, वहस के मैदान में कूदने का दृढ निश्चय करके, ड्राइगरूम में आए थे। दुश्मन पर टूट पडने के लिए उन्हे केवल एक वहाने की टोह थी, और वहाना मिलने मे देर लगी। बज़ारोव, आमतौर से, गाव के इन 'खूसट चौधरियो' (किरसानोव बन्धुओ को वह ऐसा ही कहता था) की उपस्थिति में अधिक नही वोलता था और उस साझ, कुछ अस्तव्यस्त-सा होने के कारण, वह चुपचाप एक के बाद दूसरा प्याला चढाए जा रहा था। पावेल पेत्रोविच भीतर ही भीतर उमड-घुमड रहा था, कोई राह न मिलने के कारण उसका दम घुटा जा रहा था। आखिर उसे मौका मिल ही गया।

बातचीत के दौरान में पडोस के एक जमीदार का नाम उभर आया। बज़ारोव इस आदमी से सन्त पीतर्सबर्ग में मिल चुका था। बज़ारोव ने यो ही एक चुटकी में उसे उडा दिया

"एक सडा हुआ और मनहूस रईस।"

"क्या मै एक बात पूछ सकता हू?" थरथराते हुए होठो से पावेल पेत्रोविच ने पूछा। "तुम्हारे कहने के मुताबिक क्या 'सडा हुआ' और 'रईस' एक-दूसरे के पर्यायवाची है?"

"मैंने 'मनहूस रईस' कहा था," अलस भाव से चाय की चुस्की लेते हुए बज़ारोव ने जवाब दिया।

"वही तो, और मैं समझता हू कि 'रईसो' के बारे में भी तुम्हारी राय वही है जो कि 'मनहूस रईसो' के बारे में। मैं तुम्हे बता देना अपना फर्ज़ समझता हू कि मैं तुमसे सहमत नही हू। साथ ही मैं यह कहने का भी साहस करता हू कि हर कोई मुझे उदार विचारो का आदमी मानता तथा प्रगति का हिमायती समझता है। और ठीक इसी वजह से मैं रईसो की—सच्चे कुलीनो की—इज़्ज़त करता हू। ज़रा याद करो, श्रीमान," (इन शब्दो को सुनते ही बज़ारोव की आखें पावेल पेत्रोविच के चेहरे की ओर उठ गईं) "हा, ज़रा याद करो, श्रीमान," उन्होंने और भी ज़ोरो से दोहराया, "अंग्रेज़ी कुलीनो को। वे अपने अधिकारो को तिल-भर भी नही छोडते, और इसी लिए वे दूसरो के अधिकारो की इज़्ज़त करते है। उनकी माग है कि लोग उनके प्रति अपने दायित्वो को पूरा करें, और ठीक इसी लिए वे दूसरो के प्रति ख़ुद अपने दायित्वो को पूरा करते हैं। कुलीनो के इस वर्ग ने ही इग्लैण्ड को उसकी आज़ादी दी है, और वह उस आज़ादी को ऊचा उठाए है।"

"यह राग हम पहले भी सुन चुके है," बज़ारोव ने जवाब दिया। "लेकिन इस सबसे आप सिद्ध क्या करना चाहते है?"

"सुनिए जनाब, मैं सिद्ध जो करना चाहता हू वह यह है," (जब पावेल पेत्रोविच गुस्सा होते थे तो जान-बूझकर व्याकरण को तोडने-मरोडने लगते थे। उनकी यह सनक सिकन्दरी परम्परा का अवशेष थी। उन दिनो के अमीर-उमरा, उन विरल अवसरो पर जब कि वे अपनी मातृभाषा का प्रयोग करते थे, उनकी ज़बान बहुत ही भद्दा रूप धारण कर लेती थी, मानो वे कह रहे हो हम देशज रूसी है तो क्या, लेकिन हम ग्रान्दी (अमीर-उमरा) भी तो है जिनके लिए व्याकरण का उल्लघन

करना जायज़ है।) "हा तो मैं जो कुछ सिद्ध करना चाहता हू वह यह है कि जब तक आदमी में आत्मसम्मान और निजी गौरव की भावना न हो – और ये भावनाए कुलीनो में खूब विकसित रूप में मिलती हैं – तब तक सामाजिक bien public* सामाजिक ढाचे की कोई सुरक्षित नीव नही हो सकती। व्यक्तित्व ही, समझे जनाब, मुख्य चीज़ है। व्यक्तित्व को चट्टान की भाति दृढ होना चाहिए, कारण यही वह नीव है जिसपर समूची इमारत खडी होती है। मिसाल के लिए मुझे यह भली भाति मालूम है कि तुम्हे मेरी आदते, मेरा पहनावा, यहा तक कि मेरी निजी नफासत भी, मज़ाक की चीज़ मालूम होती है। लेकिन मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि ये चीज़ें आत्मसम्मान का, कर्तव्य का – हा, जनाब, कर्तव्य का – विषय है। मै देहात का, पिछडे हुए क्षेत्र का, निवासी हू। लेकिन मै अपने आत्मसम्मान को, निजी गौरव की भावना को, तिलाजलि नही दूगा।"

"बुरा न मानें, पावेल पेत्रोविच," बज़ारोव ने कहा, "आप आत्मसम्मान की बाते करते हैं, और इधर-उधर बैठकर मक्खिया मारते है – समय गवाते हैं। ज़रा यह तो बताइए कि इससे bien public का क्या हित होता है? यह काम तो आप आत्मसम्मान की भावना के बिना भी कर सकते हैं।"

पावेल पेत्रोविच का चेहरा पीला पड गया।

"यह बिल्कुल दूसरी बात है। और इस क्षण तुम्हारे सामने यह सफाई देने के लिए मैं बाध्य नही कि मै क्यो – जैसा कि तुम कहते हो – मक्खिया मारने में समय गवाता हू। मै केवल इतना ही कहना चाहता हू कि कुलीनत्व एक सिद्धान्त की चीज़ है, और केवल अनैतिक या छिछले

---

* सामाजिक कल्याण। (फ्रेंच) – स०

दिमाग़ के लोग ही ग्राजकल विना सिद्धान्तो के जी सकते हैं। यहा ग्राने के वाद ग्रगले दिन मैंने ग्रारकादी के सामने भी यही कहा था, ग्रौर यही मैं ग्राज तुमसे कह रहा हू। क्यो, ठीक है न, निकोलाई?"

निकोलाई पेत्रोविच ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"कुलीनत्व, विचारो की उदारता, प्रगति, सिद्धान्त," वज़ारोव इधर कह रहा था, "ग्रोह, विदेशी शब्दो की कितनी वडी ग्रौर कितनी वेकार–फौज है यह! मुफ्त में मिले, तव भी रूसियो के लिए इनकी दरकार नही!"

"तो फिर उन्हे किस चीज़ की दरकार है–ज़रा यह तो वताग्रो? तुम्हारे कहने के मुताविक तो हम मानवता से, उसके विधि-विधानो से, वाहर हैं। मेरी समझ से तो इतिहास के तर्क का यह तक़ाज़ा है कि "

"किसे दरकार है ग्रापके इस तर्क की? उनके विना भी हमारा काम चल रहा है।"

"मतलव?"

"यही तो मैं कह रहा हू। ग्रापको, मेरा विश्वास है, भूख लगने पर मुह में रोटी का निवाला डालने के लिए किसी तर्क का सहारा लेने की जरूरत नही होती। ग्राखिर इन हवाई विचारो से भला क्या काम निकलता है?"

पावेल पेत्रोविच ने हवा में ग्रपने हाथ फेंके।

"इसके वाद तुम्हे समझना मेरे वूते से वाहर है। तुम रूसियो का ग्रपमान करते हो। मेरी समझ में नही ग्राता कि सिद्धान्तो ग्रौर ग्रादर्श वाक्यो से कोई कैसे इन्कार कर सकता है? ग्राखिर तुम किस चीज़ से प्रेरणा पाते हो?"

"यह तो, ताऊजी, मैं ग्रापको पहले ही वता चुका हू कि हम किसी ग्रधिकारी को प्रमाण नही मानते।" ग्रारकादी ने वीच में ही कहा।

"जिसे हम उपयोगी समझते है," बज़ारोव ने कहा, "उसी से हमें प्रेरणा मिलती है। आजकल खण्डन अन्य सब चीजो से अधिक उपयोगी है, इसलिए हम खण्डन करते है।"

"हर चीज़ का?"

"हा, हर चीज़ का।"

"क्या-आ? केवल कला, कविता का ही नही, बल्कि . उफ, कहते भी जबान लरजती है *"

"हा, हर चीज़ का।" विचलित कर देनेवाले अविचलित भाव से बज़ारोव ने दोहराया।

पावेल पेत्रोविच आखें फाडे उसकी ओर ताक रहे थे। उन्हे इसकी आशा नहीं थी। आरकादी के गाल खुशी मे दमक रहे थे।

"लेकिन ज़रा इधर ध्यान दो," निकोलाई पेत्रोविच ने कहा। "तुम हर चीज़ का खण्डन करते हो—या, सही शब्दो में, तुम हर चीज का नाश करते हो तब फिर निर्माण कौन करेगा?"

"वह हमारा काम नहीं पहले मलबा साफ करना है।"

"जनता की मौजूद स्थिति का यही तकाज़ा है," आरकादी ने गर्वीले अन्दाज़ से कहा। "हमें इस तकाज़े को पूरा करना है। अपने अह के साथ खिलवाड करते रहने का हमें कोई अधिकार नही है।"

आरकादी की बात का अन्तिम अश प्रत्यक्षत बज़ारोव को अच्छा नही लगा। उसमें दार्शनिकता का—बल्कि कहिए कि रोमाण्टिकता का—पुट था। कारण, बज़ारोव दर्शन को भी रोमान्सवाद मानता था। लेकिन उसने अपने युवा शिष्य का खण्डन नहीं किया।

"नहीं, हर्गिज़ नही!" सहसा आवेश में आते हुए पावेल

*यहा तत्कालीन शासन-व्यवस्था से लक्ष्य है।—स०

पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा। "मैं यह मानने के लिए कतई तैयार नही कि तुम लोग सचमुच रूसी जनता को जानते हो, उसकी जरूरतो और आशा-आकाक्षाओ के प्रतिनिधि हो। नही, रूसी जनता वह नही है जैसा कि तुम उसकी कल्पना करते हो। उसके मन में परम्परा के प्रति श्रद्धा का भाव है, वह पितृसत्ता पर आधारित है, बिना आस्था के वह जी नही सकती "

"यह सब लेकर मुझे झगडा करने की जरूरत नही," बजारोव ने बीच में ही कहा। "बल्कि, मैं तो आपसे सहमत होने तक आगे बढ सकता हू कि आपने जो कहा वह ठीक है।"

"अगर ऐसा है तो फिर "

"फिर यह कि इससे कुछ भी सिद्ध नही होता।"

"यही तो, इससे कुछ भी सिद्ध नही होता," शतरज के एक पक्के खिलाडी की भाति जो अपने प्रतिपक्षी की घातक चाल को पहले ही भाप चुका है और इसलिए जरा भी विचलित नही है, आर्कादी ने भी स्वर में स्वर मिलाया।

"यह तुम कैसे कहते हो?" पावेल पेत्रोविच ने आश्चर्य से हकलाते हुए कहा। "कुछ भी कैसे सिद्ध नही होता? तो तुम अपने देश की जनता के खिलाफ जा रहे हो?"

"जा भी रहा हू तो इससे क्या?" बजारोव ने चिल्लाकर कहा। "बादलो की गरज सुनकर लोग विश्वास करते है कि पैगम्बर इलियास आकाश में अपना रथ दौडा रहे है। अब बोलिए? क्या कहेगे कि मुझे भी इससे सहमत होना चाहिए? हा, वे रूसी है, लेकिन क्या मैं भी रूसी नही हू?"

"नही, तुम रूसी नही हो। तुमने जो कुछ कहा, वह इसका साक्षी है। मैं तुम्हे रूसी नही मान सकता।"

"मेरे दादा हल चलाते थे," बज़ारोव ने उद्धत गर्व से कहा। "अपने यहा के किसी दहकान से पूछ देखिए कि हममें से किसे वह अधिक तत्परता के साथ अपना देश-भाई मानने के लिए राज़ी होता है—आपको, या मुझे? और तो और, आप यह तक नही जानते कि एक दहकान से कैसे बातचीत की जाती है।"

"और तुम एक साथ दोनो काम कर सकते हो—बातचीत भी, और घृणा भी।"

"अगर उसमें घृणा की बात हो तो? आप मेरे दृष्टिकोण पर आगबबूला होते है, लेकिन यह आपने कैसे समझ लिया कि मैंने इसे यो ही कही से अपना लिया है, और यह कि यह भी ठीक उसी राष्ट्रीय भावना से उद्भूत नही है जिसकी आप इतनी जी-जान से हिमायत करते हैं?"

"मानता हू। लेकिन इन निहिलिस्टो से किसी का क्या भला हो सकता है?"

"जहा तक उनसे भला होने या न होने का सम्बन्ध है, इसका निर्णय करना हमारा काम नही। यो, अगर धृष्टता न समझी जाय तो मैं कह सकता हू कि आप भी, एक तरह से, अपने आपको उपयोगी समझते है।"

"बस बस, सज्जनो, व्यक्तिगत आक्षेप नही।" अपनी जगह से उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने चिल्लाकर कहा।

पावेल पेत्रोविच मुसकराए, और अपने भाई के कधे पर हाथ रखते हुए दबाकर उन्हे फिर कुर्सी पर बैठा दिया।

"आप निश्चिन्त रहे," उन्होने कहा, "मैं अपनी सुध नही बिसरा सकता—आत्मसम्मान की ठीक उसी भावना के कारण जिसका हमारे मित्र   हमारे यह डाक्टर मित्र   इतनी बेरहमी से मज़ाक

उडाते हैं। माफ करना," वज़ारोव की ओर मुडते हुए उन्होने फिर कहना शुरू किया, "कही आपको यह गलतफहमी तो नही कि आप अपने इन सिद्धान्तो को नया समझ वैठे है? अगर ऐसा है तो आप अपने को धोखा दे रहे है। जिस भौतिकवाद का आप प्रचार करते है, उसकी हवा अनेक वार पहले भी वह चुकी है, लेकिन वह कभी अपने पाव न जमा सकी "

"फिर वही विदेशी राग!" वज़ारोव वीच में ही वोला। उसका दिमाग अव गरमा चला था और उसके चेहरे का रग कच्चे ताम्वे जैसा हो गया था। "सवसे पहली वात तो यह कि हम किमी चीज़ का प्रचार नही करते, हमारा यह चलन नही है "

"तो आप क्या करते है?"

"वताता हू। अभी एकदम हाल तक हम अपने अफसरो की घूसखोरी की, सडको के अभाव की, व्यापार की दयनीय स्थिति की तथा न्याय की अदालतो की चर्चा करते थे "

"ओह, ठीक, ठीक। वेशक, आप लोग—अगर मै भूलता नही तो—पर-निन्दक है। क्यो ठीक यही कहा जाता है न? तुम्हारी पर-निन्दा की वहुत-सी वातो मे मै खुद भी सहमत हू, लेकिन "

"फिर हम चेते। हमने देखा कि अपनी वुराइयो को लेकर सिर्फ वाते वघारना अपने ही गले की ताकत नष्ट करना है। छिछलेपन और कोरे सिद्धान्तवाद के सिवा इससे और कुछ पल्ले नही पडता। हमने देखा कि हमारे चतुर साथी—वे जो आगे वढे हुए और पर-निन्दक कहलाते थे—किसी काम के नही है, और यह कि कला के वारे में, अचेतन सृजन-शक्ति के वारे में, धारासभावाद, न्यायतत्र और जाने अन्य कितनी अलायो-वलायो के वारे में वेकार की वाते वघारकर, हम लोग, अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे है, सो भी उस समय जव कि सीधे सीधे

लोगो के लिए दो-जून रोटी मोहैया करने का सवाल हमारे सामने था, जबकि घोर अधविश्वास हमारा गला घोट रहे थे, जबकि हमारी सारी स्टाक-कम्पनिया केवल इसलिए धूल मे मिल रही थी कि ईमानदार लोगो का अकाल पड गया था, जबकि दासो की मुक्ति तक से – जिसका सरकार इतना ढोल पीट रही थी – कोई भला होनेवाला नही था, कारण ताडी के एक कुल्हड मे डूबने के लिए हमारा दहकान वडी खुशी से अपना घर तक फूकने को तैयार हो जाएगा!"

"सो," पावेल पेत्रोविच ने टोका। "सो इन सब बातो को अपने दिल में बैठाने के बाद अब आपने यह निश्चय किया है कि किसी भी चीज को सजीदगी से हाथ नही लगाएगे।"

"और हमने निश्चय किया कि किसी भी चीज़ को हाथ नही लगाएगे," बज़ारोव ने, गम्भीर मुद्रा में, पलटकर उन्ही के शब्दो को वापिस फेंक दिया। एकाएक, इस कुलीन के सामने अपनी जुबान के इस तरह बेकाबू हो जाने पर उसे अपने से वडी कुढन मालूम हुई।

"और निन्दा के सिवा और कुछ नही करेगे?"

"हा, निन्दा के सिवा और कुछ नही करेगे।"

"और इसी को निहिलिज्म कहते है?"

"हा, इसी को निहिलिज्म कहते है," बज़ारोव ने, इस बार तीखी उद्दडता के साथ, दोहराया।

पावेल पेत्रोविच ने अपनी आखो को थोडा सिकोड लिया।

"तो यह बात है!" विलक्षण रूप से शान्त आवाज़ में उन्होने कहा। "निहिलिज्म हमारे सभी रोगो की दवा है और आप – आप लोग हमारे मुक्तिदाता, हमारे नायक है। ठीक। लेकिन, आप दूसरो को आडे हाथो क्यो लेते हैं – मिसाल के लिए जैसे

पर-निन्दको को? क्या आप भी उन सब लोगो की तरह ही वलवलाते नही फिरते?"

"हममें और दोप चाहे जो हो, लेकिन यह हममें नही है," वज़ारोव ने वुदवुदाते हुए कहा।

"नही है तो फिर? क्या तुम लोग अमल करते हो? अमल करने का इरादा रखते हो?"

वज़ारोव ने कोई उत्तर नही दिया। पावेल पेत्रोविच ने एक वल-सा खाया, लेकिन अपने को सभाल लिया।

"हु! अमल करना, तोडना-गिराना " वह कहते गए, "लेकिन जव क्यो या किस लिए तक मालूम न हो, तव तोडने-गिराने के काम में क्यो कर जुटोगे?"

"हम एक शक्ति है जिसका काम तोडना-गिराना है!" आरकादी ने कहा।

पावेल पेत्रोविच ने अपने भतीजे को एक नज़र तौला और व्यग मे मुसकराए।

"हा, एक शक्ति—एक निर्वाध शक्ति," अपने आपको सीधा करते हुए आरकादी ने कहा।

"कम्वख्त छोकरे!" अपने को और अधिक कावू में न रख पावेल पेत्रोविच उवल पडे। "कम से कम एक वार रुककर तुझे यह तो सोचना चाहिए कि अपने इस रटे-रटाए 'सत्य' को दोहराकर रूस में किस चीज़ का समर्थन तू कर रहा है। तेरी यह वात फरिश्तो तक का सब्र आज़माने के लिए काफी है। शक्ति! शक्ति तो जगली कालमीको और मगोलो में भी है, लेकिन कौन चाहता है उसे? हम सभ्यता को अपने हृदयो में सजोए है, समझे जनाव, और साथ ही सभ्यता के सुफलो को भी। यह न कहना कि ये सुफल नगण्य है। एक

रद्दी से रद्दी चित्रकार भी, un barbouilleur*, एक सस्ता पियानोवादक भी, जो सिर्फ पाच कोपेक मे रात को महफिल में पियानो बजाने चला आता है, तुम लोगो से कही अच्छा है। कारण, वह सभ्यता का प्रतिनिधि है, बर्बर मगोल शक्ति का नही। तुम लोग अपने आपको एक प्रगतिशील तत्व समझते हो, लेकिन तुम किसी कालमीकी तम्बू के जीव बनने के सिवा और किसी लायक नही हो। शक्ति! और शक्ति के पुजारी महानुभावो, यह न भूलना कि एक ओर तुम्हारी बिरादरी जो सिर्फ मुट्ठी भर लोगो की है, वहा दूसरी ओर लाखो लोग है। उनके पवित्र विश्वासो को तुम कभी अपने पावो तले नही रौंद सकोगे! हा, वे लोग तुम्हे कुचलकर रख देंगे!"

"अगर हम कुचल दिए जाते है तो अपने ही किए का फल भुगतेगे," बज़ारोव ने कहा। "लेकिन यह कहना आसान है, करना कठिन फिर हम इतने कम भी नही हैं जितने कि आप सोचते है।"

"क्या-आ? क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि तुम समूची कौम के विरुद्ध खडे हो सकोगे?"

"दो पैसे की मोमबत्ती ने ही समूचे मास्को को जलाकर खाक कर दिया था, यह आपसे छिपा नही है," बज़ारोव ने जवाब दिया।

"समझा। पहले तो यह रौब कि हम ही है जो दुनिया को प्रकाश देते है, फिर हर चीज़ की खिल्ली उडाना। सो यह है वह नवीनतम 'हवा' जो नयी पौध को लगी है, अनुभवहीन छोकरो की कल्पना को जो अपने साथ वहा ले जाती है। इन्ही युवको में से एक, वह देखो, ठीक तुम्हारी बगल में विराजमान है, देखो न, जैसे

---

*वह जो सिर्फ पुचारा फेरना जानता है। (फ्रेंच) —स०

तुम्हारे पाव की धूल अपने माथे लगाने के लिए तैयार हो।"
(भौंहो में वल डाल आरकादी ने मुह फेर लिया।) "और यह महामारी काफी व्यापक रूप से फैल भी चुकी है। मैंने सुना है कि रोम में हमारे चित्रकार वैटीकन के भीतर कभी पाव तक नही रखते। रैफल को वे निरा पोगा समझते है, क्योकि–तुम्ही देखो न–वह चित्रकला का माना हुआ आचार्य है जबकि वे खुद बुरी तरह वेजान और वजर है। उनकी कल्पना, लाख सिर मारने पर भी, 'फौवारे के पास खडी युवती' से आगे उन्हे नही ले जाती। और उसे भी वे अत्यन्त घिनौने ढग से चित्रित करते है। अब, अगर तुम्हारी चले तो, तुम इन्ही को आदर्श कहोगे? क्यो, ठीक है न?"

"मेरे अनुसार," वजारोव ने कहा, "रैफल दो कौडी का भी नही है, और न ही मै उन्हे अच्छा कहूगा।"

"वाह, खूव! कुछ सुना, आरकादी यह आज के युवको के वात करने का नमूना है! भला, क्यो न वे तुम्हे अपना आदर्श मानें? पहले युवा लोगो को अध्ययन करना होता था, वे नही चाहते थे कि उन्हे कोई बुद्धू समझे। सो वे वरवस गहरी मेहनत करते थे। लेकिन अव तो केवल इतना ही उगल देना काफी है–'दुनिया की हर चीज़ वकवास है!' और वस, करिश्मा हो गया। वाहवाही के लिए आपस में ही एक-दूसरे की पीठ ठोक ली। सच तो यह है कि कल तक जो कूढ-मगज़ थे वे ही अव–रातोरात–निहिलिस्ट वन वैठे है।"

आरकादी तमतमा उठा, उसकी आखें आग उगलने लगी। लेकिन वज़ारोव अविचलित था।

"सो, निज गौरव की अपनी सुप्रशसित भावना को भी आपने ताक पर रख दिया," वज़ारोव ने कहा। "लगता है कि वहस कुछ ज़रूरत से ज्यादा आगे वढ गई अच्छा हो कि उसे वद कर दिया

जाय। और फिर," उठते हुए वज़ारोव ने कहा, "मै आपसे सहमत होने के लिए भी तैयार हू। लेकिन तभी जब हमारे इस राष्ट्रीय जीवन के सामाजिक या घरेलू क्षेत्र में आप हमें एक भी ऐसी संस्था दिखा देंगे जिसे एकदम और अत्यन्त बेरहमी के साथ रद्द करने की जरूरत न हो।"

"एक नही, मै तुम्हे लाखो ऐसी संस्थाए दिखा सकता हू," पावेल पेत्रोविच ने चीखकर कहा, "हा, लाखो। मिसाल के लिए हमारी गाव की बिरादरी को ही लो।"

वज़ारोव के होठो पर घृणा से बल पड गए।

"जहा तक गाव की बिरादरी का सम्बध है," उसने कहा, "अच्छा होता अगर अपने भाई से ही पूछ लेते। गाव की बिरादरी का, एक-दूसरे के प्रति दायित्व का, दारूबदी और इसी तरह के अन्य ढकोसलो का, मेरी समझ में उन्हे काफी निजी ज्ञान है।"

"और परिवार? हमारे किसानो में परिवार जिस रूप में आज भी मौजूद है, उसके बारे में क्या कहते हो?" पावेल पेत्रोविच चिल्ला उठे।

"यह भी एक ऐसा विषय है जिसे, मेरी समझ में अधिक बारीकी से जाचना खुद आपके ही हित में अच्छा न होगा। शायद अपनी ही पतोहू से मुह काला करने की बात आपसे छिपी न होगी। मेरी बात मानिए, पावेल पेत्रोविच, और एक-दो दिन का समय ज़रा खर्च कीजिए, मेरा दावा है कि आप एक भी संस्था आसानी से खोजकर सामने नही रख सकेगे। हमारे सभी वर्गों और श्रेणियो को देख डालिए, एक एक की ध्यान से खोजबीन कीजिए, और इस बीच आरकादी और मै "

"हर चीज़ की खिल्ली उडाते रहे, यही न?" पावेल पेत्रोविच ने बीच में ही कहा।

"नही, मेंढको की चीर-फाड करे। चलो, आरकादी। अच्छा नमस्कार।"

दोनो मित्र चले गए। दोनो भाई, अकेले रह जाने पर, शुरु में कुछ देर तक चुपचाप केवल एक-दूसरे को देखते रहे।

"देखा तुमने," आखिर पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया। "ऐसी है हमारी यह युवा पीढी। ऐसे है हमारे ये उत्तराधिकारी!"

"उत्तराधिकारी," निकोलाई पेत्रोविच ने उदासी से एक लम्बी सास भरते हुए दोहराया। वहस के समूचे दौरान में वह जैसे काटो पर बैठे थे और नज़र छिपाकर, व्यथित भाव से, जब-तब आरकादी की ओर देख लेते थे। "जानते हैं भाई साहब, मैं क्या सोच रहा था? एक बार अपनी प्यारी अम्मा से मेरा झगडा हुआ। वह थी कि बस चिल्लाए जाती थी, और मेरी एक नही सुनती थी ... आखिर मैंने उनसे कहा कि वह मेरी बात नही समझ सकती, कि हम दो भिन्न पीढियो के जीव है। वह बुरी तरह कटकर रह गई, और मैंने सोचा—'और चारा भी क्या है। गोली कडुवी ज़रूर है, पर बिना निगले निस्तार नही।' वैसे ही अब हमारी बारी है, और हमारे उत्तराधिकारी हमसे कह सकते है 'तुम हमारी पीढी के नही हो। यह कडुवी गोली निगलनी ही पडेगी।'"

"तुम कुछ ज़रूरत से ज्यादा भले और विनयशील हो," पावेल पेत्रोविच ने प्रतिवाद किया। "इसके प्रतिकूल मेरा विश्वास है कि इन युवा लोगो की अपेक्षा तुम और मै कही ज्यादा सही है, हालाकि हम—शायद—अपने आपको पुराने ढग से व्यक्त करते है, vieilli*, और हममें वह मुहज़ोरी नही है जो कि उनमें है ... लेकिन आज की यह नयी पीढी कितनी मुहज़ोर है। अगर तुम इनमें से किसी से पूछो—'बोलो, कौन-सी मदिरा लोगे—लाल या सफेद?'

---

* पुराने ढग से। (फ्रेंच)—स०

फूलो के पास अभी तक अलस और उनींदे भाव से भनभना रही थी। नीचे लटक आई एक एकाकी टहनी पर मच्छरो और भुनगो की एक पात टूटी पड रही थी। "ओह मेरे भगवान, कितना सुन्दर है यह सब!" निकोलाई पेत्रोविच ने सोचा, और उनके प्रिय छन्द उनके होठो पर थिरक आए, लेकिन तभी आरकादी तथा, 'स्टोफ उण्ड क्राफ्ट' की याद ने जैसे उनका गला घोट दिया। उनका गुनगुनाना रुक गया, और वह वैसे ही स्थिर बैठे रहे—उदास और सुहानी तन्मयता में डूबे हुए। विचारो-स्मृतियो में बहना उन्हे अच्छा लगता था, देहात के जीवन ने उनमें इस प्रवृत्ति को विकसित कर दिया था। अभी उस दिन, छोटी-सी सराय में बैठे जब वह अपने लडके की बाट जोह रहे थे, तब भी वह इसी प्रकार दिवा-स्वप्नो में रम गए थे। लेकिन तब से अब में एक परिवर्तन आ गया है। उन सम्बंधो ने जो तब धुधले थे, अब एक आकार—सुनिश्चित आकार—ग्रहण कर लिया है। उन्हे एक बार फिर अपनी मृत पत्नी की याद हो आई, लेकिन घरेलू पत्नी और घर की मालकिनवाले उस रूप में नहीं, जिससे कि वह इतने बरसो से परिचित थे—बल्कि एक लोचदार युवती के रूप में जिसकी आखो में निश्छल कौतुक खेलता था, जिसकी आखें बडी मासूमियत से कुछ पूछती नजर आती थी और जिसकी बच्चो जैसी कोमल गरदन पर कसी हुई चोटी झूलती थी। उन्हे अपने पहले मिलन की याद हो आई। वह तब पढते थे। निवासालय के जीने पर उनकी उससे मुठभेड हुई। अनजाने उससे टकराने पर माफी मागने के लिए वह मुडे और बडी मुश्किल से, अचकचाते हुए, इतना ही उनके मुह से निकल सका· "Pardon, monsieur*!" उसने अपना सिर झुका लिया, होठो-ही-होठो में

---

*माफ़ करना, श्रीमान! (फ्रेंच)—स०

मुसकराई और फिर, जैसे एकाएक डरकर, भाग निकली और जीने के एक मोड पर रुककर निकोलाई पेत्रोविच पर उसने एक तेज़ नज़र डाली, अपनी मुद्रा को उसने कुछ गम्भीर-सा वनाया और उसके गाल लाल हो उठे। और फिर, डरते-सहमते, शुरू शुरू का वह मिलना-जुलना, अधवोले शब्द और अवखुली मुसकाने, असमजस, उदासी, चाहते, और अन्त में वेसुध कर देनेवाला वह उल्लास सव जाने कहा लोप हो गए? वह उनकी पत्नी वनकर घर में आई और उन्होंने वह सुख देखा जो दुनिया में विरलो को ही नसीव होता है "लेकिन," उन्होंने सोचा, "सुख के वे पहले मधुर क्षण, क्यो नही वे इतने अमर हो सके कि चिरकाल तक जीवित रहते?"

उन्होंने अपनी भावनाओ का विश्लेपण करने का प्रयत्न नही किया, वह शान्ति और सुख से भरपूर उन दिनो को किसी ऐसी चीज़ से वाध रखना चाहते थे जो स्मृति से ज्यादा मज़बूत हो, वह एक वार फिर अनुभव करना चाहते थे जैसे मरीया उनके पास आकर खडी हो गई हो, जैसे वह उसके सुहावने स्पर्श का अनुभव कर रहे हो, उसकी सासे उन्हे छू रही हो, और उन्हें लगा जैसे मरीया की मौजूदगी उन्हे अभिभूत करती जा रही है

तभी, कहीं पास से ही, फेनिचका की आवाज़ सुनाई दी

"निकोलाई पेत्रोविच, कहा है आप?"

वह चौंक उठे। लेकिन वह अस्न नही हुए, न ही उन्होंने कोई घवराहट अनुभव की कहा उनकी पत्नी, और कहा फेनिचका, दोनो की तुलना करने की वात कभी सपने तक में उनके दिमाग़ में नही आती थी। लेकिन उन्हे इसका खेद था कि फेनिचका ने उन्हें खोज निकाला। उसकी आवाज़ ने उन्हे फिर वास्तविकता में ला पटका— पके हुए वालो और ढलती हुई आयु की वास्तविकता में .

जिस जादुई दुनिया का जाल अतीत की धुधली तरगो से उन्होने बुना था और जिसमें वह अब प्रवेश करने जा ही रहे थे, ग़ायब हो चुकी थी।

"यहा हू," उन्होने जवाब दिया। "तुम चलो, मैं अभी आया।" साथ ही, विजली की भाति, उनके दिमाग़ में कौंधा "ओह, यही तो है वह अभिजात्य का–कुलीनत्व का–दम्भ, जो छोडे नही छूटता!" फ़ेनिचका ने, बिना कुछ कहे, झाककर देखा और ग़ायब हो गई। उन्हें यह देखकर अचरज हुआ कि वह सपनो में ही खोए रहे और रात घिर आई। चारो ओर अधेरा और निस्तब्धता छाई थी। और फेनिचका का चेहरा जो इतना छोटा और कुम्हलाया-सा दिख रहा था, तैरकर विलीन हो गया। घर लौटने के लिए वह उठे, लेकिन उनका हृदय कुछ इतना तरल हो उठा था और भावो से इतना भरा था कि वह बाग़ मे ही धीरे धीरे टहलने लगे। कभी वह, चिन्तित-से, धरती की ओर देखते, कभी उनकी आखें आकाश की ओर उठ जातीं जहा सितारो के झुरमुट चमक और टिमटिमा रहे थे। वह टहलते रहे, थककर एकदम चूर भी हो गए, लेकिन बेचैनी की वह भावना जो उनके हृदय को घेरे थी–एक तरह की ललक, एक धुधली, उदासी का सचार करनेवाली व्यग्रता–फिर भी कम नही हुई। ओह, अगर बज़ारोव को यह मालूम हो जाता कि इस समय उनके अन्तर में क्या हलचल मची है, तो वह कितनी खिल्ली उडाता! और आरकादी भी इसका समर्थन न करता। उनकी आखो में आसू उमड आए, अवाछित आसू,–वह, चवालीस साल का आदमी, एक फार्म का मालिक, नौकरो-चाकरो का स्वामी, और ये आसू! यह तो वायोलीन बजाने से भी सौ गुना बदतर है!

निकोलाई पेत्रोविच बाग में टहलते रहे, और अपने जी को इतना कडा न बना सके कि घर की ओर डग बढा सके। घर, उनका वह शान्त और सुहावना आवास, रोशनी से आलोकित अपनी सारी खिडकियो से

मुसकराता हुआ उनकी ओर निहार रहा था। लेकिन वह अंधेरे से, बाग से, चेहरे पर ताज़ी हवा के दुलार-भरे स्पर्श से, हृदय की कसक और व्यग्रता से पीछा छुडाकर अपने आपको अलग नही कर सके

पगडडी के एक मोड पर पावेल पेत्रोविच से वह टकरा गए।

"बात क्या है?" उन्होंने निकोलाई पेत्रोविच से पूछा। "चेहरा इतना पीला पड गया है कि एकदम छाया-से नज़र आते हो। क्या तबीयत ठीक नही है? जाकर बिस्तर पर आराम क्यो नही करते?"

निकोलाई पेत्रोविच ने गिने-चुने शब्दो में अपनी मानसिक स्थिति का परिचय देकर उनसे छुट्टी ली। पावेल पेत्रोविच टहलते हुए बाग के छोर पर पहुचे और वह भी विचारो में खो गए, उन्होंने भी अपनी आंखें उठाकर आकाश की ओर देखा। लेकिन उनकी सुन्दर काली आखो में तारो की चमक के सिवा और कुछ प्रतिबिम्बित नही हुआ। रोमाण्टिकता उनकी घुट्टी में नही पडी थी और उनकी वह नफ़ासत पसन्द, नीरस, किन्तु अनुरागमयी, आत्मा—जो इस हद तक फ्रेंच थी कि अन्य सब को नीची नज़र से देखती थी—सपने देखने की आदी नही थी।

उसी रात बज़ारोव आरकादी से कह रहा था

"जानते हो, मुझे एक अनोखी बात सूझी है। तुम्हारे पिता आज एक निमत्रण की बात कर रहे थे। वही जो तुम्हारे एक नामी सम्बन्धी ने उनके पास भेजा है। तुम्हारे पिता जा नही रहे हैं। बोलो, तुम क्या कहते हो? क्यो न एक चक्कर शहर का भी लगा लिया जाय। उन्होंने तुम्हे भी बुलाया है। देखो न, कितना बढिया मौसम है। चलो, शहर की सैर कर आए। पाच या छे दिन तक वहा खूब घूमें-फिरेंगे, बडे मज़े से समय बीतेगा।"

"तो तुम भी मेरे साथ ही लौटोगे न?"

"नही, मुझे अपने पिता के पास जाना है। तुम जानते ही हो, वह शहर से करीब बीस मील दूर रहते है। मुद्दत हो गई उनसे मिले, और मा से भी। बूढो को उनके इस सुख से क्यो वचित किया जाए। बहुत ही नेक लोग है, खासतौर से पिता। सच, बूढा बडा मज़ेदार है। फिर जानते ही हो, मै उनका इकलौता लडका ठहरा! बस, सन्तान के नाम पर एक मै ही हू, और कोई नही।"

"क्या वहा अधिक दिन रुकोगे?"

"ऐसी उम्मीद तो नही है। तबीयत भी वहा अधिक नही लगेगी।"

"तो वहा से लौटते समय यहा आओगे?"

"कह नही सकता देखा जाएगा। हा तो बोलो, क्या कहते हो? चलोगे न?"

"जैसा तुम कहो," आरकादी ने बिना किसी उछाह के कहा।

असल में अपने मित्र के प्रस्ताव से वह बेहद खुश था, लेकिन अपने सच्चे भावो को तुरत प्रकट करना उसे ठीक नही जचा। आखिर वह भी तो निहिलिस्ट ही था न?

अगले दिन वह और बज़ारोव शहर के लिए चल दिए। मारिनो के युवा प्राणी उनके जाने से उदास थे। दुन्याशा की आखो में तो सचमुच आसू आ गए लेकिन बडे-बूढो ने राहत का अनुभव किया।

१२

जिस शहर की ओर हमारे मित्रो ने रुख किया वह एक नौजवान गवर्नर के मातहत था। गवर्नर प्रगतिशील भी थे और निरकुश भी, जैसा कि हमारे इस पुराने रूस में अक्सर देखने में आता है। सूबे की बागडोर अपने हाथ में लेने के पहले साल में ही कुलीनो के सूबाई मार्शल और

अपने मातहतो, दोनो से, उनका झगडा हुआ। मार्शल घोडसवार गारद सेना के अवकाश-प्राप्त कैप्टेन, एक घोडा-पालन-केन्द्र के मालिक और बहुत ही रगीन तबीयत के मेज़बान थे। झगडा, और उसके फलस्वरूप तनातनी, यहा तक बढी कि अन्त में सन्त पीतर्सबर्ग के मत्रालय को मौके पर पहुचकर जाच करने के लिए एक कमिश्नर भेजने का फैसला करना पडा। इसके लिए मातवेई इलिच कोल्याज़िन को चुना गया। यह उन्ही कोल्याज़िन के सुपुत्र थे जिनकी निगरानी में किरसानोव बन्धु किसी समय सन्त पीतर्सबर्ग में रह चुके थे। मातवेई इलिच कोल्याज़िन भी 'युवा स्कूल' के थे, मतलब यह कि हाल ही में उन्होने चालीसवे साल में पाव रखा था। राज-पुरुष बनने का लक्ष्य साधना उन्होने शुरू कर दिया था और अपने वक्ष के दोनो ओर एक एक स्टार लगाते थे। इनमें से एक, इसमें शक नही, कोई विदेशी पदक था और उसका ऐसा कोई महत्व नही था। गवर्नर की भाति, जिनका फैसला करने का काम उन्हे सौंपा गया था, वह खुद भी प्रगतिशील माने जाते थे और 'बडो' में गिनती होने पर भी वह अधिकाश 'बडो' से भिन्न थे। अपने बारे में उनकी बहुत ही ऊची राय थी। उनकी अहमन्यता की भी कोई सीमा नही थी। लेकिन उनके ठाठ-बाट में बनावट नही थी, देखने में वह सहृदय मालूम होते थे, दया-भाव के साथ औरो की सुनते थे, और इतने भले स्वभाव के साथ हसते थे कि देखनेवाला पहली नज़र में ही कह उठे "आदमी खरा मालूम होता है।" लेकिन, ज़रूरत पडने पर, जैसी कि कहावत है—वह रौब गाठना भी जानते थे। "शक्ति ही मूल मत्र है," ऐसे मौको पर वह कहते, "L'energie est la premiere qualite d'un homme d'etat*," लेकिन,

---

*शक्ति ही सरकारी आदमी का प्रधान गुण है। (फ्रेंच)—स०

इस सवके वावजूद, उनकी शक्ति अक्सर जवाव देती नजर आती और ऐसा एक भी – थोडा अनुभव रखनेवाला – अफसर नही था जो नाक पकडकर उन्हे मनचाही दिशा में न मोड सकता हो। मातवेई इलिच गुइज़ोत के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा प्रकट करते थे और छोटे-वडे सभी लोगो पर यह छाप डालने का प्रयत्न करते थे कि लकीरपथी और प्रतिगामी अफसरशाही से उनका कोई वास्ता नही है, और यह कि सार्वजनिक जीवन के किसी भी पहलू को वह आखो की ओट नही होने देते इस तरह के टकसाली कथनो से वह खूव परिचित थे। इतना ही नही, आधुनिक साहित्य के रुझान पर भी वह नजर रखते थे, लेकिन एक गर्वीली उपेक्षा के अन्दाज़ से, विल्कुल वैसे ही जैसे कि एक वयस्क आदमी, वाजार में छोटे लडको का जलूस देखकर, कभी कभी उनके साथ हो जाता है। सच पूछो तो मातवेई इलिच अलेक्सान्द्र के दिनो के उन अफसरो की स्थिति से कुछ आगे नही वढ पाए थे, जो सन्त पीतर्सवर्ग में, मदाम स्वेचीना के सैलून मे होनेवाले सध्या-समारोह में शामिल होने के लिए सुवह ही सुवह कोन्दिलाक की पोथी के पन्नो पर नज़र दौडाते थे। अगर अन्तर था, तो इतना ही कि मातवेई इलिच के तरीके उनसे भिन्न और अधिक आधुनिक थे। वह मजे हुए दरवारी थे, खूव चतुर-चालाक, इसके सिवा और कुछ नही। काम-काजी मामलो में वह अयोग्य थे और सूझ-वूझ में कमज़ोर। लेकिन अपने निजी मामलो में वह पूरे चौकस थे, एक मक्खी तक वह अपनी नाक पर नही वैठने देते थे – क्या मजाल जो कोई उन्हें इधर से उधर मोड दे। और, अन्तत, यही मुख्य – सवसे वडी चीज़ है।

मातवेई इलिच ने आरकादी का स्वागत वडी मिलनसारी से किया, – ऐसी मिलनसारी से जो कि उन्नत लोगो की एक अपनी विशेषता होती है। इतना ही नही, हम तो कहेंगे कि उन्होने काफी

हसमुखपन का परिचय दिया। लेकिन, साथ ही, उन्होने बडी हैरानी भी प्रकट की जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उनके सम्बधी—बावजूद इसके कि उन्हे भी निमत्रण दिया गया था—नही आए, वे देहात में ही रह गए।

"तुम्हारे दद्दा शुरू से ही कुछ अजीब जीव रहे है," अपने भडकीले मखमली ड्रैसिग गाउन के फुन्दनो को झुलाते हुए उन्होने फब्ती कसी और फिर, एकाएक, उस युवक अफसर की ओर मुडते हुए, जो चुस्ती से बटन-कसी वर्दी में सलीकेदारी का अवतार बना खडा था, व्यस्त-सी मुद्रा और पैनी आवाज़ में पूछा "क्यो, क्या है?" युवक अफसर के होठ, सुदीर्घ अर्से से बोलने के अनभ्यस्त, एक-दूसरे मे जुडे थे। वह अपने पावो पर खडा हुआ और सकपकाई-सी मुद्रा में अपने आला अफसर की ओर देखने लगा अपने मातहत को निष्प्रभ कर देने के बाद मानवेई इलिच फिर जैसे उसे भूल ही गए। हमारे बडे लोग, आमतौर से, अपने मातहतो को चकरा देने में एक खास रस लेते है। इसके लिए तरह तरह के तरीके वे अपनाते है। इनमें से एक तरीका, जो कि बहुत ही प्रचलित है या जैसा कि अग्रेज़ लोग कहते है, "is quite a favourite", उस समय देखने में आता है जब उच्चाधिकारी, एकाएक, अपने मातहत के अत्यन्त सीधे शब्दो को भी समझने से इन्कार कर देता है और ऐसा बन जाता है जैसे वह बहरा हो। मिसाल के लिए वह पूछेगा

"आज कौनसा दिन है?"

अत्यन्त विनय के साथ मातहत जवाब देगा

"आज शुक्र है, म-हा-म-हि-म!"

"एँ? क्या? क्या कहा? शुक्र क्या? कैसा शुक्र ?"

"शुक्र म-हा-म-हि-म, शुक्रवार—सप्ताह का एक दिन।"

"हा हा शुक्र, समझा! अब और कौनसा पाठ पढाओगे मुझे!"

मातवेई इलिच भी, आखिर उच्चाधिकारी ही थे, हालाकि उन्हे उदार माना जाता था।

"मेरी सलाह मानो, मित्र," उन्होने आरकादी मे कहा, "और गवर्नर से भी मिलो। तुम तो जानते ही हो, यह सलाह मै इसलिए नही दे रहा हू कि मेरे विचार पुराने फैशन के है और तदनुसार जो सत्ताधारी है उनके आगे सलामी दागनी चाहिए, वल्कि केवल इसलिए कि गवर्नर वहुत ही नफीस आदमी है। इसके अलावा शायद तुम स्थानीय उच्च समाज से भी परिचय करना चाहोगे मै समझता हू, तुम भालू नही हो! परसो वह एक वहुत ही शानदार नाच का आयोजन कर रहे है।"

"क्या आप भी नाच में होगे?" आरकादी ने पूछा।

"यही तो। नाच का आयोजन मेरे ही सम्मान में हो रहा है," मातवेई इलिच ने करीव करीव खेद में डूवे स्वर में जवाव दिया, "तुम तो नाचना जानते हो न?"

"हा, मगर कुछ यो ही।"

"तव घाटे में रहोगे। यहा कुछ वहुत ही सुन्दर लडकिया हैं, और इसके अलावा यह शर्म की वात है कि कोई युवक नाचना न जाने। लेकिन, यह न समझ वठना कि इस मामले में मेरी धारणाए पुराने फैशन की है। नही, एक क्षण के लिए भी मैं यह नही सोचता कि आदमी की वुद्धि उसके पावो में होनी चाहिए। लेकिन वायरनवाद एक वेहूदा चीज है, il a fait son temps*।"

"लेकिन, सच पूछो तो चाचा, सवाल वायरनवाद का नही है "

---

*उसका जमाना वीत चुका। (फ्रेंच)–स०

"चलो, यहा की कुलीनवर्गीय पुतलियो से तुम्हारे हाथ मिलवाऊगा," मातवेई इलिच ने बीच में ही कहा और फिर अपने आप में सन्तुष्ट हसी के साथ बोला, "मेरे अपने आदमी की हैसियत से तुम वहा सबपर छा जाओगे। काफी गरमी मिलेगी तुम्हे, सच!"

तभी एक नौकर ने आकर प्रशासन-चैम्बर के अध्यक्ष के आने की सूचना दी। वह वृद्ध थे– आखो में मिठास और चेहरे पर झुर्रिया लिए। वह प्रकृति के अत्यन्त शौकीन थे, खासतौर से ग्रीष्म के सुहावने दिनो के, जबकि–उन्ही के शब्दो में–"हर नन्ही मक्खी हर नन्हे फूल से कुछ-न-कुछ घूस लिए बिना नही मानती" आरकादी वहा से चला आया।

बजारोव वही सराय में मौजूद था, जहा वे ठहरे थे। गवर्नर के यहा चलने के लिए काफी देर तक उसे मिन्नत करनी पडी। आखिर बजारोव राजी हो गया। "अच्छी बात है, चलो," उसने कहा, "जब उगली थमाई है तो कलाई भी सही। इन जमीदार कुलीनो का भी रग देख लिया जाए। और फिर आए भी तो हम इसीलिए है।" गवर्नर बडे चाव से उनसे मिले, मगर न तो उन्होंने उनसे बैठने के लिए कहा और न खुद ही बैठे। वह हमेशा ही किसी न किसी अटपटी व्यस्तता और चहल-पहल का बुखार चढाए रहते थे। सुबह होते ही वह सबसे पहले चुस्त कसी हुई वर्दी चढाते-डाटते, और गुलूबद को बेहद कसकर गले में लपेटते। खाने-पीने का उन्हे कोई ध्यान न रहता और फरमान जारी करने की चिरन्तन धुन और चहल-पहल में सोने तक का नाम न लेते। समूचे सूबे में लोगो ने उनका नाम 'बूरदालू' रख छोडा था। इसकी प्रेरणा उन्होंने इसी नाम के सुप्रसिद्ध फ्रेंच प्रचारक से नहीं, बल्कि बूरदा नाम

के एक बदज़ायका पेय से, ली थी। उन्होने किरसानोव और बज़ारोव को अपने यहा नाच में शरीक होने का निमत्रण दिया और इसके दो मिनट बाद ही, दोनो को भाई समझते और 'कैमारोव' नाम से सम्बोधित करते हुए, उन्हे फिर एक नया निमत्रण दिया।

गवर्नर के यहा से अपने ठिकाने पर लौटते समय पास से गुजरती एक द्रौश्की गाडी में से सहसा एक आदमी कूदा। वह नाटे कद का आदमी था और पान-स्लाविस्ट* ढग की जाकेट पहने था। "येवगेनी वसीलियेविच, येवगेनी वसीलियेविच!" पुकारता वह बज़ारोव की ओर लपका।

"अरे तुम हो, हर्र सितनिकोव!" बज़ारोव ने कहा। "तुम यहा कैसे टपक पडे?" और बज़ारोव सडक की पटरी पर चलता रहा।

"सच, ऐसे ही, एकदम सयोगवश," उसने जवाब दिया और फिर गाडीवान की ओर मुडते हुए कम से कम छे बार उसने हाथ हिलाया और गुनगुनाते हुए बोला—"चले आओ, गाडीवान, हमारे साथ-साथ चले आओ!" फिर, नाली को छलागते हुए, उसने कहना जारी रखा "मेरे पिता का कुछ काम-काज था यहा। उन्होने मुझसे कहा कि मैं ही उसे निबटा आऊ। आज ही सुना कि तुम यहा हो और मैंने तुम्हारे ठिकाने का पता भी लगा लिया " (सचमुच, अपने कमरे में लौटने पर दोनो मित्रो ने देखा कि एक विज़िटिंग-कार्ड पडा है जिसके कोने मुडे हैं और जिसके एक ओर फ्रेंच में और

---

*पान-स्लाविस्ट, १६ वी शती के रूसी सामाजिक आन्दोलन में एक प्रतिक्रियावादी विचारधारा के पोषक थे। उन्होने रूस के विकास के लिए एक "विशिष्ट पथ" के सिद्धान्त की स्थापना की।—स०

दूसरी ओर स्लाव लिखावट में सितनिकोव नाम लिखा है।) "मैं समझता हू कि गवर्नर के यहा से तुम लोग नही आ रहे हो?"

"अपनी इस समझ को तुम ताक पर रखो, हम सीधे वही से आ रहे है।"

"ओह, तब तो मैं भी उनके यहा हाज़िरी दे आऊगा," सितनिकोव ने कहा। "लेकिन येवगेनी वसीलियेविच, परिचय तो करा दो ज़रा अपने इनका"

"यह है सितनिकोव, और यह किरसानोव," एक ही सास में बुदबुदाते हुए बज़ारोव ने कहा।

"अहो भाग्य! सच, बडी खुशी हुई आपसे मिलकर!" कहते कहते सितनिकोव का वदन डोल गया और एक अटपटी-सी मुसकान उसके होठो पर खेल गई। हाथो में पहने बेहद नफीस दस्तानो को जल्दी जल्दी उतारते हुए बोला "आपके बारे में बहुत कुछ सुन चुका हू येवगेनी वसीलियेविच से मेरा बहुत पुराना परिचय है, बल्कि कहिए कि मैं इनका शिष्य हू। अपनी 'दीक्षा' के लिए मैं इन्ही का ऋणी हू "

आरकादी ने बज़ारोव के शिष्य को परखा। उसके बने-सवरे चेहरे की रेखाए – नाक-नक्श – छोटे किंतु बुरे न थे। लगता था जैसे किसी चिन्ता ने उन्हे कुण्ठित कर दिया हो। उसकी आखें छोटी और भीतर को धसी थी और बेचैन-सी नज़र से एकटक ताकती मालूम होती थी। और उसकी हसी भी एक बेचैन-सी हसी थी – तीखी, काष्ठवत् हसी।

"शायद तुम यकीन न करो," वह कहता गया, "लेकिन येवगेनी वसीलियेविच के मुह से जब पहली बार मैंने यह सुना कि हमें किसी अधिकारी को प्रमाण नही मानना चाहिए तो मेरा रोम रोम खिल उठा लगा जैसे मेरे अन्तर की आखें खुल गई हो! मैंने सोचा, यही तो है वह आदमी जिसकी जाने कब से मुझे तलाश थी! लेकिन

छोडो। और सुनो, येवगेनी वसीलियेविच, सब काम छोडकर भी यहा तुम एक महिला से ज़रूर मिलना। वह तुम्हारी बातो को पूर्णतया समझ सकेगी और तुमसे भेंट करके उसे हार्दिक आनन्द प्राप्त होगा। मैं समझता हू, तुमने उसके बारे में सुना भी होगा।"

"वह कौन है?" बज़ारोव ने बिना किसी उत्साह के पूछा।

"कूक्शिना, Eudoxie–येवदोक्सीया कूक्शिना। वह एक शानदार चरित्र है–सच्चे मानो में emancipee*, एक प्रगतिशील नारी। और सुनो, अगर उसके पास हम सब अभी चले चले तो कैसा हो?" वह पास ही रहती है। वही भोजन करेगे। मै समझता हू, अभी तुमने भोजन किया भी न होगा?"

"नही, अभी नही किया।"

"तब तो और भी अच्छी बात है। वह अपने पति के साथ नही रहती, तुम जानो–एकदम स्वतत्र है।"

"सुन्दर है?" बज़ारोव ने पूछा।

"सुन्दर. सो तो नही कहा जा सकता।"

"तो फिर हमें वहा क्यो घसीटे लिए जा रहे हो?"

"हा-हा, वह खूब है शैम्पेन की बोतल से स्वागत करेगी।"

"सो तुरत पहुचो। मतलबी आदमी छिपाए नही छिपता। लेकिन यह तो बताओ, तुम्हारे बुढऊ क्या कर रहे है? क्या अब भी ठेके की दलाली कर रहे हैं?"

"हा," चिचियाती-सी हसी के साथ सितनिकोव ने उतावली में कहा। "तो चल रहे हो न?"

---

*उन्मुक्त नारी। (फ्रेंच)–स०

"ठीक कह नही मकता।"

"तुम यहा के लोगो को देखना चाहते थे। जाओ, हो आओ," आरकादी ने धीमे म्वर में कहा।

"और तुम, किरसानोव, तुम खुद अपने वारे में क्या कहते हो?" सितनिकोव ने कहा। "ऐमे नही होगा। तुम्हे भी चलना पडेगा।"

"जान न पहचान, हम सव उसके यहा एकाएक कैमे धमक सकते हैं?"

"सो कोई वात नही। तुम कूक्शिना को जानते नही। एकदम हीरा है।"

"तो वहा शैम्पेन की एक वोतल खुलेगी न?" वज़ारोव ने पूछा।

"एक नही, तीन!" मितनिकोव चहका। "उमका ज़िम्मा मै लेता हू।"

"ऐसे नही, कुछ वाज़ी लगाते हो?"

"तो मेरा सिर हाज़िर है।"

"मिर नही, अपने वाप की थैलिया हारो तो कुछ वात भी वने अच्छा तो चलो।"

१३

मास्को शैली के एक छोटे-मे मकान में आवदोत्या निकितिश्ना (या येवदोक्सीया) कूक्शिना रहती थी। यह उस सडक पर था जिसे हाल ही में आग ने नष्ट कर दिया था। मभी जानते है कि हमारे सूबाई शहर, हर पाच माल में एक वार मचमुच की अग्नि-परीक्षा देते है। दरवाजे पर एक तिरछे-मे नाम-कार्ड के ऊपर घटी

बजानेवाली डोरी लगी थी। हाल मे पहुचने पर घर की नौकरानी से—या वह मालकिन की सखी थी?—भेंट हुई। वह बेलदार टोपी पहने थी जो, निस्सदेह, मालकिन की प्रगतिशील रुचि का ऐलान कर रही थी। सितनिकोव ने पूछा

"आवदोत्या निकितिश्ना घर पर ही है न?"

"अरे, क्या तुम हो, Victor?" बराबरवाले कमरे में से सीटी-जैसी आवाज़ सुनाई दी। "आओ, चले आओ।"

टोपीवाली स्त्री खिसक गई।

"मै अकेला नही हू," सितनिकोव ने कहा। चुस्ती के साथ आरकादी और बज़ारोव की ओर एक नजर देखा और फुर्ती के साथ अपनी प्रतीकात्मक जाकेट उतार डाली। नीचे, किसानो के ढग का, बिना आस्तीन का एक अजीब-सा कपडा पहने था, ऐसा कि जिसे कोई नाम नही दिया जा सकता।

"कोई बात नही," भीतरवाली आवाज़ ने जवाब दिया, "Entrez*।"

तीनो युवक भीतर पहुचे। यह कमरा ड्राइगरूम से ज्यादा अध्ययनकक्ष मालूम होता था। कागज़-पत्तर, चिट्ठिया, मोटे-ताज़े रूसी पत्र-पत्रिकाए, अधिकाशत अनखुले, धूल-छाई मेज़ो पर इधर-उधर बिखरे थे। सिगरेट के टोटे, जहा भी नज़र डालो, वही छितरे नज़र आते थे। चमडे के सोफे पर एक महिला अधलेटी-सी बैठी थी। उसका यौवन अभी विदा नही हुआ था। गोरा चम्पई रग और सुनहरे बाल, बनाव-सिगार कुछ बिखरा हुआ सा, रेशमी चोगा पहने जिसे एकदम निर्दोष नही कहा जा सकता, ठूठ-सी

---

* चले आओ। (फ्रेंच)—स०

वाहो में वडे वडे कडे और सिर पर वेल-बूटेदार रूमाल। वह सोफे से उठी और सुनहरे एर्मिन-फर की गोट लगे मखमली चोगे को लापर्वाही से अपने कधो पर खीचती हुई अलस अन्दाज में गुनगुनाई

"गुडमोर्निंग, विक्टर!" और यह कहते हुए उसने सितनिकोव से हाथ मिलाया।

"यह हैं वजारोव, और यह किरसानोव," वजारोव के सक्षिप्त ढग का अनुसरण करते हुए सितनिकोव ने छोटा-सा परिचय दिया।

"वडी खुशी हुई मिलकर," कूक्शिना ने जवाव दिया। अपनी गोल-मटोल आखो को, जिनके वीच थोडी ऊपर को उठी उसकी गुलावी नाक एकाकी दुवकी-सी वैठी थी, वजारोव पर टिकाते हुए वोली, "मै आपके वारे में सुन चुकी हू।" और फिर उससे भी हाथ मिलाया।

वजारोव ने मुह विचकाया। अटपटे से कपडे पहने इस उन्मुक्त नारी के सक्षिप्त से आकार-प्रकार में ऐसा कुछ नही था जो मुह फेरनेवाला हो, लेकिन उसके चेहरे का भाव नागवार असर डालता था। उसे देखकर पूछने को जी चाहता था—"वात क्या है, क्या आज खाने को नहीं मिला? या तुमपर ऊव सवार है? या दिमाग किसी उलझन में फसा है? आखिर क्यो तुमने यह अजीव—हास्यास्पद—सूरत वना रखी है?" ऐसा मालूम होता था जैसे वह भी सितनिकोव की भाति, गलत चेहरे से हसती है। उसके वोलने और चलने-फिरने में एक नुमाइशी लापर्वाही का भाव था, लेकिन भोडापन लिए हुए। साफ था कि वह अपने आपको खुशमिजाज और भले हृदय का जीव समझती थी। फिर भी, जो कुछ भी वह करती थी, हमेशा उसकी एक ही छाप मन पर पडती थी—यानी यह कि जो वह नहीं करना चाहती, ठीक वही कर रही है। वह हर काम किसी उद्देश्य से करती

मालूम होती थी, अर्थात सीधे-सादे और सहज-स्वाभाविक ढग से नही।

"हा हा, बज़ारोव, मैं आपके बारे में सुन चुकी हू," उसने दोहराया। (मुफस्सिल और मास्को की कतिपय कुलीन वर्गीय महिलाओ की भाति उसकी यह आदत थी कि पुरुषो को, परिचय के पहले दिन से ही, उनके सरनाम से सम्बोधित करने लगती थी।) "सिगरेट पिएगे?"

"सिगरेट से यो हमें कोई बैर नही," सितनिकोव ने जवाब दिया जो अब, एक टाग को अपने घुटने पर टिकाए, आराम कुर्सी में कुनमुना रहा था। "लेकिन पहले कुछ कलेवा तो कराओ। बुरी तरह भूख लगी है। साथ में शैम्पेन भी हो तो क्या कहने!"

"बोतलानन्दी!" येवदोक्सीया ने कहा और हस पडी। (जब वह हसती थी तो उसके ऊपर के मसूडे तक दिखने लगते थे।) "यह पूरा बोतलानन्दी है बज़ारोव! क्यो है न?"

"मै जीवन को आनन्द में डुबाने का हामी हू," सितनिकोव ने शान के साथ कहा, "और इससे मेरी उदारपथी में कोई बाधा नही पहुचती!"

"जी नही, पहुचती है, बाधा पहुचती है," येवदोक्सीया ने तुरत कहा, और साथ ही अपनी दासी को भोजन तथा शैम्पेन दोनो का प्रबध करने का आदेश भी दे दिया। फिर बज़ारोव की ओर मुडते हुए बोली, "आपकी क्या राय है?" मैं समझती हू, आप मुझसे सहमत होगे।"

"कतई नही," बज़ारोव ने जवाब दिया, "रोटी के टुकडे से मास की बोटी कही बेहतर है। रसायन-विज्ञान तक यही सिद्ध करता है।"

"तो क्या रसायन-विज्ञान आपका विषय है ? ओह, मैं उसपर जान देती हू। मैंने खुद अपने एक लेप का भी आविष्कार किया है।"

"लेप ? और आपने ?"

"हा, मैंने। और जानते हैं, किसलिए ? गुडियो के सिर के लिए जिससे उनमें पक्कापन आ जाए—वे टूटे नही। देखा तुमने, मैं भी एक अमली जीव हू। लेकिन वह अभी तैयार नही हुआ है। जरा देखना होगा, लीविग क्या लिखता है। हा, याद आया, क्या आपने 'मोस्कोव्स्कीए वेदोमोस्ति' में प्रकाशित नारी-श्रमिको की स्थिति पर किसल्याकोव का लेख देखा ? जरूर देखिए। स्त्रियो के अधिकार की समस्या में तो आप दिलचस्पी लेते है न ? और स्कूलो की समस्या में भी ? आपके मित्र क्या करते हैं ? क्या नाम भला है इनका ?"

एक अलस लापर्वाही के साथ मदाम कूक्शिना ने अपने सवालो की अनवरत झडी लगा दी थी, जवाब मिले चाहे न मिले। बिल्कुल वैसे ही जैसे कि मुह चढे बच्चे अपनी आया पर बातो की बौछार करते रहते हैं।

"जी, मुझे आरकादी निकोलायेविच किरसानोव कहते है," आरकादी ने कहा, "और मै काम-वाम कुछ नही करता।"

येवदोक्सीया ठठाकर हस पडी।

"है न अद्भुत बात! लेकिन आप सिगरेट पीजिए न ? और सुनते हो विक्टर, आज मैं तुमसे नाराज हू।"

"किस लिए ?"

"मैंने सुना है कि तुम फिर जार्ज सैण्ड का राग अलापने लगे हो। अनुन्नत विचारो की स्त्री—इसके सिवा और क्या है उसमें ? इमर्सन से उसकी भला क्या तुलना ? न वह शिक्षा के बारे में कुछ जानती है, न शरीर-विज्ञान के, और न ही अन्य किसी चीज के।

और मेरा विश्वास है कि भ्रूण-विज्ञान का तो उसने नाम तक न सुना होगा। आज के इस ज़माने में है न यह मज़े की बात!" (कहते हुए येवदोक्सीया ने हवा में अपने हाथ तक उछाले।) "ओह, इस विषय पर येलिसेविच ने कितना सुन्दर लेख लिखा है! सचमुच प्रतिभा है उस सज्जन में!" (जहा 'आदमी' शब्द का प्रयोग करना चाहिए वहा येवदोक्सीया बराबर 'सज्जन' शब्द का प्रयोग कर रही थी।) "बज़ारोव, यहा आओ, इधर मेरे पास सोफे पर बैठो। शायद आपको पता न हो, लेकिन मुझे आपसे भयानक डर लगता है "

"सो क्यो, मैं पूछ सकता हू?"

"आप एक खतरनाक सज्जन हैं आलोचना की साकार प्रतिमा। हे भगवान! मैं भी क्या दूर गाव की पिछडी हुई देहातिन की भाति बाते करने लगी। लेकिन सच पूछो तो मैं एक जागीरदारिन महिला हू। अपनी जागीर की मैं खुद देख-भाल करती हू और शायद तुम विश्वास न करो, मेरा कारिन्दा येरोफेई भी एक शानदार चरित्र है–ठीक कूपर के 'राहखोजी' की भाति। एक तरह की सहज-सादगी–भोलापन–उसके रोम रोम में बसी है। अब मैं हमेशा के लिए यहा बस गई हू। बडा मनहूस नगर है यह, क्यो है न? लेकिन, किया भी क्या जाए!"

"जैसे दूसरे नगर वैसा ही यह भी," बज़ारोव ने शान्त भाव से कहा।

"तुच्छ स्वार्थों में फसा हुआ। यही यहा सबसे बुरा है। जाडे मैं मास्को में बिताया करती थी लेकिन मेरे पति, मौसिये कूक्शिन ने अब वहा अपना डेरा जमा लिया है। इसके अलावा मास्को अब जाने क्यो, पहले जैसा नही रहा। मुझे अब कुछ विदेश जाने की धुन सवार है, और पारसाल तो बस जाते जाते ही रह गई!"

तक न
' (कहते
ह, इस
प्रतिमा
करना
र रही
र बैठो।
ा है "

प्रतिमा।
ो भाति
, महिला
१४८ तुम
त्र है-
आदमी-
लिए यहा
किया भी

ता भाव

"निश्चय ही पेरिस के लिए, क

"पेरिस और हीडेलबर्ग के लिए

"हीडेलबर्ग के लिए क्यो ?"

"ओह, वहा बुनसन जो है!"

बज़ारोव खोया हुआ सा उसका

"Pierre सापोजनिकोव जानते

"नही।"

"ओह, मैने कहा, Pierre सापो
लीदिया खोस्तातोवा के यहा जमा रहत

"मैं इस महिला को भी नही

"हा तो वह भी मेरे साथ चलने
का, मै स्वतत्र हू, बाल-बच्चो की बल
कहा था मैने ? – शुक्र है खुदा का ! ले
शुक्र कुछ नही।"

तम्बाकू के धुवे से पीली पडी अप
ताज़ी सिगरेट तैयार की, जीभ फेरक
उसे जाचा और सुलगाकर पीने लगी।
आ गई।

"यह लीजिए, खाना आ गया।
जाए। विक्टर, बोतल का काग खोल

सब की सब खाली-दिमाग हैं। मिसाल के लिए mon amie* ओदिनत्सोवा को ही लो—देखने में बुरी नही। गडबड यही है कि उसकी शोहरत ज़रा कुछ   लेकिन सो कुछ नही। असल बात यह है कि उसकी नज़र व्यापक नही, उसके अपने कुछ स्वतंत्र विचार नही, बस, एकदम कोरी है। अपनी समूची शिक्षा-प्रणाली को बदलने की जरूरत है। मैं इस बारे में सोच रही हू। हमारी स्त्रियो को शिक्षा-दीक्षा के बहुत ही बेढंगे साचे में ढाला गया है।"

"एकदम लाइलाज," सितनिकोव बोल उठा, "हिकारत के सिवा वे और किसी योग्य नही, और यही मैं उनके प्रति अनुभव करता हू—अखण्ड और अटूट हिकारत!" (हिकारत के भाव का अनुभव करने और इस भाव को व्यक्त करने में सितनिकोव खूब रस लेता था। खासतौर से स्त्रियो पर चोट करने में वह और भी आनन्द लेता था, और उस समय एक क्षण के लिए भी वह यह अनुभव नही करता था कि कुछ ही महीने बाद वह खुद अपनी पत्नी के सामने नाक रगडता नज़र आएगा, सो भी सिर्फ इसलिए कि वह राजकुमारी दुरदोलेओसोवा के घर की कन्या है।) वह कहता गया "एक भी उनमें ऐसी नही मिलेगी जो हमारी बातचीत तक समझ सके, जिसके लिए हम संजीदा पुरुषो का सिर खपाना व्यर्थ न कहा जा सके।"

"लेकिन यह कतई ज़रूरी नही कि वे हमारी बातचीत समझें ही," बज़ारोव ने कहा।

"यह किस चीज़ के बारे में बात हो रही है?" येवदोक्सीया ने पूछा।

---

* मेरी सखी। (फ्रेंच)—स०

"सुन्दर स्त्रियो के बारे में।"

"क्या-आ? तो आप भी प्रूडोन के मत के हैं?"

बजारोव का वदन एकदम सीधा सतर हो गया।

"मैं किसी के मत का नही हू। मैं खुद अपना मत रखता हू।"

उस आदमी की उपस्थिति में, जिसका कि वह भोपू बना हुआ था, साहसपूर्ण बात कहने का अवसर गले से लगा मितनिकोव चिल्ला उठा:

"अधिकारियो का नाश हो!"

"लेकिन मैकॉले भी " कूक्शिना ने कहना शुरू किया।

"मैकॉलि मुर्दाबाद!" मितनिकोव ने गला फाडा, "तुम भी किन लहगाधारियो की हिमायत करने लगी!"

"लहगाधारियो की नही, स्त्रियो के अधिकारो की। बदन में आखिरी बूद तक जिनकी रक्षा करने का मैंने प्रण किया है।"

"मुर्दा . " कहते कहते सितनिकोव रुक गया और बुदबुदाते हुए बोला "मेरा इनसे विरोध नही!"

"नही, मैं साफ देख रही हू कि तुम पान-स्लाविस्ट हो!"

"नही, मैं पान-स्लाविस्ट नही हू, हालाकि इसमें शक नही कि "

"नही, नही, नही! तुम पान-स्लाविस्ट हो। तुम दोमोस्त्रोई* के हिमायती हो। बस, तुम्हारे हाथ में घोडे का चाबुक देने की और जरूरत है!"

---

*दोमोस्त्रोई—सोलहवीं शताब्दी में लिखी गई पुस्तक का नाम, जिसमें उस काल के रूसी परिवारो के लिए सही ढग के जीवन का आदर्श उपस्थित किया गया था। अब इस शब्द का अर्थ हो गया है "पारिवारिक जुल्म और तानाशाही"।—स०

"घोडे का चाबुक बुरी चीज़ नही," बज़ारोव ने कहा, "लेकिन यहा तो आखिरी बूद तक "

"आखिरी बूद किस की?" येवदोक्सीया ने पूछा।

"शैम्पेन की, मेरी प्रिय आवदोत्या निकितिश्ना, शैम्पेन की – तुम्हारे रक्त की नही।"

"स्त्रियो का जब कोई अपमान करता है तो मै सह नही सकती," येवदोक्सीया कहती गई, "यह भयानक है, भयानक। उनपर धावा बोलने के बजाय अच्छा हो कि तुम मिशले की लिखी पुस्तक De l'amour* पढ जाओ। अद्भुत पुस्तक है यह! हा तो सज्जनो, अच्छा हो कि हम प्रेम के बारे में बाते करे।" कहते कहते येवदोक्सीया ने अपनी बाह अलस भाव से सोफे की सिलवट-भरी गद्दी पर रख दी।

सहसा कमरे में नीरवता छा गई।

"नही, प्रेम की बाते छोडो," बज़ारोव ने कहा। "आपने अभी अभी ओदिनत्सोवा का ज़िक्र किया था अगर मै भूलता नही तो यह नाम लिया था न आपने? हा तो वह कौन है?"

"ओह, वह बडी लुभावनी है, देखते ही प्यार करने को जी चाहे!" सितनिकोव चिचियाया। "तुमसे परिचय कराऊगा। बहुत ही चतुर लडकी है, काफी मालदार, और विधवा। बदकिस्मती से अभी बुद्धि का कुछ विकास नही हुआ। उसे हमारी येवदोक्सीया से घना ससर्ग बढाना चाहिए। हा तो, Eudoxie, यह जाम तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए। आओ, गिलास खनकाए! "Et toc, et toc et tin-tin-tin! Et toc et toc, et tin-tin-tin!!"

"Victor, आखिर तुम अपनी ठठोलियो से कभी बाज़ नही आते!"

भोजन बडी देर तक चला। शैम्पेन की पहली बोतल के बाद

---

* प्रेम के बारे में। (फ्रेंच) – स०

दूसरी आई, दूसरी के वाद तीसरी, और फिर चौथी भी येवदोक्सीया वरावर चहकती रही और सितनिकोव वरावर उसका भोपू वना रहा। शादी के वारे में उन्होने दुनिया-भर की वाते की–यह कि शादी कोई पूर्वाग्रह है या अपराध, यह कि लोग मा के पेट से ही एक-से होकर पैदा होते है या नही, और यह कि व्यक्तित्व क्या चीज है। आखिर नौवत यहा तक पहुची कि येवदोक्सीया, नशे से अगारा वनी और चपटे नाखूनवाली अपनी उगलियो से वेसुरे पियानो के पर्दो को ठकठकाती फटी हुई सी आवाज में गाने लगी। पहले उसने खानावदोशो के कुछ गीत गाए और फिर सीमूर-शिफ कृत रोमाज़ा 'अनादा निद्रा निमग्न है' सुनाया। सितनिकोव अपने सिर के चारो ओर एक रूमाल लपेटकर विरह-पीडित प्रेमी का अभिनय करने लगा। जव गानेवाली ने यह पक्ति गाई

"प्रिय कर दो अपने होठो से
मेरे होठो पर एक अग्निमय–
चुम्वन अकित!"

तो आरकादी से यह सहन नही हुआ। ज़ोरो से वोला

"सज्जनो, अव यह कमरा वेडलाम* वनता जा रहा है!"

वज़ारोव जो भूले-भटके एकाव व्यग-वाण छोड देता था, अन्य सव कुछ भूल अपनी शैम्पेन में ही मस्त था। उसने अव सीधे जमुहाई ली, खडा हुआ और मेजवान से विदा तक लिए विना कमरे से वाहर हो गया। आरकादी ने भी उसका अनुसरण किया। सितनिकोव उन दोनो के पीछे लपका।

---

*लदन में एक पागलखाना।–अनु०

"हा तो वोलो, क्या कहते हो, कैसी लगी वह तुम्हे ?" कभी इधर और कभी उधर फुदकते-उचकते हुए वह कह रहा था। "मैने पहले ही कहा था न ? कितनी शानदार औरत है! काश कि ऐसी ही कुछ और भी होती! ओह, कितना नैतिक वल है! एक तरह से अनुकरणीय!"

"और तेरे वाप का वह व्यापार भी नैतिक वल का एक नमूना है न ?" एक दारूघर की ओर इशारा करते हुए—जिसके पास से वे उस समय गुज़र रहे थे—वज़ारोव ने पूछा।

सितनिकोव फिर अपनी उस चिचियाती-सी हसी में फूट पडा। अपनी वश-वेल से वह परिचित था और उसकी याद कर मन ही मन लज्जा से गड जाता था। लेकिन इस समय वह निश्चय नही कर सका कि वज़ारोव के इस आकस्मिक घनिष्ठता-प्रदर्शन को वडाई मानकर उसे खुश होना चाहिए अथवा वुराई मानकर नाराज़।

१४

कई दिन वाद गवर्नर के घर नाच हुआ। कोल्याज़िन उस दिन के 'दूल्हा' थे। कुलीनो के मार्शल ने यह जताने में किसी को नही छोडा कि वह, सच पूछो तो, केवल उनके सम्मान की खातिर नाच में शामिल हुए है। उधर गवर्नर थे कि वह, नाच के दौरान में भी और उस समय भी जवकि वह, सास लेने के लिए एक ओर स्थिर खडे होते थे, अपनी कार्यव्यस्तता का प्रदर्शन करने से—यह या वह फरमान जारी करने से—नही चूकते थे। कोल्याज़िन का शाहाना अन्दाज़ और उनकी मिलनसारी दोनो एक-दूसरे से होड लेते मालूम होते थे। वह सभी पर अपनी मुसकानो की वर्षा कर रहे थे—किसी पर

थोडे अनमनेपन के साथ, और किसी पर आदर की हल्की-सी चाशनी चढाकर। महिलाओ के साथ तो वह en vrai chevalier français * बने हुए थे। और, जैसा कि राजपुरुष को शोभा देता है, उनके अन्तर से अपरिवर्तनशील वेगवती हसी का अनवरत झरना फूट रहा था। उन्होने आरकादी की पीठ थपथपाई और उसे इतनी ऊची आवाज मे 'प्रिय भतीजे' कहकर सम्बोधित किया कि सभी सुन ले। बजारोव की ओर जो अपेक्षाकृत पुराना ड्रैस-सूट डाटे था, उन्होने एक उडती हुई, सूनी किन्तु कृपा-भरी नजर डाली और एक अस्पष्ट किन्तु भली-सी आवाज मे कुछ काखा जिसमे से, 'मै' और 'सदा की भाति' के सिवा और कोई शब्द पल्ले नही पडा। सितनिकोव की ओर उन्होने अपनी उगली बढाई, एक मुसकान भी उसपर न्योछावर की, लेकिन अपने सिर को इस बार दूसरी ओर मोडे हुए। और कूक्शिना को जो पिचका हुआ सा घाघरा और मैले-से दस्ताने पहने थी—अलबत्ता बालो मे उसने 'स्वर्ग के पक्षी' के पर जरूर खोस रखे थे—बुदबुदाकर उन्होने enchante ** तक कहा। हॉल मे तिल रखने की जगह नही थी। युगल-नृत्य मे शामिल होने के लिए पुरुषो की कमी नही थी। गैर-फौजी लोग, ज्यादातर, अलग खडे 'दीवार की शोभा' बढा रहे थे, जबकि फौजी लोग पूरे जोश से नाच मे हिस्सा ले रहे थे, खासतौर से उनमे से एक के जोश का तो ठिकाना ही नही था जो पेरिस मे छै सप्ताह बिता आया था और वहा से "zut", Ah fichtrrre", "pst, pst, mon bibi" आदि फ्रेंच भाषा के कुछ चटुल उद्गार बटोर लाया था। वह बडी नफासत से, एकदम पेरिस के ढग से, उनका उच्चारण करता था। लेकिन फिर भी

---

* एक सच्चे फ्रासीसी भद्रजन की तरह। (फ्रेंच)—स०

** फिदा हू। (फ्रेंच)—स०

"si j'avais" की जगह "si j'aurais" का और "निश्चय ही" की जगह "absolument"* का प्रयोग कर जाता। सक्षेप यह कि वह फ्रेंच भापा का विगडा हुआ रूसी रूप बोलता जिसे सुनकर फ्रेंच लोगो के पेट में वल पड जाते हैं, खासतौर से उस हालत में जबकि उन्हे, हमारे इन देश भाइयो को खुश करने के लिए, यह विश्वास दिलाने के लिए वाध्य नही होना पडता कि हम उनकी भाषा को 'फरिश्तो की भाति' – "comme des anges" – बोलते हैं।

आरकादी, जैसा कि हम जानते हैं, कुछ अच्छा नही नाचता था। और बज़ारोव का तो नाच से कोई वास्ता ही नही था। वे दोनो एक कोने में बैठ गए और सितनिकोव भी उनके साथ आ मिला। चेहरे पर उपहास का भाव लिए और व्यगपूर्ण छीटे कसते हुए रस में पगी उसकी नज़र कमरे का चक्कर लगा रही थी और वह अपने आपमें अत्यन्त मगन मालूम होता था। सहसा उसके चेहरे का रग बदल गया और आरकादी की ओर मुडते हुए अचकचाती-सी मुद्रा में बुदबुदाया

"ओदिनत्सोवा आ रही है।"

आरकादी मुडा। काला गाउन पहने एक लम्बे कद की स्त्री पर उसकी नज़र पडी। वह हॉल की चौखट पर पाव रखे थी। उसका राजसी ठाठ देखते ही बनता था। उसकी उघडी हुई वाहे बहुत ही कमनीय अन्दाज़ में लता सदृश उसके वदन के दोनो ओर झूल रही थी। उसके आवदार वालो में खुसी फूशिया की एक टहनी बहुत ही प्यारे अन्दाज़ में उसके ढलुवा कधो पर झुक आई थी। निखरी हुई और थोडा वाहर को झुक आई भौंहो के नीचे उसकी पारदर्शी आखें

* विल्कुल। (फ्रेंच) – स०

झाक रही थी। उनमें प्रतिभा और स्थिरता की—हा स्थिरता की, उदासी की नही—झलक थी। होठो पर मुसकराहट का स्पर्श था, लेकिन वहुत ही नामालूम-सा। चेहरे से वहुत ही मृदु और कोमल ओज की किरने फूट रही थी।

"क्या तुम इसे जानते हो?" आरकादी ने सितनिकोव से पूछा।

"भली-भाति। तुम परिचय करना चाहोगे?"

"क्यो नही इस नाच के वाद।"

वज़ारोव का ध्यान भी ओदिनत्सोवा की ओर खिचा।

"यह चिडिया कौन है?" उसने पूछा। "औरो मे कुछ निराली मालूम होती है।"

नाच के वाद सितनिकोव आरकादी को ओदिनत्सोवा के पास ले गया। लेकिन उसके साथ उसका परिचय उस जोश-खरोश के अनुकूल सिद्ध नही हुआ जिससे कि उसने आरकादी को आश्वासन दिया था। उसका वोल उलझ गया और ओदिनत्सोवा ने अचरज-भरी नज़र से उसे देखा। लेकिन आरकादी का नाम सुनते ही उसके चेहरे पर आन्तरिक दिलचस्पी के भाव उभर आए। पूछा

"क्या आप निकोलाई पेत्रोविच के पुत्र तो नही?"

"जी, हू तो।"

"आपके पिता मे मै दो वार मिली हू और वहुत कुछ उनके वारे में सुना है," वह कहती गई, "आपसे मिलकर वडी खुशी हुई।"

तभी कोई सहायक फौजी अफसर लपककर उनके पास आया और साथ में नाचने के लिए उससे आग्रह करने लगा। उसने स्वीकार कर लिया।

"तो तुम नाचती हो?" आरकादी ने अदव मे पूछा।

"हा। लेकिन यह आपने कैसे सोचा कि मैं नाचती नही? क्या मैं इतनी बूढी लगती हू?"

"ओह नही, सच, ऐसी कोई बात नही लेकिन तब तो मैं भी माजुर्का नृत्य की आशा कर सकता हू।"

ओदिनत्सोवा कृपापूर्वक मुसकराई।

"बहुत अच्छा," उसने कहा और आरकादी की ओर ठीक अभिभावक की नज़र से तो नही, लेकिन ऐसी नज़र से देखा जैसे कि व्याही हुई बहने अपने अति छोटे भाइयो को देखती है।

ओदिनत्सोवा आरकादी से उम्र में अधिक बडी नही थी—वह उनतीस की थी—लेकिन उसकी उपस्थिति में उसे ऐसा लगा जैसे वह निरा स्कूली लडका, एक अनुभवहीन छात्र हो, जैसे उन दोनो की आयु में काफी अन्तर हो। राजसी ठाठ के साथ मातवेई इलिच उसके—ओदिनत्सोवा के—पास आए और बातो की मिसरी-सी घोलने लगे। आरकादी पीछे की ओर हट गया, मगर उसकी आखें बराबर उसी पर जमी रही और उसे नाच में शामिल होते देखती रही। नृत्य के अपने जोडीदार से भी वह उसी सहज भाव से बतिया रही थी जिस सहज भाव से उसने राजपुरुष से बाते की थी। बडी कोमलता से उसने सिर हिलाया और अपनी आखो को फेर लिया। एक या दो बार वह मृदुलता से हसी भी। नाक उसकी कुछ मासल थी, जैसी कि अक्सर रूसी नाके हुआ करती हैं। और रग भी उसका एकदम निखरा हुआ नही था। फिर भी आरकादी को यह निश्चित मालूम हुआ कि उसने इससे अधिक लुभावनी स्त्री पहले कभी नही देखी। उसकी आवाज़ सगीत बनकर बराबर उसके कानो में गूजती रही। उसके गाउन की हर लहर में उसे एक जादू मालूम होता था, ऐसा जो अन्य किसी स्त्री में नही था। उसे लगा जैसे उसमें अधिक कमनीयता

ग्रौर प्रवाह है। उसकी हर हरकत उसे बहुत ही स्वच्छन्द ग्रौर बनावट से ग्रछूती मालूम हुई।

ग्रौर उस समय जब माजुर्का की धुन बजनी शुरू हुई, ग्रारकादी के रोम रोम में एक सकोच-सा समा गया। वह उस स्त्री के पास, उसके बराबर में, बैठ गया। उसने चाहा कि बातचीत शुरू करे, लेकिन उसके मुह से बोल न निकला ग्रौर उलझन में ग्रपने बालो पर थपकिया देता रह गया। लेकिन उसका यह सकोच ग्रौर परेशानी ग्रधिक देर तक नही टिक सकी। ग्रोदिनत्सोवा की स्थिरता ने उसे सहारा दिया ग्रौर पन्द्रह मिनट बीतते न बीतते सहज भाव के साथ वह उससे बाते करता नजर ग्राने लगा—ग्रपने पिता के बारे में, ताऊ जी के बारे में, सन्त पीतर्सबर्ग ग्रौर देहात में ग्रपने जीवन के बारे में। ग्रोदिनत्सोवा विनम्र सहानुभूति के साथ उसकी बाते सुनती ग्रौर ग्रपनी पखी की पखुडियो को थोडा खोलती ग्रौर बन्द करती रही। रह रहकर ग्रोदिनत्सोवा को नाच का बुलावा मिलता ग्रौर तब ग्रारकादी की बातो का सिलसिला टूट जाता। ग्रौरो की बात छोडिए, खुद सितनिकोव ने ही उसे दो बार नाच का निमत्रण दिया। नाच के बाद वह फिर उसी जगह पर ग्रा बैठती, ग्रपनी पखी को उठाती, नाच की उत्तेजना का जरा भी चिन्ह उसकी सासो में नजर न ग्राता ग्रौर ग्रारकादी, उसके निकट बैठने के ग्राल्हाद से भरा, ग्रपनी बातचीत का सिलसिला फिर शुरू कर देता। वह उससे बाते करता, उसकी ग्राखो में झाकता, उसकी नफीस भौहो को निहारता, उसके गम्भीर ग्रौर प्रतिभावान् चेहरे की समूची मधुरता में एक ग्रजीब उल्लास का ग्रनुभव करता। वह खुद बहुत ही कम बोलती थी, लेकिन जब भी बोलती तो उसके शब्दो में दुनिया की जानकारी झलकती। उसकी कुछेक बाते तो ऐसी थी जिनसे ग्रारकादी को लगा

कि यह युवा स्त्री जीवन में काफी गहरे गई है, और बहुत कुछ उसने सोचा-समझा है

"वह आपके साथ कौन खडे थे?" उसने आरकादी से पूछा, "उस समय जब सितनिकोव आपको मेरे पास लेकर आए थे।"

"ओह, तो क्या आपका ध्यान उसपर भी गया था?" अब आरकादी ने पूछा। "बहुत ही नफीस चेहरा है उसका, है न? उसका नाम है बजारोव, मेरा मित्र है।"

और आरकादी ने अपने मित्र को लेकर पुल बाधने शुरू कर दिए। इतने विस्तार और इतने उछाह के साथ उसने अपने मित्र का जिक्र किया कि ओदिनत्सोवा ने मुडकर बडे ध्यान से उसे परखा। इस बीच माजुर्का नृत्य भी पूरा हो चला। आरकादी का जी भारी हो गया—यह सोचकर कि अब उसे अपनी नृत्य-सगिनी से अलग होना पडेगा। ओह, कितने आनन्द के साथ बीती थी ये घडिया! यह सच था कि इस समूचे काल में वह बराबर यह अनुभव करता रहा जैसे उसके हर व्यवहार में दया का एक भाव छिपा हो, एक ऐसा भाव जिसके लिए उसे उसका कृतज्ञ होना चाहिए लेकिन युवा हृदय इस तरह की सनसनाहटो से त्रस्त नही होते।

सगीत थम गया।

"Mersi*," उठते हुए ओदिनत्सोवा ने कहा। "मेरे यहा आने का आपने वायदा किया है। साथ में अपने मित्र को भी लेते आइए। ऐसे आदमी को देखने के लिए, जो इतना साहसी है कि किसी चीज में विश्वास नही करता, मेरा मन भारी कौतुक से भरा है।"

---

* शुक्रिया। (फ्रेंच) —स०

तभी गवर्नर ओदिनत्सोवा के पास आए, सूचना दी कि भोजन तैयार है और व्यस्त-से अन्दाज़ में सहारा देने के लिए अपनी बाह उसकी ओर बढा दी। ओदिनत्सोवा उनके साथ खिसक चली, मुसकराते हुए आरकादी की ओर मुडी और थोडा सिर हिलाकर विदा का सकेत किया। आरकादी भी झुक गया और दूर हटते हुए उसके आकार को देखता रहा (ओह, सुरमई चमकवाली वदन से सटी काली रेशमी पोशाक में उसकी काठी कितनी सुघर मालूम होती थी!) और यह सोचकर कि उसे अब मेरा भला क्या ध्यान होगा, एक मृदु उदासी में वह डूब चला

"कहो," जैसे ही आरकादी कोने में पहुचा, बज़ारोव ने उससे पूछा, "मजे से तो गुज़री न? अभी अभी एक सज्जन मुझसे कह रहे थे कि यह स्त्री – ओह-हो-हो-हो! लगता था जैसे वह काठ के उल्लू हो! तुम अपनी राय बताओ। क्या वह सचमुच ओह-हो-हो-हो है?"

"यह व्याख्या कुछ ठीक से पल्ले नहीं पडी," आरकादी ने जवाब दिया।

"बस बस, इतने भोले न बनो!"

"अच्छा तो सुनो। तुम्हारे वह सज्जन मेरी पकड से बाहर है। इसमें शक नही कि ओदिनत्सोवा अत्यन्त लुभावनी है। लेकिन वह इतनी सर्द और अपने आपमें इतनी सिमटी है कि "

"यानी स्थिर पानी का स्रोत गहरा होता है," बज़ारोव ने बीच मे ही कहा। "तुम कहते हो, वह सर्द है। यही तो सबसे बडी खूबी है। आइसक्रीम के तो तुम शौकीन हो, हो न?"

"हो सकता है," आरकादी बुदबुदाया। "फिर मैं कोई पारखी भी नहीं हू। जो हो, वह तुमसे जान-पहचान करना चाहती

है। मुझसे अनुरोध किया है कि तुम्हे लेकर उसके यहा किसी दिन पहुचू।"

"मैं सहज ही कल्पना कर सकता हू कि कितना रगीन बनाकर तुमने मुझे उसके सामने उछाला होगा। जो हो, तुमने अच्छा ही किया। चला चलूगा। वह चाहे जो भी हो—वन की शेरनी अथवा कूक्शिना की तरह उन्मुक्त—इसमें शक नही कि उसके कधो का ढाल वेजोड है, ऐसा जो एक मुद्दत से मैंने नही देखा था।"

वज़ारोव का यह औघडपन आरकादी को वहुत वुरा मालूम हुआ, लेकिन—जैसा कि अक्सर होता है—उसने अपने मित्र को एक ऐसी चीज़ के लिए भला-वुरा कहना शुरू किया जो उस वात से सर्वथा भिन्न थी जिसे कि उसने वस्तुत उसमें नापसद किया था। दवे स्वर में बोला.

"तुम क्यो यह मानना नही चाहते कि स्त्रिया भी अपने स्वतत्र विचार रख सकती है?"

"इसलिए मेरे मुन्ना, कि केवल उन्ही स्त्रियो को अव मैंने स्वतत्रता की ध्वजा फहराते देखा है जो सूखकर एकदम अमचुर हो गई हैं।"

इसके वाद वातचीत आग नही वढी। भोजन के वाद दोनो युवक तुरत वहा से चल दिए। उनके मुडते ही कूक्शिना विचलित और कुत्सा-भरी—लेकिन असल में अपने भीतर एक खटक छिपाए—हसी में फूट पडी। इस वात ने उसके अहम् को वुरी तरह घायल कर दिया था कि उन दोनो में से एक का भी उसकी ओर ध्यान नही गया। नाच में वह सवके वाद तक जमी रही। रात के तीसरे पहर, तीन वजे के वाद, ठेठ पेरिस के स्टाइल में, सितनिकोव के साथ उसने पोल्का-माजुर्का नृत्य किया और इस नृत्य के साथ चरम उत्कर्ष पर पहुचकर गवर्नर का शानदार आयोजन सम्पूर्ण हुआ।

"चलो, इसे भी देख ले कि स्तनपायी प्राणियो में यह किस कोटि की जीव है," ओदिनत्सोवा से मिलने के लिए उसके होटल के जीने पर चढ़ते हुए बजारोव ने अगले दिन आरकादी से कहा। "बहुत कुछ है जो वह अपने बाहरी आवरण के भीतर छिपाए है।"

"तुम भी अजीब आदमी मालूम होते हो," आरकादी ने भन्नाकर कहा। "क्या इसका यह मतलब है कि तुम्हारी, यानी बजारोव की, बुद्धि सकीर्ण है—इतनी कि तुम समझ बैठे हो "

"बस बस, ज्यादा भोदूपन न दिखाओ!" बजारोव ने बीच में ही लापर्वाही से कहा। "तुम्हे अभी तक इतना भी मालूम नही कि हमारे बात करने का यह एक ढग है जिसका मतलब होता है—मामला चौकस है। यह सब हमारी चक्की का दाना है। खुद तुम्ही उसके विवाह की अजीब परिस्थितियो का आज मुझसे जिक्र कर रहे थे, हालाकि किसी मालदार बूढे से शादी करना—अगर सच पूछो तो—ऐसी कोई अजीब बात भी नही, बल्कि समझदारी की निशानी है। शहर की कानाफूसी का मैं विश्वास नही करता, बल्कि मुझे तो, अपने रोशन दिमाग़ गवर्नर के शब्दो में, यह सोचना अच्छा लगता है कि इसमें कुछ है जरूर!"

आरकादी ने कुछ नही कहा और दरवाजे को खटखटाया। वर्दी से लैस युवा नौकर दोनो मित्रो को एक बडे कमरे में लिवा ले गया। कमरे की साज-सज्जा में, रूसी होटलो के अन्य सभी कमरो की भाति, यहा भी सुरुचि पर पानी फिरा था, लेकिन फूलो की भरमार जरूर थी। खुद ओदिनत्सोवा जल्दी ही आ गई। वह प्रात काल की सीधी-सादी पोशाक पहने थी। बसन्त के सूरज की रोशनी

में वह और भी युवा मालूम हो रही थी। आरकादी ने वजारोव का परिचय कराया और यह देखकर मन ही मन उसे अचरज हुआ कि जहा वजारोव कुछ अचकचा-सा गया, वहा ओदिनत्सोवा पूर्णतया शान्त और स्थिर रही, ठीक वैसी ही जैसे कि वह पिछली रात थी। अपनी इस अचकचाहट का अनुभव कर वजारोव मन ही मन झुझला उठा। "यह क्या हिमाकत है," उसने अपने आपसे कहा, "एक पेटीकोट तुम्हे इतना पस्त कर दे!" और फिर, एकदम सितनिकोव की भाति वेहाल, आरामकुर्सी में समाते हुए अतिरजित वेपर्वाही के साथ वाते करने लगा। उधर ओदिनत्सोवा, एकटक, अपनी पारदर्शी आखो से उसे निहारती रही।

अन्ना सेर्गेयेवना ओदिनत्सोवा के पिता सेर्गेई निकोलायेविच लोक्तेव थे। वह सुन्दर, रसिक, दुस्साहसी और जुआरी थे। पन्द्रह साल तक वह सन्त पीतर्सवर्ग और मास्को में जमे और धूम मचाते रहे। अन्त में, रग-पानी में अपना धन स्वाहा करने के वाद, मजवूरन उन्हे देहात की शरण लेनी पडी। इसके कुछ ही दिन वाद उनका देहान्त हो गया, अपनी दोनो कन्याओ के नाम—अन्ना वीस साल की और कातेरीना वारह की—जायदाद नही के वरावर छोडकर इस दुनिया से चल वसे। लडकियो की मा जो एक निर्धन ड्यूक परिवार की वेटी थी, वहुत पहले ही, उस समय जवकि पति का जीवन पूरे उभार पर था, सन्त पीतर्सवर्ग में मर चुकी थी। पिता की मृत्यु हो जाने पर अन्ना को भारी मुसीवत का सामना करना पडा। सन्त पीतर्सवर्ग में उसने वहुत ही वढिया शिक्षा प्राप्त की थी, लेकिन घर को सभालने, जायदाद का काम-काज देखने और सवसे अलग-थलग निपट देहाती जीवन की अन्य ढेर सारी चिन्ताओ का वोझ ढोने में इस शिक्षा ने सहारा नही दिया। पूरे जवार मे एक भी जीव ऐसा नही था जिसे वह जानती

हो, जिससे वह कुछ पूछ-ताछ कर सके। उसके पिता अपने पास-पड़ौसियो से दूर रहते थे। वह अपने पड़ौसियो से और पड़ोसी उनसे, अपने अपने तरीके से, नफरत करते थे। लेकिन उसने, फिर भी, जी नही छोड़ा और अपनी मा की बहिन राजकुमारी अवदोत्या स्तेपानोवना को तुरत अपने पास बुला लिया। वह बुरे कैण्डे में ढली, नक-चढी, वृद्ध महिला थी। अपनी भतीजी के घर मे पाव रखने के बाद उन्होने सबसे अच्छे सभी कमरो पर अपना कब्ज़ा जमा लिया। सुबह से लेकर रात तक कोड़े-से फटकारती और झीकती-झल्लाती, और अपने एकमात्र मुह झुलसे चाटुकार दास को हाज़िरी में लिए बिना कभी बाग में टहलने न जाती। वह हरे रग की तार तार हुई वर्दी और उसके ऊपर नीले-आसमानी रग का पट्टा कसे रहता, सिर पर तिर्छी टोपी लगाता। अन्ना ने बड़े धीरज से अपनी मौसी की मनमानी झक्को को सहा और फुरसत से अपनी बहिन की शिक्षा-दीक्षा में लगी रही। ऐसा मालूम होता था जैसे इस सूने में अपना यौवन खोने की सम्भावना के आगे उसने आत्मसमर्पण कर दिया हो . लेकिन विधाता कुछ और ही सोच रहे थे। ओदिनत्सोव नाम के एक व्यक्ति की नज़र उसपर पड़ी, और वही उलझकर रह गई। वह बहुत ही मालदार आदमी था, और आयु साठ ऊपर चार। झक्की, तुनकमिज़ाज, तगड़ा, वज़न का भारी, चिड़चिड़ा। लेकिन यो स्वभाव का बुरा नही था, न ही बेवकूफ था। अन्ना के प्रेम में फसकर उसने विवाह का प्रस्ताव किया। वह उसकी पत्नी बनने को राज़ी हो गई। करीब छे साल तक वह उसके साथ रहा और मरते समय अपनी समूची सम्पत्ति उसे दे गया। उसके मरने के बाद एक साल तक अन्ना देहात में ही बनी रही, इसके बाद अपनी बहिन को लेकर वह विदेश यात्रा के लिए चल पड़ी, लेकिन जर्मनी के अलावा और कही न जा

सकी। घर की याद ने सताया और वह अपने प्यारे निकोलस्कोये गाव में वापिस लौट आई। गाव 'एन' नगर से पच्चीस मील दूर था। यहा उसका एक ठाठदार और रईसाना मकान था, बहुत ही वढिया वगीचे और लताकुजो से लैस। स्वर्गीय ओदिनत्सोव ने अपने ऐश व आराम के मामले में कोई कसर नही छोडी थी। अन्ना सेर्गेयेवना विरले ही शहर का चक्कर लगाती थी। आमतौर से जव काम होता तभी वह जाती, सो भी थोडे समय के लिए ही। ज़िले में उसका मान नही था। ओदिनत्सोव के साथ उसके विवाह ने एक अच्छी-खासी हलचल पैदा कर दी थी और उसे लेकर अनेक मनगढन्त कहानियो का जाल वन गया था। लोगो ने कहा कि अपने पिता के पेशे में वह हाथ वटाती थी और एक पाप का मुह वन्द करने के लिए ही उसे विदेश जाना पडा भेद-भरे अन्दाज़ में वे इशारा करते "वस, अव अपनेआप समझ लो," इधर की उधर लगानेवाले, हृदय में जलन लिए अपनी वात को समेटते हुए कहते। "वह आग और पानी में से गुज़र चुकी है," उसके वारे में कहा जाता, और देहात का कोई लाल वुझक्कड इसपर चाशनी चढाता "और खौलते हुए तेल में से भी!" ये सारी खुराफाते उसके कानो तक पहुचती, लेकिन वह उन्हे अनसुना कर देती। वह स्वतत्र और अपेक्षाकृत दृढ प्रकृति की महिला थी।

ओदिनत्सोवा अपनी कुर्सी से पीठ टिकाए और दोनो हाथो को एक-दूसरे से सटाए वज़ारोव की वाते सुन रही थी। अपनी आदत के खिलाफ वजारोव आज ज़रूरत से ज्यादा वातूनी वना था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह मजेदार वातो से अन्ना का जी वहलाने पर तुला हो। आरकादी को इससे और भी हैरत हो रही थी। वह कुछ समझ नही सका कि वज़ारोव अपने इस लक्ष्य में पूरा हो रहा है या नही। अन्ना के चेहरे से कुछ पता नही चलता था कि उसके मस्तिष्क में क्या गुज़र

रहा है। उसकी अडिग नफासत में जरा भी वल नही पडा था—वह एकदम भली और सूक्ष्म वनी वैठी थी। उसकी खूबसूरत आंखो में एकाग्रता की चमक थी, लेकिन यह एकाग्रता भी एकदम स्थिर थी। वज़ारोव की वातो ने, शुरू के कुछ क्षणो में अच्छा असर नही डाला था। उसकी तवीयत कुछ भिनक गई थी—जैसे कोई वदवू का झोका या किरकिरी आवाज़ आ टकराई हो। लेकिन उसने तुरत ही यह भाप लिया कि वह कुछ सकपका गया है, और इससे वह मन ही मन खुश भी हुई। उसे केवल वाजारू वातो से चिढ थी, और वज़ारोव वाजारू वातो से अछूता था। आरकादी की हैरत का कोई अन्त नही था। उस दिन, एक के वाद एक, अनेक अचरज की वाते उसने देखी। वह उम्मीद करता था कि ओदिनत्सोवा जैसी चतुर स्त्री से वज़ारोव अपने विश्वासो और धारणाओ की वात करेगा। सच पूछो तो खुद ओदिनत्सोवा भी इसी लिए उसकी ओर खिची थी—ऐसे आदमी को देखने की उसने उत्सुकता प्रकट की थी जो "इतना साहसी है कि किसी चीज़ में विश्वास नही करता"। लेकिन वज़ारोव था कि उस सवके वदले डाक्टरी दवाइयो, होमियोपैथी और वनस्पति विज्ञान के वारे में वाते कर रहा था। और ओदिनत्सोवा ने भी, मालूम हुआ, देहात के निरालेपन में अपना समय यो ही नही गवाया था। उसने कुछ अच्छी पुस्तके पढी थी और रूसी भाषा पर उसका अधिकार देखते ही वनता था। वातचीत का सिलसिला उसने सगीत की ओर मोड दिया। लेकिन यह देखकर कि वज़ारोव कला को रद्द करता है, वह वडी नफ़ासत के साथ फिर वनस्पति विज्ञान की ओर लौट आई—हालाकि इस वीच आरकादी ने लोक-सगीत के गुणो का वखान शुरू भी कर दिया था। ओदिनत्सोवा का उसके प्रति व्यवहार अभी भी छोटे भाई जैसा ही था। ऐसा मालूम होता था जैसे वह निरी सहृदयता और किशोर-सुलभ अल्हडपन के सिवा किसी और चीज का अस्तित्व उसमें न देखती हो। विना किसी उतावली

के, तरह तरह के विषयो पर श्रौर सरगर्मी के साथ, तीन घटे से भी श्रधिक देर तक वातो का सिलसिला चलता रहा।

श्राखिर हमारे मित्र विदा लेने के लिए उठे। श्रन्ना सेर्गेयेवना ने स्निग्ध नज़र से उनकी श्रोर देखा, दोनो की श्रोर श्रपना गोरा-चिट्टा सुन्दर हाथ वढाया श्रौर, क्षण भर तक कुछ सोचते हुए, ढुलमुल लेकिन मधुर मुसकान के साथ कहा

"हा तो सज्जनो, श्रगर ऊवने का डर न हो तो कभी निकोलस्कोये श्राकर दर्शन दीजिए।"

"श्रोह, सच कहता हू, श्रन्ना सेर्गेयेवना," श्रारकादी ने चहकते हुए कहा, "इससे वढकर खुशी मेरे लिए श्रौर कोई नही हो सकती "

"श्रौर श्राप, मौसिये वज़ारोव?"

वज़ारोव केवल सिर झुकाकर रह गया, श्रौर विदाई के समय एक नये श्राश्चर्य के रूप में श्रारकादी ने देखा कि उसके मित्र के गाल लाल होते जा रहे हैं।

"श्रव वोलो," गली में निकल श्राने पर उसने पूछा। "क्या तुम श्रव भी यही समझते हो कि वह वडी श्रोह-हो-हो है?"

"कुछ पल्ले नही पडा कि वह क्या है श्रौर क्या नही! एकदम वर्फ की सिल्ली है, कम्वख्त!" वज़ारोव ने पलटकर जवाव दिया, श्रौर फिर कुछ रुककर वोला "मलिका-महारानी, पूरी वेगम साहिवा! वस, सिर पर ताज श्रौर पीछे दामन-वरदारो की फौज श्रौर होती तो कोई कसर न रह जाती!"

"लेकिन हमारी मलिका-महारानिया इतनी वढिया रूसी नही वोलती," श्रारकादी ने टीका की।

"वह चक्की में पिस चुकी है, मेरे मुनुश्रा, उसे हमारी रोटियो का स्वाद मालूम है।"

"तुम कुछ भी कहो, लेकिन है वह बड़ी मीठी!"

"कितना हरा-भरा बदन है," बज़ारोव कहता गया, "शरीर-रचना-शास्त्रियों के अध्ययन के लिए बहुत ही बढ़िया सामग्री!"

"बस बस, खुदा के लिए यह बंद करो, येवगेनी! जानते हो, हर चीज़ की एक हद होती है।"

"अच्छी बात है, इतना नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं, मेरे भोले मित्र! मानता हूं, वह एक नम्बर है। ज़रूर उसके गांव चलेंगे।"

"कब?"

"कल का दिन छोड़कर परसों। क्यों, कैसा रहेगा? यहां पड़े रहने से क्या फ़ायदा? कुक्शिना के साथ शैम्पेन पीना? या तुम्हारे उन उदारपंथी सम्मानित रिश्तेदार के सामने कान फटफटाना? तो परसों का तय समझो। और सुनो, मेरे पिता की जागीर भी वहां से कुछ ज़्यादा दूर नहीं है। यह वही निकोलस्कोये है न जो 'एन' सड़क पर पड़ता है?"

"हां।"

"Optime*, अलसाने से काम नहीं चलेगा। केवल मूर्ख अलसाते हैं, और बुद्धिमान पंछी। भई खूब, क्या हरियल बदन पाया है उसने!"

तीन दिन बाद दोनों मित्रों ने निकोलस्कोये गांव की राह पकड़ी। दिन उजला था। गर्मी कोई खास नहीं थी। सराय-गाड़ी के नाटे चिकने घोड़े तेज चाल से दौड़ रहे थे। उनकी पूंछें लटदार और गुथी हुई थीं। आरकादी ने दूर तक सड़क पर नजर डाली और जाने क्यों उनके होंठों पर मुसकराहट खेल गई।

---

* अति उत्तम। (लैटिन)—स०

"अरे, मुझे बधाई दो!" सहसा बज़ारोव छलछला उठा। "आज बाईस जून है, मेरे इष्ट-सन्त का दिन। देखना है, उनका वरदान क्या फल देता है। घर पर मेरा इन्तज़ार हो रहा होगा," बज़ारोव ने कहा और फिर अपनी आवाज़ को धीमी करता हुआ बोला "लेकिन कोई बात नही। करने दो उन्हे इन्तज़ार!"

१६

अन्ना सेर्गेयेवना की गढी, जिसमें वह रहती थी, खुले पहाडी बाजू पर स्थित थी। यहा से पास ही ईटो का एक पक्का गिरजा था। गिरजा पीला पुता हुआ था और उसपर हरी छत छाई थी। उसके खभे सफेद थे और सदर दरवाज़े पर भित्ति चित्र अकित थे जिनमें, इतालवी ढग से, महात्मा ईसा के कब्र से जी उठने के दृश्य दिखाए गए थे। अग्र भाग में लोहे की टोपी पहने सावले योद्धा की एक विनत आकृति थी। उसके वदन की रेखाओ की गोलाई देखते ही बनती थी। गिरजे से परे दो पातो में गाव फैला था। कही कही, छतो के ऊपर उठी धुवा निकलने की चिमनियो की छतरिया दिखाई दे रही थी। गढी और गिरजा एक ही शैली के बने थे—उस शैली के जिसे आमतौर से अलेक्सान्द्रियन शैली कहा जाता है। गिरजे की भाति गढी भी पीली पुती थी और उसके ऊपर हरी छत छाई थी। उसके खभे भी सफेद थे और अग्र भाग ज़िरह्‌वस्तरी चिन्ह से सजा था। प्रदेश के इमारत-साज़ ने, स्वर्गीय ओदिनत्सोव की मर्ज़ी से, इन दोनो का डिज़ाइन तैयार किया था। गडवडझाले और कल्पना की कलावाज़ियो को—जैसा कि नयी चाल के विचारो को ओदिनत्सोव कहता था—वह कतई बरदाश्त नही करता था। मकान के अगल-बगल, दोनो ओर, एक पुराने बाग के घने पेड छाए थे।

सामने फाटक तक जानेवाला रास्ता दोनो ओर छटे-सवरे फर के वृक्षो से सजा था।

हमारे मित्र वहा पहुचे। घर के वडे हॉल में दो प्यादो ने उनका स्वागत किया था। प्यादे तगडे और वर्दी से लैस थे। उनमें से एक उसी क्षण भडारी को खोजने चला गया। भडारी एक स्थूलकाय आदमी था, काला फ्राक-कोट पहने हुए। वह तुरत आ गया और मेहमानो को कालीन-विछे जीने से उस कमरे में ले गया जहा उन्हे ठहराना था। कमरे में दो पलग विछे थे, साज़-सिगार का अन्य सारा सामान मौजूद था। देखते ही हृदय पर कायदे और करीने की छाप पडती थी। हर चीज़ चुस्त और दुरुस्त थी, हर चीज़ – वडी होशियारी से – एक भीनी सुगध में पगी हुई। लगता था जैसे किसी मत्रालय का वैठक-घर हो।

"अन्ना सेर्गेयेवना ने प्रार्थना की है कि आप आधे घटे ठहरने की कृपा करे," भडारी ने आकर सूचना दी, "तव मैं आपको उनके पास ले चलूगा। इस वीच अगर आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो मैं सेवा में हाज़िर हू।"

"नही, भाई, कुछ नही चाहिए," वज़ारोव ने जवाव दिया। "हा! तुम्हारा भला होगा, अगर गला तर करने के लिए ज़रा एक गिलास वोदका ले आओ।"

"अच्छा, श्रीमान!" भडारी ने कुछ मकपकाकर कहा और वापिस लौट गया। जाते समय उसके जूते मचमचा रहे थे।

"क्या रईसी शान है!" वज़ारोव ने आवाज़ कसी। "क्यो तुम्हारी रईसी जमात में यही कहा जाता है न? आखिर राजरानी जो ठहरी!"

"और राजरानी भी कितनी वेजोड," आरकादी ने चुटकी ली, "जो एक झोक में तुम और मुझ जैसे वेशकीमती कुलीनो की जोटी को निमत्रण दे डालती है!"

"खासतौर से मुझे – जिसके वाप हड्डीसाज़ थे, वेटा भी हड्डीसाज़ वनने जा रहा है और जिसके दादा गिरजे में छोटे पादरी थे क्यो, तुम्हे मालूम है न कि मै छोटे पादरी का पोता हू ?" और फिर, थोडा रुककर, अपने होठो में वल डालते हुए वोला "स्पेरान्स्की की भाति। लेकिन, यह मानना पडेगा कि है वह सिर-चढी, तुम्हारी वह राजरानी, सच! हमें भी अव अपने ड्रैसिग सूट में लैस हो जाना चाहिए, क्यो ?"

आरकादी ने केवल अपने कधे विचकाए लेकिन वह भी अटपटा-सा अनुभव कर रहा था।

आधे घटे वाद आरकादी और वज़ारोव नीचे ड्राइगरूम में पहुचे। यह एक खुला-सा, हवादार, रईसी ठाठ में सजा कमरा था। लेकिन सजावट कोई खास सुरुचिपूर्ण नही थी। वेलवूटेदार किशमिशी कागज़ से मढी दीवारो के सहारे, ठेठ रस्मी तरीके से, वज़नी तथा वेशकी मती फर्नीचर – मेज़, कुर्सिया, सोफा, आदि – सजा था। अपने एक मित्र और एजेण्ट की मारफत, जो शराव का व्यापारी था, स्वर्गीय ओदिनत्सोव ने मास्को से यह फर्नीचर मगवाया था। मुख्य तख्तपोश के ऊपर किन्ही हृष्ट-पुष्ट सुनहरे वालोवाले श्रीमान का चित्र लगा था। ऐसा मालूम होता था जैसे उन्हे आगन्तुक न रुचे हो और चढी हुई नज़रो से उन्हें घूर रहे हो।

"यह खुद वुढऊ ही मालूम होते हैं," वज़ारोव ने आरकादी के कान में फुसफुसाकर कहा और अपनी नाक में सलवटें डालता हुआ वोला "अच्छा हो कि यहा से उलटे-पाव खिसक चले।"

इसी समय मालकिन ने कमरे में पाव रखा। वह हल्की आवेरवा की पोशाक पहने थी। वाल वहुत ही सुथराई के साथ सवार-

कर कानो के पीछे कर लिए गए थे जिससे उसके चेहरे की ताज़गी और निश्चलता में एक बाल-सुलभ निखार आ गया था।

"मेरी मेहमानी मजूर करने का वायदा आपने पूरा किया, इसके लिए धन्यवाद," उसने कहना शुरु किया। "यो यह बुरी जगह नही है, सच। अपनी बहिन से मै तुम्हारा परिचय कराऊगी। वह बहुत बढिया पियानो बजाती है। आपको तो, मोसिये बजारोव, इसमें कोई दिलचस्पी नही, लेकिन मोसिये किरसानोव – मै समझती हू – सगीत पसद करते है। बहिन के अलावा मेरी एक बूढी मौसी भी यही रहती है, और कभी कभी ताश खेलने के लिए हमारा एक पडोसी भी आ जाता है। कुल मिलाकर यही हमारी मडली है। अच्छा तो अब बैठ जाए हम लोग।"

ओदिनत्सोवा ने अपना यह छोटा-सा सम्भाषण एक निराली सफाई के साथ दिया, जैसे उसने इसे रट रखा हो। फिर वह आरकादी की ओर मुडी। पता चला कि उसकी मा आरकादी की मा को जानती थी और निकोलाई पेत्रोविच के प्रेमाभिसार के काल में उसने 'मन की मीत' का काम किया था। आरकादी बडे चाव के साथ अपनी मा के बारे में बाते करने लगा और बजारोव ने चित्रो के अलबमो को देखना शुरु किया। "मै भी क्या मेमना बन गया हू," वह मन ही मन सोच रहा था।

एक खूबसूरत बोरज़ोई कुत्ता, गले में नीला पट्टा डाले, ड्राइगरूम में लपक आया और अपने पजो को फर्श पर थपथपाकर आवाज़ करने लगा। उसके पीछे पीछे अठारह वर्ष की एक लडकी ने प्रवेश किया जिसके बाल काले और रग बादामी था, कुछ गोलाई लिए, मगर आकर्षक, चेहरा और छोटी छोटी काली आखे। वह फूलो से भरी एक डलिया लिए थी।

"यह है कात्या, मेरी बहिन," गरदन हिलाकर उसकी ओर इशारा करते हुए ओदिनत्सोवा ने कहा।

सलीके से उसने घुटने झुकाए और अपनी वहिन की वगल में वैठ कर फूलो को छाटने लगी। वोरज़ोई कुत्ता, जिसका नाम फिफी था, बारी बारी से दोनो अतिथियो के पास गया और पूछ हिलाते हुए अपनी ठडी थूथनी से उनके हाथो को दुलराया।

"क्या ये सव फूल तुम्ही ने चुने हैं?" ओदिनत्सोवा ने पूछा।

"हा," कात्या ने जवाव दिया।

"मौसी चाय पीने आ रही हैं न?"

"हा, आ रही हैं।"

बोलते समय कात्या बहुत ही मुग्ध, सलज्ज और सरल भाव से मुसकराती थी। आखो में एक रोचक ताडना लिए वह अपनी भौंहो के नीचे से देखती थी। उसकी हर चीज़ में— उसकी आवाज़ में, उसके चेहरे के कोमल ढलाव, उसके गुलावी हाथो की पीत भवरियो और कुछ सकुचे से उसके कघो में एक ताज़गी और अकृत्रिमता थी वह सास खीचे थी और उसके चेहरे पर रगो की लहरिया निरन्तर वदल रही थी।

ओदिनत्सोवा बज़ारोव की ओर मुडी।

"केवल शाइस्तगी के नाते आप उन चित्रो में सिर खपा रहे हैं, येवगेनी वसीलियेविच," उसने कहा, "उनमें भला आपका क्या मन लगेगा? छोडिए उन्हें, और इधर हमारे पास खिसक आइए, कुछ बातचीत कीजिए।"

बज़ारोव ने अपनी कुर्सी निकट खिसका ली।

"कहिए, क्या बातचीत करना चाहती है?"

"जो भी आप चाहे। और यह पहले से जान रखिए कि बहस के मामले में मैं भी काफी शहज़ोर हू।"

"आप?"

"हा मैं। क्यों, अचरज होता है क्या? आखिर किस लिए?"

"इसलिए कि जहा तक मैं समझ सका हू, आप ठडे और शान्त स्वभाव की है, और बहस के लिए कुछ गर्मी की—भावावेश की जरूरत होती है।"

"लगता है, आपने मुझे बहुत जल्दी पहचान लिया। पहली बात तो यह कि मैं अधीर और हठीली हू, न हो, कात्या से पूछ देखिए दूसरे, मै बड़ी आसानी से आवेश में बहना जानती हू।"

बज़ारोव ने अन्ना सेर्गेयेवना की ओर देखा।

"शायद, आप ही जाने। तो आप बहस करना चाहती हैं—अच्छी बात है। आपकी अलबम में मै सैक्सोनियन स्विजरलैण्ड के दृश्य देख रहा था। आपने रिमार्क कसा कि उनमें मेरा क्या मन लग सकता है। यह आपने इसलिए कहा कि आप मुझे कलात्मक रुचि से शून्य समझती है। यह सच भी है, मुझमें कलात्मक रुचि नही है। लेकिन उन दृश्यो में मेरी दिलचस्पी हो सकती है—भूतत्व की दृष्टि से मिसाल के लिए जैसे पहाडो की चट्टानी बनावट के अध्ययन के रूप में।"

"माफ़ कीजिए। भूतत्व के लिए आपको किसी पुस्तक की ओर या इस विषय के किसी अन्य ग्रथ की ओर, लपकना चाहिए, न कि चित्रो की ओर।"

"जिस चीज को पुस्तक के दस पन्ने भी मूर्त नही कर पाते, उसे चित्र एक ही झलक में मूर्त कर देते हैं।"

कुछ देर तक अन्ना सेर्गेयेवना चुप रही। फिर मेज पर कोहनियो के बल झुकते और अपने चेहरे को बज़ारोव के और अधिक निकट लाते हुए बोली

"क्या सचमुच आपमें कोई कलात्मक रुचि नहीं है? उसके बिना भला कैसे चल सकता है?"

"पहले यह बताइए, आखिर किस मसरफ की चीज़ है वह?"

"तो सुनिए। और भी कुछ नही तो उससे लोगो को जाना जा सकता है, उनका अध्ययन किया जा सकता है।"

बज़ारोव व्यग से मुसकराया।

"पहली बात तो यह कि इसकी पूर्ति अनुभव कर देता है। दूसरी यह कि, आप समझ रखिए, व्यक्तियो का अध्ययन करना अपना समय बरबाद करना है। सभी लोग एक से होते हैं। शरीर से भी, और आत्मा से भी। हममें से प्रत्येक के पास उसका एक मस्तिष्क होता है, जिगर होता है, हृदय होता है और फेफडे होते है। ये सब समान क्रम से सजे होते हैं। और जिन्हे नैतिक गुण कहा जाता है, वे सब भी हममें समान रूप से होते है, यो थोडे हेर-फेर से कोई फर्क नही पडता। मानव जाति का एक नमूना जाच के लिए काफी है। जैसा वह, वैसे सब और। लोग जगल के पेडो की भाति हैं। कोई भी वनस्पति-शास्त्री प्रत्येक बर्च-वृक्ष की जाच करने का पागलपन नही करेगा।"

कात्या ने, जो अब तक बेफिक्री के साथ गुलदस्ते के लिए फूल चुनने में व्यस्त थी, चकित मुद्रा में बज़ारोव की ओर देखा और उसकी तेज़ बेपर्वाह नज़र का सामना होने पर उसके गाल कानो तक लाल रग गए। अन्ना सेर्गेयेवना ने अपना सिर हिलाया।

"जगल के पेडो की भाति?" उसने दोहराया। "तो आपकी राय में मूर्ख और चतुर, भले और बुरे व्यक्ति के बीच कोई अन्तर नही है?"

"नही, अन्तर है। वैसा ही जैसा कि एक रोगी और स्वस्थ व्यक्ति के बीच होता है। क्षयग्रस्त फेफडो की हालत वही नही होती जो कि आपके या मेरे फेफडो की, हालाकि बनावट उनकी भी वैसी ही होती है जैसी कि सबकी। शरीर में रोग पैदा करनेवाले कारणो को हम करीब करीब जानते हैं। नैतिक रोग बुरी शिक्षा और उन सारी

खुराफातों के नतीजे होते है जो बचपन से ही लोगों के दिमागों में ठूंसी जाती हैं। सक्षेप में यह कि समाज की अधन्य स्थिति ही इन सब की जड है। समाज को बेहतर बनाओ, बीमारिया गायब हो जाएगी।"

यह सब बजारोव ने कुछ ऐसे अन्दाज़ में कहा जैसे उसने अपने मन में सोच लिया हो "मानो या न मानो, इसकी मुझे रत्ती-भर पर्वाह नही।" अपनी लम्बी उगलियों की धीमी हरकत से वह अपने गलमुच्छों को सवार रहा था, और उसकी आखें बेचैनी से सारे कमरे में तैर रही थी।

"तो आपका विश्वास है कि," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "समाज की सुधरी हुई अवस्था में न कोई मूर्ख रहेगा, न बद?"

"जो हो, यह तय है कि समाज की सुसगत व्यवस्था हो जाने पर किसी व्यक्ति के मूर्ख या चतुर, भले या बुरे होने से कोई खास फर्क नहीं पडेगा।"

"जी, मैं समझी। तब हम सबका गुर्दा एक-सा होगा।"

"बिल्कुल ठीक, मदाम!"

ओदिनत्सोवा आरकादी की ओर मुडी।

"और आपकी राय क्या है, आरकादी निकोलायेविच?"

"वही जो येवगेनी की," उसने जवाब दिया।

कात्या ने भौंहो में बल डाले उसकी ओर देखा।

"सज्जनो, अजीब मालूम होते है आप लोग," ओदिनत्सोवा ने कहा। "लेकिन छोडिए, इसपर फिर कभी बात करेंगे। आहट से मालूम होता है, मौसी चाय के लिए आ रही है। उनके कानो को हमें रिहाई देनी चाहिए।"

अन्ना सेर्गेयेवना की मौसी, राजकुमारी 'एक्स', कमरे में दाखिल हुई। एक मुरझाई-सी, दुबली-पतली महिला, मुट्ठियो से चुरमुर छोटा-सा

चेहरा, घूरती हुई कुत्सापूर्ण आखें, सिर पर नोची-खरोची-सी भूरे वालों की टोपी। नामालूम-से अन्दाज़ में अतिथियो के प्रति सिर झुकाकर वह एक चौडी मखमली आरामकुर्सी पर वैठ गईं। इस कुर्मी पर सिवा उनके और कोई वैठने का साहस नही कर सकता था। कात्या ने उनके पाव के नीचे एक स्टूल डाल दिया। वृद्धा ने उसे धन्यवाद नही दिया, आखें उठाकर देखा तक नही, केवल उनके हाथो ने पीले शाल के भीतर थोडी-सी हरकत की जिसमें उनका मुख्तसिर-सा शरीर करीव करीव पूर्णतया लिपटा था। पीला रग राजकुमारी 'ऐक्स' को प्रिय था। उनकी टोपी के फीते तक उजले पीले रग के थे।

"नीद कैसी आई, मौसी?" ओदिनत्सोवा ने अपनी आवाज़ को ऊची करते हुए पूछा।

"ओह, यह कुत्ता, फिर यहा आ पहुचा," वृद्धा गुर्राई और यह देखकर कि फिफी झिझकता-सा कई डग उनकी ओर वढ आया है, वह चिल्लाईं "श्शू श्शू!"

कात्या ने फिफी को वुलाकर दरवाज़ा खोल दिया।

फिफी प्रसन्नता से छलाग मारकर वाहर हो गया, इस उमग से कि खूव घूमे-खेलेगा, लेकिन वाहर अपने आपको अकेला पाकर वह दरवाज़े को खरोचने और की की करने लगा। राजकुमारी के तेवर चढ गए और कात्या अधमनी होकर सोच रही थी कि वाहर लपक जाऊ

"मेरे खयाल से चाय तैयार है," ओदिनत्सोवा ने कहा, "चलिए, सज्जनो, चले। आओ मौसी, चाय पी ले।"

राजकुमारी 'ऐक्स' चुपचाप अपनी कुर्सी से उठी और सवसे पहले कमरे से वाहर निकली। अन्य सव भी उनके पीछे पीछे भोजन-घर में पहुचे। वर्दी से चुस्त-दुरुस्त एक लडके – नौकर – ने वैसी ही अस्पर्श्य तथा गद्दीदार आरामकुर्सी खीचकर वाहर निकाली और राजकुमारी ने उसपर आसन

जमा लिया। कात्या ने—चाय डालने का काम उसी के ज़िम्मे था—सबसे पहले मौसी के प्याले में चाय उडेली। प्याले पर सामन्ती शौर्य की सजावट थी। वृद्धा ने अपनी चाय में थोडा शहद मिलाया (चाय के साथ चीनी लेना उन्हें गुनाह और फिज़ूलखर्ची मालूम होती थी, हालाकि अपनी गाठ से किसी चीज़ के लिए भी वह एक फूटी कौडी तक खर्च नही करती थी) और अचानक बैठी हुई सी आवाज़ मे पूछा

"और राजकुमार इवान ने क्या लिखा है?"

जवाब में किसी ने कुछ नही कहा। बज़ारोव और आरकादी से यह छिपा नहीं रहा कि वृद्धा की बातो पर कोई ध्यान नही देता, हालाकि उसके साथ सब सम्मान से पेश आते हैं। "राजघराने की इस तलछट को," बज़ारोव ने सोचा, "इन्होंने खाली नुमाइश के लिए रख छोडा है!"

चाय के बाद अन्ना सेर्गेयेवना ने बगीचे में टहलने का सुझाव रखा। लेकिन तभी फुहारे पडने लगी और मण्डली, सिवा राजकुमारी के, ड्राइंगरूम में लौट आई। इस बीच ताश खेलने का शौकीन पडोसी भी आ गया। वह मोटा-सा आदमी था। नाम पोरफिरी प्लातोनिच। स्थूलकाय, सफेद बाल, छोटी छोटी टागें जो ऐसी मालूम होती थी जैसे उसकी नाप के अनुसार तराशी गई हो, बहुत ही सलीकेदार और आसानी से खुश हो जानेवाला। अन्ना सेर्गेयेवना ने, जो इस बीच अधिकाशत बज़ारोव से ही बाते करने में जुटी थी, उससे पूछा कि क्या वह पुरानी चाल का 'तरजीह' खेल खेलना पसद करेंगे। बज़ारोव तैयार हो गया। कहा, देहात में जब डाक्टरी करनी है तो इसके लिए अपने को तैयार करना भी ज़रूरी है।

"लेकिन ज़रा सचेत रहना," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "पोरफिरी प्लातोनिच और मैं—हम दोनो तुम्हें मात देने जा रहे हैं।

और तुम कात्या," उसने कहा, "आरकादी के लिए कुछ बजाकर सुनाओ। वह सगीत के शौकीन है। लगे हाथ हम भी सुन लेगे।"

कात्या अनमनी-सी पियानो पर पहुच गई। और आरकादी, वावजूद इसके कि वह सगीत का शौकीन था, वेमन से उसके साथ हो लिया। उसके मन में सन्देह था कि ओदिनत्सोवा उसे टाल रही है। फिर भी उसका हृदय—जैसा कि उसकी आयु के हर युवक के साथ होता है—प्रेम के वुखार की भाति किसी घुधली और अलसा देनेवाली भावना से कुडमुडा रहा था।

कात्या ने पियानो का ढक्कन उठाया और विना आरकादी की ओर देखे धीमी आवाज में पूछा

"आप क्या सुनना पसन्द करेगे?"

"वही जो आप चाहे," आरकादी ने अनमनेपन से जवाब दिया।

"आप कैसा सगीत पसन्द करते है?" कात्या ने अपनी उसी मुद्रा में फिर पूछा।

"शास्त्रीय सगीत," आरकादी ने उसी लहजे में जवाव दिया।

"क्या आप मोजार्त पसन्द करते है?"

"हा।"

कात्या ने मोजार्त की सोनाटा की एक गत की स्वरलिपि निकाली। वह वहुत अच्छा बजाती थी। हा, उसके बजाने में नफासत तो खूब थी, पर भाव-प्रवीणता नही। आखें उसकी स्वरलिपि पर जमी थी और होठ कसकर भिचे थे। वदन को लकडी की भाति कडा किए वह सीधी वैठी थी। केवल अन्त में, उस समय जवकि वह सोनाटा की अन्तिम कडी वजा रही थी, उसके चेहरे पर कुछ चमक दिखाई दी और उसकी एक लट, घुघराले वालो से छिटककर, उसकी भौंहो के ऊपर लहरा गई।

सोनाटा के अन्तिम अश ने आरकादी को खामतौर मे मुग्ध किया जहा मदिर-मस्त सगीत की आल्हादपूर्ण प्रफुल्लता अचानक खण्ड खण्ड होकर बहुत ही तीखे—एकदम दु खद—शोक में फूट पडती है लेकिन मोज़ार्त के सगीत की स्वर-लहरियो ने जिन भावो मे उसे अभिभूत किया, कात्या से उनका कोई वास्ता नही था। उसकी ओर देखकर उसने महज़ यही सोचा "कुलीन घराने की यह युवती कतई बुरा नही बजाती, और देखने में भी यह ऐसी बुरी नही है।"

सोनाटा को बजाने के बाद कात्या ने—उसकी उगलिया अभी भी पियानो की पटरियो पर रखी थीं—आरकादी मे पूछा

"बस, या और कुछ?"

आरकादी ने कहा कि आपको और अधिक कष्ट देना मेरे बूते से बाहर है, और उसने मोज़ार्त के बारे में उससे बातचीत शुरु कर दी। उसने पूछा "यह सोनाटा खुद आपने अपनी पसद से चुनी है या किसी के सिफारिश करने से?" अस्फुट से शब्दो में कात्या ने इसका कुछ जवाब दिया और अपने में सिमटकर मूक-सी हो गई। और एक बार अपने घोंघे मे सिमट जाने के बाद, आमतौर से, वह बडी मुश्किल से काफी देर में बाहर निकलती थी। ऐसे मौको पर उसके चेहरे पर एक हठ सा—करीब करीब पथराया हुआ सा—भाव छा जाता था। उसे एकदम शरमीली नहीं कहा जा सकता। उसमें एक सशकित-अविश्वास-सा भरा था और बहिन की सरपरस्ती ने उसे कुछ दब्बू-सा बना दिया था, हालाकि बहिन को इसका, कहने की आवश्यकता नहीं, कभी सपने में भी आभास नहीं होता था। इस अटपटे मौन को भरने के लिए आरकादी ने फिफी को पुचकारा जो अब फिर कमरे में आ गया था, और भलमनसाहत से मुसकराते हुए उसका सिर थपथपाने लगा। कात्या फिर अपने फूलो में खो गई।

उधर बज़ारोव मात पर मात खा रहा था—हार का दण्ड भर रहा था। अन्ना सेर्गेयेवना चतुर खिलाड़ी थी, और पोरफिरी प्लातोनिच भी ताश के मैदान में मोर्चे से डिगनेवाला जीव नहीं था। बज़ारोव की हार, नगण्य होते हुए भी, सुखद नहीं थी। व्यालू के समय अन्ना सेर्गेयेवना ने वनस्पति-विज्ञान की चर्चा फिर छेड दी।

"चलिए, कल सुबह हम टहलने निकले," उसने कहा, "मैं चाहती हू कि जगली पौधो के लैटिन नाम और उनके गुणो के बारे में आप मुझे बताए।"

"लैटिन नाम जानकर आप क्या करेगी?" बज़ारोव ने पूछा।

"इसलिए कि कायदे से हर चीज़ मालूम होनी चाहिए।"

"कितनी अद्भुत स्त्री है यह अन्ना सेर्गेयेवना!" अपने कमरे के एकान्त में आरकादी ने अपने मित्र से छलछलाकर कहा।

"हा," बज़ारोव ने जवाब दिया, "कम्बख्त का दिमाग़ बडा काइया है। और मेरी यह बात भी तुम गाठ बाध रखो, वह निपट कोरी नही, बल्कि दुनिया-देखी मालूम होती है।"

"यह तुम किस अर्थ मे कह रहे हो, येवगेनी वसीलियेविच?"

"अच्छे अर्थ में, मेरे प्यारे साथी, अच्छे अर्थ में। यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि वह अपनी जागीर का काम-काज भी ठाठ से सभालती होगी। लेकिन अद्भुत वह नही, बल्कि उसकी बहिन है।"

"क्या-आ? वह सावली टुइया-सी लडकी?"

"हा, वह सावली टुइया-सी लडकी। समूची ताज़गी, समूची निश्छलता, सकोच तथा सहम, और अन्य सभी कुछ जैसे एक उसी में सिमटकर समा गया है। ध्यान देने लायक चीज़ है। अभी भी

ऐसी है कि चाहे जिस साचे में उसे ढाल लो। लेकिन दूसरी सारे दाव-पेंच से वाकिफ है।"

आरकादी ने कुछ नही कहा और दोनो, अपने अपने विचारो में डूबे, बिस्तरो पर पड रहे।

अन्ना सेर्गेयेवना भी, उस रात, अपने मेहमानो के बारे में सोचती रही। बज़ारोव उसे अच्छा लगा, इसलिए कि बनावट का उसमें अभाव था और बेलाग ढग से बाते करता था। उनमें उसे एक नयापन, कुछ ऐसा जो उसने पहले नही देखा था, मालूम हुआ। और उत्सुकता तो उसकी आदत में शामिल थी ही।

अन्ना सेर्गेयेवना अपेक्षाकृत एक निराली जीव थी। दुराग्रहो से वह मुक्त थी, यहा तक कि उसमें ऐसा कोई विश्वास नही था जिसे दृढ कहा जा सके। इसलिए न तो वह कभी कुछ हारती थी, और न कभी कुछ जीतती थी। कितनी ही चीज़ो को वह साफ देखती थी, कितनी ही चीज़ो मे उसे दिलचस्पी मालूम होती थी, लेकिन पूर्णतया वह किसी चीज से सन्तुष्ट नही होती थी। न ही पूर्णतया सन्तुष्ट होने की वह कभी आशा करती थी। उसका मस्तिष्क एक साथ उत्सुक भी था, और उदासीन भी। उसके सन्देह कभी इस हद तक शान्त नही होते थे कि वह उन्हे भूल जाए, और न ही कभी इस हद तक बढने थे कि चिन्ता बनकर उसके दिमाग पर सवार हो जाए। अगर वह सम्पन्न और स्वतत्र न होती तो शायद वह भी सघर्ष में कूद पडी होती और उसे भी पता चल गया होता कि हृदय का घुडमुडाना-कसमसाना क्या होता है। लेकिन वह इन सब झझटो से मुक्त, निश्चित जीवन बिताती थी, हालांकि कभी कभी वह ऊब जरूर जाती थी। उसके दिन, इस प्रकार, समतल प्रवाह से बीत रहे थे और कभी कभी ही उनमें विह्वलता की लहरिया उठती थी। कभी कभी

उसकी कल्पना गुलाबी बाना धारण कर उसकी आखो के सामने अपना रग-बिरगा सपनो का जाल बुनती, लेकिन उसके धुधला पडते ही वह फिर अलसा जाती और उनके विलीन हो जाने का उसे कोई मलाल न होता। कभी कभी, अपनी कल्पना के वहाव में, वह उन सीमाओ को भी लाघ जाती जिन्हे परपरागत नैतिकता ने खडा किया है। लेकिन ऐसा होने पर भी उसका रक्त उसके लोचदार स्थिर शरीर की शिराओ में उसी अलस गति से—बिना किसी तेजी के—प्रवाहित होता रहता। कभी कभी सुगधित स्नान से बाहर निकलने के बाद, हृदय में गरमाहट और अग-अग में मृदुता लिए, वह जीवन की तुच्छता, उसके शोक और सन्ताप, उसके कष्टो और बुराइयो के बारे में सोचने लगती उसके हृदय में अचानक साहसिक कार्य करने की एक हूक-सी उठती, शुभ्र आकाक्षाओ की आभा से वह दमकने लगती, लेकिन अध-खुली खिडकी मे से हवा का एक झोका आता और अन्ना सेर्गेयेवना सिहरकर सिकुडती तथा कोसती और गुस्से के मारे करीब करीब आपे से बाहर हो जाती। उस समय सिवा इसके वह और कुछ न चाहती कि हवा के उस कुत्सित झोके को उसके वदन का स्पर्श करने से रोक दिया जाए।

प्रेम से अनजान सभी स्त्रियो की भाति उसके हृदय में भी किसी चीज के लिए एक हूक-सी उठती, लेकिन यह वह खुद भी न जानती कि जिस चीज की उसे चाह है, वह क्या है। सच तो यह है कि वह कुछ नही थी, हालाकि उसे लगता यह था कि वह हर चीज चाहती है। स्वर्गीय ओदिनत्सोव के घर में अभी उसने रहना शुरू ही किया था (उसके लिए यह एक सहूलियत की शादी थी, हालाकि उसने, शायद, तब तक उसकी पत्नी बनना मजूर नही किया जब तक कि उसे उसके नेक आदमी होने का विश्वास नही हो गया)

कि उनके हृदय में सभी पुरुषों के लिए एक गुप्त घृणा समा गई। उन्हें वह सदा गंदगी में रमनेवाले, बोझिल और बोदे जीवों का, बेहद उबा देनेवाला समुदाय समझती। विदेश में किसी जगह स्वीडन के निवासी एक सुन्दर युवक ने—जिसके चेहरे से शौर्य टपकता था और जिसकी नीली आंखों में स्पष्टवादिता की झलक थी—हृदय पर अत्यन्त गहरा असर डाला, लेकिन वह भी उसे रूस लौटने से नहीं रोक सका।

"विचित्र जीव है यह यह भावी डाक्टर!" अपने शानदार बिस्तरे पर लेटे-लेटे बदन को हल्की रेशमी रजाई से ढके और बेल-टके तकिए पर अपना सिर टिकाए, उसने सोचा पिता की ऐशपसन्दी का कुछ अंश अन्ना सेर्गेयेवना में भी आ गया था। ऐयाशी में डूबे लेकिन बहुत ही सहृदय अपने पिता को वह खूब चाहती थी, लेकिन वह भी उसे अपनी आंखों में सजोकर रखते थे, बराबर का बर्ताव करते थे और अपनी मित्रतापूर्ण फुल-झड़ियों से उसका मनोरंजन करते थे और बिना किसी हिचक के उसे अपने मन की बात बता देते थे। मां की उसे बहुत ही धुंधली-सी याद थी।

"विचित्र जीव है वह!" उसने मन ही मन दोहराया। अपने बदन को सीधा किया, मुसकराई, सिर के पीछे ले जाकर हाथों को गूथा, फिर एक वाहियात-से फ्रेंच उपन्यास के एक या दो पन्नों पर अपनी आंखें दौड़ाई, और उसे पटककर सो गई—एकदम ताजा और शीतल, महक में बसे अपने अल्प-वस्त्रों में हकी-अनटकी।

अगली सुबह, नाश्ता करने के तुरत बाद, अन्ना सेर्गेयेवना बजारोव के साथ वनस्पतियों की उखेड़-बुन करने निकल गई और दोपहर के भोजन का समय होने तक नहीं लौटी। आर्कादी कहीं नहीं गया और करीब एक घंटा कात्या के साथ रमा रहा। उसकी संगत में उसे जरा भी ऊब नहीं मालूम हुई। खुद कात्या ने ही कलवाली सोनाटा को दोहराने का प्रस्ताव किया था। लेकिन अन्त में जब

ओदिनत्सोवा लौटकर आई और आरकादी की उसपर नज़र पडी तो उसने क्षण-भर के लिए एक कसक का अनुभव किया थके हुए से डगो से वह बाग की ओर से लौट रही थी, उसके गाल दमक रहे थे और सींको के गोल हैट के नीचे उसकी आखें अन्य दिनो से अधिक उजली आभा से चमक रही थी। किसी जगली फूल की कोमल टहनी लिए वह उससे खेल रही थी। सिर की जाली खिसककर उसकी कोहनियो पर आ गई थी, और उसकी टोपी के चौडे सुरमई फीते उसके वक्ष पर फरफरा रहे थे। बज़ारोव उसके पीछे-पीछे आ रहा था—वैसा ही अपने आपमें पूर्ण और मस्त। लेकिन आरकादी को उसके चेहरे का भाव अच्छा नही लगा, हालाकि उसमें प्रफुल्लता और यहा तक कि मृदुता भी थी। दातो के बीच से गुडमोर्निंग बुदबुदाकर बज़ारोव अपने कमरे में चला गया। ओदिनत्सोवा ने खोए-से अन्दाज़ से आरकादी से हाथ मिलाया और वह भी अपनी राह आगे बढ गई।

"गुडमोर्निंग," आरकादी ने सोचा, "मानो आज सुबह से मुलाक़ात ही न हुई हो!"

१७

हम सभी जानते है कि समय कभी हवा की गति से गुज़र जाता है और कभी उसके पाव में ढाई ढाई मन के पत्थर बध जाते है, लेकिन मानव के सुखदतम क्षण वही होते हैं जिनमें समय की गति का कोई भान नही रहता। ठीक इसी अवस्था में आरकादी और बज़ारोव ने ओदिनत्सोवा के यहा पन्द्रह दिन बिताए। अशत यह जीवन के उस सुव्यवस्थित क्रम का नतीजा था जो ओदिनत्सोवा ने घर में चालू कर रखा था। जीवन के इस नियमित ढग का वह सख्ती से पालन करती थी और दूसरो से भी करवाती थी। दिन के क्रम में हर चीज़ के लिए

उसका एक अपना समय नियत था। सुबह, ठीक आठ बजे, पूरी मगत चाय के लिए जमा होती। चाय और नाश्ते के बीच जिसे जो करना होता करता, और मालकिन अपने कारिन्दे (जागीर का संचालन वह ठेके पर करती थी), भंडारी तथा प्रधान गृह-संचालिका से काम-काज की बातें निबटाती। दोपहर के भोजन से पहले बतियाने या कुछ पढने के लिए मण्डली एक बार फिर जमा होती। सन्ध्या सैर करने, ताश खेलने या गाने-बजाने में बीतती। साढे दस बजे अन्ना सेर्गेयेवना अपने कमरे में चली जाती, अगली सुबह के लिए आदेश देती और बिस्तरे की शरण लेती। दैनिक जीवन की यह एकरसता और अनुष्ठानी नियमितता बजारोव को न सुहाती। "लगता है जैसे हम लीकों से बंधे हों," वह कहता। वर्दीधारी दरबान-प्यादे और गम्भीरता का चोला डाटे भंडारी उसकी जनवादी रुचि पर चोट-सी करते। उसका खयाल था कि अगर अंग्रेजियत दिखानी है तो सोलहो आना अंग्रेज क्यों न बना जाए – उन्हीं की भांति भोजन किया जाए, एडी से चोटी तक रस्मी लिबास पहनकर और गले में सफेद गुलूबन्द कसकर। और एक दिन अन्ना सेर्गेयेवना से उसने इसकी चर्चा शुरू की। अन्ना सेर्गेयेवना का कुछ ऐसा स्वभाव था कि उसके सामने अपने मन की बात खुलकर कहने में किसी को हिचक नहीं होती थी। बजारोव की बात पूरी तरह सुनने के बाद बोली "जिस नजर से आप देखते हैं उसके अनुसार शायद आपकी बात ठीक हो सकती है, और मुझे आप मलिका-महारानी कह सकते हैं। लेकिन देहात में अगर आपने बेकायदा और अनियमित जीवन बिताने का दुस्साहस किया तो ऊब से मारे नाक में दम आ जाएगा।" और जीवन अपने उसी लगे-बंधे ढर्रे पर चलता रहा। बजारोव भुनभुनाया, लेकिन उसे और आरकादी दोनों को, जो ओदिनत्सोवा के यहां जीवन इतना सहज-सुखद मालूम हुआ उसका

कारण ठीक यही था कि वह 'वधी लीको पर' चलता था। सच तो यह है कि निकोल्स्कोये में उनके आगमन के पहले दिन से ही उनमें एक परिवर्तन दिखाई देने लगा था। वज़ारोव में, जिसे अन्ना सेर्गेयेवना वावजूद इसके कि वह विरले ही उससे सहमत होती थी, प्रत्यक्षत अधिक पसन्द करती थी, एक ऐसी वेचैनी घर करती जा रही थी जो उसके लिए सर्वथा नयी चीज़ थी। वह चिडचिडा-सा हो गया था, वात करता था तो अनमनेपन से। मुह उसका चटा रहता था और एक अजीव कुलवुलाहट तथा अधीरता उसे घेरे रहती। उधर आरकादी, जिसके मन में यह निश्चय रूप से समा गया था कि वह ओदिन्त्सोवा से प्रेम करता है, निश्चल उदासी में डूवता-उतराता। लेकिन, इस उदासी के वावजूद, कात्या से उसके मेलजोल वढाने में कोई वाधा नही आई। वल्कि इस उदासी ने कात्या के साथ वहुत ही घनिष्ठ तथा मित्रतापूर्ण सम्वन्ध कायम करने के लिए उसे और भी उकसाया। "वह मेरी कद्र नही करती, नहीं करती है न? अच्छी वात है, न करे लेकिन यहा एक और भी नाजुक जीव है जो मुझे नही ठुकराती," आरकादी सोचता और उसका हृदय एक वार फिर सारी तिक्तता भूल उदार भावनाओ की मधुरता से भर जाता। कात्या को वहुत ही धुंधला-धुधला-सा आभास था कि आरकादी उसकी सगत में राहत खोजता है, और वह न तो अपने आपको और न ही उसे इस अर्द्ध-लजीली और अर्द्ध-विश्वासी मित्रता के निश्छल आनन्द से वचित रखने का प्रयत्न करती। अन्ना सेर्गेयेवना की मौजूदगी में वे परस्पर वतियाने से कतराते। अपनी वहिन की पैनी नज़र के आगे कात्या हमेशा सिकुड-सिमट-सी जाती जवकि आरकादी, ठीक प्रेमासक्त व्यक्ति की भाति प्रेमिका जव सामने हो तो सिवा उसके अन्य सभी कुछ विसरा देता। लेकिन सच यही है कि राहत उसे केवल कात्या की सगत में ही

मिलती। वह यह जान चुका था कि ओदिनत्सोवा को खुश करना उसके बूते की बात नही है। अकेले में वह सकुचा जाता और उसके मुह से बोल तक न निकलता, और खुद अन्ना भी न समझ पाती कि वह उससे क्या कहे। वह उससे बहुत छोटा था। इसके प्रतिकूल कात्या की सगत में वह पूर्ण अपनत्व का अनुभव करता था। वह ढील से काम लेता और सगीत से, किसी पुस्तक को पढने या कविता के पाठ अथवा ऐसी ही अन्य छोटी-मोटी बातो से, अनुप्राणित अपने भावो को व्यक्त करने की कात्या को पूरी छूट देता, और उसे भान तक न रहता कि इन छोटी-मोटी बातो में वह खुद भी रस लेता है। कात्या भी, अपनी ओर से, जब वह खोया-सा किसी सोच में डूबा होता तो कभी उसे न छेडती। आरकादी को कात्या का सग अच्छा लगता, और ओदिनत्सोवा को बजारोव का। और अक्सर ऐसा होता कि दोनो जोडे एक साथ बाहर निकलते और इसके बाद अपना अलग अलग रास्ता पकडते, खासतौर से उस समय जब वे टहलने जाते। कात्या प्रकृति को जी-जान से चाहती थी, आरकादी को भी प्रकृति से प्रेम था, हालाकि यह स्वीकार करने का उसे कभी साहस नही होता था। ओदिनत्सोवा प्रकृति की ओर से उदासीन थी, और यही हाल बजारोव का भी था। और हमारे मित्रो के इस तरह अलग रहने का कुछ नतीजा न हो, यह भला कैसे हो सकता था। उनके सम्बन्धो में एक क्रमिक परिवर्तन हो चला। बजारोव अब आरकादी से ओदिनत्सोवा के बारे में कोई बात न करता और उसके 'रईसाना अन्दाजो' की आलोचना करना उसने छोड दिया। कात्या की वह अब भी खूब तारीफ करता और अपने मित्र को सलाह देता कि वह उसकी भावुकता पर थोडा अकुश रखे। लेकिन उसकी तारीफ में एक उतावलापन और सलाह में एक रूखापन होता—कुल मिलाकर यह कि पहले की निस्बत

वह आरकादी से कम बोलता-चालता ऐसा लगता जैसे वह उससे कतरा रहा हो, जैसे किसी शर्म का अनुभव कर रहा हो

आरकादी यह सब देखता, और अपनी राय को अपने तक ही सीमित रखता। किसी से कहता कुछ नही।

इस 'नये रुख' का असल कारण वह भावना थी जिसका ओदिनत्सोवा ने बज़ारोव के हृदय में सचार कर दिया था। यह भावना उसके हृदय को मथती और उसे पागल-सा बनाए रहती, लेकिन इसके अस्तित्व से इन्कार करने के लिए जैसे वह तुला बैठा रहता। अगर कोई धुधला-सा भी इस ओर इशारा करता कि उसके हृदय में क्या उमड-घुमड रहा है, तो वह उसकी खिल्ली उडाता और खीझ-भरे व्यग-बाणो से उसकी चिन्दिया बिखेरने के लिए तैयार हो जाता। यो बज़ारोव स्त्री-जाति का उपासक था, लेकिन भावना-मूलक प्रेम की—या जैसा कि वह कहा करता था रोमाण्टिक प्रेम की—वह खिल्ली उडाता था, उसे बेकार की चीज़ और अक्षम्य हिमाकत समझता था। शौर्य को वह एक तरह की वीभत्सता या बीमारी मानता था और इस बात पर एक से अधिक बार आश्चर्य प्रकट कर चुका था कि प्रेम का राग अलापनेवाले इन चारणो और भाटो को पागलखाने में क्यो न बन्द कर दिया गया—उनकी वश-बेल क्यो बढने दी गई। "अगर तुम किसी स्त्री को पसन्द करते हो," वह अक्सर कहता, "तो बेलाग अपना मतलब साधो। सफलता न मिले तो उगलिया चटखाकर उसे धता बताओ। आखिर यह जिन्स ऐसी नही जिसका इस दुनिया में अकाल हो।" ओदिनत्सोवा उसके मन में रमी थी। उसके बारे में फैली हुई तरह तरह की अफवाहो, उसके उन्मुक्त तथा आला विचारो और बज़ारोव के प्रति उसके प्रत्यक्ष

पक्षपात, इन सब चीज़ों को देख-सुनकर यह ख़याल हो सकता है कि बज़ारोव के लिए इससे अच्छा मौका और क्या होगा। लेकिन शीघ्र ही उसे इस तथ्य का चेत हो गया कि उसके साथ 'बेलाग मतलब नही साधा' जा सकता, और जहा तक उगलियां चटखाकर उसे धता बताने का सवाल है, उसने निराशा से देखा कि यह भी वह नहीं कर सकता। उसके खयाल मात्र से ही उसकी नाडी की गति तेज हो जाती। अपनी नाडी को तो खैर वह आसानी से सभाल भी लेता, लेकिन उसके साथ कुछ और भी हो गया था, कुछ ऐसा जिसे उसने कभी स्वीकार नही किया, जिसका हमेशा उसने मज़ाक उड़ाया और जिसके ख़िलाफ उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठता था। अन्ना सेर्गेयेवना के सामने, उससे बातें करते समय, हर रोमाण्टिक चीज़ के प्रति वह पहले से भी ज्यादा बेपर्वाही के साथ उपेक्षा का प्रदर्शन करता, लेकिन अकेले में खुद अपने ही हृदय में मौजूद रोमास के स्पर्श से झनझना उठता। ऐसा होने पर वह जगल की ओर निकल जाता, निरुद्देश्य भटकता, चलते-चलते पेडो की टहनियां तोड डालता, मानो ही मानो में अपने आपको और उसे — दोनो को — कोसता, या फिर पुआल की गजी में रेग जाता, हठपूर्वक आखें बद किए ज़बर्दस्ती नीद को गले लगाने का प्रयत्न करता और भूले-भटके ही इसमें सफल हो पाता। सहसा उसकी कल्पना उजागर हो उठती, वह देखता कि उसकी अछूती बाहे उसके गले मे लिपटी है, उसके गर्वीले होठ उसके चुम्बनों के लिए फरफरा रहे है, उसकी धीर-गम्भीर आखें मृदुता से — हा, मृदुता से ही — उसकी आखो में उतर रही है। और उसका सिर चकराने लगता, क्षण-भर के लिए वह बेसुध हो जाता और फिर निक्षोभ उसे अपने चगुल मे जकड लेता। दुनिया-भर के 'मनहूस' विचार उसे घेर लेते, लगता जैसे शैतान उसका मुह चिढा रहा हो।

कभी कभी तो यहां तक होता कि ओदिनत्सोवा में भी उसे एक परिवर्तन का आभास-सा मालूम होता, लगता जैसे उसके चेहरे में कुछ है जो पहले नही था, जैसे वह लेकिन बहुधा इससे आगे वह न सोच पाता, धरती पर अपना पाव पटकता या दात पीसता और खुद अपने चेहरे के आगे ही अपना घूसा तानता।

और सचमुच, बज़ारोव एकदम गलत भी नही था। उसने ओदिनत्सोवा की कल्पना को जगमगा दिया था। उसकी दिलचस्पी को उसने उकसा दिया था और वह बहुत कुछ उसके बारे में सोचती थी। उसकी गैरहाज़िरी में वह ऊबती नही थी, न ही उसे यह खलता था, लेकिन उसके सामने आते ही वह चेतन हो उठती थी, खुशी से वह उसके साथ अकेली रहती और खुशी के साथ वह उससे बाते करती, और उस समय भी इसमें कोई फर्क नही पडता जब वह उसे नाराज़ कर देता या उसकी परिष्कृत रुचि तथा नफीस सलीकेदारी को ठेस पहुचाता। ऐसा मालूम होता जैसे वह परखकर, और साथ ही खुद अपने को भी जाचकर, देख लेना चाहती हो।

एक दिन, उस समय जबकि वह उसके साथ बाग में टहल रहा था, सहसा उदास आवाज़ में बजारोव ने ऐलान किया कि उसे जल्दी ही गाव में अपने पिता के पास जाना है ओदिनत्सोवा का चेहरा फक पड गया, जैसे किसी टीस ने उसके हृदय को बीध दिया हो। कसक इतनी तेज़ थी कि खुद उसे अचम्भा हुआ और इसके बाद भी काफी देर तक वह अचरज करती रही कि आखिर इसका क्या मतलब हो सकता है। अपनी विदा का ऐलान बज़ारोव ने उसकी परीक्षा लेने के लिए, यह देखने के लिए कि इसका क्या नतीजा निकलता है, नही किया था। इस तरह के छल-छन्दो का वह कभी सहारा नही लेता था। उस दिन, सवेरे ही, अपने पिता के कारिन्दे

तिमोफेइच से उसकी भेंट हो चुकी थी। यह तिमोफेइच—छुटपन में वजारोव जिसकी देख-भाल में रहता था—बदहवास-सा एक जानदार बूढा था। मुरझाया-सा बदन, बालो का रग उडकर पीला पड गया था, धूप-पानी से तपा-निखरा चेहरा, चुरमुर-सी आखो में नमी की बूदें तैरती हुई। मोटे और मजबूत कपडे तथा पक्के गलेटी-नीले रग का मुरझाया-सा देहाती कोट पहने, उसके ऊपर चिथडा-सी पुरानी पेटी कसे और पावो में स्याही पुते बूट डाटे, वह अचानक आ मौजूद हुआ।

"कहो, बुढऊ, क्या हाल है?" वजारोव ने उसे देखते ही कहा।

"गुडमोर्निंग, मालिक येवगेनी वसीलियेविच," बूढे ने जवाब दिया और उसका चेहरा झुर्रियो की वन्दनवार तथा प्रसन्न मुसकराहट से एक बारगी खिल उठा।

"कहो, कैसे आए? क्या मुझे लिवाने आए हो, क्यो?"

"ओह नही, मालिक, ऐसा नही," तिमोफेइच ने बुदबुदाकर कहा, (चलते समय मालिक ने जो सख्त ताकीद कर दी थी, उसका उसे ध्यान था) "मालिक के काम से मैं शहर जा रहा था। सुना कि सरकार यहा हैं। सोचा, सरकार को देखता चलू। सो इधर मुड पडा। लेकिन आपको तकलीफ देना नही, वह तो मैं सपने में भी नही सोच सकता, मालिक!"

"क्या सचमुच?" वजारोव ने टोका। "लेकिन यह तो बताओ, क्या यह जगह शहर के रास्ते में पडती है?"

तिमोफेइच ने शरीर का भार उस पाव से उस पाव पर बदला और चुप साधे रहा।

"पिता तो बिलकुल ठीक है न?"

"हा, मालिक, खुदा का शुक्र है।"

"श्रौर मा ?"

"श्ररीना व्लासियेवना भी, खुदा का शुक्र है।"

"वे मेरी राह देख रहे होगे, क्यो ?"

उसने श्रपने छोटे-से सिर को वाके श्रन्दाज़ में झटका।

"श्राह, येवगेनी वसीलियेविच, राह तो देखना ही था। खुदा गवाह है, तुम्हारे माता-पिता को देखकर कलेजा मुह को श्रा जाता है।"

"वस वस, श्रव ज्यादा लेप न चढाश्रो। उनसे कहना, मै जल्दी ही श्रा रहा हू।"

"वहुत श्रच्छा, मालिक," तिमोफेइच ने उसास छोडते हुए जवाव दिया।

वहा से विदा होते समय उसने श्रपने दोनो हाथो की मदद से सिर पर श्रपनी टोपी जमाई। दरवाज़े पर वह श्रपनी फटीचर दोपहिया घोडा-गाडी छोड श्राया था, उसपर जैसे-तैसे सवार हुश्रा श्रौर चल पडा—लेकिन शहर की दिशा में नही।

उसी रात श्रोदिनत्सोवा श्रपने कमरे में वज़ारोव के साथ बैठी थी श्रौर श्रारकादी ड्राइगरूम में इघर से उधर टहलता कात्या का पियानो वजाना सुन रहा था। मौसी ऊपर श्रपने कक्ष में चली गईं। उन्हे सभी मेहमानो से श्रान्तरिक चिढ थी श्रौर इन 'छुट्टा रगरूटो' से—जैसा कि वह उन्हे कहा करती थी—तो वह खासतौर से चिढती थी। वैठक के कमरो में तो वह केवल मुह चढाए रहती, लेकिन श्रपने निजी कक्ष के एकान्त में, श्रपनी दासी के सामने, कभी कभी श्रपने गुस्से का सारा जहर इतने प्रचड वेग से उगलती कि नकली जुल्फो के साथ साथ उनकी टोपी भी नाचने लगती। श्रोदिनत्सोवा से यह छिपा नही था।

"यह आपको जाने की क्या सूझी?" ओदिनत्सोवा ने कहना शुरू किया, "और आपके वायदे का क्या हुआ?"

वज़ारोव चौंका।

"कैसा वायदा?"

"क्या भूल गए? आप मुझे रसायन-विज्ञान में दीक्षित करना चाहते थे न?"

"उसके लिए मुझे दुःख है। मेरे पिता बाट जोह रहे हैं। अब और देर नहीं कर सकता। लेकिन आप पेलूज़ तथा फ्रेमी की पुस्तक 'रसायन-विज्ञान के आम सिद्धान्त' पढ़ सकती हैं। यह अच्छी किताब है, और सीधी-सादी भाषा में लिखी है। जानने लायक हर चीज़ उसमें मिल जाएगी।"

"लेकिन क्या आपको याद है, आपने ही तो मुझसे कहा था कि कोई भी पुस्तक उतना काम नहीं दे सकती जितना कि ... ओह, मुझे याद नहीं पड़ता कि आपने किन शब्दों में उसे व्यक्त किया था ... आप जानते हैं कि मैं क्या कहना चाहती हूं ... आपको याद है न?"

"मुझे इसके लिए दुःख है," वज़ारोव ने दोहराया।

"तो आप जाएंगे ही?" अपनी आवाज को धीमा करते हुए ओदिनत्सोवा ने पूछा।

वज़ारोव ने उसकी ओर देखा। उसने अपना सिर आरामकुर्सी की पीठ से टिका लिया था और उसकी बाहें, कोहनी तक उघरी, उसके वक्ष पर गुथी थीं। जालीदार कागज़ के शेड में से छनकर आती एकाकी बत्ती की रोशनी में वह और भी पीली नज़र आ रही थी। ढीले-ढाले सफेद गाउन की तहें उसके समूचे आकार को ढके थीं। हाथों की भांति उसके पांव भी अर्ध का चिन्ह बनाए थे और उंगलियों के छोर तक मुश्किल से दिखाई देते थे।

"रुकू भी तो किस लिए?"

"यह किस लिए क्यो? क्या मतलव है आपका? क्या आपको यहा अच्छा नही लग रहा? या आप समझते है कि आपका जाना किसी को खलेगा नही?"

"विल्कुल, इसमें ज़रा भी शक नही।"

कुछ क्षण तो ओदिनत्सोवा चुप रही।

"आप गलत सोचते है। जो हो, मै आपकी इस वात का विश्वास नही करती। सजीदगी से आप ऐसी वात नही कह सकते।"

वज़ारोव में एक वल तक नही पडा।

"येवगेनी वसीलियेविच, आप कुछ कहते क्यो नही?"

"लेकिन कहने की वात भी तो हो। मै नही समझता कि लोगो की अनुपस्थिति किसी को खल सकती है, फिर मेरे जैसे आदमी की तो और भी नही।"

"सो क्यो?"

"मैं ज़रूरत से ज्यादा गम्भीर-दिमाग और वेरस हू। सलीके से वातचीत तक नही कर सकता।"

"मतलव यह है कि आप अपनी तारीफ कराना चाहते है, येवगेनी वसीलियेविच।"

"यह मेरी आदत नही। आपको मालूम होना चाहिए कि जीवन की जिन नफासतो को आप जी-जान से चाहती है, वे मेरी पहुच से वहुत वाहर हैं।"

ओदिनत्सोवा ने रूमाल का कोना अपने दातो से काटा।

"आप कुछ भी सोचे, लेकिन आपके चले जाने पर मुझे तो वडा सूना लगेगा।"

"आरकादी तो यहा रहेगा," वज़ारोव ने दलील दी।

ओदिनत्सोवा ने हल्के से अपने कंधे बिचकाए।

"मुझे सूना लगेगा," उसने दोहराया।

"अरे नहीं। जो हो, यह सूनापन कुछ अधिक नहीं टिक सकेगा।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"खुद तुम्हीं ने तो मुझे बताया था कि तुम केवल तभी ऊबती हो जब तुम्हारा बधा-बधाया कार्यक्रम गडबडा जाता है। तुमने अपने जीवन को कुछ इतनी कडी नियमितता में ढाला है कि उसमें ऊब या कसक के लिए कोई जगह नहीं है किसी भी प्रकार के दुखद भावो की वहा दाल नहीं गल सकती।"

"सो तुम समझते हो कि मै कडी हू मतलब यह कि मेरा जीवन इस हद तक सुव्यवस्थित है।"

"एक हद तक—बेशक। मिसाल के लिए, देखिए कि अभी कुछ ही मिनटो में दस बज जाएगे, और मै पहले से ही यह जानता हू कि आप मुझे चलता कर देंगी।"

"यह नहीं, येवगेनी वसील्येविच, मै आपको चलता नहीं करूगी। आप रुक सकते है। लेकिन जरा वह खिडकी खोल दीजिए, बडी गर्मी है।"

बजारोव उठा और खिडकी में एक धक्का दिया। खिडकी के पट आवाज के साथ तुरन्त खुल गए उसे उम्मीद नहीं थी कि पट यो अनायास ही खुल जाएगे। इसके अलावा उसके हाथ काप भी रहे थे। कोमल अधियारी रात, स्याही पुता-सा आसमान, पेडो की धुधली सरसराहट और ठडी मीठी हवा की महक कमरे में तिर आई।

"पर्दा खीच दीजिए और इधर आकर बैठिए," ओदिनत्सोवा ने कहा। "मै चाहती हू कि जाने से पहले आपसे कुछ बातें कर लूं

जाए। अपने वारे में कुछ वताइए। इस वारे में आप कभी मुह नही खोलते।"

"मै आपसे, अन्ना सेर्गेयेवना, उपयोगी विपयो के वारे में ही बाते करने का प्रयत्न करता हू।"

"आप भी वडे सकोची है   लेकिन मै आपके और आपके परिवार के, और आपके पिताजी के वारे में कुछ जानना चाहती हू जिनकी खातिर आप हमें छोडकर जा रहे है।

"आखिर किस लिए यह सब पूछा जा रहा है?" वज़ारोव ने मन में सोचा। फिर प्रत्यक्ष रूप में वोला

"वह सब ज़रा भी दिलचस्प नही है, खासकर आपके लिए। हम निम्न स्तर लोग   "

"तो मुझे क्या आप कुलीन समझते है?"

वज़ारोव ने पलके उठाकर ओदिनत्सोवा की ओर देखा। फिर अक्खडपन जताते हुए वोला

"हा!"

ओदिनत्सोवा के होठो में मुसकराहट रेग गई।

"देखती हू कि आप मुझे वहुत ही कम जानते है, हालाकि दावा आपका यह है कि सब लोग एक से हैं, उनका अध्ययन करने की ज़रूरत नही। किसी दिन अपने वारे में आपको वताऊगी   लेकिन अभी तो पहले अपने वारे में वताइए।"

"मैं आपको वहुत ही कम जानता हू," वज़ारोव ने दोहराया, "हो सकता है कि आपका कहना ठीक हो, और हर व्यक्ति सचमुच में एक पहेली हो। मिसाल के लिए खुद अपने को ही लीजिए। आप समाज से—सोसायटी से—कतराती हैं, उसे पसन्द नही करतीं, फिर भी अपना मेहमान वनाने के लिए दो छात्रो को निमत्रण देती हैं। इतनी

बुद्धि, और इतना रूप लेकर आप यहा—इस देहात में—क्यो पडी है?"

"क्या-आ? क्या कहा आपने?" ओदिनत्सोवा तुरन्त बोल पडी। "इतना इतना रूप लेकर?"

बजारोव की भौंहो में बल पड गए।

"गोली मारिए उसे," बजारोव बुदबुदाया, "कहने का मतलब यह, मेरी समझ में नही आता कि आप देहात में क्यो रहती है?"

"समझ में नही आता यही आपने कहा न तब तो आपने इसका कुछ अनुमान लगाने की भी कोशिश की होगी। क्यो, ठीक है न?"

"हा मेरा अनुमान है कि स्थायी रूप से एक ही जगह आप इसलिए रहती है कि अपने को दुलराना आपको अच्छा लगता है, आराम और आसाइश की आप बेहद शौकीन है और बाकी सब चीजो से कोई वास्ता नही रखना चाहती।"

ओदिनत्सोवा के होठो पर फिर मुसकराहट रेंग गई।

"आप तो यह मानने से एकदम इन्कार करते है कि मै भी आवेगो-उद्वेगो में बह सकती हू। क्यो, यही बात है न?"

बजारोव ने भौंहो के नीचे से उसपर एक नजर डाली।

"शायद केवल कौतुकवश, अन्य किसी वजह से नही।"

"बेशक! हा तो अब मेरी समझ में आया कि हम दोनो के मित्र बनने का क्या रहस्य है। आप भी मेरी ही भाति है।"

"आप और मै मित्र " बजारोव फुसफुसाया।

"हा लेकिन यह तो भूल हो गई कि आप जाना चाहते थे।"

बजारोव उठ खडा हुआ। अंधेरा-घिरे, महकते और बाहरी

विक्षेप से मुक्त कमरे के वीच लैम्प की धीमी लौ टिमटिमा रही थी। फरफराते पर्दे में से हृदय को कुरेदनेवाली रात की ताज़गी और रहस्यमय फुसफुसाहटें कमरे में सरसरा रही थी। ओदिनत्सोवा एकदम स्थिर – निश्चल – बैठी थी, लेकिन एक अज्ञात विह्वलता, अडिग गति से, उसके रोम रोम में छाती जा रही थी वज़ारोव भी उसके स्पर्श से अछूता नही रह सका। सहसा उसे चेत हुआ कि यह एकान्त, यह सुन्दर युवती और वह

"किधर चल दिए?" ओदिनत्सोवा ने धीमे से पूछा।

उसने जवाब में कुछ नही कहा। चुपचाप फिर अपनी उसी कुर्सी में धस गया।

"सो तुम मुझे भावशून्य, दुलराई हुई और लाड से मुह-चढी चीज समझते हो," उसी एक स्वर में, खिडकी की ओर आखें जमाए, वह कहती गई। "लेकिन मैं कितनी दु खी हू, यह मैं ही जानती हू।"

"तुम और दु खी? क्यो? क्या तुम्हारा मतलब यह है कि उन गदी अफवाहो को तुम कुछ महत्व देती हो?"

ओदिनत्सोवा की भौंहो में वल पड गए। उसे यह अखरा कि उसके शब्दो का उसने यह अर्थ लगाया।

"नही, येवगेनी वसीलियेविच, उन अफवाहो पर तो मेरा हसने को भी जी नही चाहता, और मैं इतनी गर्वीली हू कि अपने कान पर जू तक नही रेगने देती। मैं दु खी हू इसलिए कि मुझमें कोई आकाक्षा नही है, जीने की कोई चाह नही है। तुम मुझे शका की नज़र से देख रहे हो। शायद तुम सोच रहे हो कि गोटे-ठप्पे से सजा और मखमली आरामकुर्सी पर बैठा यह मेरा 'आभिजात्य' वोल रहा है। मैं उस चीज़ से इन्कार नहीं करती जिसे तुम ऐश-व-आराम कहते हो। मैं उसे पसन्द करती हू, फिर भी जीने की चाह मुझमें नही के वरावर है। अगर

शक्ति हो तो इन असंगतियों में पटरी बैठाने की तुम भी कोशिश कर देखो। जो हो, तुम्हारे लेखे तो यह रोमाण्टिकता है।"

वज़ारोव ने अपना सिर हिलाया।

"अच्छा स्वास्थ्य, आज़ादी, धन—सभी का तो तुम उपभोग करती हो। तुम्हें और किस चीज की ज़रूरत है? तुम और क्या चाहती हो?"

"मैं क्या चाहती हूं?" ओदिनत्सोवा ने दोहराया और उसाँस लेती हुई बोली, "मैं थक गई हूं, मैं बूढ़ी हो चली हूं, ऐसा मालूम होता है जाने कब से—कितने लम्बे अर्से से—मैं जी रही हूं। हां, मैं बूढ़ी हो चली हूं," अपनी उघरी हुई बांहों पर जाली के छोरों को मृदु भाव से खींचते और वज़ारोव से आंखें मिलने पर थोड़ा लजाते हुए उसने कहा, "जाने कितनी स्मृतियों को मैं छोड़ आई हूं—सन्त पीतर्सबर्ग में जीवन, धन-दौलत, फिर गरीबी, इसके बाद पिता की मृत्यु, मेरा विवाह, फिर विदेश की यात्रा, जैसा कि होना चाहिए अनेकानेक स्मृतियां हैं, लेकिन ऐसी एक भी नहीं जिसे याद किया जा सके, और सामने लम्बी—बहुत लम्बी—राह फैली हुई, लेकिन मंजिल कोई नहीं डग आगे बढ़ने से इन्कार करते हैं।"

"तो क्या तुम इस हद तक अपने सारे भरम गंवा चुकी हो?" वज़ारोव ने पूछा।

"नहीं," ओदिनत्सोवा ने धीमे से कहा, "लेकिन मैं सन्तुष्ट नहीं हूं। मुझे लगता है कि किसी चीज के प्रति—चाहे वह कुछ भी हो—अगर मैं गहरा लगाव पैदा कर सकती . "

"तुम प्रेम में पगना चाहती हो," वज़ारोव ने बीच में ही कहा। "लेकिन प्रेम तुम कर नहीं सकती और इसी लिए तुम इतनी असन्तुष्ट हो।"

ओदिनत्सोवा अपनी जाली की आस्तीनो को देखने मे उलझी थी।

"तुम समझते हो कि मै प्रेम करने में असमर्थ हू," वह बुदबुदाई।

"मुश्किल ही समझो। केवल एक बात है, मुझे इसे सन्ताप नही कहना चाहिए था। इसके प्रतिकूल, जिस व्यक्ति के सिर पर यह बला सवार होती है, उसे दया का पात्र मानना चाहिए।"

"कौन-सी बला?"

"यही प्रेम में पडने की।"

"तुमने यह कैसे जाना?"

"लोगो से सुनकर," बज़ारोव ने अलसाकर जवाब दिया।

"खिलवाड कर रही है," बज़ारोव ने सोचा। "ऊब के मारे जब और कुछ नही सूझा तो सोचा, चलो इसे ही कुरेदा जाए, लेकिन इधर यह हाल है कि " सचमुच, बज़ारोव का हृदय छितरा रहा था।

"और फिर," अपने समूचे शरीर को आगे की ओर झुकाते तथा अपनी आरामकुर्सी के छोर से खेल करते हुए बोला, "मेरी समझ में तुम्हारी कसौटी पर खरा उतरना भी टेढी खीर है।"

"हो सकता है। या तो मैं हर चीज़ में विश्वास करती हू, या फिर किसी चीज मे नही करती। जीवन के बदले जीवन। जो मैं हू वह तुम लो, जो तुम हो वह मुझे दो। फिर न खेद की गुजाइश हो, न डग वापिस लौटाने की। नही तो दूर रहना ही अच्छा।"

"शर्तें तो तुम्हारी मुनासिब हैं," बज़ारोव ने कहा, "अचरज की बात यही है कि अब तक तुम्हे वह चीज़ नही मिली जो तुम चाहती हो।"

"तो क्या तुम्हारी नज़र में अपने आपको पूरी तरह से समर्पित कर देना इतना आसान है?"

"नही, आसान नही है अगर तुम्हारे पाव ठिठककर असमजस

में पड जाए, अगर तुम ममय गवान और अपने वारे में जरूरत मे ज्यादा मोचने—मेरा मतलव यह कि अपने को अनमोल ममझने लगो। लेकिन यह एकदम आसान है, अगर तुम विना सोचे-झिझके डुवकी लगाने के लिए तैयार हो जाओ।"

"यह कैसे हो सकता है कि आदमी अपनी कोई कद्र न ममझे? अगर मैं किमी काम की नही हू तो किमी के भी प्रति मेरे ममर्पण का फिर क्या मूल्य रह जाता है!"

"यह सव मोचना मेरा काम नही। मैं किसी काम का हू या नही, इमका निर्णय करना हो तो दूसरा पक्ष करे। मुख्य चीज है ममर्पण करने की मामर्थ्य।"

ओदिनत्सोवा अपनी कुर्सी पर आगे की ओर खिमक आई।

"तुम तो इम तरह वाते करते हो," उमने कहना शुरू किया, "जैमे तुम खुद इन मवमें मे गुजर चुके हो।"

"मैंने तो अपनी एक राय भर दी है, अन्ना मेर्गेयेवना। यह मव, तुम जानती ही हो, मेरा धवा नही है।"

"लेकिन क्या तुममें अपने को ममर्पित करने की मामर्थ्य है?"

"मै नही जानता, और डीग मारना मै चाहता नही।"

ओदिनत्सोवा ने कोई जवाव नही दिया। वजारोव भी चुप हो गया। मगीत के स्वर ड्राइगरूम मे तिरते उनके कमरे में आ रहे थे।

"अरे, इतनी देर हो गई, कात्या अभी तक पियानो वजाने में मगन है," ओदिनत्सोवा ने कहा।

वजारोव खडा हो गया।

"हा, देर काफी हो गई। तुम्हें अव आराम करना चाहिए।"

"जरा ठहरो। ऐमी जल्दी क्या है? तुमसे कुछ कहना है मुझे।"

"मो क्या?"

"एक मिनट ठहरो," ओदिनत्सोवा फुनफुनाई।

उसकी आखें वज़ारोव पर जाकर टिक गई। लगता था जैसे वह उसे वारीकी से परख रही हो।

वह कमरे में घूम गया। फिर, अचानक, उसकी ओर मुडा, उतावली से 'फिर मिलेगे' कहा, उसके हाथ को अपने हाथ में लेकर इतना दवोचा कि वह चीख ही उठती, और तेज डगो से वाहर चला गया। कुचली हुई सी अपनी उगलियो को उठाकर वह होठो तक ले गई, फूक मारकर उन्हे सहलाया, सहसा किसी आवेग में आकर कुर्सी से उछल खडी हुई और तेज़ी से दरवाज़े की ओर लपकी, मानो वज़ारोव को पुकारकर लौटा लेना चाहती हो तभी, चादी की तश्तरी पर विल्लौरी सुराही रखे, दासी ने प्रवेश किया। ओदिनत्सोवा वही ठिठक गई, दासी को विदा किया, फिर अपनी कुर्सी में वैठ गई और अपने खयालो में खो गई। उसकी गुथी हुई लटें खुल गई थी और नागिन की भाति उसके कधो पर लहरा रही थी। कमरे का लैम्प वडी देर तक जलता रहा और अन्ना सेर्गेयेवना, वैसे ही निश्चल, वडी देर तक रात की गहराइयो में उतरती रही। जव रात की ठडी हवा कचोटी-सी काटती तो, जव-तव अपनी वाहो को सहला भर लेती, और वस।

दो घटे वाद वज़ारोव ने अपने शयन-कक्ष में पाव रखा—अस्तव्यस्त और उदास, जूते ओस में भीगे हुए। आरकादी लिखने की मेज़ के पास हाथ में कोई किताव खोले वैठा था। कोट के वटन एकदम ऊपर तक वद थे।

"अभी तक सोए नही ?" वज़ारोव ने पूछा। उसकी आवाज़ में खीझ का एक हल्का-सा पुट था।

"अन्ना सेर्गेयेवना के साथ आज तुमने वडी देर लगा दी," उसके सवाल को अनसुना करते हुए आरकादी ने कहा।

"हा, कात्या के साथ जब तक तुम पियानो बजाते रहे, मैं बराबर वही था।"

"मैं नही बजा रहा था," आरकादी ने कहना शुरू किया, लेकिन फिर चुप हो गया। उसे लगा जैसे उसकी आखो में आसू उमडे आ रहे हो, और व्यग और कटाक्षो से भरे अपने मित्र के सामने वह रोना नही चाहता था।

१८

अगले दिन जब ओदिनत्सोवा चाय के समय नीचे आई तो बजारोव, काफी देर तक, अपने प्याले को निरखने-परखने में उलझा रहा और फिर, एकाएक नज़र उठाकर, उसने ओदिनत्सोवा की ओर देखा वह भी उसकी ओर ऐसे मुडी जैसे उसने उसे कोहनिया दिया हो। और उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे उसका—ओदिनत्सोवा का—चेहरा और भी पीला पड गया हो। कुछ ही देर बाद वह उठी और अपने कमरे में चली गई। इसके बाद, नाश्ते के समय तक, फिर नीचे नही उतरी। बारिश का सुबह से ही ताता बधा था। टहलने के लिए बाहर निकलना असम्भव था। समूची मण्डली ड्राइगरूम में जमा हुई। किसी पत्रिका का नया अक आरकादी के हाथ पडा और वह उसे ज़ोर से पढकर सुनाने लगा। सीनी ने, अपनी आदत के अनुसार, पहले तो अचरज का भाव प्रकट किया—जैसे उसने सलीके के खिलाफ कोई हरकत की हो—फिर कुछ ऐसी नजर से उसे देखा जैसे कच्चा ही चबा जाएगी। लेकिन उसने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"येवगेनी वसीलियेविच," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "जरा मेरे कमरे में चलिए मैं पूछना चाहती थी कल आपने एक पोथी का ज़िक्र किया था "

वह उठी और दरवाज़े की ओर चल दी। मौसी ने घूमकर उसकी ओर देखा, कुछ ऐसी मुद्रा में जो कहती प्रतीत होती थी, "देखो न, तुमने मुझे कितना चकित कर दिया है!" इसके बाद उसकी नज़र एक बार फिर आरकादी से जा चिपकी। लेकिन उसने केवल अपनी आवाज़ को और भी ऊचा उठा लिया और पास बैठी कात्या से नज़रो का विनिमय करते हुए अपना पढना जारी रखा।

ओदिनत्सोवा तेज़ी से डग उठाती अपने अध्ययनकक्ष में पहुची। बज़ारोव भी उसके पीछे ही बढ चला, अपनी आखो को बराबर धरती में गडाए। केवल उसके कान तेजी से आगे की ओर तिरते उसके रेशमी गाउन के सरसराने तथा फरफराने की धीमी आवाज़ सुन रहे थे। अध्ययनकक्ष में पहुच ओदिनत्सोवा फिर उसी कुर्सी में समा गई जिसमें कि वह रात बैठी थी। बज़ारोव ने भी अपनी पहलेवाली जगह पर आसन जमाया।

"उस किताब का क्या नाम था?" कुछ क्षणो के अवकाश के बाद उसने पूछा।

"Pelouse et Fremy, Notions generales *" बज़ारोव ने जवाब दिया। "साथ ही एक और पुस्तक की मैं सिफारिश करूगा—Ganot, Fraite elementaire de physique experimentale** । इस पुस्तक के चित्र कही अधिक साफ है और एक पाठ्य-पुस्तक की हैसियत से "

---

*फेलूज़ तथा फ्रेंमी कृत "रसायन-विज्ञान के सामान्य सिद्धान्त"। (फ्रेंच) —स०

**गनोत कृत "आरम्भिक प्रयोगात्मक भौतिक विज्ञान"। (फ्रेंच)—स०

ओदिनत्सोवा ने अपना हाथ बाहर निकाल लिया।

"माफ कीजिए, येवगेनी वसीलियेविच, पाठ्य-पुस्तको की चर्चा करने के लिए मैने आपको यह कष्ट दिया हो, सो नही। मै कलवाली बातो को फिर शुरू करना चाहती थी। आप एकदम ही तो चले गए आप ऊब तो नही जाएँगे, क्यो?"

"मै आपकी सेवा मे हाजिर हू, अन्ना सेर्गेयेवना। लेकिन कल हम भला किस चीज़ की चर्चा कर रहे थे?"

ओदिनत्सोवा ने कनखियो से उसपर एक नज़र डाली।

"हम लोग, अगर मै भूलती नही तो, सुख के बारे मे बात कर रहे थे। मै तुम्हे अपने बारे मे बतला रही थी। और जब सुख का ज़िक्र आ ही गया तो हा तो यह बताइए कि उस समय भी जब हम, मिसाल के लिए, किसी अच्छे सगीत, या सुन्दर साझ, या किसी मनचीते व्यक्ति से बातचीत के आनन्द में मगन होते है, तब हमें ऐसा क्यो मालूम होता है जैसे यह सब, वास्तविक सुख न होकर, उस व्यापक सुख का एक सकेत मात्र है जो कही अन्य हिलोरे ले रहा है, और यह कि जो सुख हमें उपलब्ध है, वह वास्तव में सुख नही है? क्यो, ऐसा क्यो होता है? या हो सकता है कि आपने ऐसी किसी चीज़ का कभी अनुभव न किया हो?"

"आपने यह कहावत सुनी होगी—पडोसी की फसल अपनी से ज्यादा सुहानी लगती है," बजारोव ने जवाब दिया। "कल खुद आपने भी यह माना था कि आप सन्तुष्ट नही है। ऐसी बाते, सचमुच, मेरे दिमाग में नही धसती।"

"शायद आप उन्हे बेहूदा समझते है।"

"नही। बस इतना ही है कि वे मेरे मन को नही छूती।"

"सच? क्या आपको मालूम है, यह जानने के लिए कि आप क्या सोचते है, मै कितनी उत्कठित हू!"

"क्या कहा आपने? मैं कुछ समझ नही सका।"

"तो सुनो। बहुत दिनो से इच्छा थी कि आपसे जरा खुलकर बाते करू। आपको यह बताने की जरूरत नही—और यह आप खुद भी जानते है—कि आप आम लोगो में से नही हैं। आप अभी युवा हैं—समूचा जीवन आपके आगे खुला है। आप क्या करना चाहते है? भविष्य आपके लिए अपने गर्भ में क्या छिपाए है? मेरा मतलब यह कि आपका लक्ष्य क्या है? किस मजिल पर आप पहुचना चाहते हैं? आपके इरादे क्या है? सक्षेप में यह कि आप कौन है, और क्या है?"

"आप भी अजब बात करती है, अन्ना सेर्गेयेवना। आप जानती है कि मै पदार्थ-विज्ञान का अध्ययन कर रहा हू, और जहा तक यह कि मैं क्या हू "

"हा, आप क्या है?"

"यह मैं पहले ही बता चुका हू कि मै देहात का डाक्टर बनने जा रहा हू।"

अन्ना सेर्गेयेवना अधीरता से कसमसाई।

"यह आप कैसे कहते है? खुद आप यह विश्वास नही करते। आरकादी के मुह से यह बात शायद ठीक जचती भी, लेकिन आपके मुह मे नही।"

"क्यो, आरकादी किस मानी मे "

"बस, रहने दीजिए। क्या यह सम्भव है कि आप ऐसे बेनाम धधे मे सन्तुष्ट होकर बैठ जाए, और क्या खुद आप बराबर यह कहते नही रहे है कि औषधि-विज्ञान में आपका विश्वास नही है? आप, आपका स्वाभिमान—और डाक्टरी, सो भी देहात की! ऐसी बाते

भी गरीब और स्वाभिमानिनी रह चुकी हू–ठीक आपकी ही भांति, और शायद मैं भी उन्ही परीक्षाओ में से गुजरी हू जिनमें से कि आप।"

"यह सब ठीक है, अन्ना सेर्गेयेवना, बहुत ठीक। लेकिन मुझे क्षमा करें मैं अपना हृदय उडेलकर रख देने का आदी नही हू, और फिर हम दोनो–आप और मैं–एक-दूसरे से उतने ही दूर हैं जितने "

"क्यो, दूर कैसे है? शायद तुम फिर वही राग अलापना शुरू कर दोगे कि मुझमें 'आभिजात्य' घुसा बैठा है? यह बेहद ज्यादती है, येवगेनी वसीलियेविच। मेरा विश्वास है कि मैं यह सिद्ध "

"और इसके अलावा," बजारोव ने बीच में ही कहा, "भविष्य के बारे में–एक ऐसी चीज़ के बारे में जो अधिकाशत हमपर निर्भर नही करती–बाते करना और सोचने से क्या फायदा? अगर कुछ करने का मौका मिलता है तो अच्छा और बहुत अच्छा, लेकिन अगर नही मिलता, तब कम से कम यह सन्तोप तो रहेगा कि पहले से ही उसे लेकर हमने चिचियाना शुरू नही कर दिया था!"

"मित्रतापूर्ण बातचीत को आप चिचियाना कहते हैं या शायद आप मुझे, एक स्त्री को, अपने विश्वास के उपयुक्त पात्र नही समझते? आप हम सबको, एक सिरे से हिकारत की नजर से देखते है। क्यो, ठीक है न?"

"आपको, अन्ना सेर्गेयेवना, मैं हिकारत की नजर से नही देखता, और यह आप जानती है।"

"क्या खाक जानती हू लेकिन छोडो। भविष्य के बारे में बाते करने से आपका हिचकना ऐसी चीज नही जो समझ में न आए। लेकिन अब, इस समय, आपके भीतर क्या-कुछ हो रहा है "

"क्या-कुछ हो रहा है!" बजारोव ने दोहराया। "गोया मैं कोई राज्य या समाज हू! जो हो, वह कुछ कहने भर के लिए भी दिलचस्प

नही है। इसके अलावा, भीतर 'क्या-कुछ' हो रहा है, क्या यह किसी के लिए हमेशा शब्दो में व्यक्त करना सम्भव हो सकता है?"

"मेरी समझ में नही आता कि अपनी बात व्यक्त करने में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है?"

"क्या आप कर सकती है?" बज़ारोव ने पूछा।

"हा कर सकती हू," अन्ना सेर्गेयेवना ने हल्की-सी हिचकिचाहट के साथ कहा।

बज़ारोव ने अपना सिर झुकाया।

"तब आप मुझसे ज्यादा खुशनसीब हैं।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा।

"जैसा आप समझें," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहना शुरू किया, "लेकिन मुझे लगता है कि हमारा मिलना निरा आकस्मिक सयोग ही नही है। वह इससे अधिक हमारी घनिष्ठ मित्रता का सूचक है। मेरा विश्वास है कि तुम्हारा यह भला क्या कहते हैं उसे तुम्हारा यह तनाव, यह अनबोलपन, अन्तत गायब हो जाएगा।"

"सो आपको यह पता चल गया कि मुझमें अनबोलपन है और, भला यही कहा था न आपने कि तनाव है?"

"हा।"

बज़ारोव उठा और खिड़की के पास चला गया।

"और क्या तुम इस अनबोलपन का कारण जानना चाहोगी, क्या तुम जानना चाहोगी कि मेरे भीतर क्या हो रहा है?"

"हा," एक अनबूझ-से भय का अनुभव करते हुए ओदिनत्सोवा ने दोहराया।

"नाराज तो नही होगी?"

"नही।"

"नही ?" वज़ारोव उसकी ओर पीठ किए खडा था। "तब मै तुम्हे जताना चाहता हू कि मै तुमसे प्यार करता हू बेहवास और पागल की भाति प्यार करता हू यह लीजिए, आपकी इच्छा पूरी हो गई।"

ओदिनत्सोवा ने अपने दोनो हाथ फैला लिए और वज़ारोव खिडकी के शीशे मे अपना सिर सटाकर खडा हो गया। उसकी सास भारी हो गई थी, उसका रोम रोम प्रकट रूप में थरथरा रहा था। लेकिन यह यौवन की सहज व्रीडा का कम्पन नही था, यह उस मधुर अस्तव्यस्तता का सूचक नही था जो प्रेम की प्रथम स्वीकृति के समय अभिभूत कर लेता है। यह वासना का उद्वेग था जो पूरी प्रचण्डता के साथ, उत्ताल तरगो के रूप मे, उमड पडा था, एक ऐसा उद्वेग जो क्षुब्ध रोप के समान था, शायद उसी का प्रतिरूप। ओदिनत्सोवा आतक और उसके लिए दु ख, दोनो का अनुभव कर रही थी।

"येवगेनी वसीलियेविच," वह बुदबुदाई, और उसकी आवाज़ में कोमलता का पुट अनायास ही आ मिला।

वज़ारोव तेज़ी से घूम गया, लील जानेवाली नज़र से ओदिनत्सोवा की ओर देखा और उसके दोनो हाथो को थामते हुए अचानक उसे अपनी बाहो में खीच लिया।

उसने अपने आपको तुरत उसके बाहुपाश से मुक्त नही किया। लेकिन, कुछेक क्षण बाद ही, वह दूर कोने में खडी वज़ारोव को ताक रही थी। वह उसकी ओर बढा

"आपने मुझे समझा नही," तेज आतक से वह फुसफुसाई। बस, उसकी दिशा में एक भी डग वह और बढता तो जैसे वह चीख पडती वज़ारोव ने होठो में अपने दात गडाए और कमरे से निकल गया।

आध घटा बाद दासी अन्ना सेर्गेयेवना के पास वज़ारोव का एक

पुर्ज़ा लेकर आई। पुर्ज़े में एक ही पंक्ति थी "मैं आज ही चला जाऊ, या कल तक रुक सकता हू ?"

"क्या जाना ही है ? न मैं आपको समझी, न आप मुझे," ओदिनत्सोवा ने जवाब दिया, मगर मन में सोच रही थी "मैं खुद भी तो अपने को नही समझी।"

दोपहर के भोजन के समय तक वह बाहर नही निकली। बराबर अपने कमरे में ही इधर-से-उधर फर्श नापती रही। हाथ कमर के पीछे बाधे हुए। बीच बीच में खिडकी या आईने के सामने, वह ठिठककर खडी हो जाती, धीमे से रूमाल को अपनी गरदन से छुवाती, जैसे वहा जलने का दाग पड गया हो और रह रहकर उसका ध्यान उसकी ओर चला जाता हो। मन ही मन वह अपने से सवाल करती "किस चीज़ से प्रेरित होकर तूने उसे अपना हृदय उडेलने के लिए उकसाया ? आखिर तेरे हृदय मे यह खुदबुद क्यो मची ?" फिर अपने आप, स्वगत ही, कहती गई "कसूर मेरा है। लेकिन यह मैं पहले से कैसे जान सकती थी कि ऐसा होगा।" उसने अपने दिमाग में सारी चीजो को उलटा-पलटा और बज़ारोव के उस समय के वहशियो जैसे चेहरे की याद कर लाज से लाल हो उठी जबकि वह उसकी ओर लपका था।

"या फिर ?" सहसा उसके मुह से निकला। वह अब, अपनी घुघराली लटो को उछालकर, कमरे में स्थिर खडी थी आईने में अपनी छवि पर उसकी नजर गई। पीछे को झुका सिर, अधमुदी पलको और अधखुले होठो की रहस्यमय मुसकान कुछ ऐसा भेद प्रकट कर रही थी कि वह सकपका-सी गई

"नहीं," आखिर वह निश्चय पर पहुची, "खुदा जाने, उसका अजाम क्या हो जाता। यह खिलवाड करने की चीज नही। अन्तत स्थिरता ही इस दुनिया में सबसे अच्छी चीज है।"

उसकी स्थिरता अस्तव्यस्त नही हुई थी। फिर भी वह उदास हो उठी, यहा तक कि थोडा रोई भी, बिना यह जाने कि क्यो, लेकिन इसलिए नही कि वह किसी अपमान का अनुभव कर रही थी। वह ऐसा कुछ अनुभव नही कर रही थी कि उसकी व्यक्तिगत भावनाओ को ठेस पहुची है, उलटे अपराध की एक भावना उसके हृदय को कुरेद रही थी। अनेक प्रकार की धुधली भावनाओं, उम्र के यो ही ढलते जाने की चेतना और नयेपन की लालसा ने एक हद तक आगे बढने और परिधि के बाहर क्या है, यह झाकने के लिए उसे उकसा दिया था। और उसने देखा कि वहा अतल गर्त तक नही है, केवल एक सूनापन या केवल घिनौनापन है।

१९

हृदय की समूची स्थिरता और मूढाग्रहो से मुक्त होने के बावजूद दोपहर के भोजन के लिए कलेवा-घर में पाव रखते समय ओदिनत्सोवा ने एक परेशानी का अनुभव किया। भोजन तो, खैर, बहुत कुछ तसल्ली के साथ गुज़र गया। पोरफिरी प्लातोनिच आ टपका और उसने, अन्य चीज़ो के अलावा, छुटपुट किस्सो का बाज़ार गर्म रखा। वह अभी शहर से लौटा था। उसने खबर सुनाई कि गवर्नर ने, विशेष कमीशन के अपने सदस्यो को, महमेज़ पहनने का आदेश दिया है। यह इसलिए कि उन्हे, किसी अत्यावश्यक काम मे, कही घोडे पर भेजना पड सकता है। आरकादी दबे स्वर में कात्या से बतियाता रहा और मौसी के प्रति कूटनीतिज्ञ की भाति व्यवहार करता रहा। बज़ारोव अडियल और उदास चुप्पी का नकाब चढाए रहा। ओदिनत्सोवा ने एक या दो बार, चोरी-छिपे नही, बल्कि सीधे उसके गम्भीर, झुझलाहट भरे चेहरे की ओर देखा उसकी आखें झुकी थी और हर भाव-भगिमा में अवहेलनापूर्ण दृढता झलक रही

थी, और मन ही मन कहा, "नही नही नही " भोजन के बाद अन्य सब के साथ वह वाहर बाग में चली गई और यह अनुमान कर कि बज़ारोव उससे कुछ कहना चाहता है, एक किनारे खिसककर वही ठिठक गई। बज़ारोव उसके निकट बढ आया। उसकी आखें अभी भी वैसे ही झुकी थी। भरभराई-सी आवाज़ में वह बोला

"मेरे लिए माफी मागना ज़रूरी है, अन्ना सेर्गेयेवना। आप निश्चय ही मुझसे सख्त नाराज होगी।"

"नही, मै तुमसे नाराज नही हू, येवगेनी वसीलियेविच," ओदिनत्सोवा ने जवाब दिया। "लेकिन मै सन्तप्त जरूर हू।"

"यह और भी बुरा है। जो हो, मुझे यो ही काफी सज़ा मिल चुकी है। मेरी स्थिति—यह आप भी मानेंगी—हास्यास्पद बन गई है। आपने मुझे लिखा 'क्या जाना ही है?' मैं नही रुक सकता, और न रुकना चाहता ही हू। मै कल यहा नजर नही आऊगा।"

"लेकिन, येवगेनी वसीलियेविच, क्यो "

"यह कि मै क्यो जा रहा हू?"

"नही, मेरा यह मतलब नही।"

"अतीत को लौटाया नही जा सकता, अन्ना सेर्गेयेवना और देर या सवेर यह होना ही था। सो, मुझे जाना ही होगा। मेरे जानते केवल एक ही सूरत में मेरा रुकना सम्भव हो सकता था, लेकिन वह सूरत कभी होगी नही। गुस्ताखी माफ,—आप मुझे प्यार नही करती,—नही करती है न, और न ही कभी करेगी?"

घनी काली भौहो के नीचे, क्षण-भर के लिए, बज़ारोव की आखो में बिजली-सी कौंध गई।

अन्ना सेर्गेयेवना ने कोई जवाब नही दिया। सहसा उसके मन में कुछ आभास-सा हुआ—"मै इस आदमी से डरती हू।"

"अच्छा तो विदा, मदाम।" जैसे उसके मन की बात भापते हुए बज़ारोव ने कहा और घर की ओर मुड गया।

अन्ना सेर्गेयेवना ने भी, धीमे डगो मे, उसका अनुसरण किया। उसने कात्या को बुलाया और सहारे के लिए उसकी बाह थामे रही। साझ तक उसने कात्या को अपने पास ही मौजूद रखा। ताश खेलने से उसने इन्कार कर दिया और सारे समय हसती रही, लेकिन यह हसी उसके चेहरे की विवर्ण और त्रस्त-सी मुद्रा से कतई मेल नही खाती थी। आरकादी उसकी ओर देख रहा था और अचरज कर रहा था—जैसा कि युवा लोग करते है, यानी यह कि वह बार बार अपने से पूछ रहा था—"आखिर इस सबका मतलब क्या है?" बज़ारोव अपने कमरे के पट बद किए था, चाय के लिए जैसे-तैसे उतर आया। अन्ना सेर्गेयेवना के मन में हुआ कि कोई भली-सी बात उससे कहे, लेकिन उसकी समझ में नही आया कि इस दृढ मौन को कैसे भग करे

एक अप्रत्याशित घटना ने उसे इस असमजस से उबार लिया। भडारी ने आकर सूचना दी कि सितनिकोव तशरीफ लाए है।

और जिस ताबडतोड ढग से यह प्रगतिशील युवक कमरे में दाखिल हुआ, उसका वर्णन करना असम्भव है। आचार-विचार को ताक पर रखने की अपनी आदत के अनुसार उसने अपने ही मन से निश्चय कर लिया था कि देहात चलकर उस महिला के यहा धमका जाए जिसे वह जानता तक नही था और जिसने कभी उसे आमन्त्रित नही किया था, लेकिन जो—इधर-उधर से उसने पता चला लिया था—उसके इतने चतुर परिचितो को अपना मेहमान बनाए थी। यह सब होने पर भी वह सकोच के मारे कुछ इस बुरी तरह कटा जा रहा था कि क्षमा-याचना और अभिवादन के उन फिकरो को, जिन्हे उसने बाकायदा रटा था एकदम भूल गया और अचकचाते हुए जैसे-तैसे वह

इतना ही उगल सका कि येवदोक्सीया ने—यानी कूक्शिना ने—अन्ना सेर्गेयेवना की राजी-खुशी का हाल जानने के लिए उसे भेजा है, और यह कि आरकादी निकोलायेविच ने भी बहुत बहुत तारीफ यहा तक पहुचकर वह लडखडा गया और कुछ इस हद तक सकपका गया कि घबराहट में अपनी ही टोपी पर बैठ गया। लेकिन जब किसी ने उसे बाहर निकल जाने के लिए नही कहा और अन्ना सेर्गेयेवना ने अपनी मौसी तथा बहिन से उसका परिचय तक कराया तो उसने जल्दी ही अपने को सभाल लिया और भरपूर उछाह से—जितना भी उससे बन सकता था—बातो की पिटारी खोलनी शुरू कर दी। जीवन में अटपटेपन का विक्षेप भी बहुधा अच्छा होता है। अति पर पहुचा तनाव उससे ढीला पड जाता है और आत्मविश्वास फिर ठीक-ठिकाने पर आ जाता है, या कहिए कि हवाई घोडे पर सवार आत्मप्रवचना की हमारी भावनाओ को—उनका असली रूप दिखाकर—ठडा कर देता है। सितनिकोव के आते ही हर चीज़ जैसे अधिक ठस, अधिक बेजान—और अधिक सरल हो गई। यहा तक कि हरेक ने जी लगाकर साझ का भोजन किया और पूरी मण्डली, और दिनो से आध घटा पहले ही, सोने के लिए चली गई।

आरकादी अपने बिस्तरे पर पहुच गया था और बज़ारोव भी कपडे उतार चुका था। तभी आरकादी ने उससे कहा

"एक दिन तुमने मुझसे जो कहा था, वही आज मैं तुम्हारे सामने भी दोहरा सकता हू इतने उदास क्यो हो? लगता है जैसे किसी पुनीत कर्तव्य को पूरा करके आ रहे हो।"

दोनो युवा मित्रो के बीच इधर ताने-कटाक्षो में बात करने की आदत का उदय हो गया था जो हमेशा अपने भीतर गुप्त आक्रोश या अज्ञात सन्देह छिपाए होती है।

"कल मैं अपने पिता के पास जा रहा हू," वज़ारोव ने ऐलान किया।

आरकादी कोहनियो के वल उचक गया। उसे अचरज हुआ और साथ ही, जाने क्यो खुशी भी।

"ओह!" उसने कहा। "तो क्या इसी लिए उदास हो?"

वज़ारोव ने जमुहाई ली।

"उत्सुकता ने विल्ली को ही मार डाला!"

"और अन्ना सेर्गेयेवना का क्या हाल है?"

"क्यो, उसे क्या हुआ?"

"मतलव यह कि क्या वह तुम्हे जाने दे रही है?"

"गोया मैं उसका वन्धेज हू, क्यो ?"

आरकादी सोच में डूव गया। वज़ारोव विस्तरे पर जा लेटा और करवट लेकर मुह दीवार की ओर कर लिया।

कई मिनट तक खामोशी छाई रही।

"येवगेनी," सहसा आरकादी ने कहा।

"क्या है?"

"मैं भी कल चल रहा हू।"

वज़ारोव ने कुछ नही कहा।

"मै सीधे पर जाऊगा," आरकादी ने कहा। "खोखलोव की वस्ती तक हम साथ साथ चलेगे। वहा फेदोत तुम्हारे लिए सवारी का प्रवध कर देगा। तुम्हारे घरवालो से मिलने के लिए जी तो मेरा भी करता है, लेकिन डर यही है कि कही मैं उनके और तुम्हारे लिए वेकार परेशानी का कारण न वन जाऊ। लौटते समय हमारे यहा फिर आना, आओगे न?"

"मेरी चीज़ें वही तो पडी है," मुह फेरे विना ही वज़ारोव ने जवाव में कहा।

आरकादी ने मन ही मन मोचा

"यह पूछता क्यो नही कि मै क्यो जा रहा हू? मो भी उतना ही अचानक जितना कि वह? ज़रा मोचो तो सही, मै क्यो जा रहा हू और वह क्यो जा रहा है?" आरकादी ने अपने विचारो का पल्ला नही छोडा। उसे अपने सवाल का कोई सन्तोपजनक जवाव नही मिला और उसका हृदय एक प्रकार के तीखेपन से भर गया। उसने महसूस किया कि इस जीवन से जिसका वह इतना अभ्यस्त हो गया, अपने को विच्छिन्न करना कितना दु खदायक होगा। लेकिन फकतदम अकेले यहा टिके रहना भी वडा वेतुका मालूम होगा। "उनके वीच ज़रूर कुछ हुआ है," उसने अपने आपसे कहा, "उसके जाने के वाद मै ही क्यो यहा चिपका रहू? मेरे रहने से वह केवल और भी चिढ जाएगी, और रहा-सहा भी हाथ से जाता रहेगा।" अन्ना सेर्गेयेवना का चित्र उसकी कल्पना में मूर्त्त हो उठा और युवती विधवा की वह सुन्दर छवि, धीरे धीरे, एक दूसरी छवि में परिवर्तित हो गई।

"कात्या भी मेरे हाथ से जाती रहेगी," आरकादी अपने तकिये में फुसफुसाया और नि शब्द आसू की एक वूद ढुलककर तकिये पर आ गिरी सहसा उसने अपने वालो को झटका और ज़ोर से कह उठा

"आखिर वह गधा सितनिकोव यहा क्यो आ टपका?"

बज़ारोव अपने विस्तरे पर कसमसाया। फिर बोला

"सुनो बचुवा, देखता हू कि तुम्हारे दूध के दात अभी तक नही टूटे। सितनिकोव न हो तो यह दुनिया ठप्प हो जाए। मुझे उस जैसे काठ के उल्लुओ की ज़रूरत है। नही तो क्या तुम, सचमुच, देवताओ से भट्ठा गर्म कराने की आशा करते हो ।"

"हु!" आरकादी ने मन ही मन सोचा और जैसे एक ही कौंध में बज़ारोव के दम्भ की अतल गहराई उसकी आखो के सामने

उजागर हो गई, "मो तुम और मैं देवता है? या यह कहो कि तुम देवता और मैं तुम्हारा काठ का उल्लू हू!"

"हा," बजारोव ने कहा, "तुम अभी तक निरे दुध-मुहे बच्चे हो।"

अगले दिन आरकादी से यह जानकर कि वह भी बज़ारोव के साथ जा रहा है, ओदिनत्सोवा ने कोई खास अचरज प्रकट नही किया। वह कुछ अस्तव्यस्त और थकी-सी मालूम होती थी। कात्या ने चुपचाप और गम्भीर नज़र मे आरकादी की ओर देखा। मौसी ने— और आरकादी की आखें बरबस उधर घूम गईं—शाल के भीतर चुपके से क्रास का चिन्ह बनाया। और सितनिकोव—उसका तो जैसे ढेर हो गया। नकदक नया सूट डाटे भोजन के लिए वह अभी नीचे आया था और उसका यह सूट, इस बार, स्लाविस्ट ढग का नही था। एक से एक बढिया कपडो का अम्बार वह अपने साथ लाया था, इतना अधिक कि पिछली रात उसकी हाज़िरी के लिए नियुक्त नौकर यह सब देखकर मुह बाए रह गया था। लेकिन अब उसके साथी थे कि उसे मझधार में छोडे जा रहे थे! पहले तो वह कुछ कुनमुनाया, और इसके बाद जगल के किनारे तक खदेडे गए खरहे की भाति इधर-से-उधर लपका-झपका और फिर अचानक, जैसे किसी ने उसे बीध डाला हो, करीब करीब चीख-सी भरता कह उठा कि वह भी जा रहा है। ओदिनत्सोवा ने कोई आपत्ति नही की।

इसके बाद, आरकादी की ओर मुडते हुए, उस बदकिस्मत युवक ने कहा

"मेरी गाडी खूब आरामदेह है। मैं तुम्हे बैठा ले चलूगा, और येवगेनी वसीलियेविच तुम्हारी तरन्तास ले लेंगे। यह ठीक रहेगा।"

"लेकिन तुम्हे अपने रास्ते मे एकदम भटक जाना पडेगा। और मेरा घर काफी दूर है।"

"कोई वात नही। समय की मेरे पास कोई कमी नही। इसके अलावा मुझे उधर कुछ काम-काज भी निवटाना है।"

"ठेके पर कमीशन, यही न?" अत्यन्त प्रकट हिकारत के लहजे में आरकादी ने कुरेदा।

लेकिन सितनिकोव इतना ग्रस्त था कि अपनी टकसाली हसी होठो पर नही ला सका।

"सच माने, गाडी वेहद आरामदेह है," वह वुदवुदाया, "और सव कोई मज़े से वैठ सकते है।"

"इन्कार करके मौसिये सितनिकोव को दुखी न करे," अन्ना सेर्गेयेवना ने सहारा दिया।

आरकादी ने उसकी ओर देखा और भेद-भरे अन्दाज़ में अपने सिर को तिरछा कर लिया।

भोजन के वाद अतिथि विदा हुए। वजारोव से विदा लेते समय ओदिनत्सोवा उसे अपना हाथ देती हुई वोली

"फिर मिलते तो रहेगे, क्यो ठीक है न?"

"जैसा आप चाहे," वजारोव ने जवाव दिया।

"तव तो भेंट होगी ही।"

सवसे पहले आरकादी पोर्च की सीढ़ियो पर उतर आया और सितनिकोव की गाडी में सवार हो गया। भडारी ने अदब से उसे सहारा दिया। अच्छा होता अगर वह उसे घूसा जड देता या फूट-फूट कर रोने लगता। बज़ारोव ने तरन्तास में आसन जमाया। खोखलोव की वस्ती पहुचने पर आरकादी सरायदार फेदोत के घोडे

जोतवाने तक रुका रहा। इसके बाद बजारोव के पास गया और अपनी पुरानी मुसकराहट के साथ बोला

"येवगेनी, मुझे भी अपने साथ ही ले चलो। तुम्हारा घर देखने को जी चाहता है।"

"तो आ जाओ भीतर," बज़ारोव ने दातो के भीतर से कहा।

सितनिकोव जो अपने आपमें मगन सीटी बजा रहा था और अपनी गाडी के इर्द-गिर्द अलस मुद्रा में टहल रहा था, यह सुनकर हक्का-बक्का-सा खडा रह गया। उधर आरकादी ने अविचलित भाव से अपना सामान उठाकर बज़ारोव की गाडी में पहुचाया और खुद भी उसके बराबर में बैठ गया। फिर अदब के साथ अपने साथी की ओर सिर झुकाते हुए चिल्लाकर बोला "चलो, कोचवान!" तरन्ताम उछलती हुई बढ चली और जल्दी ही आखो से ओझल हो गई। सितनिकोव ने, जो पूर्णतया सिटपिटा गया था, छिपी नज़र से अपने कोचवान की ओर देखा। कोचवान बेखबर-सा आगेवाली घोडी की दुम पर अपने चाबुक की डोरी सरसरा रहा था। इसपर सितनिकोव उछल-कर गाडी मे सवार हो गया, उधर से गुज़रते दो किसानो को देख उनपर बरसा "सिर पर टोपी क्यो नहीं रखते, अक्ल के दुश्मनो!" और शहर के लिए रवाना हो गया जहा वह काफी दिन ढले पहुचा। अगले दिन कूक्शिना को उसने बताया कि वह उन दोनो के– "उन उजड्ड हरामखोरो के"– बारे में क्या सोचता है।

तरन्ताम में बज़ारोव की बगल में बैठने के बाद आरकादी ने उनके हाथ को कसकर दबाया और काफी देर तक कुछ न बोला। लगता था जैसे आरकादी का इस तरह हाथ दबाना और मौन धारण कर लेना बज़ारोव को अच्छा लगा। पिछली रात एक क्षण के लिए भी उसकी पलक नहीं झपकी थी, न ही

उसने सिगरेट पी थी और कई दिन से लगभग पेट मे भी कुछ नही डाला था। एकदम आखो तक खिची टोपी के नीचे उसके मुख की अर्द्ध-मुद्रा बदहवास-सी और क्षीण दिख रही थी।

"अच्छा तो मित्र," आखिर उसने खामोशी भग की, "ज़रा चुरुट तो निकालो और इधर देखो, क्या मेरी जीभ पीली मालूम होती है?"

"हा, है तो," आरकादी ने जवाब दिया।

"तभी तो और तुम्हारा यह चुरुट भी बेज़ायका मालूम होता है। गडबड मशीन में ही है।"

"पिछले कुछ दिनो तुम सचमुच कुछ ठीक नही दिख रहे थे," आरकादी ने कहा।

"कोई चिन्ता नही। सब ठीक हो जाएगा। यो है यह कुछ अखरनेवाली बात। मेरी मा कुछ इतनी सवेदनशील जीव है कि जब तक तुम्हारी तोद बडी न हो और दिन में दस बार तुम न खाओ तो वह बुरी तरह परेशान हो उठती है। वैसे पिता भी बुरे नही है। कितनी ही जगह घूमे है और दुनिया को थोडा-बहुत देख आए हैं। नही," चुरुट को फेकते हुए फिर उसने कहा, "मिट्टा मालूम होता है इसे पीना!"

"तुम्हारी जागीर यहा से सोलह-सत्रह मील होगी, क्यो?" आरकादी ने पूछा।

"हा। लेकिन उस लाल बुझक्कड से पूछो न?" कहते हुए उसने बोक्स पर बैठे गाडीवान की ओर इशारा किया।

लेकिन उस लाल बुझक्कड ने कहा

"कौण जाणे, इध्र की जमीन कबी नापी नई गई," और फुसफुसाती आवाज़ में अपनी आगेवाली घोडी को झिडकता रहा,

क्योकि वह "थूथनी नचा रही थी", मतलव यह कि अपने सिर को झटक रही थी।

"हा हा," वज़ारोव ने फिर कहना शुरू किया, "यह तुम्हारे लिए एक सवक है, सीख देनेवाला सवक, मेरे युवक मित्र। जहन्नुम में जाए, यह क्या गडवडझाला है? हर आदमी कच्चे धागे से लटका है, नीचे अतल गहराई मुह वाकर किमी भी क्षण उसे उदरस्थ कर सकती है, लेकिन वह है कि दुनिया भर के वखेडे मोल लेता फिरता है, खुद अपने जीवन के साथ तवाही के खेल खेलता है।"

"यह तुम किसकी ओर लक्ष्य कर रहे हो?" आरकादी ने पूछा।

"लक्ष्य-वक्ष्य मै कुछ नही कर रहा हू। मैं मीधे तुमसे, पूरी गम्भीरता से, कह रहा हू कि हम दोनो काठ के उल्लू वनते रहे है। वाते वघारने से कुछ आता-जाता नही। लेकिन अस्पताल में मैंने देखा है कि जिसे दर्द वुरी तरह वौखला देता है, वह निश्चय ही उसपर विजय भी पा लेता है।"

"मेरी कुछ समझ में नही आता कि यह सव तुम क्यो कह रहे हो," आरकादी ने कहा। "शिकायत की ऐसी कोई वात तो तुममें नजर नही आती।"

"अच्छा, चूकि तुम मुझे कुछ समझ नही पा रहे हो, इसलिए सुनो, मै तुम्हे वताता हू मेरी राय में सडक के किनारे पत्थर तोडना कही अच्छा है, वनिस्वत इसके कि किसी स्त्री के चक्कर में पडकर तुम अपनी कानी उगली पर भी कोई आच आने दो। वस, सौ वात की यही एक वात है" वजारोव का प्रिय शब्द 'रोमान्टिकता' वाहर निकलने के लिए उसकी जुवान की नोक पर मचल रहा था कि उसने अपने आपको रोक लिया और वोला "निरी खुराफात! तुम

शायद अभी विश्वास न करो, लेकिन मै तुम्हे बताना चाहता हू तुम और मै दोनो स्त्रियो की सगत मे रहे है और उनमे आनन्द भी हमने लिया है। लेकिन ऐसी सगत से छुटकारा पाना वैसा ही है जैसे गर्मी से तप्त दिन में ठडी फुहारो में स्नान करना। ऐसी फिजूल बातो में गवाने के लिए आदमी के पास समय कहा है? स्पेन की एक बहुत ही अच्छी पुरानी कहावत है 'आदमी वही है जो निर्बंध हो'।" फिर कोचबोक्स पर बैठे दहकान की ओर मुडते हुए बोला 'ऐ, इधर देखो लाल बुझक्कड, क्या तुम्हारे बीवी है?"

देहाती गवार ने अपनी चिपचिपी आखोवाला चपटा चेहरा हमारे मित्रो की ओर घुमाया।

"बीवी कह्या न? बिशक मेरे कू बीवी है।"

"उसे पीटते भी हो?"

"बीवी कू, पीटता। जस लोग, तस भोग। पण बे-बात कब्भी नही पीटता।"

"बहुत खूब। लेकिन यह बताओ, क्या वह तुम्हे कभी पीटती है?"

उसने अपनी रास को झटका।

"जाणे कैसा-क्या बोलता मालिक! मज्जाक करता "

साफ था कि उसे बुरा लगा।

"सुना तुमने, आरकादी निकोलायेविच! और तुम और मै है कि चाबुको की मार खाकर आ रहे है यही शिक्षित होने का फायदा है।"

आरकादी ने ज़बर्दस्ती हसने का प्रयत्न किया। उधर बज़ारोव ने अपना मुह मोड लिया और फिर रास्ते भर मुह न खोला।

सोलह-सत्रह मील का रास्ता आरकादी को ऐसा मालूम हुआ

जैसे बढकर तीस-बत्तीस मील बन गया हो। आखिर, पहाडी ढलुवान पर, एक गाव दिखाई दिया। यही बज़ारोव के माता-पिता रहते थे। पास ही, नये बर्च वृक्षो के एक झुरमुट में, एक छोटा-सा घर था जिसपर फूस का छप्पर छाया था। पहली झोपडी के आगे सिर पर टोपी डाटे दो किसान झडप रहे थे। "मण्डमुस्टण्ड सुग्रर," एक दूसरे से कह रहा था, "जहा-तहा मुह मारते फिरते हो!" दूसरे ने नहला पर दहला रखते हुए जवाब दिया "और तुम्हारी बीबी–वह डायन है, डायन!"

"देखा तुमने," बज़ारोव ने आरकादी को बताते हुए कहा, "इनके निर्बंध व्यवहार और चुटकियो-भरी बातो से पता चल जाता है कि मेरे पिता के किसान कुछ ऐसे रौंदे-कुचले और पस्त नही है। यह लो, वह खुद भी सामने मौजूद है। घर की पैडियो पर आ गए है। घटियो की टुनटुन कानो में पडी होगी। वही है–हा, वही है, उनका ढाचा साफ कह रहा है कि वही है। टट टट! लेकिन देखो, बालो पर सफेदी आ चली है न उनके, ओह!"

२०

बज़ारोव तरन्तास से बाहर झुक आया, आरकादी ने भी अपनी गर्दन उचकाकर मित्र के पीठ-पीछे से देखा। लम्बे कद के एक छरहरे-से आदमी पर उसकी नजर पडी। बाल उलझे हुए, बटिया तोते-जैसी नाक, बदन पर पुराना फौजी कोट जिसके बटन खुले थे। टागें चौडी किए, मुह मे लम्बी डडी का पाइप लगाए और सामने से पडती सूरज की धूप के मारे आखो को सिकोडे वह पोर्च की सीढियो पर खडे थे।

घोडे रुक गए।

"आख़िर तुम आ ही गए," वज़ारोव के पिता ने कहा और वैसे ही तम्बाकू पीते रहे, हालाकि चिवुक–लम्बी डडी का पाइप–उनकी उगलियो में थिरक और अन्छा-ख़ासा नाच-सा-नाच रहा था। "अच्छा तो अब उतर आओ, उतर आओ, और जरा एक चुम्मा तो दो।"

उन्होने अपने बेटे को कलेजे से लगा लिया

"येवगेनी, मेरे मुन्ना येवगेनी," किसी स्त्री की थरथराती हुई आवाज आई। दरवाज़ा फटाक से खुला और सफेद टोपी तथा चटक रगो की छोटी जाकेट पहने एक गोल-मटोल बहुत ही प्यारी वृद्ध महिला ड्योढी में दिखाई दी। उसका हृदय चीख उठा, बदन ने एक झोका खाया, और अगर वज़ारोव ने उसे थाम न लिया होता तो शायद वह गिर पडती। देखते न देखते उसकी गुदगुदी बाहे वज़ारोव के गले से लिपट गईं, सिर उसकी छाती से जा चिपका और चारो ओर की हर चीज़ जैसे सास रोककर निस्तब्ध हो गई। वृद्धा की टूटी हुई सुवकियो के सिवा और कुछ सुनाई नही पड रहा था।

वृद्ध वज़ारोव भारी सास ले रहे थे और पहले की भाति–बल्कि उससे भी अधिक–अपनी आखो को सिकोडे थे।

"बस बस, अरीशा, अब बस करो," उन्होने कहा और उनकी आखें आरकादी से जा मिली जो गाडी से सटा खडा था और कोचवान ने तो अपना मुह तक फेर लिया। "सच, यह एकदम बेकार है। कृपया बद भी करो अब!"

"आह वसीली इवानिच," वृद्धा हकलाती-सी बोली, "कितनी मुद्दत के बाद मेरे कलेजे का टुकडा, मेरी आखो का तारा, आज दिखाई दिया है" और अपनी बाहो के बधन को ढीला किए बिना ही

उसने आसुओ से भीगा और झुरिया-पडा दमकता हुआ चेहरा कुछ पीछे खींच लिया, अटपटे-से अन्दाज़ में चाव-भरी नजर से उसे देखा और फिर उसके गले से लिपट गई।

"हा ठीक बेशक ठीक ऐसा ही होता है," वसीली इवानिच ने कहा, "लेकिन अच्छा हो कि अब हम भीतर चलें। देखता हू, येवगेनी अपने साथ एक मेहमान को भी लाया है।" फिर पाव को थोडा फटफटाकर आरकादी की ओर मुडते हुए बोले "माफ कीजिएगा, जानते ही है कि स्त्रियो का–तिस पर भी मा का–हृदय बिल्कुल मोम होता है"

लेकिन खुद उनके होठ और भौंहे बल खा रही थीं और ठोडी थरथरा रही थी साफ मालूम होता था कि वह अपने भावो को वस में रखने का प्रयास कर रहे है, करीब करीब तटस्थता का अभिनय करने के हद तक।

आरकादी ने सिर झुकाकर नमस्कार किया।

"चलो मा चलो, तुम तो सचमुच," बज़ारोव ने कहा और भावो मे अभिभूत वृद्धा को सहारा देकर घर में लिवा ले गया। उसे आरामदेह कुर्सी मे बैठाकर उतावली के साथ वह एक बार फिर अपने पिता के गले से लिपट गया और आरकादी का परिचय कराया।

"आपसे मिलकर आन्तरिक खुशी हुई," वसीली इवानिच ने कहा, "यहा जो कुछ भी रूखा-सूखा है, आपके लिए हाज़िर है। सादा जीवन हम बिताते है, फौजियो के टर्रे पर। अरीना व्लासियेवना, अब तो शान्त हो जाओ, सच। इतना मुलायम होना भी ठीक नहीं। देखो न, ये सज्जन भी जाने क्या सोचेंगे तुम्हारे बारे मे।"

"प्रिय महोदय," वृद्धा ने आसुओ के बीच लडखडाती आवाज में कहा, "आपका नाम जानने की खुशी से मैं अभी तक "

"आरकादी निकोलायेविच," वसीली इवानिच ने गम्भीर भाव से इशारतन बताया।

"माफ करे, मै भी बस योही हू," कहते हुए वृद्धा ने अपनी नाक माफ की, और अपने सिर को पहले एक ओर और फिर दूसरी ओर झुकाते हुए सावधानी के साथ बारी बारी से अपनी आखो को पोछा। फिर बोली "माफ करना। सच, मुझे कुछ ऐसा लग रहा था कि अपने कलेजे के टु क टुकडे को बिना देखे ही मेरे प्राण छूट जाएगे।"

"लेकिन अब तो वह तुम्हारे सामने है, मदाम," वसीली इवानिच ने कहा और फिर तेरह वर्ष की नगे पाव और चटक लाल रग की सूती फ्राक पहने एक लडकी की ओर जो सहमी-सी दरवाजे की ओट मे से झाक रही थी, मुडते हुए बोला "तान्या, मालकिन के लिए एक गिलास पानी तो ले आओ, और देखो, तश्तरी में रखकर लाना, समझी! और आप महानुभावो," पुराने ढग की खुशमिज़ाजी के साथ उसने फिर कहा, "आप लोग पैन्शन प्राप्त इस पुराने सैनिक के अध्ययनकक्ष को पवित्र करने की कृपा करे।"

"प्यारे येवगेनी, जरा इधर आओ, तुम्हे एक बार और दुलार लू," अरीना व्लासियेवना बुदबुदाई। बज़ारोव झुककर नीचे हो गया। "सच, कैसा फूल-सा जवान बन गया है तू!"

"चाहे फूल-सा हो या न हो," वसीली इवानिच ने टीप की, "लेकिन ओम्फे* तो है ही—जैसी कि कहावत है। और अब, अरीना व्लासियेवना, आशा है कि तुम्हारा मा का हृदय तृप्त हो गया होगा, सो हमारे प्यारे मेहमानो का पेट भरने की भी कुछ जुगत करो। कारण, तुम जानती ही हो कि मीठी बातो से पेट नही भरता।"

---

* ओम्फे (फ्रेंच homme fait)—मर्द-बच्चा।—स०

वृद्धा अपनी आरामकुर्सी मे उठ खड़ी हुई।

"अभी, एक मिनट मे, दस्तरख़ान बिछ जाता है, वसीली इवानिच। मै खुद जाकर रसोई को सभालती हू और समोवर गरम करवाती हू। मै खुद हर चीज की देख-भाल करूगी। जरा सोचो तो, पूरे तीन साल बाद उसे अपनी आखो मे देखने और उसकी जरूरतो को पूरा करने का यह दिन आया है।"

"बस बस, जाकर सब ठीक कर दो, हमारी प्रिय मेजबान। लेकिन इसका ध्यान रखना, हमें लजाना न पडे। और आप महानुभावो, कृपया मेरे साथ तशरीफ ले चले। ओहो, यह देखो येवगेनी, तुम्हारा अभिनन्दन करने तिमोफेइच भी आ गया। मैं समझता हू, खुशी के मारे यह भी फूला न समाता होगा। पुराना चाकर जो ठहरा। क्यो, तुम खुश हो न, बुटऊ? हा इधर, कृपया इधर से आइए।"

और वसीली इवानिच, अपने घिसे-पिटे सलीपरो को फटफटाते तथा सटर-पटर करते तेजी से बढ चले।

समूचे घर में कुल जमा छै छोटे छोटे कमरे थे। इन्ही में से एक, जिसमे वह मेहमानो को ले गए, अध्ययनकक्ष कहलाता था। दोनो खिडकियो के बीच की समूची लम्बाई मे, दीवार से सटी, भारी पायो की एक मेज़ बिछी थी। मेज पर कागज़ बिखरे थे और धूल की न जाने कितनी पुरानी तह से वह काली—एकदम कारिखपुती-सी—हो गई थी। दीवार पर तुर्की अस्त्र-शस्त्र, घोडसवारी के चाबुको की मूठें, दो फौजी नक्शे, अवयव सम्बन्धी कुछ चार्ट, गुफलैण्ड का एक छविचित्र, काले चौखटे में बालो से बुना मोनोग्राम, और काच मे रक्षित एक प्रमाण-पत्र टगे थे। करेलियन बर्च की लकडी के दो भीमाकार किताबो की आलमारियो के बीच चमडे का एक सोफा रखा था जिसमें जगह जगह गढे और दरारें पडी हुई थी। खानो में किताबें,

छोटी सन्दूकचिया, भूसा-भरी चिडिया, मतवान ग्रौर छोटी-मोटी शीशिया वेतर्तीवी से पडी थी। एक कोने मे विजली की टूटी हुई मशीन ग्वडी थी।

"मेरे प्रिय मेहमान," वसीली इवानिच ने कहना शुरू किया, "मैंने पहले ग्रापको चेता दिया था कि हम लोग यहा – जैसा कि कहते है – सैनिको के पडाव जैसा जीवन विताते है "

"वस, रहने दीजिए," वज़ारोव ने वीच में ही कहा, "ग्राखिर यह माफीनामा खोलने की क्या ज़रूरत है? किरमानोव ग्रच्छी तरह जानते है कि हम कोई कुवेर नही है, ग्रौर यह कि हम महल मे नही रहते। सवाल यह है कि इन्हे टिकाया कहा जाएगा?"

"यह कौन वडी वात है, येवगेनी। सच, वाजू में एक छोटा-सा वहुत ही शानदार कमरा है। तुम्हारे मित्र के लिए काफी ग्रारामदेह रहेगा।"

"तो यह कहो कि एक नया वाजू वनवा लिया है, क्यो?"

"इसमें भी क्या शक है, मालिक। जहा गुसलखाना है न मालिक," तिमोफेइच ने कहा।

"यानी, गुसलखाने की वगल में," वसीली इवानिच ने उतावली से कहा, "ग्राजकल गर्मियो के दिन है मैं ग्रभी लपककर सब ठीक कराए देता हू। ग्रौर तुम, तिमोफेइच, इस वीच इन सज्जन का सामान उठा लाग्रो। ग्रौर तुम येवगेनी, कहने की जरूरत नही कि मेरे ग्रध्ययनकक्ष में ही ग्रपना ग्रासन जमाग्रोगे। Suum cuique*।"

वसीली इवानिच के कमरे से जाते ही वजारोव कह उठा

"देखा तुमने, कितना मजेदार है यह वूढा, ग्रौर उतना ही

---

* जिसे जो भावे, सो पावे। (लैटिन) – स०

स्नेह-भरा जितना कि कोई हो सकता है। तुम्हारे पिता की भाति यह भी कुछ मनकी है, लेकिन भिन्न प्रकार के। हालाकि बातूनी बेहद है।"

"और तुम्हारी मा—मुझे तो वह अद्भुत मालूम होती है," आरकादी ने राय दी।

"हा, एकदम निश्छल आत्मा। देखना, क्या क्या भोजन कराती है।"

"हम नही जानते थे, मालिक, कि आप आज आ रहे है," तिमोफेइच ने जो अभी बजारोव का सूटकेस लेकर आया था कहा, "इसलिए बाज़ार से कोई खास मास-वास नही मगा सके।"

"उसके बिना भी चल जाएगा। अगर नही है, तो न सही। कहते है न—गरीबी कोई पाप नही।"

"तुम्हारे पिता कितने भू-दासो के स्वामी है?" सहसा आरकादी ने पूछा।

"जागीर उनकी नही, मा की है। जहा तक याद पडता है, पन्द्रह होगे।"

"ओह नही, कुल मिलाकर बाईस है," तिमोफेइच नाखुश-सा बीच में ही बोल उठा।

तभी सलीपरो के फटफटाने की आवाज सुनाई दी और वसीली इवानिच आ मौजूद हुए।

"आपका कमरा अभी कुछ मिनटो में ही ठीक हो जाएगा," गम्भीरता से उन्होंने ऐलान किया, "आरकादी निकोलायेविच? क्यो, ठीक है न?" फिर सिर के बाल छटे और कोहनियो पर से फटा नीला झगला तथा किसी दूसरे के जूते पहने एक लडके की ओर इशारा करते हुए बोले "और यह आपकी ख़िदमत मे रहेगा। इसका

नाम है फेदिया। मेरे वेटे को तो मेरी यह वात कतई गवारा न होगी, लेकिन मुझे कहने दीजिए कि कि इससे अच्छा हम और कुछ आपको पेश नही कर सकते। आपका पाइप तो यह भर ही सकता है। आप तम्वाकू तो पीते है न, क्यो?"

"अक्सर मैं चुरुट ही पीता हू," आरकादी ने जवाव दिया।

"और यह आप वडी वुद्धिमानी करते है। मैं खुद भी चुरुट ही पसद करता हू, लेकिन इन निराले इलाको में उनका मिलना मुश्किल है।"

"वस वस, ज्यादा भिखारी का नाटक न करो," वज़ारोव ने इस दफा फिर टीका की। "अच्छा हो कि यहा सोफे पर आकर वैठो जिससे जी-भरकर तुम्हे एक वार फिर देख तो सके।"

वसीली इवानिच मुह के भीतर-ही-भीतर हसे और सोफे पर वैठ गए। उनकी शक्ल अपने वेटे से आश्चर्यजनक रूप में मिलती थी, सिवा इसके कि उनका माथा उतना ऊचा और प्रशस्त नही था और उनका मुह अधिक चौडा था। वह निरन्तर कसमसाते और कधो को सिकोडते रहते थे मानो उनके कपडे, वगल के पास, जरूरत से ज्यादा तग हो। वह निरन्तर आखो को मिचमिचाते, गले को साफ करते और उगलियो को मरोडते रहते थे। इसके प्रतिकूल उनका वेटा एक वेपर्वाह किस्म की निश्चलता का दामन पकडे मालूम होता था।

"भिखारी का नाटक," वसीली इवानिच ने दोहराया, "यह न समझो येवगेनी, कि मैं अपने मेहमानो के दिलो को हिला-डुलाकर, जैसा कि कहते है, उनमें एक तरह की दया उपजाना चाहता हू, कुछ इस रूप में कि देखो, कितनी मनहूस जगह है यह जहा हम रहते है। नही, इसके प्रतिकूल मेरा मत यह है कि एक क्रियाशील मस्तिष्क के लिए मनहूस जगह जैसी कोई चीज़ नही होती। जो हो, मैं इस बात

के लिए कठिन से कठिन प्रयत्न करता हू कि मुझपर, जैसा कि कहते है, काई न जमने पाए, और ज़माने की रफ्तार मे सबसे आगे रहू।'

वसीली इवानिच ने अपनी जेब मे से नीबू के रग का रूमाल निकाला जिसे उन्होने आरकादी के कमरे मे जाते समय अपने कमरे में से ले लिया था और उससे पखा-सा झलते हुए कहने लगे

"इस तथ्य का मै कुछ नही कहता कि मैने, मिसाल के लिए, खुद काफी घाटा उठाकर भी, अपने किसानो को काश्तकार किसान बना दिया है और आधी फसल मुझे देने की शर्त के साथ अपनी भूमि उनके नाम कर दी है। इसे मै अपना कर्तव्य और बहुत ही न्यायसगत चीज़ समझता हू, हालाकि अन्य भूपति इसका सपना तक नही देख सकते। मेरा मतलब विज्ञान और शिक्षा के हितो से है।"

"सो तो है। देखता हू, उधर १८५५ का 'स्वास्थ्य-मित्र' भी आपने रख छोडा है," बज़ारोव ने कहा।

"मेरे एक मित्र, पुराने दिनो की याद में, इसे भेज देते है," वसीली इवानिच ने उतावली मे कहा, "लेकिन हम कुछ और भी दिलचस्पी रखते है, मिसाल के लिए जैसे मस्तिष्क-विज्ञान के बारे में," उन्होंने इस तरह कहा जैसे आरकादी के लाभ के लिए बोल रहे हो, और शेल्फ पर रखे सिर के एक छोटे साचे की ओर इशारा किया जिसपर लकीरें खीचकर अनेक वर्ग बने हुए थे और इन वर्गो में नम्बर पडे हुए थे। फिर बोले—"ऐसा नही है कि हम, मिसाल के लिए, शेनलीन या रादेमाखर से एकदम अपरिचित हो।"

"तो क्या इस गुबेर्निया मे रादेमाखर का नाम अब उछाला जाता है?" बज़ारोव ने पूछा।

वसीली इवानिच खासने लगे।

"ऍ ... ऐ ... इस गुबेर्निया ... इसमे क्या शक कि आप

महानुभाव ज्यादा जानकार है। आप हमसे कही आगे है। आखिर हमारे वारिस जो ठहरे। अपने जमाने मे हमें भी हौफमैन जैसे विकारवादी या ब्राउन जैसे जीवनतत्ववादी का जिक्र तक बडा बेहूदा मालूम होता था, हालाकि एक समय इन लोगो ने काफी तहलका मचा दिया था। अब आप लोगो ने रादेमाखर को बेदखल करनेवाली किसी नयी विभूति का दामन पकडा है और अब आप उसकी आरती उतारते है, लेकिन लगभग बीस वर्ष में शायद वह बेहूदगी का पिटारा बनकर रह जाएगा।"

"आपको यह जानकर तसल्ली होगी," बजारोव ने कहा, "कि हम चिकित्साशास्त्र मात्र को बेहूदगी का पिटारा मानते हैं और किसी भी चीज की आरती नही उतारते।"

"क्या मतलब? आप खुद भी तो डाक्टर बनने जा रहे है, क्यो, ठीक है न?"

"हा, बनने जा रहा हू। लेकिन इससे कुछ सिद्ध नही होता।"

वसीली इवानिच ने अपने पाइप की कटोरी में गर्म राख को बिचली उगली से दबाया और कहना शुरू किया

"हो सकता है, यह भी हो सकता है, बहस मे मैं नही पडूगा। आखिर मैं क्या हू? एक अवकाशप्राप्त फौजी सर्जन – बस और कुछ नही, और अब मैं किसानी में डूबा हू। मै आपके दादा की ब्रिगेड में रह चुका हू," उन्होने एक बार फिर आरकादी को सम्बोधित किया, "हा श्रीमान, अपने जमाने में मैंने भी थोडी-बहुत दुनिया देखी है। सभी तरह की सोसाइटियो में रहा हू, सभी तरह के लोगो से वास्ता पडा है। यह शख्स जो आपके सामने मौजूद है – यानी मै – प्रिन्स वितगेनश्तेइन और कवि जुकोवस्की जैसे लोगो की नाडी पर अपनी उगली रख चुका है। और दक्खिनी फौज के लोगो का जहा तक सम्बध है –

उनका जो चौदह दिसम्बर* की घटनाओं की जड थे," (यहा वसीली इवानिच ने अपने होंठ भेद-भरे अन्दाज में बिचकाए) "सच, उनमें मे प्रत्येक को मैं जानता था। यों, कहने की जरूरत नही, इनमे मेरा कोई सरोकार नही था, मेरा काम तो बस नश्तर सभालना था, इससे अधिक और कुछ नही। लेकिन आपके दादा का वेहद मान था, और वह सच्चे सैनिक थे।"

"बस रहने दीजिए," बजारोव कुनमुनाया, "साफ साफ क्यो नही कहते कि वह कुन्द-दिमाग थे।"

"बाप रे! तुम भी अजीव फिकरे इस्तेमाल करते हो, येवगेनी! सच इसमें शक नही जेनरल किरसानोव उन लोगो मे से नही थे जो "

"छोडिए उन्हे," बजारोव ने बीच मे ही कहा, "यहा आते समय यह देखकर मुझे बडी खुशी हुई कि वर्च वृक्षो का आपका कुंज खूब पनपा है।"

वसीली इवानिच का चेहरा खिल उठा।

"और मेरे बगीचे को भी देखना, कितना बढिया है। हर पेड को खुद अपने हाथो से मैंने रोपा है। फल हैं, रसभरिया हैं और तरह तरह की जडी-बूटिया हैं। तुम नयी पीढी के लोग चाहे जो कहो, लेकिन बाबा पारासेल्सस का यह कथन पुनीत सत्य को ही व्यक्त करता है—in herbis, verbis et lapidibus** मैं अब डाक्टरी का धधा नहीं करता—

* उनका सकेत दिसेम्ब्रिस्टो के गुप्त क्रान्तिकारी समाज ('दिसेम्ब्रिस्टो का दक्षिणी समाज') के सदस्यो से है। उक्त समाज का अध्यक्ष पेस्टेल था (१७९३—१८२६)।—स०

** जडी-बूटियो, शब्दो और पत्थरो से। (लैटिन)—स०

तुम जानते ही हो – लेकिन हफ्ते मे एक या दो वार फिर भी डुवकी लगा ही लेता हू। लोग सलाह के लिए आते है, और उन्हे लात मारकर एकदम खदेडा भी नही जा मकता। जब-तब कोई न कोई कगला आ टपकता है, और इलाज के लिए सिर पड जाता है। और फिर आस-पास डाक्टर है भी नही। शायद तुम यकीन न करो, हमारे एक पडोसी है – अवकाशप्राप्त मेजर। वह भी डाक्टरी करते है। एक दिन मैने किसी से पूछा – क्या उन्होने कभी डाक्टरी पढी है? नही – जवाव मिला – उन्होने डाक्टरी नही पढी। खैराती डाक्टर है हा, हा, खैरात की भावना से डाक्टर वने है! क्यो, है न अद्भुत! हा-हा-हा-हा!"

"फेदिया, मेरा पाइप तो भर ला!" वज़ारोव ने कडी आवाज में कहा।

"या इधर के एक और डाक्टर को लो," वसीली इवानिच ने एक तरह की निराशा भरे स्वर में कहना शुरू किया। "वह मरीज़ को देखने आते है। मालूम होता है कि मरीज़ अपने पुरखो के पास पहुच चुका है। नौकर उन्हे भीतर पाव तक नही रखने देते कि अव आपकी ज़रूरत नही। डाक्टर अचकचाकर रह जाते है। उन्हे इसकी उम्मीद नही थी। पूछते है 'भला यह तो वताओ, मरने से पहले क्या मालिक को हिचकिया आई थी?' 'हा सरकार, आई थी।' 'क्या ज्यादा हिचकिया आई थी?' 'हा, वहुत।' 'ओह ठीक, यह अच्छा लक्षण है।' और वह नौ दो ग्यारह हो गए। हा-हा-हा!"

वृद्ध अकेले ही हस रहे थे। आरकादी मुसकराहट में बल खाकर रह गया। बज़ारोव केवल अपने पाइप से कश खीचता रहा। इस प्रकार करीब एक घटे तक वातचीत चलती रही। आरकादी इस वीच अपने कमरे में चला गया जो कि असल में गुसलखाने का ही एक प्रकोष्ठ

था, लेकिन यो साफ-सुथरा और आरामदेह था। आखिर तान्या ने आकर सूचित किया कि भोजन तैयार है।

वसीली इवानिच सबसे पहले उठे।

"चलिए, महानुभावो! इतनी देर तक आप लोगो को उबाने के लिए मै तहे दिल से माफी चाहता हू। शायद हमारी मेजबान इसकी कसर पूरी कर दे।"

बावजूद उसके कि जल्दी मे तैयार किया गया था, फिर भी भोजन बढिया था, बल्कि कहिए कि ठाठदार था, एक मदिरा को छोडकर—जो कुछ जमी नही। अपनी जान-पहचान के किसी दलाल से तिमोफेइच यह शेरी खरीद लाया था। रग उसका करीब करीब काला पड गया था और इसके जायके में ताम्बे ऐसा कसैलापन था, या कहिए कि बिरोजे ऐसा। और मक्खियां भी बडी बेहूदा मालूम होती थी। साधारणतया एक भूदास छोकरा बडी-सी हरी टहनी से इन मक्खियो को उडाता रहता था। लेकिन वसीली इवानिच ने आज इस डर से उसे छुट्टी दे दी थी कि कही उन्हे नयी पीढी की मलामत का निशाना न बनना पडे। अरीना व्लासियेवना इस बीच खूब लकदक बन गई थी। सिर पर वह रेशमी डोरिया बधी ऊची घरेलू टोपी पहने थी, और कधो पर आसमानी रग का शाल डाले थी जो खूब बेल-बूटो से सजा था। अपने प्यारे येवगेनी को देखकर एक बार फिर उसकी आखो मे आसू तिर आए, लेकिन इससे पहले कि पति उसे झिटकने का मौका पाता, उसने जल्दी से अपने आसुओ को पोछ लिया। इसलिए और भी कि कही उसका शाल गीला न हो जाए। दोनो युवको ने अकेले ही खाया, कारण कि मेजबान बहुत पहले ही भोजन कर चुके थे। फेदिया ने परसने का काम किया। बाप ने बडे उसके जूते, प्रत्यक्षत, इससे सभाले नही सभल रहे

थे। मदद के लिए अनफीमुश्का नाम की एक स्त्री उसका हाथ बटा रही थी। वह एक आख की कानी थी और चेहरा-मोहरा मर्दों-जैसा था। घर का काम-काज, मुर्गियो की देख-भाल और कपडे धोना—एक साथ सभी काम वह करती थी। भोजन के समूचे दौरान मे वसीली इवानिच कमरे मे इधर से उधर और उधर से इधर टहलते रहे। उनके चेहरे पर असाधारण, करीब करीब नैसर्गिक, उल्लास झलक रहा था और वह नैपोलियन की नीति तथा इटालियनो के उत्पात को लेकर गहरी आशकाए प्रकट कर रहे थे। अरीना व्लासियेवना आरकादी की ओर से बेखबर थी, और उसकी खातिर-तवाजो की ओर भी उसका ध्यान नही गया। वह तो बस अपने गोल-मटोल चेहरे को अपने हाथो पर टेके, अपने बेटे पर ही नज़र जमाए रही और रह रहकर ठडी उसासे छोडती रही। गदराए हुए लाल चेरी जैसे उसके होठो तथा गाल और भौंहो के ऊपर पडे तिलो ने उसकी मुखमुद्रा को बहुत ही भला—सुहावना—बना दिया। उसकी जान यह जानने के लिए छटपटा रही थी कि वह कितने दिन टिकेगा, लेकिन उससे पूछते डरती थी। "अगर वह कह बैठा कि दो दिन, तब क्या होगा?" इसी सोच मे उसका दिल बैठा जा रहा था।

भुने मास के दौर के बाद वसीली इवानिच कुछ क्षणो के लिए वहा से ओझल हो गए और हाथो में शैम्पेन की खुली हुई आधी बोतल लेकर लौटे।

"यह देखिए," उन्होने छलछलाकर कहा, "भले ही हम निपट देहात में रहते हो, लेकिन खुशी के मौको पर दिल को गरमाने का साज-सामान यहा भी मौजूद है!"

उन्होने तीन बडे गिलासो और एक छोटे गिलास में मदिरा उडेली, अपने 'अनमोल मेहमानो' के स्वास्थ्य की कामना की और फौजी अन्दाज से, एक ही घूट में, अपना गिलास खाली कर दिया। और अरीना

ल्मारियेवना के गले में भी, गिलास की आखिरी बूंद तक, उडेलकर ही उन्होंने दम लिया।

फिर मुरब्बों की बारी आई। आरकादी को मीठी चीजें नहीं भाती थीं, लेकिन लिहाज में आकर उसे चार तरह की ताजा तैयार की गई 'नफासतों' को गले के नीचे उतारना पड़ा, खासतौर से इसलिए कि बजारोव ने उन्हें छूने से इन्कार कर दिया था और चुरट सुलगाकर कश खींचना शुरू कर दिया था। इसके बाद क्रीम, मक्खन और केकों के साथ चाय का नम्बर आया। अन्त में, सन्ध्या का आनन्द लेने के लिए, वसीली इवानिच ने सबको बगीचे में चलने का निमन्त्रण दिया। एक बैंच के पास से गुजरते समय उन्होंने आरकादी से फुसफुसाकर कहा, "यही वह जगह है जहां बैठकर मैं छिपते हुए सूरज को देखा करता हूं और थोड़ी-बहुत दार्शनिकता में डूबता-उतराता हूं। एकान्तवासी के लिए यह बहुत ही माकूल थवा है। और वहां, थोड़ा आगे, मैंने कुछ पेड़ लगाए हैं जो होरेस के प्रिय माने जाते हैं।"

"किस किस्म के पेड़?" बजारोव ने पूछा। वह भी उनकी बात सुनता रहा था।

"अरे वही बबूल के पेड़।"

बजारोव जमुहाई लेने लगा।

"मैं समझता हूं," वसीली इवानिच ने कहा, "हमारे मुसाफिरों को अब मॉरफ्यूस की गोद में चलना चाहिए।"

"दूसरे शब्दों में यह कि सो जाना चाहिए," बजारोव ने तुरन्त बात को पकड़ा, "अच्छा सुझाव है। सचमुच समय हो गया।"

बजारोव ने, सोने के लिए विदा होने से पहले अपनी मां का माथा चूमा। मां ने उसे अपने गले से लगाया और उसकी पीठ फेरने पर चुपचाप तीन बार प्यार का चिन्ह बनाकर उसे आशीष दी।

वसीली इवानिच ग्रारकादी को छोडने उमके कमरे तक उमके माथ गए और कामना प्रकट की, "तुम्हे भी वैमी ही मुबारिक नीद प्राप्त हो जिसका कि मै – उन दिनो जव मै तुम्हारी ग्रायु का था – उपभोग करना था।" और मचमुच, स्नानघर के माथवाले उम कमरे मे ग्रारकादी जैमे घोडे वेचकर मोया। कमरा पीपरमिण्ट ऐमी भीनी गध मे भरा था और तन्दूर के पीछे दो झिल्लिया उनीदी-मी ग्रावाज मे झकार रही थी। वसीली इवानिच ग्रपने ग्रध्ययनकक्ष मे लौट ग्राए ग्रौर वहा, ग्रपने बेटे के पैताने, मोफे पर जम गए। स्पष्ट ही उनके मन मे वाते करने की इच्छा थी। लेकिन वजारोव ने उन्हे तुरत विदा कर दिया। कहा कि उसकी पलके झपकी जा रही है, हालाकि सच यह था कि वह सोया नही, पौ फटने तक जागता रहा। उमकी ग्राखे वरवट्टा-सी खुली थी, और रोप के साथ वह ग्रधेरे मे ताक रहा था। वचपन की स्मृतियो मे उसके लिए कोई ग्राकर्पण नही था, इसके ग्रलावा हाल के दु खद ग्रनुभवो-ग्रनुभूतियो से वह ग्रभी तक नही उवर सका था। ग्ररीना व्लासियेवना जी भरकर दुग्रा-प्रार्थना करने के वाद वहुत देर तक ग्रनफीसुश्का से बाते करती रही। ग्रपनी मालकिन के ग्रागे ग्रनफीसुश्का ऐसे खडी थी जैसे उसे वही जाम कर दिया गया हो, ग्रौर ग्रपनी एकमात्र ग्राख की द्रवीभूत टकटकी द्वारा, रहस्यमय कम्पनो ग्रौर फुसफुसाहटो के रूप में, येवगेनी वसीलियेविच सम्बन्धी ग्रपने तमाम विचारो ग्रौर भावनाग्रो को व्यक्त कर रही थी। एक तो इतनी खुशी, तिस पर मदिरा ग्रौर सिगार का धुवा – वृद्धा मालकिन का सिर चक्कर खा रहा था। उसके पति ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन कोई नतीजा न निकलते देख हट गए।

ग्ररीना व्लासियेवना पहले जमाने के रूस के कुलीन वर्ग की महिलाग्रो की सच्ची यादगार थी। उन्हे दो सौ साल पहले, प्राचीन मास्को के

दिनों में, होना चाहिए था। वह बहुत ही धर्मभीरु और गुणवती थी। दुनिया भर के सगुन-असगुनों, भाग्य-रेखाओं, जन्तर-मन्तरों और सपनों में विश्वास करती थी। वह खब्ती कठमुल्लों, घरेलू देवी-देवताओं और भूत-प्रेतों, दिशाशूलों और राह के असगुनों, टोने-टोटकों, जड़ी-बूटियों, खैरात के लिए शुभ बृहस्पति के लिए मन्त्र-पढ़े नमक और जल्दी ही दुनिया में प्रलय होने में विश्वास करती थी। वह विश्वास करती थी कि ईस्टर के इतवार के दिन सन्ध्या-प्रार्थना के समय अगर बत्तियाँ गुल न हों तो समझ लो कि जई की भरपूर फसल होगी, और यह कि लोगों की नज़र लगने पर कुकरमुत्ते का बढ़ना बंद हो जाता है। वह विश्वास करती थी कि शैतान पनीली जगहों में रहता है और यह कि हर यहूदी की छाती पर खून का धब्बा होता है। चूहों, घास के सांपों, मेंढकों, गौरैयों, जोंकों, बिजली, ठंडे पानी, हवा के झोंकों, घोड़ों, बकरियों, लाल बालवाले लोगों, और काली बिल्लियों से वह डरती थी और झिल्लियों-झींगुरों तथा कुत्तों को नापाक समझती थी। न वह बछड़े का मांस खाती थी, न कबूतर, न केकड़ा, न पनीर, न आर्टीचोक, न ऐस्पैरेजस, न खरगोश, न तरबूज। यह इसलिए कि कटा तरबूज देखकर उन्हें बैपतिस्ती जौन के सिर की याद हो आती थी। और घोंघों के नाम से तो उन्हें झुरझुरी-सी चढ़ जाती थी। यों अच्छा खाने की वह शौक़ीन थी—और लैण्ट के व्रत-उपवासों का सख्ती से पालन करती थी। वह प्रतिदिन दस घंटे सोती थी और अगर वसीली इवानिच के सिर में कभी दर्द होता था तो रात रात भर पलक नहीं झपकाती थी। 'अलैक्सिस या जंगल का झोंपड़ा' के सिवा उन्होंने और कुछ नहीं पढ़ा था और साल में एक, या बहुत हुआ तो दो, खत लिखती थी। घर-गिरस्ती सम्भालने, दवा-दारू करने और अचार-मुरब्बे डालने के सभी गुर उन्हें मालूम थे, हालांकि अपने हाथों से वह कभी कुछ नहीं करती थी और

वसीली इवानिच ग्रारकादी को छोडने उसके कमरे तक उसके साथ गए और कामना प्रकट की, "तुम्हे भी वैसी ही सुखारिक नींद प्राप्त हो जिसका कि मैं – उन दिनो जब मैं तुम्हारी आयु का था – उपभोग करता था।" और सचमुच, स्नानघर के साथवाले उस कमरे मे ग्रारकादी जैसे घोडे बेचकर सोया। कमरा पीपरमिण्ट ऐसी भीनी गध मे भरा था और तन्दूर के पीछे दो झिल्लिया उनीदी-सी आवाज मे झकार रही थीं। वसीली इवानिच अपने अध्ययनकक्ष मे लौट आए और वहा, अपने बेटे के पैताने, सोफे पर जम गए। स्पष्ट ही उनके मन मे बाते करने की इच्छा थी। लेकिन बजारोव ने उन्हे तुरत विदा कर दिया। कहा कि उसकी पलके झपकी जा रही है, हालाकि सच यह था कि वह सोया नही, पौ फटने तक जागता रहा। उसकी आखे बरबट्टा-सी खुली थी, और रोष के साथ वह अधेरे में ताक रहा था। बचपन की स्मृतियो मे उसके लिए कोई आकर्षण नही था, इसके अलावा हाल के दुखद अनुभवो-अनुभूतियो से वह अभी तक नही उबर सका था। अरीना व्लासियेवना जी भरकर दुआ-प्रार्थना करने के बाद बहुत देर तक अनफीसुश्का से बाते करती रही। अपनी मालकिन के आगे अनफीसुश्का ऐसे खडी थी जैसे उसे वही जाम कर दिया गया हो, और अपनी एकमात्र आख की द्रवीभूत टकटकी द्वारा, रहस्यमय कम्पनो और फुसफुसाहटो के रूप में, येवगेनी वसीलियेविच सम्बन्धी अपने तमाम विचारो और भावनाओ को व्यक्त कर रही थी। एक तो इतनी खुशी, तिस पर मदिरा और सिगार का धुवा – वृद्धा मालकिन का सिर चक्कर खा रहा था। उसके पति ने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन कोई नतीजा न निकलते देख हट गए।

अरीना व्लासियेवना पहले ज़माने के रूस के कुलीन वर्ग की महिलाओ की सच्ची यादगार थी। उन्हे दो सौ साल पहले, प्राचीन मास्को के

विस्तर से उठते ही आरकादी ने खिडकी खोली, और वसीली इवानिच पर सबसे पहले उसकी नज़र पडी। वुखारी चोगा पहने, पेटी की जगह एक बडा-सा रूमाल कसे, वुढऊ वगीचे में कुछ खटर-मटर कर रहे थे। अपने युवक मेहमान पर नजर पडते ही फावडे की टेक लेते हुए चिल्लाए

"सुवह मुवारक हो, जनाव! कहिए, नीद तो खूब आई न?"

"हा, खूब!" आरकादी ने जवाव दिया।

"ठीक। और यह देखिए, विदेहराज की भाति यहा धरती गोड रहा हू। सोचा, अपनी शलजमो के लिए एक क्यारी ही तैयार कर लू। ज़माना अव कुछ ऐसा आ गया है—और मैं तो कहता हू कि इसके लिए हमें खुदा का शुक्रगुज़ार होना चाहिए—कि हर आदमी को अपनी रोज़ी खुद अपने हाथो से कमानी होगी, दूसरो पर भरोसा करने से नही चलेगा, आदमी को खुद अपने हाथो से मेहनत करनी होगी। और सो लगता है रूसो ने ठीक ही कहा था। आधे घटे पहले समझे जनाव, अगर आप मुझे देखते तो मैं विल्कुल दूसरे ही चोले में नज़र आता। एक किसान स्त्री पेट चलने की शिकायत लेकर आई। यह इसे पेट चलना ही कहती है, हम कहते है पेचिश। मैंने उसे—भला कैसे कहना चाहिए मुझे   मैंने उसे अफीम की सुई दी, और एक अन्य स्त्री का दात उखाडा। मैंने कहा कि ठहरो, ज़रा मसूडा सुन्न कर दू लेकिन वह भला क्यो मानने लगी। और यह सव मैं gratis * करता हू—अनमत्योर **। यो, मेरे लिए यह कोई नई चीज नही। जानते ही हो,

---

* मुफ्त। (लैटिन)—स०

** अनमत्योर (फ्रेंच en amateur)—शौकिया।—स०

आमतौर से अपनी काया को कष्ट देने के नाम मे दूर रहती थी। हृदय की वह बहुत मुलायम थी, और अपने ढग मे बेवकूफ भी नही थी। वह जानती थी कि दुनिया में एक तो मालिक है जिनका काम हुक्म देना है, दूसरे आम लोग है जिनका काम हुक्म की तामील करना है। इसलिए दासत्व और दीनता का प्रदर्शन उनके हृदय को कभी नही कचोटता था। फिर भी अपने मातहतो के प्रति वह रहमदिल और मेहरवान थी, विना कुछ दिए भिखारी को कभी नही लौटाती थी और लोगो पर कभी फतवे नही कसती थी, हालाकि कभी कभी इधर-की-उधर लगाने-सुनने में उन्हे आनन्द आता था। जवानी के दिनो में उनका रूप बहुत आकर्षक था। तव वह पियानो पर स-र-ग-म वजाया करती थी और थोडी-बहुत फ्रेंच बोल लेती थी। लेकिन मर्जी के खिलाफ शादी और ऐसे पति के साथ वरसो तक देशाटन के फलस्वरूप उनके शरीर पर चर्बी चढ चली और सगीत तथा फ्रेंच दोनो ही वह भूल गई। अपने बेटे को वह प्यार करती थी और इतना अधिक उससे डरती थी कि कुछ कहना नही। जागीर का बन्दोवस्त उन्होने वसीली इवानिच पर छोड दिया था, और उसे लेकर अब अपने दिमाग को परेशान नही करती थी। जब कभी उनके बूढ़े पति जल्दी ही किए जानेवाले सुधारो और अपनी योजनाओ की चर्चा छेडते तो वह केवल त्रस्त-सी कराहती, रूमाल से झिडककर उन्हे टालती और आशका से अपनी भौंहो को ऊचा उठा लेती। काल्पनिक खतरो का वहम पीछा न छोडता, हर घडी किसी महान विपत्ति का खटका-सा लगा रहता और किसी भी दु खद बात का ध्यान आते ही आखो में आसू उमडने लगते ऐसी स्त्रिया अब दिखाई नही देती। खुदा जाने, इसपर हमें खुश होना चाहिए अथवा नही।

बिस्तर से उठते ही आरकादी ने खिडकी खोली, और वसीली इवानिच पर सबसे पहले उसकी नज़र पडी। बुखारी चोगा पहने, पेटी की जगह एक बडा-सा रूमाल कसे, वुढऊ बगीचे में कुछ खटर-मटर कर रहे थे। अपने युवक मेहमान पर नज़र पडते ही फावडे की टेक लेते हुए चिल्लाए.

"सुबह मुबारक हो, जनाब! कहिए, नीद तो खूब आई न?"

"हा, खूब!" आरकादी ने जवाब दिया।

"ठीक। और यह देखिए, विदेहराज की भाति यहा धरती गोड रहा हू। सोचा, अपनी शलजमो के लिए एक क्यारी ही तैयार कर लू। जमाना अब कुछ ऐसा आ गया है—और मैं तो कहता हू कि इसके लिए हमें खुदा का शुक्रगुज़ार होना चाहिए—कि हर आदमी को अपनी रोजी खुद अपने हाथों से कमानी होगी, दूसरो पर भरोसा करने से नही चलेगा, आदमी को खुद अपने हाथो से मेहनत करनी होगी। और सो लगता है रूसो ने ठीक ही कहा था। आधे घटे पहले समझे जनाब, अगर आप मुझे देखते तो मैं बिल्कुल दूसरे ही चोले में नजर आता। एक किसान स्त्री पेट चलने की शिकायत लेकर आई। यह इसे पेट चलना ही कहती है, हम कहते हैं पेचिश। मैंने उसे—भला कैसे कहना चाहिए मुझे मैंने उसे अफीम की सुई दी, और एक अन्य स्त्री का दात उखाडा। मैंने कहा कि ठहरो, ज़रा मसूडा सुन्न कर दू . लेकिन वह भला क्यो मानने लगी। और यह सब मैं gratis * करता हू—अनमत्योर **। यो, मेरे लिए यह कोई नई चीज़ नही। जानते ही हो,

---

* मुफ्त। (लैटिन)—स०

** अनमत्योर (फ्रेंच en amateur)—शौकिया।—स०

मैं ठेठ धरती का कीडा हू, homo novus*, – मेरी रगो मे कुलीनो का नीला रक्त नही सरसराता, जैसा कि मेरी जीवन-संगिनी की रगो में वहता है लेकिन तुम यहा छाव मे क्यो नही निकल ग्राते? नाश्ते से पहले थोडी ताज़ा हवा मिल जाएगी।"

ग्रारकादी वाहर उनके पास ग्रा गया।

"ग्राइए, एक वार फिर स्वागत करता हू," ग्रपनी चीकट-सी टोपी को छूकर फौजी सलामी देते हुए वसीली इवानिच ने कहा। "मैं जानता हू, ग्राप ऐश व इशरत के ग्रादी है, लेकिन इस दुनिया के वडे-से-वडे महान भी झोपडी मे समय विताने मे शिकवा नही करते।"

"हे भगवान," ग्रारकादी ने क्षोभ प्रकट किया, "इस दुनिया के महानो मे कव से मेरी गिनती होने लगी? ग्रौर न ही मैं ऐश-ग्राराम का ग्रादी हू।"

"ज्यादा वाते न वनाग्रो," वसीली इवानिच ने सुहावनी मुसकान के साथ टाला, "भले ही ज़माने की भाग-दौड से मैं ग्रलग पड गया होऊ, लेकिन मैंने भी दुनिया की थोडी-वहुत धूल छानी है – ग्राम ग्रौर जामुन में मैं भी कुछ तमीज़ करना जानता हू। ग्रपने ढग से थोडा-वहुत मनोविज्ञान भी मैं जानता हू, ग्रौर सामुद्रिक शास्त्र भी। ग्रगर ऐसा न होता – जिसे कि मैं प्रतिभा कहने का साहस करता हू – तो मैं वहुत पहले ही ग्रण्टा-चित्त हो गया होता। मुझ जैसे मुख्तसिर-से ग्रादमी को धकियाना कौन वडी वात है। ग्रौर मुझे खुलकर कहने दीजिए कि ग्रापके ग्रौर ग्रपने वेटे के वीच मित्रता देखकर मेरा हृदय ग्रान्तरिक खुशी से छलछला उठा है। ग्रभी, कुछ ही पहले, मैंने उसे देखा था। सदा की भाति वह तडके ही उठ खडा हुग्रा – उसकी इस ग्रादत से

---

* नया मानव। (लैटिन) – स०

शायद आप परिचित होगे—और देहातो की छानवीन के लिए निकल गया। उत्सुकता माफ, क्या आप येवगेनी को बहुत दिनो से जानते है?"

"पिछले जाडो से।"

"समझा। और क्या मैं यह भी पूछ सकता हू—अरे, आप बैठ क्यो नही जाते—एक पिता के नाते, विना किसी छिपाव के, क्या मै यह जान सकता हू कि मेरे येवगेनी के वारे में आपकी क्या राय है?"

"मेरी समझ में आपके सुपुत्र जैसा उल्लेखनीय व्यक्ति मुश्किल से ही मिलेगा," आरकादी ने सजीदगी से कहा।

वसीली इवानिच की आखें एकाएक फैलकर वडी हो गई और गाल हल्की लाली से दमक उठे। फावडा हाथ से छूटकर नीचे आ गिरा।

"सो, आपकी समझ में   " उसने कहना शुरू किया।

"इसमे शक नही," आरकादी कहता गया, "कि आपका पुत्र भाग्य का वडा धनी है। उसी क्षण जव पहले-पहल हम मिले, यह वात मेरे मन में समा गई।"

"क्यो   कैसे हुआ यह?" वसीली इवानिच हाफते-से हकला उठे। उनका चौडा मुह आनन्द से उच्छवसित मुसकान में फैल गया और वैसे ही फैला रहा।

"सो आप जानना चाहते है कि हम कैसे मिले?"

"हा   और मोटे तौर से यह   "

आरकादी ने और भी अधिक हार्दिकता तथा उछाह के साथ वजारोव के वारे में वताना शुरू किया। इस स्मरणीय साझ को भी जब वह ओदिनत्सोवा के साथ नाचा था, उसने इतनी अधिक हार्दिकता और उछाह का परिचय नही दिया था।

वसीली इवानिच एकटक उसकी बाते सुनते रहे । कभी वह मुडकते, कभी हथेलियो के बीच रूमाल की गेंद-सी बनाते, कभी खासते, कभी अपने बालो को उगलियो से छितराते। आखिर वह अपने को सभाल न सके और आरकादी के ऊपर झुकते हुए उसके कधे को चूम उठे।

"सच, मैं बयान नही कर सकता कि तुमने मेरे हृदय को कितना अधिक खुशी से भर दिया है," दीर्घ मुसकान के साथ उन्होने कहा। "बस, इतना ही समझ लो कि मैं   वह मेरे रोम रोम में बसा है। और अपनी बुढिया के बारे मे मै कुछ नही कहता—कहने की ज़रूरत भी नही, वह है मा—और बस, इसके बाद कुछ और कहने को नही रह जाता। लेकिन उसके—अपने लडके के—सामने मै अपने भावो को व्यक्त करने का साहस नही जुटा पाता। उसे यह अच्छा नही लगता। प्रेम के प्रदर्शन से—चाहे जिस रूप में भी वह हो—वह भन्ना उठता है। उसका यह रूखापन बहुतो को अखरता है। वे इसे दम्भ या भावशून्यता की निशानी समझते हैं। लेकिन उस जैसे व्यक्तियो को साधारण नियमो की कसौटी पर नही कसना चाहिए। क्यो, क्या तुम्हे ऐसा नही लगता? अच्छा, मिसाल के लिए यह देखो। उसकी जगह अगर और कोई होता तो वह अपने मा-बाप के गले में चक्की का पाट बनकर लटका रहता। लेकिन वह है कि उसने—तुम चाहे विश्वास करो या न करो—हमसे एक फूटी कौडी भी कभी फाजिल नही ली—नही, कसम खाने के लिए भी नही!"

"वह ईमानदार और बेगरज़ आदमी है," आरकादी ने राय दी।

"बेगरज़—ठीक यही। और जहा तक मेरी बात है, सो आरकादी निकोलायेविच, मैं उसपर केवल न्योछावर ही नही हू, बल्कि गर्व भी करता हू, और मेरी एकमात्र आकाक्षा यह है कि किसी

दिन उसकी जीवनी में मुझे निम्न शब्द अंकित देखने का अवसर प्राप्त हो 'एक मामूली फौजी सरजन का पुत्र जिन्होंने, इस सबके बावजूद, छोटी उम्र में ही अपने पुत्र में निहित महान सम्भावनाओ को पहचाना और उसकी शिक्षा-दीक्षा के मामले में कोई कसर न उठा रखी '"
वृद्ध की आवाज रुध गई।

आरकादी ने उनका हाथ दबाया।

"क्या खयाल है तुम्हारा," कुछ देर तक मौन रहने के बाद वसीली इवानिच ने फिर पूछा, "जिस शोहरत की तुम बात कर रहे हो, उसे क्या वह डाक्टरी से भिन्न किसी अन्य क्षेत्र में प्राप्त करेगा, क्यो, यही न?"

"निश्चय ही डाक्टरी के क्षेत्र में नही, हालाकि इस क्षेत्र में भी वह एक उल्लेखनीय विभूति सिद्ध होगा।"

"तो फिर, आरकादी निकोलायेविच, तुम्हारे खयाल से वह कौन-सा क्षेत्र होगा?"

"अभी यह कहना कठिन है, लेकिन वह प्रसिद्ध होगा।"

"वह प्रसिद्ध होगा!" वृद्ध ने प्रतिध्वनि की और विचारो में खो गया।

तभी एक बहुत बडी रकाबी में पकी हुई रसभरिया लिए उधर से गुज़रते हुए अनफीसुश्का ने सूचना दी

"अरीना व्लासियेवना नाश्ते के लिए आपको बुला रही है।"

वसीली इवानिच जैसे सोते से जागे।

"तो क्या ठडी की गई मलाई के साथ रसभरियो का रग जमेगा?"

"हा, मालिक।"

"तो देखना, मलाई एक दम ठडी हो। और आरकादी,

तकल्लुफ से काम नही चलेगा। ज़रा फुर्ती से हाथ चलाना। लेकिन येव्रगेनी इतनी देर कहा अटक गया?"

"मै यहा हू," आरकादी के कमरे से बज़ारोव ने आवाज़ दी।

वसीली इवानिच तेज़ी मे घूम गए।

"अहा, सोचा कि चलो दोस्त का भी हाल-चाल पूछ आए। लेकिन तुम पिछड गए, amice*,—और यहा हम बहुत देर मे बतिया रहे है। अब नाश्ते के लिए चलना चाहिए। हा, याद आया, तुमसे कुछ बाते करनी है।"

"किस बारे में?"

"यहा एक दहकान है जो इक्टेरस से परेशान है "

"यानी पीलिया से?"

"हा, बहुत ही पुराने और सरकश इक्टेरस से। मैंने उसके लिए सैन्तौरी और सन्नजौन बूटी तजवीज़ की है, गाजर खाने के लिए उससे कहा है और उसे सोडा दिया है। लेकिन ये सब तो थोडा सभालने की चीज़ें है। कोई और उग्र उपाय काम में लाना होगा। हालाकि तुम चिकित्सा-विज्ञान का मज़ाक उडाते हो, फिर भी यह तय है कि तुम कोई माकूल सलाह दे सकते हो। लेकिन इसपर बाद में बाते करेगे। अभी तो चलो, नाश्ता कर लिया जाए।"

वसीली इवानिच फुर्ती से उठ खडे हुए और 'राबेर ले दि आबल' के गीत का एक रगीन टुकडा गा उठे

"मदिरा की प्यालिया,
मद-भरी अठखेलिया "

---

*दोस्त। (लैटिन) —स०

"अद्भुत! कितनी ज़िन्दादिली है इनमें!" खिड़की से हटते हुए वजारोव के मुह से निकला।

दोपहर का समय था। सफेद बादलो के झीने आवरण में से सूरज झाक रहा था। हर चीज़ पर एक स्थिरता छाई हुई थी। केवल गाव के मुर्गे भारी उछाह से बाग दे रहे थे और हृदय में एक अजीब बेचैनी तथा अलसाहट का सचार कर रहे थे। कभी कभी, कही ऊचे पेड़ो की चोटियो से, बाज़ के बच्चे की अनवरत चीची विलाप-ध्वनि की भाति मालूम होती थी। आरकादी और बज़ारोव घास की एक छोटी-सी गजी की छाव में लेटे थे। बदन के नीचे उन्होने एक या दो कौली भर घास बिछा ली थी जो भुरभुरी हो जाने पर भी अभी हरी और सुगधित थी।

"वह जो आस्पन का पेड है न," बज़ारोव ने कहना शुरू किया, "उसे देखकर मुझे अपने बचपन की याद आ जाती है। वह एक गढ़े के किनारे खड़ा है जहा पहले ईंटो की खत्ती थी। उन दिनो मुझे पक्का विश्वास था कि यह पेड़ और खत्ती दोनो में कोई खास जादू है। उनके पास जाता तो मेरा जी कभी न अघाता। तब मैं नही जानता था कि मेरे न अघाने का कारण केवल यह था कि मैं बच्चा था। और अब जबकि मैं बड़ा हो गया हू, वह जादू भी छूमन्तर हो गया है।"

"कुल मिलाकर यहा तुम कितने दिन रहे होगे?" आरकादी ने पूछा।

"लगातार दो साल तक। उसके बाद कभी कभी ही यहा आना होता। चलता-फिरता जीवन बिताया है हम लोगो ने। आज इस शहर में हैं तो कल उसमें। ज्यादातर इसी तरह भटकते रहे।"

"और क्या यह मकान बहुत पुराना बना है?"

"हा, वहुत पहले का। मेरे नाना के समय मे वना था।"

"तुम्हारे नाना कौन थे?"

"शैतान ही जाने। सुना है कि ऐसे ही कोई सेकड-मेजर थे। सुवोरोव के मातहत रह चुके थे और आल्पस पर्वत के कूच की कहानिया सुनाया करते थे। एकदम मनगढन्त, उसमें शक नही।"

"इसी लिए वराण्डे में सुवोरोव की तस्वीर लगी है। जो हो, तुम्हारा घर है अच्छा–पुराना और आरामदेह। ऐसे छोटे छोटे घर मुझे पसन्द है। अपनी एक खास गंध से महकते।"

"दिये के तेल और मेलीलोट की गंध से," वज़ारोव ने जमुहाई लेते हुए कहा, "और इन प्यारे छोटे घरो में भिनकती मक्खियो का जहा तक सम्वन्ध है वस, खुदा ही वचाए!"

"ज़रा इधर सुनो," कुछ रुककर आरकादी ने पूछा, "यह वताओ, वचपन में तुम्हे दावकर तो नही रखा जाता था?"

"मेरे मा-वाप किस कँडे के है, तुम देख ही रहे हो। उन्हे सख्त नही कहा जा सकता, क्यो?"

"क्या तुम उन्हे प्यार करते हो, येवगेनी?"

"करता हू, आरकादी!"

"ओह, तुम उन्हें कितने प्यारे हो!"

वज़ारोव चुप रहा।

फिर, कुछ ही देर बाद, अपने हाथो को सिर के पीछे बाधते हुए बोला

"क्या तुम जानते हो कि मै क्या सोच रहा हू?"

"नही। क्या सोच रहे हो?"

"सोच रहा हू कितना अच्छा जीवन बिता रहे है ये लोग इस दुनिया में। मेरे पिता साठ वर्ष के हो गए हैं, फिर भी कुछ न कुछ खटर-पटर करते रहते है, कष्ट हल्का करनेवाली दवाइयो की बाते करते

है, रोगी लोगो का इलाज करते हैं, किसानो के प्रति उदारता से पेश आते हैं—मोटे तौर से यह कि अपने जीवन को भरा-पूरा बनाए हैं। और मा—वह भी सुखी है। दुनिया भर के काम और ओह-आह करते उनका दिन बीतता है—इस हद तक कि विराम लेने और दिमागी उधेड़बुन में डूबने की नौबत ही नही आती। एक मैं हू कि ''

"तुम्हे क्या हुआ, क्यो?"

"मैं सोचता हू एक मैं हू कि यहा घास की गजी की छाव में पसरा हू बित्ता भर यह जगह जिसे मैं घेरे हू, उस बाकी जगह के मुकाबिले कितनी नगण्य और कितनी तुच्छातितुच्छ है जहा मैं नही हू और जहा किसी को रत्ती भर भी मेरी पर्वाह नही है। और मेरे जीवन की यह नगण्य अवधि, काल के उस चिरन्तन विस्तार के मुकाबिले कुछ भी नही है, जिसमें मेरा कोई अस्तित्व नही रहा और न ही रह सकेगा . फिर भी इस परमाणु में, अकगणित के इस शून्य मे, रक्त दौडता है, मस्तिष्क काम करता है, उमगें लपलपाती है ओह, कितना विकट—और कितना बेहूदा है यह!"

"लेकिन सुनो, तुम्हारी यह बात अकेले तुम्ही पर नही बल्कि समान रूप से सभी पर लागू होती है "

"ठीक, तुम ठीक कहते हो," बज़ारोव बीच में ही बोला। "मैं जो कहना चाहता था वह यह कि क्या बात है जो फिर भी वे—यानी मेरे माता-पिता—हर घडी जुटे रहते हैं और अपनी नगण्यता को लेकर कभी परेशान नही होते—यह उनके हृदय को नही कुरेदती . जबकि मैं मैं भन्ना जाता हू, बुरी तरह विक्षुब्ध हो उठता हू।"

"विक्षुब्ध क्यो? विक्षुब्ध क्यो हो उठते हो?"

"क्यो? तुम पूछते हो कि क्यो? क्या तुम भूल गए?"

"भूला मै कुछ नही हू, लेकिन फिर भी मै नही ममझता कि तुम्हे विक्षुब्ध होने का कोई अधिकार है। माना कि तुम दुखी हो, लेकिन "

"ओह, अब समझा, आरकादी। प्रेम के बारे में तुम्हारी धारणा भी वैसी ही है जैसी कि अन्य सभी आधुनिक युवा लोगो की पुच, पुच, पुच, मेरी नन्ही मुर्गी, और जैसे ही नन्ही मुर्गी ने तुम्हारी पुचकार से खिचना शुरू किया कि तुम दुम दबाकर भाग निकले। मै उम किस्म का नही हू। लेकिन छोडो। मजबूरी की क्षतिपूर्ति बातो से नही की जा सकती।"

उसने बगल के बल करवट ली। फिर बोला

"खूब! यह देखो, इस नन्ही-सी तगडी चीटी को देखो, किस तरह एक अध-मरी मक्खी को खीचे लिए जा रही है। खीचे जा, मेरी नन्ही चीटी, खीचे जा। पर्वाह न कर उसके छटपटाने और हाथ-पाव मारने की। अपने अधिकार का जमकर प्रयोग कर जो जानवर होने के नाते तुझे मिला है। हम जैसे आत्म-खण्डित लोगो की भाति दया-माया की भावनाओ के चक्कर में पडना तेरा काम नही!"

"कम से कम तुम्हारे मुह से ऐसी बात नही निकलनी चाहिए, येवगेनी! आखिर तुम कब से आत्म-खण्डित हो गए?"

बज़ारोव ने अपना सिर उठाया।

"यही तो एक गनीमत है जिसपर मै गर्व कर सकता हू। मैने कभी अपने को नही टूटने दिया, और पेटीकोटो की दुनिया में इतनी बिसात नही जो कभी मुझे तोड सके। आमीन! हवा का एक झोका था जो आया और चला गया। बस, बात खत्म। अब उसके बारे में एक शब्द भी कभी मेरे मुह से नही निकलेगा!"

कुछ देर तो दोनो चुप पडे रहे।

"हा," वज़ारोव ने कहना शुरू किया। "आदमी भी एक अजीव जन्तु है। दूर से जब हम अपने वडो के इस जीवन पर नज़र डालते है तो मुग्ध रह जाना पडता है—लगता है कि बस, अब और कुछ नही चाहिए। खाओ, पियो और समझो कि जो कुछ हम कर रहे है वह सही और तर्क-सगत है। लेकिन नही, एक तरह की बेचैनी—जलन—धर दबोचती है। जी करता है कि लोगो को झझोड डाले—हा, उन्हे झझोड डाले, और भी कुछ नही तो उन्हे झिडकिया ही सुनाए।"

"जीवन की कुछ इस ढग से व्यवस्था होनी चाहिए कि उसका प्रत्येक क्षण अपनी सार्थकता व्यक्त करे," आरकादी ने कुछ सोचते हुए कहा।

"बस बस, ठीक यही। सार्थकता—चाहे वह कृत्रिम ही क्यो न हो—मधुर होती है, और आदमी नगण्यता तक को सह लेता है लेकिन यह ओछी घिसघिस, छोटी छोटी बातो के लिए यह हायतोबा असल में यही मुसीबत की जड है।"

"लेकिन यह ओछी घिसघिस उस आदमी के लिए कोई अस्तित्व नही रख सकती जो उसे मानने के लिए ही तैयार न हो।"

"हु इसी को कहते है औंधी बूम मारना!"

"एँ भला, क्या मतलब है तुम्हारा इससे?"

"केवल यह मिसाल के लिए अगर कोई कहे कि शिक्षा लाभदायक है तो बूम मारना हुआ, लेकिन अगर कोई कहे कि शिक्षा नुक्सानदेह है तो यह औंधी बूम मारना कहलाएगा। सुनने में भले ही इसमें निरालापन नज़र आए, लेकिन असल में नतीजा इसका भी वही निकलता है जो पहली का।"

"तो फिर सत्य कहा है?"

"कहा है? इसके जवाव मे मै भी यही प्रतिध्वनि करूगा—कहा है ?"

"तुम आज कुछ खिन्न मालूम होते हो, येवगेनी।"

"ऐसा? शायद धूप की वजह मे, और फिर इतनी अधिक रसभरिया खाना भी वुरा है।"

"तो अच्छा हो कि थोडी झपकी ले ली जाए," आरकादी ने सुझाया।

"मजूर है। लेकिन मेरी ओर ताकना नही—नीद मे सोया आदमी आमतौर से वडा मूर्ख मालूम होता है।"

"तो तुम इसकी चिन्ता करते हो—यह कि तुम दूसरो को कैसे मालूम होते हो ?"

"ठीक से नही कह सकता। जो वास्तव में आदमी है, उसे इसकी चिन्ता नही करनी चाहिए। वास्तविक आदमी वह है जिसके बारे में लोग सोचते नही, उसकी तामील करते है—या फिर उससे घृणा करते है।"

"अजीव बात करते हो," कुछ रुककर आरकादी ने कहा, "मै तो किसी से घृणा नही करता।"

"लेकिन मै करता हू—और ढेर सारी करता हू। तुम मोम-हृदय और विना रीढ के आदमी हो, तुम किसी से घृणा नही कर सकते तुम जरूरत से ज्यादा दब्बू हो, काफी आत्मविश्वास का तुममें अभाव है"

"और तुम ?" आरकादी ने बीच में ही कहा। "तुम तो शायद आत्मविश्वास के अवतार हो? अपने को तुम बहुत ऊचा समझते हो, क्यो ?"

बज़ारोव ने एकाएक कोई जवाब नही दिया। फिर शब्दो का धीरे धीरे उच्चारण करते हुए बोला

"जब कोई ऐसा आदमी मेरे सामने आएगा जो मुझसे टक्कर लेकर भी सीधा खडा रह सके तो मै अपने बारे में अपनी राय बदल डालूगा। और घृणा क्यो? मिसाल के लिए आज की ही बात लो, उस समय जब हम अपने अमलदार फिलीप की झोपडी के पास से गुज़र रहे थे—कितनी प्यारी सफेद बुर्राक झोपडी है वह—तो वहा तुमने कहा था कि रूस तभी एक आदर्श देश बन सकेगा जब अदना-से-अदना किसान को भी ऐसे ही झोपडे में रहना मयस्सर होगा, और यह कि उस दिन को लाने मे हम सबको हाथ बटाना चाहिए लेकिन तुम्हारे उस अदना-से-अदना किसान से—तुम्हारे उस फिलीप और सीदोर तथा बाक़ी अन्य सबसे मुझे नफरत है, जिनके लिए मुझसे हाड-मास गलाने की आशा की जाती है, बदले में धन्यवाद का एक शब्द तक प्राप्त किए बिना और उसके इस 'धन्यवाद' का भी मै क्या अचार डालूगा? अच्छी बात, वह सफेद झोपडी में रहे और मै अपनी आहुति भी देता रहू, लेकिन इसके बाद?"

"बस बस, येवगेनी आज तुम्हारी बाते सुनकर उन लोगो की बात मानने को जी चाहता है जो हमपर सिद्धान्तहीनता का आरोप लगाते हैं।"

"तुम अपने ताऊजी की वाणी बोल रहे हो। आमतौर से सिद्धान्त-विद्धान्त जैसी कोई चीज नही होती—ताज्जुब होता है कि अभी तक तुम इतनी-सी बात भी नही पकड पाए, केवल स्पन्दन-सवेदन होते है। हर चीज़ उन्ही पर निर्भर करती है।"

"सो कैसे?"

"बिल्कुल सीधी बात है। मिसाल के लिए मुझे ही लो मेरा

रवैया नकारात्मक है–स्पन्दन की वदौलत। मै नकारात्मक ढग पसद करता हू, मेरा मस्तिष्क कुछ उमी ढग का वना है–वम, कुल जमा इतना ही। रसायन-विज्ञान में मेरी क्यो रुचि है? तुम मेव क्यो पमद करते हो? सव स्पन्दन-सवेदन की वदौलत। सवमें वही एक वात है। गहराई की यह इति है। हर कोई यह खुलकर नही कहेगा। और मै भी इस तरह फिर कभी तुम्हारी पकड में नही आऊगा।"

"तो क्या ईमानदारी भी एक स्पन्दन मात्र है?"

"करीव करीव।"

"येवगेनी !" आरकादी ने कुछ त्रास से कहा।

"एह, यह क्या? वात गले में अटक गई, क्यो?" वज़ारोव वीच में ही वोला। "नही, जनाव। जव हर चीज को काटकर अलग फेंकने का निश्चय कर लिया तो फिर वीच में रुकना कैमा? उसे आखिरी सीमा तक पहुचाना ही होगा। लेकिन यह मै दार्शनिकता पर उतर आया। पुश्किन ने कहा है–'प्रकृति देती वरदान नीद की नीरवता का'।"

"पुश्किन ने ऐसी वात कभी नही कही!" आरकादी ने विरोध किया।

"तो इससे क्या? नही कही तो, कवि होने के नाते, वह इसे कह सकते थे और उन्हे कहनी चाहिए थी। लेकिन सुनो, वह फौज में ज़रूर रहे होगे।"

"नही, वह कभी फौज में नही रहे।"

"लेकिन, मेरे प्यारे वचुवा, उसकी रचनाओ के हर पन्ने से यह आवाज़ क्यो आती है–'वढे चलो, वढे चलो, रूस के गौरव की रक्षा के लिए'!"

"यह क्या बकवास है यह कालिख पोतने से कम नही, सच!"

"कालिख पोतना? ऊह! इस शब्द से तुम मुझे डरा नही सकते। लाख कोशिश करने पर भी हम किसी पर उतनी कालिख नही पोत सकते जितनी कि वास्तव में उसपर पोती जानी चाहिए।"

"अच्छा हो कि अब हम सो रहे," आरकादी ने खीझकर कहा।

"वेहद खुशी से," वज़ारोव ने तुरत जवाव दिया।

लेकिन नीद दोनो में से किसी को भी न आई। करीव करीव अदावत जैसी एक भावना दोनो युवको के हृदयो में सरसरा गई। पाच मिनट वाद उन्होंने अपनी आखे खोली और विना कुछ कहे आखो ही आखो में एक-दूसरे को परखा।

"अरे देखो," सहसा आरकादी ने कहा। "मेपल वृक्ष का सूखा पत्ता फडफडाता हुआ ज़मीन पर गिर रहा है। इसकी गति तो देखो, विल्कुल तितली की उडान की भाति। है न विचित्र? सूखे पत्ते जैसी एकदम उदास और मुर्दा चीज़ तितली जैसी एकदम प्रफुल्ल और चेतन चीज़ से मिलती-जुलती है।"

"सुनो, मेरे मित्र, आरकादी निकोलायेविच!" वज़ारोव ने कहा। "एक अर्ज़ है तुम से—यह कविता में वाते करना छोडो।"

"जैसा मुझसे वनेगा, वैसे वात करूगा अगर सुनना चाहते हो तो सुनो, यह निरी निरकुशशाही है। अगर कोई विचार सूझता है तो मैं उसे व्यक्त क्यो न करू?"

"वहुत ठीक। लेकिन मैं भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए उतना ही स्वतत्र हू। और मैं समझता हू कि कविता में वाते करना अशिष्टता है।"

"तो शिष्टता क्या है?" गालिया देना?"

"ओह, देखता हू कि तुमने अपने ताऊजी के पदचिन्हो पर चलने का पक्का इरादा कर लिया है। तुम्हारी बाते सुनकर उस मूढ को भारी खुशी होगी।"

"पावेल पेत्रोविच के लिए क्या कहा तुमने?"

"वही जो कहना चाहिए—मूढ!"

"लेकिन इसे कोई बरदाश्त नही करेगा।"

"ओह, आखिर रक्त बोल उठा," बजारोव ने ठडे भाव से कहा। "मैने देखा है कि इसका असर बडा सरकश होता है। आदमी हर चीज को रद्द कर सकता है, तमाम पूर्वाग्रहो-विश्वासो को छोडने के लिए तयार हो सकता है, लेकिन—मिसाल के लिए—यह स्वीकार नही कर सकता कि उसका भाई, जो दूसरो के रूमालो पर हाथ साफ करता है, चोर है। यह मानना उसके बूते से बाहर है। भला यह कैसे हो सकता है कि वह जो मेरा भाई है, एकदम मेरा, प्रतिभा का पुज न हो?"

"सीधी-सच्ची न्याय की भावना से मैने वह बात कही थी, रक्त के नाते से नही," आरकादी ने चिकोटी-सी काटते हुए जवाब दिया। "लेकिन चूकि तुम उसे समझ नही सकते—सवेदन के अभाव की बदौलत—इसलिए तुम उसके निर्णायक भी नही हो सकते।"

"दूसरे शब्दो में आरकादी किरसानोव के विचार इतने ऊचे हैं कि मै उनतक पहुच नही सकता,—मै घुटने झुकाता हू, और अब एक लफ्ज नही बोलूगा।"

"छोडो, येवगेनी। झगडे के सिवा इस तरह और कुछ पल्ले नही पडेगा।"

"लेकिन , आरकादी, मैं कहता हू कि आओ, एक बार खुल कर झगडा कर लिया जाए—पूरी तरह नाखून और दात पैनाकर, एक-दूसरे को एकदम मटियामेट करने की हद तक।"

"और अन्त में "

"घूसेबाज़ी पर उतर आए, यही न?" बज़ारोव तुरत बोल उठा। "लेकिन इससे क्या? यह घास, देहाती वातावरण की यह स्वप्निल चित्रमयता, दुनिया और लोगो की नज़र से काले कोसो दूर– खयाल कुछ बुरा नही। लेकिन तुम मेरी जोड में भला क्या टिकोगे। तुम्हारा टेंटुआ पकडकर "

बज़ारोव ने अपनी लौह उगलिया फैलाईं आरकादी घूमा और जैसे मज़ाक में बचाव का पैंतरा उसने धारण कर लिया. लेकिन उसके दोस्त के चेहरे में भयानकता की कुछ ऐसी झलक थी, खीझ और उपेक्षा से बल खाए उसके होठों और चमकती हुई आखो में कुत्सा का कुछ ऐसा भाव था कि आरकादी बरबस सहम गया

उसी क्षण वसीली इवानिच की आवाज़ सुनाई दी

"ओह, सो तुम लोग यहा छिपे हो!" घर की बनी डक-जाकेट और इसी प्रकार घर की बनी सीको की टोपी पहने वृद्ध फौजी सर्जन युवको के सामने आ नमूदार हुए। "तुम्हारी खोज में मैंने एक एक कोना छान डाला जो हो, जगह तुमने शानदार चुनी है, और तुम्हारा यह शग्ल भी बढ़िया है धरती पर चित्त लेटकर आकाश की ओर ताकना जानते हो, इसमें भी एक गूढ रहस्य छिपा है।"

"मैं तो तभी आकाश की ओर ताकता हू जब मुझे छीक लेनी होती है," बज़ारोव भुनभुनाया और फिर आरकादी की ओर मुडते हुए दबी आवाज़ में बोला, "इन्हे भी इसी वक्त टपकना था। सब गडबड कर दिया।"

"शुक्राना भेजो," आरकादी ने फुसफुसाते और चुपके से अपने मित्र का हाथ दबोचते हुए कहा। "कोई भी मित्रता ऐसे थपेडे खाकर अधिक नहीं टिक सकती।"

"जब मैं तुम दोनो युवा मित्रो को देखता हू," सिर हिलाते और बडी चतुराई से लहरिया डाली गई छडी के ऊपर अपने दोनों हाथो को टेके—यह छडी खुद उनकी कारीगरी का नतीजा थी और उसकी मूठ तुर्क के सिर के आकार की थी—वसीली इवानिच कह रहे थे, "तो मेरा दिल खिल जाता है। कितनी स्फूर्ति, कितनी योग्यता, और कितनी प्रतिभा के धनी हो तुम, जैसे यौवन का सागर चाद को छूने के लिए उछल रहा हो। एकदम कैस्टर और पौलक्स* की भाति।"

"जरा सुनो तो," बजारोव ने कहा, "क्या देव-माला का फुहारा छूट रहा है। कोई भी यह कहने में देर नही करेगा कि अपने जमाने में आप पक्के लैटिनपथी रहे होगे। और मैं समझता हू, निबध-रचना में एकाध रजत-पदक भी जरूर फटकारा होगा। क्यो, ठीक है न?"

"डिओस्कूर बधु, डिओस्कूर बधु!" वसीली इवानिच ने दोहराया।

"बस बस, पिताजी, काफी हो चुका, अब यह कूकना बद कीजिए।"

"साल में एकाध बार भूले-भटके कूक लेने में कोई हर्ज नही," वृद्ध ने बुदबुदाकर कहा। "लेकिन, महानुभावो, मैं आप लोगो की इसलिए तलाश नही कर रहा था कि मुझे आपको सलामी बजानी थी। मुझे तो आपको सूचना देनी थी—सर्व प्रथम तो यह कि हमें जल्द ही कलेवा करना है, दूसरे यह कि येवगेनी, मैं तुम्हे पहले से

---

*प्राचीन यूनानी गाथाओ के दो जुडवा भाई (डिओस्कूर) जो अपनी अटूट मित्रता के लिए प्रसिद्ध थे।—स०

ही एक वात चेता देना चाहता था   तुम चतुर आदमी हो, लोगो को समझते हो, और स्त्रियो को भी कि वे कैसी होती है। सो तुम्हे कुछ सहनशीलता वरतनी चाहिए   तुम्हारे घर आने के उपलक्ष्य में तुम्हारी मा कुछ पूजा-पाठ कराना चाहती थी। यह न समझ वैठना कि मैं तुम्हे पूजा-पाठ में शामिल होने के लिए कह रहा हू। वह सव तो कभी का हो चुका, लेकिन फादर अलेक्सेई   ”

“अच्छा, वह पादरी?”

“अरे   हा वही पादरी   वह कलेवे पर हमारे साथ होगे मुझे इसका कुछ पता नही था, और सच पूछो तो मैं इसके खिलाफ तक था   फिर भी जाने कैसे यह नौवत आ गई   वह मेरी वात कुछ समझे नही   फिर, अरीना व्लासियेवना   यो आदमी वह भला और समझदार है।”

“कही ऐसा तो नही है कि वह मेरे हिस्से का भोजन चटकर जाए, क्यो?” वजारोव ने पूछा

वसीली इवानिच खिलखिला पड़े।

“हद करते हो तुम भी! इसके वाद जाने और क्या कहोगे!”

“तव कोई वात नही! मैं किसी के साथ भी भोजन की मेज़ पर वैठ सकता हू।”

वसीली इवानिच ने अपने सिर की टोपी ठीक की।

“यह तो मुझे पहले से ही यकीन था कि तुम सभी पूर्वाग्रहो से ऊपर हो। मुझे देखो, मैं एक वूढा आदमी हू, वासठवे साल की ओर डग वढा रहा हू, और मै भी किसी तरह के पूर्वाग्रहो से वास्ता नही रखता।” (वसीली इवानिच को यह स्वीकार करने का साहस नही हुआ कि वह खुद भी पूजा-पाठ कराना चाहते थे। धर्म-निष्ठा में वह भी उतने ही वढे-चढे थे जितनी कि उनकी पत्नी।) “और फिर फादर

अलेक्सेई तुमसे मिलने के लिए भी बहुत उत्सुक है। देखना, तुम्हे वह जरूर पसद आएगे। दो-चार हाथ ताश खेलने से भी वह परहेज नही करते, और किसी से कहना नही वह तम्बाकू तक पीते है।"

"ठीक है। भोजन के बाद इमी की चौकडी जमेगी। देखना, मै कैसा उन्हें मात करता हू।"

"ही-ही-ही! सो भी देखेंगे, उस समय जब मुकाबिले पर डटोगे। अभी मजिल दूर है।"

"ओहो, क्या बासी कढी में फिर उबाल आनेवाला है?" एक खास अन्दाज़ में ज़ोर देते हुए बजारोव ने कहा।

वसीली इवानिच के गेहुवा चेहरे पर लाली की एक हल्की-सी झलक दौड गई।

"शर्म करो, येवगेनी वीते दिनो को न कुरेदो। लेकिन इन महानुभाव के सामने मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नही कि जवानी के दिनो में मुझे इसकी लत थी, हा सचमुच लत थी, मैंने इसका नतीजा भी भुगता। लेकिन आज कुछ गर्मी अधिक है, क्यो? न हो तो मैं तुम्हारे पास ही बैठ जाऊ। तुम्हे कुछ दिक्कत तो न होगी, क्यो?"

"नही, बिल्कुल नही," आरकादी ने जवाब दिया।

वसीली इवानिच काखते हुए से घास पर बैठ गए।

"महानुभावो, आपका यह गुदगुदा आसन," उन्होने कहना शुरू किया, "मुझे उन फौजी दिनो की याद दिलाता है जब हम खुले में पडाव डालते थे। घास की ऐसी ही किसी गजी के पास हम अपना मरहम-पट्टी का तामझाम जमाते और इसी को बहुत बडी गनीमत समझते।" कहते कहते उन्होंने उसास भरी। फिर बोले—"हा, अपने ज़माने में मुझे जाने क्या क्या देखना पडा है। मिसाल के लिए, अगर

सुनना चाहो तो, बेस्सारेबिया में ताऊन की महामारीवाली वह घटना भी कुछ कम अजीब नही है।"

"वही न जिसमे आपको सन्त व्लादिमीर का पदक मिला था?" बज़ारोव ने बीच में ही कहा। "हम उसके बारे में सुन चुके हैं लेकिन यह बताइए, आप वह पदक लगाते क्यो नही?"

"कहा तो कि मै कोई पूर्वाग्रह नही पालता," वसीली इवानिच बुदबुदाए, हालांकि उन्होने एक ही दिन पहले उस लाल फीते को अपने कोट से उधड़वाया था—और इसके बाद ताऊनवाली घटना सुनानी शुरू कर दी। फिर, बीच में ही, सहसा फुसफुसा उठे—"अरे, ये तो सो गए हज़रत!" और परिहास से पुतलिया चमकाते हुए बज़ारोव की ओर इशारा किया। फिर ज़ोरो से बोले, "येवगेनी, उठो! चलो, भोजन के लिए चलना है "

फादर अलेक्सेई रोबदार शक्ल-सूरत के आदमी थे। डील-डौल में भी विधाता ने काफी उदारता बरती थी। पट्टेदार बाल बहुत ही सावधानी से सवरे थे और बैंगनी रग के रेशमी कैस्सोक जामे के ऊपर कामदार पेटी कसी थी। वह बहुत ही काइया और हाज़िरजवाब व्यक्ति सिद्ध हुए। आते ही, तपाक से पहले उन्होने आरकादी और बज़ारोव से हाथ मिलाए, जैसे यह पहले से जानते हो कि इन्हें उनके आशीर्वाद की ज़रूरत नही है। और, मोटे तौर से, सहजभाव स्वाभाविक बने रहे। उन्होने अपने चेहरे में शिकन नही आने दी, न औरो को ठेस पहुचाई। गिरजा-मार्का लैटिन को निशाना बनाकर उड़ाई गई खिल्लियो में उन्होने रस लिया और अपने बिशप का पक्ष लेकर लड़े। शराब के दो जाम गले में उडेल गए और जब तीसरा दिया गया तो इन्कार कर दिया। आरकादी ने चुरुट पेश किया तो ले लिया, मगर सुलगाया नही, कहा कि इसे घर ले जाऊगा। केवल एक

ही चीज़ उनमे नागवार नज़र ग्राई–चेहरे पर ग्रा वैठी मक्खियो को दबोचने के लिए धीरे धीरे ग्रौर ग्रहतियात मे हाथ उठाना ग्रौर उन्हे कचर तक डालना। यह उनकी ग्रादत मे शामिल था। चेहरे पर नरमदिली प्रसन्नता छिटकाए वह हरा पाटन विछी ताश की मेज़ पर वैठे ग्रौर वज़ारोव से नोटो की शक्ल में दो रूवल पचास कोपेक जीत कर उठे। ग्ररीना व्लासियेवना के घर में चादी के मिक्के गिनने का किसी को मुहाविरा नही था मालकिन (वह ताश नही खेलती थी) सदा की भाति ग्रपने वेटे की वगल में वैठी थी, चेहरे को ग्रपनी हथेली पर टिकाए। वह तभी हरकत करती जव उन्हे किमी नयी चीज़ के परोसने का ग्रादेश देना होता। वज़ारोव को दुलराते वह सहमती थी। खुद वज़ारोव इसके लिए वढावा नही देता था, न ही कोई गुजाइश छोडता था। इसके ग्रलावा वसीली इवानिच ने भी उन्हे ताकीद कर दी थी कि देखो, उसे ज्यादा तग न करना। "नौजवान यह सव पसन्द नही करते," उन्होने ज़ोर देकर कहा था। (उस दिन भोजन में क्या क्या परसा गया, यह सव वताने की ज़रूरत नही। खुद तिमोफेइच, एक खास किस्म का चेरकासी मास लाने के लिए, पौ फटते-न-फटते घोडे पर दौड गया था। इससे ठीक विपरीत दिशा में–वामी, टेंगा ग्रौर वडी झींगा लाने के लिए ग्रमलदार लपक गया था। ग्रौर ग्रकेले कुकुरमुत्तो के लिए किसान स्त्रियो को ग्रौर भी कुछ नही तो वयालीस कोपेक के ताम्वे के सिक्के दिए गए थे।) लेकिन ग्ररीना व्लासियेवना की ग्राखो में, जो एकटक वज़ारोव के चेहरे पर जमी थी, केवल न्योछावर होने की भावना ग्रौर स्नेहसिक्त कोमलता ही नही झलक रही थी, वल्कि उनमें उदासी का, साथ ही कुछ जिज्ञासा ग्रौर भय का–एक तरह के विनम्र उलाहने का–पुट घुला-मिला था।

वज़ारोव का दिमाग, कहना चाहिए, मा की ग्राखो की भाषा

पढने में नही, दूसरी चीजो में उलझा था। विरले ही वह मा को सम्वोधित करता, और जव करता भी तो सक्षिप्त अन्दाज में। एक वार तो मा का हाथ देखने को मागा कि इससे 'भाग्य जगता है' या नही। मा ने अपना छोटा-सा मुलायम हाथ उसकी कडी चौडी हथेली में खिसका दिया।

"हा, तो," मा ने कुछ क्षण वाद पूछा, "कैसा रहा?"

"पहले से भी बुरा," व्यग से मुसकराते हुए उसने जवाव दिया।

"ये लोग आग से खेलते हैं," अपनी नफीस दाढी को सहलाते हुए फादर अलेक्सेई ने कुछ खिन्न आवाज में कहा।

"नैपोलियन की भाति, फादर," इक्का वढाते हुए वसीली इवानिच ने कहा।

"जिसका अन्त सन्त हेलेना में हुआ," इक्के को तुरुप से काटते हुए फादर अलेक्सेई वुदवुदाए।

"कहो तो थोडा सरवेरी का रस मगा दू, प्यारे येवगेनी," अरीना व्लासियेवना ने पूछा।

वज़ारोव ने केवल कधे विचकाए, कहा कुछ नही।

"नही," अगले ही दिन वज़ारोव आरकादी से कह रहा था, "कल ही मैं यहा से गोल हो जाऊगा। तग आ गया। मैं काम करना चाहता हू और यहा कुछ हो नही सकता। मैं फिर तुम्हारे यहा चलूगा, मेरा सारा किया-कराया वही पडा है। वहा कम से कम कुछ एकान्त तो मिल जाता है—ऐसा कि कोई पास न फटके। यहा पिता तो वार वार भुनभुनाते हैं 'मेरा अध्ययनकक्ष तुम्हारे लिए हाजिर है। कोई तुम्हारे पास नही फटकेगा,' लेकिन एक क्षण के लिए भी वह वहा से नही खिसकते। और यह भी नही हो सकता कि मैं उन्हें वाहर निकालकर दरवाजा

वद कर लू, उन्हे घुसने ही न दू। और मेरी मा! दीवार की ओट में से उनकी आहे-कराहे कानो को छेदती है, और जब उठकर उनके पास पहुचता हू तो समझ में नही आता कि उनसे क्या कहू।"

"तुम्हे जाता देख वह बुरी तरह परेशान हो उठेंगी," आरकादी ने कहा, "और साथ ही पिता भी।"

"लेकिन उनके पास फिर लौटकर तो आऊगा।"

"कब?"

"सन्त पीतर्सबर्ग जाने से पहले।"

"मुझे तो खासतौर से तुम्हारी मा के लिए दु ख होता है।"

"सो क्यो? रसभरिया खिलाकर उन्होने तुम्हारा मन जीत लिया है, क्यो?"

आरकादी ने अपनी आखें झुका ली।

"तुम अपनी मा को नही जानते, येवगेनी। वह केवल नेक ही नही है बल्कि—सच—बहुत चतुर भी है। आज सुबह ही वह मुझसे आध घटे तक बाते करती रही—बहुत ही रोचक और समझ से भरी बातें।"

"ज्यादातर मुझे लेकर ही तूमार बाधती रही होगी, क्यो?"

"नही, हमने दूसरी भी बाते की।"

"हो सकता है। बाहरी आदमी इन चीजो को शायद ज्यादा साफ तौर से देख और समझ सकता है। कोई स्त्री बिना तार तोडे आध घटा तक बात कर सके, यह अच्छा लक्षण है। जो हो, इससे मेरे खिसकने में कोई अन्तर नही पडता।"

"लेकिन तुम उनसे कहोगे कैसे? उन्हे इसकी खबर देना आसान न होगा। हर घडी वे तो यही बतियाते रहते हैं कि इस पखवारे के बाद क्या करेंगे।"

"हा, यह आसान नही होगा। और जाने मेरे दिमाग पर क्या शैतान सवार हुआ कि आज सुवह मैं अपने पिता को चिढा वैठा। उस दिन उन्होने अपने एक आसामी मून्दास को कोडे लगाने का हुक्म दिया—और विल्कुल वाजिव ही हुक्म दिया—हा, विल्कुल वाजिव! समझे? इस तरह आखें फाडकर मेरी ओर न देखो! कारण, वह इतना पक्का पियक्कड और चोर है कि कुछ कहना नही। केवल पिता को इसका गुमान तक न था, कि मुझे भी कानोकान खवर लग जाएगी। सो वह वौखला गए, और इसके वाद जले पर यह नमक लेकिन चिन्ता न करो। इसे रोका-सभाला नही जा सकता।"

वज़ारोव ने कहने को तो कह दिया कि चिन्ता न करो, लेकिन वसीली इवानिच को अपने इरादे की सूचना देने के लिए साहस वटोरने में उसे पूरा दिन लग गया। आखिर रात को, सोने से पहले अध्ययनकक्ष में उनसे विदा लेते समय, जान-वूझकर जमुहाई लेता हुआ अलस अन्दाज़ में वोला

"और हा यह वताना तो मैं करीव करीव भूल ही गया क्या आप कल फेदोत की चौकी तक पहुचने के लिए घोडे कसवाने की कृपा करेंगे?"

वसीली इवानिच चौंके।

"क्या मिस्टर किरसानोव यहा से जा रहे है?"

"हा, और साथ ही मैं भी।"

वसीली इवानिच लट्टू की भाति घूम गए।

"क्या तुम जा रहे हो?"

"हा मजवूरी है। कृपया घोडो का इन्तज़ाम करना न भूले।"

"वहुत अच्छा " वृद्ध का गला रुध-सा गया, "घोडे अच्छा वहुत अच्छा लेकिन लेकिन हुआ क्या?"

"कुछ दिनो के लिए उसके यहा जाना ज़रूरी है। लौटकर फिर यही आऊगा।"

"हा, कुछ दिनो के लिए ठीक," वसीली इवानिच ने अपना रूमाल निकाला और करीब करीब धरती तक दोहरे होते हुए नाक साफ की। "हा तो ? बस इतना ही। मै सोचता था, तुम अभी अभी और रुकोगे तीन दिन सो भी तीन साल बाद कुछ कुछ भी तो नही, येवगेनी ! "

"लेकिन मैने कहा कि जल्दी ही लौट आऊगा। जाना ज़रूरी है।"

"ज़रूरी है अच्छा, ठीक। कर्तव्य पहले, बेशक सो तुम चाहते हो, घोडे भेज दिए जाए। ठीक। बेशक, हमें इसकी उम्मीद नही थी। अरीना ने पडौसी से फूलो के लिए कहा था। तुम्हारा कमरा सजाने के लिए।" (वसीली इवानिच ने इस बारे में कोई ज़िक्र नही किया कि रोज़ सुबह की सफेदी के छिटकते ही, नगे पावो में फटफटे स्लीपर डाले, किस प्रकार वह तिमोफेइच से बतियाते और बाज़ार से सामान लाने के लिए किस प्रकार, एक के बाद एक, कापती उगलियो से चिथडा हुए बैकनोट निकालकर थमाते थे, खाने की उन चीज़ो और लाल मदिरा पर खासतौर से ज़ोर देते हुए जो अन्दाज़ से अधिक इन युवको को प्रिय थी।) "आज़ादी से बढकर कुछ नही यह मेरा नेम है कभी आडे न आना कभी नही "

वह अचानक चुप हो गए और दरवाज़े की ओर बढे।

"जल्दी ही हम फिर मिलेगे, पिताजी। सच।"

लेकिन वसीली इवानिच ने बिना सिर मोडे ही खिन्न भाव से हाथ हिलाया और कमरे से चले गए। अपने सोने के कमरे में जब पहुचे तो देखा कि उनकी पत्नी सो गई है। इस खयाल से कि कही उसकी नीद न उचट

जाए, फुसफुसाकर उन्होने अपनी प्रार्थना की। लेकिन फिर भी उसकी नीद उचट ही गई।

"क्या तुम हो, वसीली इवानिच?" उसने पूछा।

"हा, मालकिन।"

"येवगेनी के पास से आ रहे हो न? मुझे लगता है कि उसे कौच पर आराम न मिलता होगा। मैंने अनफीसुश्का से कहा है कि उसे तुम्हारा सफरी बिछौना और कुछ नये तकिये दे दे। मैं तो उसके लिए अपना परोवाला गद्दा निकाल देती, लेकिन अगर मै भूलती नही तो वह मुलायम विछावन पसद नही करता।"

"कोई वात नही, मालकिन, चिन्ता मत करो। वह आराम से है। खुदा हम गुनहगारो पर रहम करे," दबे स्वर में अपनी प्रार्थना को सम्पूर्ण करते हुए उन्होने कहा। वसीली इवानिच का हृदय अपनी पत्नी के लिए दया से भर गया। सुवह से पहले वह यह नही वताना चाहते थे कि कितना वडा दुख उसकी वाट जोह रहा है।

अगले दिन बज़ारोव और आरकादी चल दिए। सुवह से ही समूचे घर पर उदासी छा गई। अनफीसुश्का की उगलिया चीनी के वरतनो को पकड नही पा रही थी—वे वार वार फिसल जाते थे। यहा तक कि फेदिया का चेहरा भी उतर आया था और अन्त मे उसने जूते उतार कर दूर रख दिए। वसीली इवानिच, और भी अधिक फिरकी बने, इधर-से-उधर लपक-झपक रहे थे। साफ था कि वह अपने आपको कडे जी का सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे थे। ज़ोरो से बोलते, इधर-से-उधर पाव पटकते। लेकिन उनके चेहरे पर वीरानगी छाई थी और उनकी आखें वेटे के चेहरे से कतराती नज़र आती थी। अरीना व्लासियेवना दवी सिसकियो में रो रही थी। अगर उसके पति ने पूरे दो घटे तक आज

सुवह उसे ढारस न वधाया होता तो वह पूरी तरह ग्रौसान खो चुकी होती ग्रौर ग्रपनी भावनाग्रो को कभी कावू में न रख पाती। जव वज़ारोव ने, वार वार यह वायदा दोहराने के वाद कि महीना वीतते न वीतते वह लौट ग्राएगा, छुडाए न छूटनेवाले ग्रालिगनो से ग्रन्त में ग्रपने ग्रापको मुक्त किया ग्रौर तरन्तास में जा वैठा, जव घोडो ने हरकत करना, घटियो ने टुनटुनाना ग्रौर पहियो ने लुढकना शुरू किया, जव ग्राखो को पूरा तानने के वाद भी सडक पर कुछ दिखाई देना वद हो गया, उडती हुई धूल वैठ गई ग्रौर तिमोफेइच–करीव करीव दोहरा हुग्रा–लडखडाता-सा ग्रपनी खोह में समा गया, जव वृद्ध दम्पति के सिवा उस घर में ग्रौर कोई न रहा जो ग्रव ग्रचानक इतना सिकुडा ग्रौर खस्ताहाल-सा हो उठा था, तव वसीली इवानिच–जो ग्रभी एक मिनट पहले तक पोर्च की सीढियो पर खडे वहादुरी के साथ ग्रपना रूमाल हिला रहे थे–कुर्सी में ढह गए ग्रौर उनका सिर लुढककर छाती से ग्रा लगा। "वह चला गया, मुह मोडकर चला गया," वह वुदवुदा उठे। "हमसे इतना ऊब गया कि टिक न सका। ग्रव फिर एकाकी–एकदम ए-का-की!" कई बार उन्होने यह दोहराया, पथराई-सी ग्राखो से सामने की ग्रोर ताकते ग्रौर मिन्नत में ग्रपने हाथ को फैलाते हुए। तभी ग्ररीना व्लासियेवना उनके निकट पहुची, सफेद वालोवाला ग्रपना सिर उनके सिर के सहारे टिकाया ग्रौर वोली "यह तो होना ही था, वास्या। वेटा तो कटी डाल की तरह होता है। एक ऐसा वाज़ जो जब मन चाहा ग्राकाश से उतर ग्राया, ग्रौर जब मन चाहा उड गया। ग्रौर तुम ग्रौर मैं पेड के ठूठ पर उगे कुकुरमुत्तो की भाति हैं, उसी एक जगह पर सदा सदा के लिए ग्रगल-बग़ल बैठे हुए। केवल मैं तुम्हारे लिए, ग्रौर तुम मेरे लिए, सदा वही के वही बने रहेगे।"

वसीली इवानिच ने चेहरे पर से अपने हाथ हटाए, और अपनी पत्नी को—अपनी उस मित्र को—कुछ इस तरह अपने आलिंगन में गूथ लिया जैसे कि कभी अपनी यौवनावस्था में भी उसने नही गूथा था। शोक के उन क्षणो में उसी ने उसके हृदय को राहत दी।

२२

फेदोत की चौकी तक रास्ते भर हमारे दोनो मित्र अपना मुह वद किए रहे, सिवा उस 'हा'—'हू' के जो जव-तव उनके मुह से निकल जाती थी। वज़ारोव अपने आपसे कुछ ज्यादा खुश नही था। और आरकादी का भी कुछ ऐसा ही हाल था। इसके अलावा उसका हृदय एक ऐसी अनवूझ उदासी से दवा जा रहा था जो केवल वहुत ही कमसिन—यौवन से अनजान—लोगो को कुरेदा करती है। कोचवान ने घोडो को फिर जोता और अपने कोचवोक्स पर चढते हुए पूछा

"वाए कि दाए, मालिक?"

आरकादी जैसे सोते से जागा। दाहिनी तरफवाली सडक शहर से होती घर की ओर जाती थी, और वाई तरफवाली ओदिनत्सोवा के घर की ओर।

उसने वज़ारोव की ओर देखा।

"येवगेनी," उसने पूछा, "वोलो, अगर वाई ओर चलना हो तो?"

वज़ारोव ने मुह फेर लिया।

"यह क्या पागलपन है?" वह वुदवुदाया।

"मैं जानता हू कि यह पागलपन है," आरकादी ने जवाव दिया, "लेकिन नुक्सान भी क्या है? आखिर पहले-पहल तो जा नही रहे हैं।"

वज़ारोव ने अपनी टोपी खीचकर नीची कर ली।

"जैसी तुम्हारी मर्जी," अन्त मे उसने कहा।

"बाई ओर, कोचवान!" आरकादी चिल्लाया।

तरन्तास निकोलस्कोये की ओर धचकोले खाती बढ चली। और यह 'पागलपन' करने के बाद दोनो मित्रो ने अपने मुह और भी कसकर—अडियल हठ के साथ—बद कर लिए। लगता था जैसे वे एक-दूसरे से भरे बैठे हो।

ओदिनत्सोवा की ड्योढी पर पहुचते ही जिस प्रकार भडारी ने उनका स्वागत किया, उससे हमारे दोनो मित्रो को इस बात का चेत जरूर हो गया होगा कि अपनी उस आकस्मिक तरग मे बहकर उन्होने कोई समझदारी का काम नही किया। स्पष्ट ही उनका आना एक अनहोनी बात थी। दुम दबाए उन्हे काफी देर तक ड्राइगरूम में एडिया खुजलानी पडी। आखिर ओदिनत्सोवा आई। आदत के अनुसार मिलनसारी के साथ उसने उनका अभिवादन किया, लेकिन उनके इतनी उतावली में लौट आने से वह चकित थी और उसकी मरियल बातो तथा हरकतो से मालूम होता था कि उसे यह सही मानी में अच्छा नही लगा। उन्होने तुरत बात सभाली, ऐलान किया कि वे शहर जा रहे थे, रास्ते में इधर भी हो लिए, और यह कि चार-पाच घटे में ही फिर रवाना हो जाएगे। बेरुखी से उसने केवल एक हल्की-सी ऊह की, आरकादी से कहा कि अपने पिता से मेरा यथायोग्य कहना, और अपनी मौसी को बुला भेजा। उनीदी-सी आखें लिए मौसी आई जिससे उनका जीर्ण मुखडा और भी अधिक झल्लाया हुआ मालूम होता था। कात्या की तबीयत कुछ ठीक नही थी, सो वह अपने कमरे से नही उतरी। आरकादी ने अचानक एक बेचैनी का अनुभव किया। उसे लगा कि कात्या को देखने की चाह भी उसके हृदय में उतनी ही प्रबल है जितनी कि अन्ना

सेर्गेयेवना को देखने की। कभी इस और कभी उस विषय पर बेसिलसिले की बातो में चार घटे बीत गए। अन्ना सुनती रही, बोली भी, लेकिन उसका चेहरा मुसकान से बराबर रीता ही रहा। केवल विदा के समय पहलेवाली घनिष्ठता का उसने कुछ परिचय दिया।

"उदासी का दौरा मुझे दबोचे है," उसने ऐलान किया, "मगर आप–और यह मैं दोनो से ही कहती हू–इसे मन में न ले। कुछ दिन बाद फिर जरूर आए।"

जवाब में बजारोव और आरकादी दोनो ने चुपचाप गरदन झुकाई, अपनी गाडी में सवार हुए और सीधे अपने घर मारिनो की ओर चल दिए। अगले दिन साझ को वे वहा सही-सलामत पहुचे। रास्ते भर दोनो में से एक ने भी, और तो और, ओदिनत्सोवा का नाम तक नही लिया। खासतौर से बजारोव ने तो अपना मुह भी शायद मुश्किल से ही खोला हो। भीषण तनाव के साथ वह एक ओर सडक से कही दूर घूरता रहा।

मारिनो में सभी ने खुशी से उनका स्वागत किया। निकोलाई पेत्रोविच अपने लडके की लम्बी गैरहाजिरी से चिन्तित हो उठे थे। खुशी के मारे वह चहक उठे, हवा में उनके पाव उछले और सोफे पर कुदकने लगे जब, आखो में चमक लिए, फेनिचका दौडती हुई आई और 'छोटे मालिको' के आने की उसने सूचना दी। पावेल पेत्रोविच तक ने मन ही मन खुशी की एक हल्की सरसराहट का अनुभव किया और लौटे हुए घुमक्कडो से हाथ मिलाते समय वह दुलार से खिल उठे। फिर सफर के वर्णनो और सवालो का दौर चला। ज्यादातर आरकादी ही बोला, खासतौर से साझ के खाने-पीने के समय जो आधी रात के बाद भी काफी देर तक चलता रहा। निकोलाई पेत्रोविच ने हाल ही में मास्को से आई पोर्ट की कई बोतले निकलवाई और इतना जमकर उनके पीछे पडे कि उनके गाल लाल दमकने लगे। वह बराबर

हस रहे थे। उनकी इस हमी मे एक तरह की वचकाना विह्वलता थी। हसी-खुशी की इस ग्राम लहर से नौकरो का वासा भी अछूता नहीं रहा। दुन्याशा आपा भूली इधर-से-उधर लपक रही थी। हर वार जब भी वह वाहर जाती, या भीतर आती, दरवाज़ा फटाक मे आवाज़ करता। उधर प्योत्र, रात के तीन वज जाने पर भी, अपनी धुन में मस्त वाल्ट्ज़ नृत्य की धुन वजाने के लिए अपने गितार से जूझ रहा था। हवा स्थिर थी और गितार के तारो से एक सुहावनी विलाप-ध्वनि की झकार निकल रही थी। लेकिन वह पढा-लिखा खवाम आलाप की नुमाइशी टेर से आगे न वढ सका। अन्य कलाओ की भाति सगीत की कला से भी प्रकृति ने उसे वचित कर रखा था।

मारिनो की गाडी भी इधर कुछ ढग से नही चल रही थी और वेचारे निकोलाई पेत्रोविच के दिन काफी टेढे गुजर रहे थे। खेती-वारी की चिन्ताए—विल्कुल वेरस और वेकार की चिन्ताए—नाक में दम किए थी और आए दिन वढती ही जाती थी। भाडे के मजूर असह्य हो उठे थे। कई थे जो हिसाब साफ करने या तरक्की देने की माग कर रहे थे, कई पेशगी का पैसा हज़म कर चपत भी हो गए थे। घोडो का वुरा हाल था। जोतो की टूट-फूट ने भयकर रूप धारण कर लिया था। काम जैसे तैसे किया जा रहा था। मास्को से कूटने की मशीन मगाई गई। वह इतनी वज़नी थी कि काम की नही निकली। ओसाई की मशीन पहली परीक्षा में ही टें बोल गई—ऐसी कि मरम्मत भी न हो सके। मवेशीखाने का आधा भाग जलकर खाक हो गया। यह इसलिए कि नौकरो के बासे की एक अधी बुढिया तेज़ हवा में जलती लुकाठी लिए अपनी गाय को धुआने चली थी और सच, पकडे जाने पर पलटकर वोली कि यह मालिक की एक से एक नयी धुन का—नये

ढग से पनीर और गोरस की चीज़ें बनाने का—नतीजा है। मैनेजर एकाएक काहिल हो गया था और काहिली की रोटी खाने का चस्का लगे हर रूसी की भाति मोटाता भी जा रहा था। निकोलाई पेत्रोविच पर अगर दूर से भी नजर पड जाती तो अपनी मुस्तैदी दिखाने के लिए पास गुज़रते सूअर पर वह चैली फेंकता या किसी अधनगे छोकरे को घूसा दिखाता, अन्यथा वह ज्यादातर ऊघता रहता। जिन किसानो को काश्त का हक दे दिया गया था, वे लगान वाकी चढाए थे और मालिक की इमारती लकडी चुरा ले जाते थे। शायद ही ऐसी कोई रात बीतती हो जब किसानो के छुट्टा घोडे फार्म के चरागाह में चरते न पकडे गए हो और उन्हें काजीहाउस में न वद किया गया हो। नाजायज़ पैठ के लिए निकोलाई पेत्रोविच ने जुरमाना लगा रखा था, लेकिन आमतौर पर होता यही था कि एक या दो दिन तक जागीरी चारा खिलाने के वाद घोडो को उनके मालिको के पास लौटा दिया जाता था। कोढ में खाज यह कि किसान आपस में भी एक-दूसरे से लडने लगे थे। भाई जायदाद के वटवारे के लिए लडते, उनकी पत्निया अलग वैर साधती, यहा तक कि अचानक मारपीट का हल्ला मचता, पलक झपकते सभी वाहर खिच आते, दफ्तर के दरवाज़े पर उनका झुड जमा हो जाता और न्याय तथा फैसले की माग करते मालिक के सिर पर सवार हो जाते। कितनो के चेहरे नोचे-खरोचे हुए, और नशे में धुत्त। गुल-गपाडे और गुहारो का तूफान। स्त्रियो का रोना-किकियाना और पुरुषो का कोसना। इसके सिवा कोई चारा नही कि विरोधी पक्षो में वीच-वचाव करने की कोशिश में चिल्लाकर अपना गला वैठा लिया जाए, खूब अच्छी तरह से यह जानते हुए भी कि किसी माकूल नतीजे पर नही पहुचा जा सकता। फसल काटने के समय मज़दूरो की कमी पड गई। फरिश्तो जैसी शक्लवाले पडोस के एक ताल्लुकेदार ने ठेका किया था

कि वह दो रूबल फी देस्सियातिन के हिसाब मे कटाई करनवालो को भेज देगा। लेकिन वह वडी वेशर्मी से निकोलाई पेत्रोविच को दगा दे गया। स्थानिक किसान स्त्रियो ने मजूरी के नाम वुरी तरह मुह फैलाए। उधर अनाज था कि वालियो में ही विगडा जा रहा था, घास की कटाई भी यो ही पडी थी और पच-परिपद रहन के सूद की पूरी और तुरत अदायगी की धमकियो और माग पर उतर आई थी

"मेरी तो इन्तहा आ पहुची," एक से अधिक बार निकोलाई पेत्रोविच ने निराशा से क्रन्दन किया, "मै खुद उनसे अच्छी तरह निवट नही सकता, और पुलिस अफसर को वुलाना मेरे सिद्धान्तो के खिलाफ है, तिस पर यह भी एक मानी हुई वात है कि सजा का डर दिखाए बिना कुछ किया नही जा सकता।"

"Du calme, du calme*," पावेल पेत्रोविच उन्हे तसल्ली देने का प्रयत्न करते, जवकि वह अपने माथे को सिकोडते, मूछो के बाल खीचते और मन ही मन गुर्राते।

बजारोव इन झमेलो से दूर ही रहता। इसके अलावा, मेहमान होने के नाते, इन सव वातो में वह पड भी नही सकता था। मारिनो आने के बाद अगले ही दिन से वह अपने मेंढको, बीजाणु-घोलो और रासायनिक द्रव्यो में जुट गया और अपना अधिकाश समय उन्ही में बिताता। उधर आरकादी ने सोचा कि अपने पिता की मदद करना—या मदद करने की अपनी तत्परता का परिचय देना—उसका कर्तव्य है। पिता की बातो को वह धीरज से सुनता, एकाध वार उसने कुछ सलाह भी दी—इसलिए नही कि वह मानी जाए, बल्कि अपनी हमदर्दी जताने के लिए। खेती-बारी के—फार्म चलाने के—काम से वह घिनाता नही था। सच

---

*धीरज से काम लो, धीरज से। (फ्रेंच)—स०

तो यह है कि वह खुद भी भविष्य में उन्हे अपनाने का सपना देखता था, लेकिन इस समय उसका दिमाग अन्य चीज़ो से उलझा था। निकोलस्कोयें का ख़याल – और यह देखकर खुद उसे भी आश्चर्य होता था – उसे बराबर बना रहता था। पहले अगर कोई इस बात की सम्भावना का भी ज़िक्र करता कि वह बज़ारोव की सगत – और साथ ही अपने पिता की छत्रछाया से भी – ऊब सकता है तो वह महज़ अपने कधे बिचकाकर रह जाता। लेकिन अब वह सचमुच ऊब उठा था और उससे पीछा छुडाने के लिए छटपटाता था। उसने लम्बी, थका देने-वाली मटरगश्ती का सहारा लिया, लेकिन बेकार। एक दिन, अपने पिता से बातचीत के दौरान में, आरकादी को मालूम हुआ कि उसके पिता के पास कुछ पत्र हैं – सो भी काफी दिलचस्प पत्र – जो ओदिनत्सोवा की मा ने उनकी स्वर्गीय पत्नी को लिखे थे। आरकादी अपने पिता के पीछे पड गया और अन्त में उसने पत्रो को लेकर ही छोडा। पत्रो की खोज में निकोलाई पेत्रोविच ने बीसियो दराज़ें और ट्रक खोल डाले। इन अधगले-से पत्रो को कब्ज़े में करने के बाद ऐसा लगा जैसे आरकादी की मुराद पूरी हो गई हो, जैसे उस लक्ष्य की झलक उसे मिल गयी हो जिसे वह पाना चाहता था। "और यह मैं दोनो से ही कहती हू," वह बार बार अपने आपसे फुसफुसाया। "यह खुद उसने कहा था। गोली मारो सबको, मुझे वहा जाना है, मैं ज़रूर वहा जाऊगा।" तभी पिछली मुलाकात का चित्र उसकी आखो के सामने मूर्त हो उठा, बेरुखी से भरे उस स्वागत की उसे याद आई, और झिझक तथा भय की भावना ने पहले की भाति फिर उसे घेर लिया। लेकिन जोखिम से खेलने की यौवन-सुलभ वृत्ति ने, अपना भाग्य आज़माने तथा अकेले ही अपनी शक्ति को कसने की निहित ललक ने, अन्त में उसकी झिझक और दुविधा पर विजय प्राप्त की। मारिनो

लौटने के दस दिन के भीतर ही, रविवारी स्कूलो के मगठन का अध्ययन करने के वहाने, उसने शहर का और वहा से फिर निकोलस्कोये का रास्ता पकडा। पूरी उत्कठा के साथ कोचवान को उकसाता वह इस प्रकार अपनी मजिल की ओर लपक रहा था जैसे कोई युवा अफमर अपने मोर्चे की ओर वढ रहा हो। भय और खुशी के भाव एक साथ उसे मथ रहे थे और वेसब्री ने उसके हृदय को झझोड डाला था। "मुख्य वात यह है," वह वार वार अपने से कह रहा था, "कि इसे अपने दिमाग में ही न आने दू।" कोचवान–और इसे सौभाग्य ही कहिए–खिलाडी तवीयत का आदमी था। रास्ते में जव भी कोई दारूघर आता, अपने घोडे की रास रोकता और कहता "क्या खयाल है, गला तर कर लिया जाय?" लेकिन गला तर करने के वाद वह कोई कसर न छोडता, और घोडे हवा से वाते करने लगते। आखिर चिर-परिचित घर की ऊची छत नजर के सामने उभर आई "मुझे भी यह क्या सूझा?" आरकादी के मन में कौधा। "लेकिन अब लौटा भी नही जा सकता।" त्रोइका सडक की धज्जिया उडा रही थी, कोचवान हुकार और सिसकार रहा था। लकडी का वह छोटा-सा पुल आया और टापो की खनखनाहट तथा पहियो की गडगडाहट के साथ गुज़र गया और अव राह के दोनो ओर खडे फर-वृक्षो की पाते तेज़ी से उनकी ओर लपकी आ रही थी गहरी हरियाली के वीच गुलावी फ्राक फरफरा उठी और छतरी की हल्की झालर की ओट में से कोई युवा चेहरा झाका उसने कात्या को पहचाना, और कात्या भी उसे पहचानने में पीछे न रही। आरकादी ने दौडते घोडो की रास खीचने के लिए कोचवान से कहा, छलाग मार कर गाडी से वाहर आ गया और उसकी ओर वढ चला।

"अरे तुम हो!" वह वुदवुदाई और उसके गाल धीरे धीरे लाली

में रग चले। "चलिए, वहिन के पास चले। वह भी यही वाग में है। आपको देखकर खुश होगी।"

कात्या आरकादी को वाग़ में ले चली। आरकादी को उसका यह मिलन अद्भुत रूप में शुभ लक्षण मालूम हुआ। उसे उतनी ही खुशी हुई जितनी कि अपनी निकटतम, और प्रियतम, वस्तु को देखकर होती है। इससे ज्यादा अच्छा और क्या हो सकता था—न भडारी, न खबर करवाने का झमेला। रास्ते के एक मोड पर अन्ना सेर्गेयेवना की झलक दिखाई दी। वह उसकी ओर पीठ किए खडी थी। पावो की आहट सुन धीरे धीरे मुडी।

आरकादी के हृदय में वेचैनी ने फिर सिर उठाना शुरू किया। लेकिन उसके मुह से निकले पहले शब्दो ने ही उसे आश्वस्त कर दिया।

"ओह, तुम आ गए, भगोडे-पछी!" अपने मृदु और सुहावने अन्दाज़ में उसने कहा और मुसकराते तथा सूरज की चौध और हवा के मारे अपनी आखो को सिकोडे आरकादी से मिलने के लिए आगे वढी। "यह तुम्हे कहा मिले, कात्या?"

"आपके लिए मै एक चीज़ लाया हू, अन्ना सेर्गेयेवना," आरकादी ने कहना शुरू किया, "ऐसी कि आप सपने में "

"वस वस, आप अपने आपको ले आए, इससे अच्छी चीज़ भला और क्या होगी?"

२३

उपहास का पुट मिले खेद के साथ आरकादी को विदा करने और यह जताने के वाद कि उसकी यात्रा के असली मक़सद के वारे में उसे ज़रा भी भ्रम नही है, वज़ारोव ने अपने आपको पूर्ण एकान्तवास में

समेट लिया। लगता जैसे उसके ऊपर काम का—व्यस्तता का—भूत सवार हो। पावेल पेत्रोविच के साथ अब वह पहले की भांति न उलझता, खासकर उस समय से जब से कि उन्होने, उसकी मौजूदगी में, और भी ज्यादा कुलीनत्व का प्रदर्शन शुरू कर दिया था, और अपने मतो को शब्दो के बजाय आवाजो से व्यक्त करने लगे थे। केवल एक बार—बालतिक के कुलीनो के अधिकार सबधी उन दिनो की फैशनेबुल चर्चा को लेकर पावेल पेत्रोविच ने निहिलिस्ट से टकराने का साहस किया, लेकिन उन्होने अचानक बीच में ही अपने आपको रोक लिया और एकदम सर्द मुद्रा में शाइस्तगी के साथ बोले "लेकिन छोडिए, हम दोनो एक-दूसरे को समझ नही सकते—कम से कम मैं, खेद के साथ कहना पडता है, आपको नही समझ पाता।"

"इसमें भी क्या शक है," बज़ारोव बोल उठा, "आदमी हर चीज़ समझने की क्षमता तो रखता है—यह कि हवा में कैसे कम्पन होता है और सूरज की सतह पर क्या कुछ हो रहा है, लेकिन यह उसकी समझ में नही आता कि जिस अन्दाज़ में वह नाक सुडकता है, उसके अलावा भी और कोई अन्दाज़ हो सकता है।"

"और शायद आप इसे बहुत ही मज़ेदार जवाब समझते है क्यो?" पावेल पेत्रोविच ने टोका और उठकर चल दिए।

लेकिन यह भी सच है कि कभी कभी वह बज़ारोव के प्रयोगो को देखने की इच्छा प्रकट करते थे, और एक बार तो किसी बहुत ही बढिया इत्र में बसा अपना चेहरा ख़ुर्दबीन तक से अडाकर देखा कि किस प्रकार एक पारदर्शी बीजाणु एक हरे-से धब्बे को बडी तेज़ी से निगल और कठदेश में स्थित अत्यन्त चपल बारीक काटे की मदद से उदरस्थ कर रहा है। निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई के मुकाबिले अधिक बहुतायत से बज़ारोव के पास पहुच जाते थे। अगर खेती-बारी में इतने न फसे

होते तो, उनके ही शब्दो में, कुछ सीखने के लिए वह रोज़ उसके पास जा धमकते। युवक पदार्थशास्त्री को वह ज़रा भी अस्तव्यस्त करने में बाधा नही पहुचाते थे। आमतौर से एक कोने में जम जाते और बस ध्यान से देखा करते। केवल कभी कभी, विरल अवसरो पर ही, समझ-बूझ के साथ सवाल पूछने को तैयार होते। भोजन के समय बातचीत के सिलसिले को वह भौतिक विज्ञान, भूतत्व या रसायन विज्ञान की ओर मोडने का प्रयत्न करते। कारण कि अन्य सभी विषय–राजनीति की तो बात ही छोडिए–खेती-बारी तक खतरे से खाली नही थे। टक्कर की बात अगर छोड भी दें तो उनसे आपसी बदमज़गी तो पैदा हो ही सकती थी। निकोलाई पेत्रोविच भापते कि बज़ारोव के प्रति उनके भाई की भन्नाहट ज़रा भी कम नही हुई है। और तो और, एक नगण्य-सी घटना ने इस धारणा की पुष्टि कर दी। पडौस में हैज़ा फूट पडा था और मारिनो के दो निवासी भी उसकी चपेट में आ गए थे। एक रात पावेल पेत्रोविच बुरी तरह बीमार पड गए। वह सुबह तक छटपटाते रहे, लेकिन बज़ारोव की दक्षता का मुह नही देखा। अगली सुबह जब बज़ारोव उनसे मिला और उसने पूछा कि उन्होंने उसे क्यो नही बुला भेजा, तो अभी तक पीले पडे लेकिन खूब चिकने-चुपडे और हजामत बने चेहरे से बोले "अगर मैं भूलता नही तो शायद खुद आपने ही यह कहा था कि दवा-दारू में आपका विश्वास नहीं है?" इस प्रकार दिन आते और चले जाते। झुझलाहट और जिद्द से भरा बज़ारोव काम में जुटा रहता। लगता जैसे सिवा इसके दुनिया में और कोई रस न हो। लेकिन, उसके प्रति इस उदासीनता के बावजूद, निकोलाई पेत्रोविच के घर में एक ऐसा जीव भी मौजूद था जिसकी सगत में उसे आनन्द मिलता था यह जीव था फेनिचका।

फेनिचका से उसकी भेंट अक्सर तडके ही होती–बाग में या अहाते

में। उसके कमरे की ओर वह कभी न जाता। खुद वह भी केवल एक बार उसके दरवाज़े तक गई थी, यह पूछने कि मित्या को नहलाया जा सकता है या नही। केवल यही नही कि वह उसपर भरोमा रखती थी और उससे भय नही खाती थी, वल्कि उमकी मौजूदगी में वह अधिक अपनत्व का अनुभव करती थी, निकोलाई पेत्रोविच की मगत से भी ज्यादा सहूलियत के माथ सास ले सकती थी। ऐमा क्यो था, यह कहना कठिन है। शायद इसका कारण यह था कि अपने भीतरी मन की सहज वृत्ति से उसने जान लिया था कि वज़ारोव महामहिम कुलीनो के आभिजात्य से अछूता है– उस ऊचे सिहासन पर वह स्थित नही है जो मोह और आतक, दोनो का एक साथ सचार करता है। उसके लिए वह एक वहुत ही वढिया डाक्टर और एक सीधा-सादा आदमी भर था। विना किसी झिझक के उसके सामने वह अपने वच्चे को दूध पिलाती और एक वार जव अचानक सिर चकराने और दुखने लगा तो बज़ारोव के हाथो से उसने एक चम्मच दवा भी पी ली। निकोलाई पेत्रोविच की उपस्थिति में वह वज़ारोव से कुछ कतराती-सी मालूम होती उन्हे छलने की नीयत से नही, वल्कि इसलिए कि वह उनका लिहाज़ करती थी। पावेल पेत्रोविच से वह अब भी वैसे ही, बल्कि और भी ज्यादा, डरती थी। इधर कुछ दिनो से वह उसकी चौकसी-सी करने लगे थे। एकदम अचानक, मानो धरती फोडकर, वह उसके पीछे से प्रकट हो जाते, अपना बेदाग सूट पहने, जेबो में अपने हाथ खोसे, और चेहरे को सतर्कता के चौखटे में जडे। "वह तो सुन्न कर देनेवाले सर्द झोके की भाति है," फेनिचका दुन्याशा से दुखडा रोती। जवाब में वह एक आह भर के रह जाती और एक अन्य 'पाला मारे' आदमी की कल्पना उसके हृदय में उभर आती।

वज़ारोव, एकदम अनजाने मे ही, उसके हृदय का क्रुद्ध आततायी वन गया था।

फेनिचका वजारोव को पसन्द करती थी, और वज़ारोव भी उसे पसद करता था। फेनिचका से बाते करते समय उसके चेहरे तक में एक परिवर्तन आ जाता – उसके चेहरे पर एक प्रकार की शान्त स्थिरता और करीब करीब मृदुता का सा भाव छा जाता और वेपर्वाही तथा उपेक्षा से भरा उसका अन्दाज़ – जो कि उसकी आदत में शामिल था – खुशमिज़ाजी की आभा से रग जाता। फेनिचका का सौन्दर्य दिन दिन निखर-उभर रहा था। युवती स्त्रियो के जीवन में ऐसा समय आता है जब वे ग्रीष्मकालीन गुलाब की भाति अचानक चटखना और खिलना शुरू कर देती है। फेनिचका का वह समय आ गया था। हर चीज़ उसके अनुकूल थी – यहा तक कि जुलाई मास की उमस-भरी गर्मी भी। हल्के सफेद कपड़ो में वह खुद भी अधिक हल्की और अधिक उजली मालूम होती। धूप में तपना उसे न सुहाता और गर्मी ने जिससे वचने का वह निष्फल प्रयास करती, उसके गालो और कानो को एक मृदु आभा से दमका दिया, एक निढाल अलसाहट उसके रोम रोम में सरसरा गई, और उसकी प्यारी आखो में स्वप्निल मूर्च्छना-सी बनकर तैरने लगी। उससे कुछ भी करते न वनता और उमके हाथ, खोए खोए से, वार वार उसकी गोद में फिसल आते। हिलना-डुलना तक उसे न सुहाता और वेबसी के छोटे छोटे विस्मयकारी उद्गार मुह से प्रकट करती।

"तुम्हे और भी अधिक स्नान करना चाहिए," निकोलाई पेत्रोविच उससे अक्सर कहते। अपने तालावो में से एक के किनारे, जो अभी सूखा नही था, नहाने के लिए उन्होने कनात लगवा दी।

"ओह निकोलाई पेत्रोविच! तालाव तक पहुचते न पहुचते जान-सी निकल जाती है, और वहा से लौटते न लौटते भी आदमी

अधमरा हो जाता है। बाग में कसम खाने भर को भी तो छाव नही है।"

"हा, सो तो है," अपनी भौंहो को खुरचते हुए वह जवाब देते, "बाग में छाव नही है।"

एक दिन, सुबह के छै बजे से कुछ ही ऊपर, बज़ारोव टहलकर लौट रहा था कि लिलक के कुज में फेनिचका से भेंट हो गई। लिलक के खिलने के दिन तो कभी के बीत चुके थे, लेकिन घनी और गहरी हरियाली अभी भी छाई थी। सदा की भाति सिर पर रूमाल डाले वह एक बैंच पर बैठी थी। पास ही लाल और सफेद गुलाब के फूलो का ढेर लगा था। फूल अभी भी ओस से भीगे थे। उसने प्रातकालीन शुभाभिवादन किया।

"ओह, येवगेनी वसीलियेविच!" फेनिचका ने कहा और रूमाल का एक छोर उठाकर उसे देखने के प्रयास में उसकी बाह कोहनी तक उघर गई।

"यहा तुम क्या कर रही हो?" उसके निकट बैठते हुए बज़ारोव ने कहा। "ओह, गुलदस्ता बना रही हो, क्यो?"

"हा, नाश्ते की मेज़ के लिए। निकोलाई पेत्रोविच को इसका बडा चाव है।"

"लेकिन नाश्ते में अभी बहुत देर है। भाई खूब, तुमने तो फूलो का पूरा अम्बार जमा कर लिया!"

"बाद को गरमी हो जाएगी और मुझसे बाहर निकलते नही बनेगा, इसलिए अभी चुन लिए। केवल यही समय है जब मै कुछ खुल-कर सास ले सकती हू। गर्मी तो बुरी तरह जान सोख लेती है। जाने मेरी तबीयत को क्या हो गया है।"

"तुम भी क्या सोचती हो! जरा अपनी नब्ज़ तो दिखाओ!"

वज़ारोव ने उसका हाथ थामा, समगति से धडकती नब्ज़ का अनुभव किया और धडकनो को गिनने तक की चिन्ता न कर उसके हाथ को छोडते हुए बोला

"सौ साल तक जियोगी।"

"ओह, खुदा न करे!"

"क्यो, क्या लम्बी आयु पसद नही?"

"मगर पूरे सौ साल! दादी पचासी की थी, बस, जिन्दा लाश ही समझो। काली, निपट वहरी, कमान की भाति दोहरी और हर घडी खो खो।

"तो युवावस्था ही बेहतर है?"

"हा, बेशक!"

"क्यो बेहतर है? बताओ तो।"

"क्या सवाल किया है? अच्छा तो सुनो। अभी मैं जवान हू, चाहे जो कर सकती हू, आ सकती हू, जा सकती हू, चीजो को उठा-घर सकती हू, काम के लिए किसी का आसरा मुझे नही देखना पडता इससे अच्छा भला और क्या होगा?"

"जवान हू तो और बूढा हू तो, मेरे लिए दोनो एक है।"

"यह तुम कैसे कह सकते हो कि दोनो एक है? यह असम्भव है, तुम जो कह रहे हो।"

"खुद तुम्ही सोचकर देखो, फेदोसिया निकोलायवना, यह यौवन किस काम का है मेरे लिए? मै एकदम अकेला रहता हू—निरीह एकाकी जीव "

"यह सब तो खुद तुम्ही पर निर्भर है।"

"ठीक यही तो मुसीवत है—यह कि मुझपर निर्भर नही है। काश कि कोई मुझपर तरस खा सकता।"

फेनिचका ने कनखियो से उसकी ओर देखा, लेकिन कहा कुछ नही। फिर अनायास ही पूछा

"यह कौनसी पुस्तक लिए हो?"

"यह? यह अति ज्ञानवर्द्धक किताब है, भेदो से भरी।"

"और आप हर घडी पढते-सीखते रहते है। क्या जी नही उकताता? लगता है, जानने योग्य एक भी बात आपमे नही बची होगी।"

"स्पष्ट ही ऐसा नही है। यह लो, इसमें से कुछ पढने की कोशिश कर देखो।"

"लेकिन मेरे पल्ले तो कुछ पडेगा नही। क्या यह रूसी भाषा में है?" फेनिचका ने पूछा। फिर दोनो हाथो में भारी-भरकम जिल्द बधी किताब सभालते हुए बोली "ओह, कितनी मोटी किताब है!"

"हा, रूसी में है।"

"जो हो, मै तो इसे समझ पाऊगी नही।"

"मेरा मतलब तुम्हारे समझने से थोडे ही है। मै तो केवल तुम्हे पढते हुए देखना चाहता हू। जब तुम पढती हो तो तुम्हारी नाक बहुत ही प्यारे ढग से कुलकुलाती है।"

फेनिचका जिसने 'क्रिओसोत के बारे में' शीर्षक को दबी आवाज़ में एक एक अक्षर करके पढना शुरू कर दिया था, खिलखिलाकर हस पडी और पुस्तक उसके हाथो से छूट गई बेंच पर से फिसलकर वह धरती पर जा गिरी।

तुम्हे हसते हुए देखना भी मुझे अच्छा लगता है," बज़ारोव ने कहा।

"बस बस, रहने दो।"

"जब तुम बोलती हो तो बडा सुहाना मालूम होता है—जैसे कोई झरना छलछला रहा हो।"

फेनिचका ने मुह फेर लिया।

"ओह, तो क्या सचमुच!" फूलो से खेलते हुए वह बुदबुदाई। "मेरी बातो में भला तुम्हे क्या मिलेगा? तुम एक से एक समझदार स्त्रियो से बातें कर चुके हो।"

"आह, फेदोसिया निकोलायेवना! मेरा विश्वास करो, दुनिया भर की सारी समझदार स्त्रिया भी तुम्हारी कानी उगली की बराबरी नही कर सकती!"

"बस बस, तुम्हारी बातो का भी कोई पार नही," अपने हाथो को समेटते हुए फेनिचका फुसफुसाई।

बज़ारोव ने पुस्तक को धरती पर से उठा लिया।

"यह डाक्टरी की किताब है। इसे यो ही नही फेक देना चाहिए।"

"डाक्टरी की किताब?" फेनिचका प्रतिध्वनि कर उठी और घूमकर उसकी ओर मुह कर लिया। "अरे सुनो तो, जब से तुमने मुझे बूदें दी—याद है न?—तब से मित्या को बहुत ही बढिया नीद आ रही है। कुछ सूझ नही पडता कि तुम्हे कैसे धन्यवाद दू—सच, तुम बहुत सदय हो।"

"सच पूछो तो डाक्टरो को फीस देनी चाहिए," बज़ारोव ने मुसकराते हुए कहा, "डाक्टर लोग, तुम जानती ही हो, पैसो पर गुज़र करनेवाले जीव होते है।"

फेनिचका ने आखे उठाकर बज़ारोव की ओर देखा। उसके चेहरे के ऊपरी हिस्से की पीली आभा की पृष्ठभूमि में उसकी काली आखें और भी काली हो उठी थी। वह कुछ समझ नही सकी कि बज़ारोव हसी कर रहा है या सजीदगी से कह रहा है।

"अगर तुम चाहो तो बडी खुशी मैं निकोलाई पेत्रोविच से इसका ज़िक्र करूगी "

"अरे नही, क्या तुम समझती हो कि मै पैसा चाहता हू," बज़ारोव ने बीच में ही कहा, "नही, मुझे तुमसे कोई पैसा-वैसा नही चाहिए।"

"तो फिर?" फनिचका न पूछा।

"तो फिर?" बज़ारोव ने दोहराया। "तुम्ही अन्दाज लगा देखो कि मुझ क्या चाहिए।"

"अन्दाज लगाने में मै माहिर नही हू।"

"तब मै ही बताता हू मै चाहता हू—गुलाब के उन फूलो में से एक।"

फेनिचका फिर खिलखिलाकर हस पडी और उसके हाथ तक हवा में उछल गए। बज़ारोव की इच्छा उसे बहुत ही मज़ेदार मालूम हुई। वह हसी ही नही, बल्कि उसने एक गर्व का भी अनुभव किया। बज़ारोव एकटक उसकी ओर देख रहा था।

"वाह, क्यो नही," आखिर उसने कहा और बैंच पर झुकते हुए फूलो को छेडन लगी, "कौनसा पसन्द करोगे—लाल या सफेद?"

"लाल, और बहुत बडा न हो।"

वह सीधी हो गई।

"यह लीजिए अपना " उसने कहा, मगर उसी क्षण अपना हाथ खीच लिया, होठो को काटते हुए कुज के प्रवेश-द्वार की ओर देखा और कुछ सुनने का प्रयास करने लगी।

"क्या है?" बज़ारोव ने पूछा। "निकोलाई पेत्रोविच तो नही?"

"नही वह तो खेतो पर गए है उनसे मैं नही डरती मगर पावेल पेत्रोविच पल भर में मुझे कुछ ऐसा लगा "

"कैसा लगा?"

"मुझे एसा लगा जैसे वह चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। नही कोई नही है। लो, यह लो।"

फेनिचका ने वज़ारोव को फूल दे दिया।

"तुम पावेल पेत्रोविच से इतना क्यो डरती हो?"

"उनका भय पल-भर को पीछा नही छोडता। मुह से वह कुछ नही कहते, बस अजीव ढग से ताकते है। लेकिन खुद तुम भी तो उन्हे पसन्द नही करते। क्या तुम्हे याद है कि किस प्रकार तुम सदा उनसे वहसो में जूझा करते थे? यह तो मैं नही जानती कि किस चीज़ को लेकर वे वहसे होती थी, लेकिन यह मैं भी देखती थी कि किस प्रकार कभी तुम उन्हे इधर को मरोडते, कभी उधर को "

फेनिचका ने अपने हाथों की हरकत से वताया कि किस प्रकार वजारोव, उसकी समझ से, पावेल पेत्रोविच को इधर से उधर मरोडता था।

वज़ारोव मुसकराया।

"अगर वह मुझसे मजवूत पडते तो," वजारोव ने पूछा, "तो क्या तुम मेरा पक्ष लेती?"

"तुम्हारा पक्ष मैं किस प्रकार ले सकती थी? इसके अलावा, तुमसे भला कौन मज़बूत पड सकता है?"

"ऐसा सोचती हो तुम? लेकिन मै एक ऐसे हाथ को जानता हू जो अगर चाहे तो मुझे अपनी कानी उगली मे पछाड सकता है।"

"वह कौनसा हाथ है?"

"अरे, तो क्या तुम इतना भी नही जानती? कितनी अच्छी महक है इस फूल में जो तुमने मुझे दिया है। जरा सूघकर देखो।"

फेनिचका ने अपनी छरहरी गरदन आगे की ओर की और फूल तक अपना चेहरा ले गई रूमाल खिसककर उसके कधो पर आ गया

और पावेल पेत्रोविच वाग से बाहर निकल धीरे धीरे वन की ओर चल दिए। वहा वह काफी देर तक रहे, और वहा से जब नाश्ते के समय लौटे तो उनका चेहरा इतनी गहरी छाया से घिरा था कि निकोलाई पेत्रोविच से नही रहा गया और व्यग्र भाव से पूछा कि तवीयत तो ठीक है न।

"तुम तो जानते ही हो कभी कभी मुझे पित्त-विकार के दौरे हो आते है," पावेल पेत्रोविच ने शान्त भाव से जवाब दिया।

२४

कोई दो घटे वाद पावेल पेत्रोविच ने वजारोव के कमरे का दरवाजा खटखटाया।

"आपके विद्वत्तापूर्ण अध्ययन में वाधा डालने के लिए क्षमा मागना ज़रूरी है," खिडकी के पास एक कुर्सी पर आसन जमाते और हाथीदात की मूठवाले खूबसूरत वेंत पर अपने दोनो हाथो को टिकाते हुए (यो वेत लेकर कही जाने की उन्हे आदत नही थी) उन्होने कहा। "लेकिन मजबूरी है। आपके समय में से पाच मिनट की मोहलत चाहता हू। केवल पाच ही मिनट, अधिक नही।"

"मेरा सारा समय आपके लिए हाज़िर है," वज़ारोव ने जवाव दिया जिसके चेहरे पर, पावेल पेत्रोविच के भीतर पाव रखते ही, जाने कैसा एक भाव दौड गया था।

"पाच मिनट ही मेरे लिए काफी होगे। मै वस एक प्रश्न करने के लिए आपके पास आया हू।"

"प्रश्न? किस बारे में?"

"अच्छा तो कृपा कर सुनें। यहा मेरे भाई के घर मे आपके

आगमन के प्रारम्भ में – उन दिनों में जबकि आपसे बातचीत करने के आनन्द से मैंने अपने आपको वचित नही किया था, अनेक विपयो पर आपके विचार सुनने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। लेकिन, जहा तक मुझे याद है, न तो हम दोनो के बीच, और न ही मेरी मौजूदगी में, द्वन्द्व-युद्धो का कभी कोई ज़िक्र हुआ। क्या मै जान सकता हू कि इस बारे में आपके क्या विचार है?"

बज़ारोव, जो पावेल पेत्रोविच के आने पर उठकर खडा हो गया था, मेज के छोर पर बठ गया और उसने अपने हाथ दोनो बगलो मे दबा लिए।

"मेरा विचार यह है," उसने कहा, "सिद्धान्त की नजर मे मैं इसे बेहूदा समझता हू, लेकिन व्यवहार की दृष्टि से – वह और बात है।"

"इसका मतलब – अगर मैंने आपको ठीक से समझा है तो – यह कि द्वन्द्व-युद्ध के बारे में आपका सैद्धान्तिक मत चाहे जो भी हो, लेकिन वस्तुत बिना सन्तुष्ट हुए आप अपने को अपमानित नही होने दे सकते।"

"आपका यह अनुमान बिल्कुल ठीक है।"

"बहुत ठीक, श्रीमान। आपसे यह सुनकर मुझे बडी खुशी हुई। आपके इस बयान ने मुझे अस्थिरता से मुक्त कर दिया "

"अनिश्चितता से, यही न?"

"एक ही बात है। मेरे भाव समझ में आ जाए, इसी लिए मै अपने को व्यक्त करता हू। मै गुरुकुल का चूहा नही हू। तुम्हारे बयान ने मुझे एक खेदजनक अनिवार्यता की दुविधा से मुक्त कर दिया। मैंने आपके साथ द्वन्द्व-युद्ध करने का निश्चय किया है।"

बज़ारोव चौंका।

"मेरे साथ?"

"हा, बिल्कुल आपके ही साथ।"

"ख़ुदा ख़ैर करे। लेकिन किस लिए?"

"कारण तो बता सकता हू," पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, "लेकिन उसे अनकहा रहने देना अच्छा होता। आप मुझे कतई नही सुहाते, मै आपसे घृणा करता हू, आपको देखकर उबकने लगता हू, और अगर इतना काफी नही है तो "

पावेल पेत्रोविच की आखे कौंध रही थी बज़ारोव की आखो में भी दमक का अभाव नही था।

"अच्छी बात है, श्रीमान," बज़ारोव ने कहा, "अब और अधिक व्याख्या करने की ज़रूरत नही। आपने ठान लिया है कि मेरे साथ अपने शौर्य की आज़माइश करे। चाहता तो इस आनन्द से मै आपको वचित कर सकता था। लेकिन ख़ैर, कोई बात नही।"

"इस कृपा के लिए बहुत बहुत कृतज्ञ हू," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "और अब मै आशा कर सकता हू कि हिसा का सहारा लेने के लिए मुझे बाध्य किए बिना ही आप मेरी चुनौती मजूर कर लेगे।"

"दूसरे शब्दो में—अगर कविता में बाते न की जाए तो—उस बेंत का सहारा लिए बिना?" बज़ारोव ने अविचलित भाव से कहा। "बिल्कुल ठीक। आपको मुझे अपमानित नही करना पडेगा। और ऐसा करना पूर्णतया निरापद भी न होगा। आपकी सज्जनता बरकरार रहेगी . मै भी, एक सज्जन की ही भाति, आपकी चुनौती मजूर करता हू।"

"बहुत ख़ूब!" पावेल पेत्रोविच ने कहा और अपना बेत उठाकर एक कोने में रख दिया। "दो-चार शब्द अब द्वन्द्व की शर्तों के बारे में भी। लेकिन पहले मै यह जानना चाहूगा कि क्या आप, मेरी चुनौती के लिए एक बहाने के रूप में, कोई छोटा-मोटा झगडा मोल लेने की औपचारिकता का सहारा लेना ज़रूरी समझते है?"

"नही, औपचारिकता को ताक पर रखना ही अच्छा होगा।"

"मै भी ऐसा ही समझता हू। इसी प्रकार अपने विरोध के असली कारणो को कुरेदना भी, मेरे खयाल में, बेकार होगा। हम एक-दूसरे को बरदाश्त नही कर सकते। इसके वाद और कुछ कहने की ज़रूरत भी क्या है?"

"और कुछ कहने की जरूरत भी क्या है?" बजारोव ने व्यग्यपूर्वक दुहराया।

"और जहा तक द्वन्द्व की शर्तो का सम्बन्ध है, चूकि हम अपने साथ कोई मध्यस्थ नही रखेंगे—और उन्हे हम पाएगे भी कहा "

"बिल्कुल, हम उन्हे पाएगे भी कहा?"

"सो मै सम्मानपूर्वक सुझाव रखता हू द्वन्द्व कल सुवह हो, यही छै बजे, पिस्तौलो से, ईंधन-वन के पास, और बीच की दूरी दस डग "

"दस डग? वहुत खूब, हम एक-दूसरे से दस डग दूर से घृणा करते है।"

"चाहे तो आठ कर सकते हैं," पावेल पेत्रोविच ने कहा।

"वेशक, आठ क्यो न हो?"

"दोनो दो दो गोलिया दागेंगे। नागहानी के लिए दोनो की जेब में एक एक पत्र रहेगा कि अपनी मौत के खुद हम जिम्मेदार हैं।"

"वस बस, इस बात से मै कुछ सहमत नही," बज़ारोव ने कहा, "इससे जरा फ्रासीसी उपन्यासो की गध आती है। बात कुछ जचती नही।"

"हो सकता है। लेकिन यह तो आप मानेंगे ही कि हत्या का शक पैदा करना भी कोई खुशगवार बात नही।"

"मानता हू। लेकिन इस दु खद शक से बचने का एक तरीका है। यह सही है कि हम अपना मध्यस्थ साथ नही रखेंगे, लेकिन साक्षी तो रख ही सकते है।"

"क्या मैं पूछ सकता हू, ठीक कौन व्यक्ति आपकी नज़र में है?"

"क्यो, प्योत्र।"

"प्योत्र कौन?"

"आपके भाई का खवास। वह एक ऐसा आदमी है जो आधुनिक शिक्षा की वरकतो से लैस है और ढग से—कामिलफो*—अपनी भूमिका का निर्वाह भी कर सकता है।"

"लगता है कि आप मज़ाक कर रहे है, प्रिय महोदय!"

"विल्कुल नही। अगर आप मेरे सुझाव पर गभीरता से सोचे तो मालूम होगा कि वह सहज-वुद्धि और सरलता से पगा है। हत्या छिपी तो रहेगी नही, लेकिन प्योत्र को इस मौके के लिए तैयार करने और उसे युद्धस्थल तक लाने का जिम्मा मैं लेता हू।"

"आप तो वरावर मज़ाक करने पर तुले है," अपनी कुर्सी से उठते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "लेकिन जिस शिष्ट मनोभाव का आपने परिचय दिया है, उसके वाद कोई शिकवा करने की गुजाइश नही रह जाती सो मामले को तय समझा जाए लेकिन हा, पिस्तौले तो आपके पास है न?"

"पिस्तौलो से मेरा भला क्या वास्ता हो सकता है, पावेल पेत्रोविच? मैं कोई योद्धा तो हू नही।"

"तव मैं अपने पिस्तौल ही आपके सामने हाज़िर कर दूगा। विश्वास करे, पाच साल से मैंने उन्हे हाथ मे छुआ तक नही है।"

"यह आपने अच्छी दिलासे की खवर दी।"

पावेल पेत्रोविच ने अपना वेंत उठा लिया।

---

*मौके के मुताविक। (फ्रेंच)—सं०

"हा तो, प्रिय महानुभाव, अब इतना ही काम और बाकी रहा है कि आपको धन्यवाद देकर यहा से विदा लू जिससे आप अपने अध्ययन में फिर जुट सके। आपका विनम्र सेवक, श्रीमान!"

"कल के सुखद मिलन तक के लिए विदा, प्रिय महोदय!" बाहर तक जाकर उन्हे विदा करते हुए बजारोव ने कहा।

पावेल पेत्रोविच विदा लेकर चल दिए। बज़ारोव कुछ देर तक बद दरवाज़े के पीछे खडा रहा। फिर सहसा बोल उठा "हु, पूरा शैतान है। कितना नफीस और कितना बेवकूफ! और कितना भोडा नाटक किया हमने यह! जैसे दो सधे हुए कुत्ते अपनी पिछली टागो पर कुदक रहे हो। लेकिन मैं उससे भली भाति इन्कार भी तो नही कर सकता था? अगर वह हाथ उठा बैठता तो " (इस विचार मात्र से बज़ारोव स्तब्ध हो गया और उसका समूचा अभिमान विद्रोह कर उठा) "तो बिलौटे की भाति मैं उसका गला घोट देता।" वह अपनी खुर्दबीन के पास लौट आया, लेकिन उसका हृदय उद्वेलित हो गया था और परीक्षण के लिए आवश्यक स्थिरता गायब हो चुकी थी। वह सोच रहा था–"उसने आज हमें देख लिया, लेकिन अपने भाई की खातिर क्या वह इस हद तक अपने आपको उत्तेजित कर सकता है? चुम्बन न हुआ, कहर हो गया। हो न हो, इसके पीछे कोई और बात है। ऊह, मुझे तो लगता है कि वह उससे प्रेम करता है। बेशक, करता है। दिन की रोशनी की भाति एकदम साफ यह अच्छा झमेला उठ खडा हुआ। चाहे जिस पहलू से देखो," अन्त में उसने निश्चय किया। "मामला टेढा है। सब से पहली बात तो यह कि खतरा मोल लो, दूसरे यह कि और भी कुछ नही तो यहा से कूच तो करना ही होगा, फिर आरकादी है और स्वर्ग का वह फरिश्ता

निकोलाई पेत्रोविच है, खुदा उसे अपने साय मे रखे। ऊह, मामल टेढा है, एकदम टेढा!"

जैसे-तैसे, एक अजीव खामोशी तथा अनमने ढग से, दिन वीता फेनिचका के तो अस्तित्व तक में सन्देह होता था। बिल में दुवक चूहे की भाति वह अपने कमरे में ही बैठी रही। निकोलाई पेत्रोवि अलग परेशान थे। उन्हे पता चला था कि गेहू के उनके खेत में फफू लग गई है। अपनी इस फसल से वह खास उम्मीद वाधे हुए थे। पावे पेत्रोविच की वरफानी शिष्टता हरेक को – यहा तक कि प्रोकोफिच क भी – आतकित किए थी। वज़ारोव ने अपने पिता को एक पत्र लिखन शुरू किया, फिर उसके टुकडे टुकडे कर डाले और मेज़ के नीचे उ फेंक दिया। "अगर मै मर गया," उसने मोचा, "तो वे इसकी खव सुन ही लेगे। लेकिन मै मरुगा नही। अभी मुझे वहुत वाजिया जीतन हैं।" उसने प्योत्र से कहा कि कल सुवह पौ फटते ही आकर मिले ज़रूरी काम है। प्योत्र इस खयाल में था कि वह उसे अपन सा पीतर्सवर्ग ले जाना चाहता है। वज़ारोव वहुत देर से विस्तर पर गया और सारी रात वेतुके सपने उसे परेशान करते रहे ओदिनत्सोवा उ सपनो में दिखाई दी। ओदिनत्सोवा भी थी और साथ ही उसकी म भी। काली मूछोवाली एक विल्ली उसके साथ लगी थी और य विल्ली फेनिचका थी। पावेल पेत्रोविच एक वडे जगल की शक्ल दिखाई दिए जिनके साथ उमे अभी द्वन्द्व-युद्ध करना था। प्योत्र चार वजे आकर उसे जगाया। उसने जल्दी मे कपडे पहने और उसव साथ वाहर निकल गया।

उजली और स्वच्छ सुवह थी। ताजगी से भरी। आकाश क पीतवर्ण नीलिमा में रूई के गालो जैसे छोटे छोटे रगविरगे वादल स थे। ओस की वूदें पत्तो और घास पर छाई थी और मकडी के जाल

में मोतियो की भाति चमचमा रही थी। काली नम धरती अभी भी ऊषा की गुलाबी आभा से रगी थी। लवा पक्षी का सगीत आकाश से निर्झर की भाति बरस रहा था। बज़ारोव ईंधन-वन पहुचा और वन के छोर पर छाव में बैठ गया। तभी उसने प्योत्र को बताया कि उसे क्या काम करना है। पढा-लिखा खवास डर के मारे बदहवास-सा हो गया। लेकिन बज़ारोव ने यह भरोसा देकर उसे धीरज बधाया कि तुम्हे तो केवल दूर खड़े होकर बस देखते भर रहना है, और यह कि तुमपर कोई जिम्मेदारी नही आएगी। "तुम खुद ही ज़रा सोचो," अन्त में उसने कहा, "कि कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निबाहना तुम्हारे भाग्य में लिखा है।" प्योत्र ने अपने हाथ फैलाए, नज़र जमाए धरती की ओर देखता रहा, चेहरा उसका एकदम हरा पड गया और बदन को बर्च वृक्ष के सहारे टिका लिया।

मारिनोवाली सडक जगल का चक्कर लगाती चली गई थी। सडक की हल्की धूल ने कल से किसी पहिए या पाव का मुह नही देखा था। बज़ारोव की नज़र बरबस सडक की थाह ले रही थी, घास की कोपलो को नोचकर दातो से कुतर और बार बार अपने से कह रहा था "यह क्या हिमाकत है!" सुबह की हवा इतनी सर्द थी कि एक या दो बार उसका बदन झुरझुरा गया प्योत्र ने मातमी नज़र से उसकी ओर देखा, लेकिन बज़ारोव केवल मुसकरा दिया—उसके पौरुष ने घुटने नही टेके थे।

सडक पर टापो की आवाज़ सुनाई दी पेडो की ओट में से एक किसान उभर आया। वह टगडी बधे दो घोडो को हाक रहा था। पास से गुज़रते समय, बिना किसी सलाम-दुआ के, उसने कुछ अजीब नज़र से बज़ारोव की ओर देखा। प्योत्र को यह प्रत्यक्षत अपसगुन मालूम हुआ। "यह आदमी भी," बज़ारोव ने सोचा, "मुह-अधेरे

ही उठ आया है, लेकिन इसके सामने कम से कम एक काम तो है मगर हम ?"

"लगता है कि वह आ रहे हैं," प्योत्र फुसफुसाया।

बज़ारोव ने सिर उठाया और पावेल पेत्रोविच पर उसकी नज़र पडी। हल्की चेकदार जाकेट और बर्फ-सी सफेद पतलून पहने वह तेज डगो से सडक पर चले आ रहे थे। बगल में एक पेटी दबाए थे जो हरे कपडे मे लिपटी थी।

"माफ करना। मैं डर रहा था कि कही आप देर से इन्तज़ार न कर रहे हो," पहले बज़ारोव और फिर प्योत्र की ओर सिर झुकाते हुए उसने कहा—प्योत्र की ओर इस अन्दाज़ में मानो मध्यस्थ होने के नाते वह उसकी ओर यह सम्मान जता रहे हो। फिर बोले "हुआ यह कि मैं अपने खवास को जगाना नही चाहता था।"

"ठीक है," बज़ारोव ने जवाब दिया, "हम खुद भी अभी अभी आए हैं।"

"ओह, तब और भी अच्छा है," कहते हुए पावेल पेत्रोविच ने चारो ओर देखा। "कोई नज़र नही आता, बाधा का डर नही तो शुरू करे न?"

"हा, शुरू करे।"

"मेरी समझ मे अब और कोई तफसील बताने की ज़रूरत नही।"

"नही, कोई ज़रूरत नही।"

"क्या आप गोली भरना चाहेगे?" पेटी मे पिस्तौलो को निकालते हुए पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"नही, आप खुद ही भर दीजिए। मैं इतने डग नाप लेता हू।" फिर हसी की मुद्रा में मुसकराते हुए बोला "मेरी टागें ज्यादा लम्बी है। एक, दो, तीन "

"येवगेनी वसीलियेविच !" प्योत्र हकला उठा, (वह ग्रास्पेन के पत्ते की भाति काप रहा था) "जो मन में ग्राए ग्राप करे। मैं इस पचडे से दूर रहूगा।"

"चार, पाच   दूर ही रहो, मेरे भाई। चाहो तो पेड की ग्रोट में खडे हो जाग्रो ग्रौर ग्रपने कान भी मूद लो, लेकिन ग्रांखें न मूदना। ग्रगर कोई गिर पडे तो लपककर उठा लेना   छै, सात, ग्राठ   " बज़ारोव रुक गया, ग्रौर पावेल पेत्रोविच की ग्रोर मुडते हुए बोला "इतना ही काफी होगा, या दो-एक डग ग्रौर डाल लू?"

"जैसा चाहो," दूसरी गोली भरते हुए पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया।

"ग्रच्छी बात है। दो-एक डग ग्रौर शामिल कर लिए जाए।" बज़ारोव ने जूते की नोक से ज़मीन पर एक लकीर खीची, फिर बोला "यह सीमा-रेखा है। लेकिन हा, सीमा-रेखा से हम कितने डग दूर रहेगे? यह भी एक महत्वपूर्ण बात है। कल इसपर हमने कोई विचार नही किया।"

"दस डग रख लीजिए, ग्रौर क्या!" बज़ारोव के ग्रागे पिस्तौल बढाते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "कृपा कर इनमें से एक चुन लीजिए।"

"ज़रूर चुनूगा। लेकिन पावेल पेत्रोविच, क्या ग्राप इस बात से सहमत नही हैं कि हमारा यह द्वन्द्व-युद्ध बेहूदगी की हद तक निराला है? ज़रा ग्रपने इस मध्यस्थ के चेहरे पर तो नज़र डालकर देखिए!"

"ग्राप ग्रभी तक इस मामले को एक मज़ाक समझने पर तुले है," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया। "मैं इससे इन्कार नही करता कि हमारा यह द्वन्द्व-युद्ध कुछ ग्रजीब है, लेकिन ग्रापको यह चेता

देना मैं अपना कर्तव्य समझता हू कि मैं पूरी सजीदगी से लडने जा रहा हू। A bon entendeur, salut!*"

"ओह नही, इसमे मुझे ज़रा भी शक नही कि हम एक-दूसरे को मटियामेट करने पर तुले है। लेकिन जैसा कि कहते है utile dulci**, चलते-चलाते थोडा हस लिया जाए तो क्या हर्ज। सो देखा आपने, आपके फासीसी टुकडे और मेरे लैटिनी मुहावरे मे कैसा जोड रहा।"

"लेकिन मै पूरी सजीदगी से लडने जा रहा हू," पावेल पेत्रोविच ने दोहराया और अपने मोर्चे पर डट गए। बज़ारोव भी अपनी पारी में सीमा-रेखा से दस डग हटकर खडा हो गया।

"आप तैयार है न?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"विल्कुल।"

"तो अब हम बढ सकते है।"

बज़ारोव ने धीमे से आगे की ओर हरकत की। पावेल पेत्रोविच भी उसकी ओर बढे—बाया हाथ अपनी जेब में खोसे और दाहिने से पिस्तौल के मुह को स्थिर गति से साधे "सीधे मेरी नाक को निशाना वनाए हुए है," बजारोव ने सोचा, "और देखो न, कितनी सावधानी से अपनी अधमिची आख मुझपर जमाए हुए है, लफगा कही का! लेकिन यह ऐसी चीज़ नही जो सुहावनी मालूम हो। मै उसकी घडी की चेन मे अपनी नज़र नही डिगने दूगा" तभी कोई चीज़ आनन-फानन में बज़ारोव के कान के पास से सनसनाती हुई निकल गई और क्षण वीतते न वीतते गोली दगने की आवाज आई। "मैंने

---

* जिन्हे कान है, वे सुने। (फ्रेंच) —स०

** एक पथ, दो काज। (लैटिन) —स०

अपने कानो से सुना," बज़ारोव के मस्तिष्क में ख़याल कौधा, "सो समझना चाहिए कि सब ठीक है।" वह एक डग आगे बढा और बिना निशाना साधे घोडा दबा दिया।

पावेल पेत्रोविच थोडा-सा छिटके और अपनी जाघ को उन्होंने दबोच लिया। उनकी सफेद पतलून पर से ख़ून की धारा बह चली।

बज़ारोव ने पिस्तौल नीचे फेंक दिया और अपने विपक्षी के पास पहुचा।

"क्या घायल हो गए?" उसने पूछा।

"सीमा-रेखा तक मुझे बुलाने का आपको अधिकार था," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "और घाव, सो कुछ नही। शर्तो के अनुसार अभी दोनो एक एक निशाना और साध सकते है।"

"मगर अफसोस, वह अभी नही हो सकता। उसे किसी और दिन के लिए छोडना होगा," पावेल पेत्रोविच को सभालते हुए जिनका रग अब पीला पडता जा रहा था, बज़ारोव ने जवाब दिया। "अब मैं द्वन्द्व-योद्धा नही, डाक्टर हू, और आपका घाव देखना मेरे लिए लाज़िमी है। प्योत्र, इधर आओ! जाने कहा जा छिपे हो?"

"ओह, यह कुछ नही   किसी मदद की मुझे ज़रूरत नही," धीरे धीरे, शब्दो का अटक अटक कर उच्चारण करते हुए, पावेल पेत्रोविच ने जवाव दिया, "और   हमें अभी   एक बार और   " उन्होंने अपनी मूछो में ताव देना चाहा, लेकिन उनका हाथ बेदम-सा लटक गया, आखें चढ गई और वह निश्चेत हो गए।

"ओह, बेहोशी का यह दौरा, भई खूब!" अनायास ही बज़ारोव के मुह से निकला और उसने पावेल पेत्रोविच को घास पर लिटा दिया। "देखें तो, आखिर मामला क्या है?" उसने कहा, जेब से रूमाल निकालकर खून पोछा और घाव के इर्द-गिर्द टोहकर देखा "हड्डी तो सही-सलामत है," वह बुदबुदाया, "ऊपरी घाव है,

गोली साफ पार हो गई, केवल एक पेशी वासतुस एकस्टर्नुस में हल्की-सी चोट लगी है। तीन सप्ताह में ही नाचने लायक हो जाएगा और वेहोशी का यह दौरा—कमाल है! भगवान ही वचाए इन कच्चे स्नायुवाले लोगो से! देखो न, चमडी कितनी नाजुक है!"

"मर तो नही गए, मालिक?" कापती आवाज में पीछे से प्योत्र घिघिया उठा।

वजारोव घूम गया।

"जाओ, और लपककर थोडा पानी तो ले आओ, वडे भाई। मरना कैसा, वह हम दोनो से ज्यादा दिन जिएगे!"

लेकिन ऐसा मालूम होता था कि मिट्टी का माधो नौकर कुछ समझा नही कि उससे क्या कहा जा रहा है, कारण वह टस से मस तक नही हुआ। पावेल पेत्रोविच ने धीरे धीरे अपनी आखे खोली। "अरे, इनकी जान निकल रही है," थरथराती आवाज मे प्योत्र ने कहा और क्रास के निशान वनाने लगा।

"ठीक कहते हो   चेहरा तो देखो जैसे वुद्धू हो!" क्षीण मुसकान के साथ घायल सज्जन ने कहा।

"क्या हुआ तेरे उस कम्वख्त पानी का! जा, जल्दी लपककर ले आ!" वज़ारोव ने चिल्लाकर कहा।

"कोई जरूरत नही   योही ज़रा सिर चकरा गया था   वस, सहारा देकर ज़रा उठा दीजिए   हा, अव ठीक है   इस खरोच पर थोडा पट्टी वाधने की ज़रूरत है, फिर तो मै अपने आप घर तक पहुच जाऊगा, या मेरे लिए गाडी भी भेजी जा सकती है। अगर आप चाहें तो द्वन्द्व-युद्ध को फिर से आरभ नही किया जाएगा। आपने वडी नेकी वरती   आज, केवल आज—इसका ध्यान रहे।"

"अतीत को कुरेदने की जरूरत नही," वजारोव ने जवाव दिया,

"श्रौर जहा तक भविष्य का सबध है, सो उसकी चिन्ता करना भी बेकार है, क्योकि मै यहा से तुरत खिसक जाना चाहता हू। हा, तो श्रब ज़रा पट्टी बधवा लीजिए। श्रापका घाव खतरनाक नही है। फिर भी खून का रोकना श्रच्छा होगा। लेकिन पहले इस मरदूद के होश ठिकाने पर ले श्राए।"

बज़ारोव न प्योत्र का कालर पकडकर झझोडा श्रौर गाडी लाने के लिए उसे रवाना कर दिया।

"श्रौर देखो, मेरे भाई को घबरा न देना," पावेल पेत्रोविच ने ताडना की, "तुम्ही जानो, श्रगर कुछ भी उनसे कहने का दुस्साहस किया तो!"

प्योत्र लपक गया। उसके गाडी लेकर श्राने तक दोनो प्रतिद्वन्द्वी खामोश बैठे रहे। पावेल पेत्रोविच ने कोशिश की कि बज़ारोव दिखाई तक न दे। वह कतई नही चाहते थे कि उससे सुलह हो। श्रपने उद्धतपन श्रौर श्रसफलता पर शर्म से गडे जा रहे थे। उन्हे शर्म मालूम हो रही थी कि उन्होने यह तूफान खडा किया, हालाकि वह यह भी श्रनुभव कर रहे थे कि मामले का इससे ज्यादा सन्तोषजनक श्रन्त नही हो सकता था। "जो हो," उन्होने श्रपने को तसल्ली दी, "एक श्रच्छी बात यह हुई कि श्रब वह यहा से दफा हो जाएगा।" खामोशी श्रटपटी श्रौर त्रस्त करनेवाली बनती जा रही थी। दोनो कसमसा उठे थे। दोनो को यह श्रहसास था कि एक-दूसरे की स्थिति को पूर्णतया समझ रहे है। यह श्रनुभूति मित्रो के बीच सुखद मालूम होती है, लेकिन शत्रुश्रो के बीच श्रत्यन्त दु खद। खासतौर से उस समय जबकि मामले को ठीक ढग से रखने या साथ छोडने की कोई गुजाइश न हो।

"क्यो, पट्टी कुछ जरूरत से ज्यादा कसकर तो नही वध गई?" बज़ारोव ने आखिर पूछा।

"नही, ठीक है, बहुत ठीक," पावेल पेत्रोविच ने जवाव दिया। फिर थोडा रुककर वोले "मेरे भाई भुलावे में आनेवाले नही हैं। उन्हे वताना ही होगा कि राजनीति ने हमे टकरा दिया।"

"बहुत खूब," बज़ारोव ने कहा, "आप उनसे कह सकते हैं कि मै अंग्रेज़ियत के तमाम शैदाइयो की पगडी उछालने पर उतर आया था।"

"भई वाह!" पावेल पेत्रोविच ने कहा और फिर एक किसान की ओर इशारा करते हुए वोले "कुछ वता सकते हो कि वह हमारे वारे में क्या सोच रहा है?"

यह वही किसान था जो द्वन्द्व-युद्ध से कुछ मिनट पहले टगडी वधे घोडो को हाकता बज़ारोव के पास से गुज़रा था। वह अब लौट रहा था। इस वार, कुलीनो पर नज़र पडते ही, उसने अपने आपको सभाला और टोपी उतारकर सिर झुकाया।

"खुदा ही जाने," बज़ारोव ने जवाव दिया, "शायद वह कुछ भी नही सोच रहा है। रूसी किसान एक रहस्यमय जीव है—एक अजनवी प्राणी जिसके वारे मे श्रीमती रेडक्लिफ ने इतना अधिक वखान किया है। कौन जाने? शायद वह खुद भी न जानता हो कि वह क्या सोच रहा है।"

"सो ऐसा सोचते है आप," पावेल पेत्रोविच ने कहना शुरू किया और फिर अचानक चिल्ला उठे. "देखो न, तुम्हारे उस गवे के वच्चे प्योत्र ने जाकर क्या तमाशा किया है! मेरे भाई सडक को चीरते चले आ रहे हैं!"

बज़ारोव घूमा और गाडी में बैठे निकोलाई पेत्रोविच पर उसकी नज़र पडी। उनका चेहरा पीला पड गया। गाडी के रुकने से पहले ही वह उछलकर बाहर आ गए और लपककर अपने भाई के पास पहुचे।

"क्या क्या मतलब है इसका?" विचलित आवाज़ में वह चिल्लाए, "येवगेनी वसीलियेविच, आखिर मामला क्या है?"

"सब ठीक है," पावेल पेत्रोविच ने जवाब दिया, "कम्बख्तो ने नाहक आपको परेशान किया। मिस्टर बज़ारोव और मुझमें ऐसे ही झडप हो गई थी, और मुझे थोडी मात खानी पडी।"

"आखिर हुआ क्या, खुदा के लिए बताइए न?"

"अच्छा, अगर जानना ही चाहते है तो सुनिए। मिस्टर बज़ारोव ने सर रौबर्ट पील की शान में कुछ बेजा शब्दो का इस्तेमाल किया। लेकिन साथ ही यह भी मै तुरत बता दू कि दोष सारा मेरा था। मि० बज़ारोव न अपना बरताव शानदार रखा। मैने ही उन्हे चुनौती दी।"

"लेकिन, हे मेरे भगवान, आपके बदन से तो खून बह रहा है?"

"तो क्या आप समझते थे कि मेरी रगो में पानी भरा है? लेकिन इस तरह थोडा खून बह जाना स्वास्थ्य के लिए बुरा नही होता। क्यो, ठीक है न, डाक्टर महोदय? समझे भाई, यह उदासी छोडो, और सहारा देकर मुझे गाडी में बैठने में मदद दो। कल तक मै बिल्कुल चगा हो जाऊगा। हा, इस तरह, बहुत ठीक। चलो, कोचवान, अब ज़रा लपक चलो!"

निकोलाई पेत्रोविच गाडी के साथ हो लिए। बज़ारोव पीछे था .

"जब तक शहर से दूसरा डाक्टर नही आ जाता," निकोलाई पेत्रोविच ने उससे कहा, "तब तक मेरे भाई की देख-भाल आपको ही करनी होगी।"

बज़ारोव ने चुपचाप सिर झुका लिया।

घटा भर वाद पावेल पेत्रोविच विस्तरे पर लेटे थे। टाग की मरहम-पट्टी वडी दक्षता से की गई थी। सारे घर में एक कुहराम-सा मचा था। फेनिचका को गश आ गया था। निकोलाई पेत्रोविच, नज़र बचाकर, हाथो को मरोड रहे थे। पावेल पेत्रोविच हस और मज़ाक कर रहे थे—खासतौर से वज़ारोव के साथ। वह कैम्ब्रिक की वढिया कमीज़ पहने थे, कमीज पर लकदक प्रात कालीन जाकेट सजी थी और सिर पर फैज टोपी लगाए थे। उन्होने खिडकियो के परदे तक नही गिराने दिए और परहेज़ के नाम पर भूखे रहने की ज़रूरत का मज़ाक उडाते हुए शिकायत की।

लेकिन रात को ताप वढ गया और माथा दर्द करने लगा। शहर से डाक्टर आया (निकोलाई पेत्रोविच ने अपने भाई की ना-नुकर कुछ नही सुनी और खुद वज़ारोव ने भी डाक्टर को बुलाने पर ज़ोर दिया था। वह दिन भर अपने कमरे में ही बैठा रहा, चेहरे पर तनाव और पीलापन लिए। वीच बीच में, वहुत थोडी देर के लिए, रोगी को भी देख आता। एक या दो वार फेनिचका से भी मुठभेड हुई जो उसे देखते ही भय से सकपकाकर सिमट गई।) नये डाक्टर ने स्फूर्तिदायक पेय की तजवीज़ की और कुल मिलाकर वज़ारोव के इस आश्वासन की पुष्टि की कि खतरे की सम्भावना कतई नही है। निकोलाई पेत्रोविच ने डाक्टर को वताया कि उनके भाई दुर्घटनावश घायल हो गए। सुनकर डाक्टर ने 'हु!' किया, लेकिन उसी क्षण चादी के नगद पच्चीस रूवल पाकर वोले "आश्चर्य! कोई अनहोनी वात नही, आप जानते ही है!"

घर में न तो किसी ने कपडे वदले और न ही कोई सोने गया। रह रहकर निकोलाई पेत्रोविच पजो के वल अपने भाई के कमरे में जाते और पजो के वल ही लौट आते। रोगी गहरी नीद से

घिरा था। वह थोड़ा-सा कराह उठा , फ्रेंच भाषा में "Couchez-vous"* कहा और पीने के लिए कुछ मागा। एक बार लेमनेड का गिलास लेकर निकोलाई पेत्रोविच ने फेनिचका को भेजा। पावेल पेत्रोविच ने एकटक उसे देखा और गिलास खाली कर दिया। सुबह होते न होते ताप कुछ और बढ चला और रोगी को हल्का सरसाम हो गया। पहले तो अनाप-शनाप जाने क्या बकते रहे , फिर अचानक अपनी आखें खोली और चिन्तित मुद्रा में भाई को अपने ऊपर झुका हुआ देखकर बुदबुदा उठे

"क्यो निकोलाई, क्या आपको ऐसा नही मालूम होता कि फेनिचका में नेली की कुछ छाप है ? "

"नेली कौन, पावेल ? "

"अरे, इतना भी नही जानते! वही राजकुमारी 'र'। खासतौर से उसके चेहरे का ऊपरी हिस्सा। C'est de la même famille!**"

निकोलाई पेत्रोविच ने कुछ जवाब नही दिया। लेकिन यह सोचकर उन्हे हैरानी हुई कि आदमी की पुरानी भावनाए उसे कितना जकडे रहती है। "यही समय होता है जब वे उभरना शुरू करती है ," उन्होने सोचा।

"ओह, कितना प्यार करता हू मैं उस पागल को," पावेल पेत्रोविच कराह उठे और वेदना से सिर के पीछे अपने दोनो हाथो को उमेठा। एकाध मिनट बाद फिर बडबडाए "मै यह बरदाश्त नही कर सकता कि कोई बदमाश उसे छूने तक का साहस करे "

---

*लेट जाए। (फ्रेंच) – स०

**उसी साचे में ढला हुआ है। (फ्रेंच) – स०

निकोलाई पेत्रोविच ने एक उसास भरी। उन्हे इसका गुमान तक नही था कि इन शब्दो का असली तात्पर्य क्या है।

अगले दिन, सुबह आठ बजे के करीब, बज़ारोव उन्हे देखने के लिए आया। उसने अपना सामान वाध लिया था और अपने सारे मेंढको, कीडो और पक्षियो को रिहा कर दिया था।

"तो आप विदा लेने के लिए आए हैं, क्यो?" मिलने के लिए उठते हुए निकोलाई पेत्रोविच ने कहा।

"जी हां।"

"मैं आपकी भावना की कद्र और उसका पूर्णतया समर्थन करता हू। इसमें शक नही, दोष मेरे दयनीय भाई का है, और उन्हे इसकी सज़ा भी मिल चुकी है। उन्होने खुद मुझे वताया कि यह उनके ढील देने का—आपको ऐसी स्थिति में रखने का—नतीजा है। इसके सिवा आप और कुछ नही कर सकते थे। और मै समझता हू कि आप उस द्वन्द्व-युद्ध को भी नही टाल सकते थे जो जो एक हद तक केवल आपके पारस्परिक विचारो के निरन्तर विरोध के कारण हुआ।" (निकोलाई पेत्रोविच वोलने में कुछ उलझ गए थे।) "मेरे भाई पुराने ढर्रे के आदमी है, तेज़-दिमाग और हठी खुदा का शुक्र है कि मामले का अन्त किसी अन्य रूप में न होकर इस रूप में हुआ। मामले को दवाने के लिए जो कुछ करना ज़रूरी था, वह सव मैंने कर लिया है "

"मै आपके पास अपना पता छोड जाऊगा, अगर कोई वखेडा हो तो," वज़ारोव ने यो ही वेपर्वाही से कहा।

"मै आशा यही करता हू कि कोई वखेडा नही होगा, येवगेनी वसीलियेविच मुझे इस वात का वडा दुख है कि हमारे घर में

आपके प्रवास का इस   इस तरह अन्त हुआ। और सबसे ज्यादा दु ख तो मुझे इस बात का है कि आरकादी "

"सम्भवत उससे भेंट होगी," बज़ारोव ने जो हर प्रकार की 'सफाइयो' और 'भावुकता के प्रदर्शनो' से चिढता था, बीच में ही कहा, "अगर नही तो कृपा कर उससे मेरा अभिवादन कहे और आप खुद भी मेरा अनुताप स्वीकार करे।"

"और आप भी कृपया " निकोलाई पेत्रोविच ने कहना शुरू किया, लेकिन बज़ारोव उनके कथन को बीच में ही छोड वहा से चला आया।

यह मालूम होने पर कि बज़ारोव जा रहा है, पावेल पेत्रोविच ने उससे मिलने की इच्छा प्रकट की, और उससे हाथ मिलाया। लेकिन बज़ारोव बर्फ की भाति सर्द बना रहा। उसे लगा कि पावेल पेत्रोविच उदारता का अभिनय करना चाहते है। फेनिचका से विदा लेने का उसे अवसर नही मिला। केवल खिडकी की राह एक नज़र डालकर रह गया। उसे लगा जैसे उसका चेहरा उदास हो। "मालूम होता है, इसके लिए यह भारी पडेगा," उसने मन ही मन सोचा, "जो हो, आशा करनी चाहिए कि वह किसी तरह पार कर ले जाएगी।" प्योत्र शोक से इतना अभिभूत हो गया कि उसके कधे पर सिर रखकर रोने लगा। आखिर यह कहकर बज़ारोव ने उसे सभाला कि "बस बस, आसुओ की यह बाढ अब बद करो!" दुन्याशा तो अपनी आकुलता को छिपाने के लिए ईंधन-वन में जा छिपी। इस सारे ऊहापोह और आकुलता का मूलाधार—बज़ारोव—आखिर गाडी में सवार हुआ, अपने सिगार को उसने सुलगाया और कोस भर आगे मोड के पास किरसानोव का खेत और नया बना मकान जब आखिरी बार उसकी आखो के सामने

से गुज़रा तो वह थूकते हुए केवल इतना ही वुदवुदाया "कमवख्त सामन्तशाही!" और उसने अपना कोट वदन के और भी निकट समेट लिया।

पावेल पेत्रोविच जल्द ही ठीक होने लगे। लेकिन फिर भी करीव सात दिन तक उन्हे विस्तरा सेना पडा। अपनी इस 'कैद' को—जैसा कि वह कहते थे—उन्होने धीरज के साथ सहा। लेकिन अपनी सफाई-धुलाई पर वह काफी हल्ला मचाते और कमरे को वार वार सुवासित करने के लिए जान खाते। निकोलाई पेत्रोविच उन्हे पत्र-पत्रिकाए पढकर सुनाते, फेनिचका पहले की भाति तत्पर रहती—उनके लिए शोरवा, लैमनेड, अध-उवले अडे, चाय लेकर आती। लेकिन हर वार जव भी वह कमरे में पाव रखती, एक अनवूझ भय उसे जकड लेता। पावेल पेत्रोविच के उतावले आचरण से यो तो समूचे घर की जान सासत में थी, लेकिन फेनिचका की अन्य सवसे अधिक। केवल प्रोकोफिच ऐसा था जो ज़रा भी विचलित नही हुआ। वह अपने ज़माने के कुलीनो की चर्चा करता कि लडते वे भी थे, लेकिन असली कुलीनो की भाति, और इस तरह के वदमाशो के लिए तो वे वस सीधे अस्तवल में ले जाकर कोडे लगाने की सज़ा देते थे ताकि उनकी सारी गुस्ताखी झड जाए।

फेनिचका अपने हृदय में किसी खास खटक का, आत्मप्रतारणा का, अनुभव नही करती थी। लेकिन कभी कभी झगडे के असली कारण का आभास उसे उलझन में डाल देता। फिर पावेल पेत्रोविच कुछ इतनी अजीव दृष्टि से उसकी ओर देखते थे. उनकी ओर पीठ किए होने पर भी वह उनकी नज़र की सरसराहट का अनुभव करती।

अनवरत व्यग्रता से वह पतली हो चली और, जैसा कि होना था, उसका सलोनापन और अधिक निखर आया।

एक दिन–सुबह का समय था–पावेल पेत्रोविच का जी काफी अच्छा था और वह बिस्तरे से अपने सोफे पर आ गए थे। निकोलाई पेत्रोविच आए और उनकी तबीयत का हाल पूछकर खलिहान चले गए। फेनिचका चाय की प्याली लेकर आई और उसे मेज़ पर रखकर लौट ही रही थी कि पावेल पेत्रोविच ने उसे रोका।

"ऐसी जल्दी क्या है, फेदोसिया निकोलायेवना?" उन्होंने कहना शुरू किया। "क्या कोई खास काम अटका है?"

"नही, मालिक लेकिन चाय के प्याले तो तैयार करने ही हैं।"

"यह काम तो तुम्हारे बिना दुन्याशा भी कर लेगी। कुछ देर तो बीमार के पास बैठो। ऐसे ही तुमसे कुछ बात करना चाहता हू।"

फेनिचका आरामकुर्सी के छोर पर चुपचाप बैठ गई।

"देखो," अपनी मूछो से उलझते हुए पावेल पेत्रोविच ने कहा, "बहुत दिनो से मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता था। ऐसा मालूम होता है जैसे तुम मुझसे डरती हो, क्यो?"

"मैं, मालिक?"

"हा, तुम। तुम कभी मेरी ओर आख उठाकर नही देखती। जैसे तुम्हारा हृदय साफ नही हो।"

फेनिचका लाल हो आई। लेकिन उसकी आखें घूमकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुडी। वह अपनी उसी विचित्र दृष्टि से उसे टोह रहे थे। फेनिचका का हृदय सकपका गया।

"तुम्हारा हृदय तो साफ है न, क्यो?" उन्होंने ज़ोर देकर पूछा।

"साफ क्यो नही होगा?" फेनिचका फुसफुसाई।

"कौन जाने! पता नही, किसका बुरा सोचा है तुमने? मेरा? इसकी सम्भावना नही। घर में किसी अन्य का? वह भी मुमकिन नही। शायद मेरे भाई का? लेकिन तुम उसे प्यार करती हो—करती हो न?"

"हा, करती हू।"

"अपनी समूची आत्मा और हृदय से?"

"निकोलाई पेत्रोविच को मैं जी-जान से प्यार करती हू।"

"सच? मेरी ओर देखो, फेनिचका।" (पहली वार उन्होने उसे इस नाम से सम्वोधित किया था।) "जानती ही हो, झूठ वोलना कितना वडा गुनाह है।"

"मैं झूठ नही वोल रही हू, पावेल पेत्रोविच। निकोलाई पेत्रोविच को मैं प्यार न करू, यह क्या सम्भव है? ऐसा होने पर मैं जी नही सकती।"

"और अन्य किसी की भी खातिर तुम उसे छोड नही सकती?"

"उन्हे भला मै किसकी खातिर छोड सकती हू?"

"यह कोई कैसे जान सकता है? लेकिन, मान लो, उन्ही सज्जन की खातिर जो अभी यहा से विदा हुए है।"

फेनिचका वैठी न रह सकी। उठती हुई वोली·

"हाय राम, मुझे इतना क्यो सताते है, पावेल पेत्रोविच? मैंन आपका क्या विगाडा है? ऐसी वात आप अपने मुह से कैसे निकाल सके?"

"फेनिचका," उदास लहजे में पावेल पेत्रोविच ने कहा, "जानती हो, मैंने खुद अपनी आखो से   "

"क्या देखा था, मालिक?"

"वहा   कुज में।"

फेनिचका के वालो की जडें तक लाल हो उठी।

"लेकिन उसके लिए मुझे कैसे दोपी ठहराया जा सकता है?" काफी प्रयास के वाद उसके मुह से निकला।

पावेल पेत्रोविच सीधे उठ वैठे।

"तो दोष तुम्हारा नही था? नही, ज़रा भी नही?"

"निकोलाई पेत्रोविच के सिवा इस दुनिया में मै और किसी से प्रेम नही करती, और जव तक मुझमें जान है मैं उन्हे प्यार करती रहूगी," फेनिचका के शब्दो में अचानक, जाने कहा से, एक शक्ति आ गई और उसका गला सुबकियो से भर उठा, "और जहा तक उसका सम्वन्ध है जो आपने देखा, तो उस दिन जव भगवान मेरा न्याय करेगे, मैं कसम खाकर कहूगी कि कसूर मेरा नही था, और यह कि अपने उपकारी के प्रति–निकोलाई पेत्रोविच के प्रति–ऐसी वात का–ऐसे लाछन का–सन्देह किए जाने से तो यह कही अच्छा है कि मै इसी क्षण शेष हो जाऊ "

कहते कहते उसका गला रुध गया, उसकी आवाज़ टूट गई। साथ ही उसी क्षण उसे चेत हुआ कि पावेल पेत्रोविच ने उसका हाथ थाम लिया है और उसे अपने हाथो से दवोच रहे हैं उसने उनकी ओर देखा और अचरज से स्तब्ध होकर रह गई। उनका चेहरा और भी पीला पड गया था, उनकी आखें चमचमा रही थी और सबसे आश्चर्यजनक यह कि एक बडा-सा एकाकी आसू उनके गाल पर से ढुरक रहा था।

"फेनिचका," उन्होने चौंका देनेवाली फुसफुसाहट में कहा, "मेरे भाई से मोहब्बत करना, उसे अपना प्यार देना। ओह, वह कितना सदय, और कितना भला है! दुनिया में किसी के लिए भी उससे दगा न करना, किसी की ओर भी कान न देना। ज़रा सोचो तो, इससे अधिक भयानक और क्या होगा कि जो प्यार करता है, वह प्यार न पाए। मेरे निरीह निकोलाई का कभी साथ न छोडना, उसे कभी धता न बताना!"

फेनिचका की आखें अव सूख गई थी और उसका भय तिरोहित

हो गया था—अचरज ने इस हद तक उसे अभिभूत कर लिया था। और उस समय जब पावेल पेत्रोविच ने—हा, खुद पावेल पेत्रोविच ने ही—उसका हाथ उठाकर अपने होठो से लगाया और बिना चूमे ही होठो से उसे सटाए रहे और सिर्फ रह रहकर—बरबस और बेसुध—उसासे भरते रहे

"हे भगवान," फेनिचका ने सोचा, "कही ऐसा तो नही कि इन्हे कोई दौरा पडनेवाला हो !"

उस क्षण खण्डहर जीवन की तमाम स्मृतिया उस आदमी को थपेडे मार रही थी।

तभी जीने की सीढिया तेज डगो के नीचे चरमरा उठी उन्होने उसे अलग धकेल दिया और खुद अपने तकिए पर लुढक गए। दरवाज़ा खुला और निकोलाई पेत्रोविच ने भीतर पाव रखा। वह प्रसन्नता से खिले थे, चेहरा ताज़गी और गुलाबी आभा से दमक रहा था। मित्या, अपने पिता की भाति ताज़गी और गुलाबीपन लिए, केवल कमीजनुमा फतुरी पहने, उनके सीने पर उछल और किलबिला रहा था। उसके नगे पावो की छोटी छोटी उगलिया घर के कते-बुने उनके कोट के बडे बडे बटनो में रह रहकर उलझ जाती थी।

फेनिचका अनायास ही उनकी ओर लपकी, उनके तथा अपने बच्चे के इर्द-गिर्द अपनी बाहें डाली और उनके कधे से अपना सिर सटाकर कुनमुनाने लगी। निकोलाई पेत्रोविच चकित रह गए—उनकी लजीली और गभीर फेनिचका ने उनके प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन किसी तीसरे व्यक्ति के सामने आज तक कभी नही किया था।

"अरे, आज तुम्हे यह क्या हुआ ?" उन्होने कहा और अपने भाई की ओर एक नजर डालते हुए मित्या को फेनिचका के हाथो में सौंप

दिया। फिर पावेल पेत्रोविच के पास जाकर पूछा "कही ऐसा तो नही कि आपकी तबीयत फिर गडबडा गई हो?"

पावेल पेत्रोविच ने कैम्ब्रिक के रूमाल में अपना चेहरा दुबका लिया।

"नही कुछ नही मैं ठीक हू बल्कि कहिए कि कही अच्छा महसूस कर रहा हू।"

"लेकिन आपको सोफे पर आने में इतनी उतावली नही करनी चाहिए।" फिर फेनिचका की ओर मुडते हुए बोले "अरे, तुम कहा जा रही हो?" लेकिन वह तब तक बाहर निकलकर दरवाजा बद भी कर चुकी थी। "तुम्हे दिखाने के लिए ही तो मै नन्हे को लेकर यहा आया था – यह कि अपने ताऊजी के लिए वह कितना ललकता है। लेकिन वह उसे लेकर भाग क्यो गई? तुम दोनो के बीच यहा कुछ कहा-सुनी तो नही हुई?"

"भाई।" पावेल पेत्रोविच ने गभीर भाव से कहा।

निकोलाई पेत्रोविच चौंके। सहमकर स्तब्ध-से रह गए, जाने क्यो।

"भाई," पावेल पेत्रोविच ने दोहराया, "मेरा एक अनुरोध है। वचन दो कि उसे पूरा करोगे।"

"कैसा अनुरोध? क्या कहना चाहते है आप?"

"वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। तुम्हारे जीवन की समूची खुशी, मेरी समझ में, उसपर निर्भर करती है। इधर काफी मैंने विचार किया है, उस बात पर जो मै तुमसे कहने जा रहा हू भाई, अपना दायित्व पूरा करो, एक ईमानदार और खरे आदमी का दायित्व। माया-मोह और उस बुरी मिसाल का अन्त कर दो जो कि तुम रख रहे हो, तुम जो नरो में श्रेष्ठ हो।"

"आप कहना क्या चाहते हैं, पावेल ?"

"यह कि फेनिचका से विवाह कर लो   वह तुमसे प्रेम करती है, वह तुम्हारे बच्चे की मा है।"

निकोलाई पेत्रोविच सकपकाकर पीछे हटे और हवा में उन्होने अपने हाथ फेंके।

"और यह आप कहते है, पावेल? आप, जिन्हे मै इस तरह के विवाहो का सदा कट्टर विरोधी मानता रहा हू। यह आप कहते है? सच पूछो तो आपके प्रति सम्मान की भावना का खयाल करके ही मैंने वह नही किया जिसे आपने ठीक ही मेरा कर्तव्य कहा है।"

"तब तो मेरा ऐसा सम्मान करके तुमने ग़लती की," निराशापूर्ण मुसकान के साथ पावेल पेत्रोविच ने कहा, "अब तो मुझे भी कुछ ऐसा मालूम होने लगा है कि बज़ारोव ने आभिजात्य का जो आरोप मुझपर लगाया था, वह सही था। नही, भाई, नही, अब समय आ गया है कि दिखावे और सभा-समाज की चिन्ता को विदा कर दिया जाए। हम बूढे और निरीह जीव है। समय है कि अब दुनियावी टीमटाम को उतार फेंके। असल बात यह है कि अपना कर्तव्य निबाहना शुरू कर दें, जैसा कि तुम कहते हो। और कोई अचरज नही कि इसमें हमारे सुख के दिन भी छिपे हो।"

आलिंगन करने के लिए निकोलाई पेत्रोविच अपने भाई की ओर लपके।

"आपने तो पूर्णतया मेरी आखें खोल दी," वह चहक उठे, "मैंने हमेशा ही आपको दुनिया में सबसे दयावान और सबसे चतुर आदमी कहा है, और अब मै देखता हू कि आप जितने उदार है, उतने ही समझदार भी।"

"अरे, बस बस, ज़रा सभल के," पावेल पेत्रोविच ने टोका, "अपने इस समझदार भाई की टाग न कचर डालना जो करीब पचास साल की आयु में अधकचरे झडावरदार की भाति द्वन्द्व-युद्ध में कूद पडा। हा तो इस मामले को अब तय समझा जाए फेनिचका belle soeur * होगी।"

"प्यारे पावेल, लेकिन आरकादी क्या कहेगा?"

"आरकादी? क्यो वह खुशी के मारे छलछला उठेगा! माना कि विवाह का उसके सिद्धान्तो में स्थान नही है, लेकिन समता-समानता की उसकी भावना तो इसपर गर्व का अनुभव करेगी। और सच, सोचकर देखो तो हमारी इस उन्नीसवी शती में वर्ग-जाति है भी क्या चीज़!" फ्रेंच भाषा का पुट मिलाते हुए उन्होने कहा।

"ओह पावेल, पावेल, एक बार और गले लग लेने दो मुझे। घबराओ नही, मैं सावधान रहूगा।"

दोनो भाई आलिगन में गुथ गए।

"कहो, क्या खयाल है, अगर फेनिचका को अभी इस निर्णय की सूचना दे दी जाए तो?" पावेल पेत्रोविच ने पूछा।

"ऐसी जल्दी क्या है?" निकोलाई पेत्रोविच ने कहा, "अरे हा, कही ऐसा तो नही कि आपने उससे इस बारे में कुछ कहा-सुना हो?"

"भई खूब!" पावेल पेत्रोविच ने उद्‌गार प्रकट किया, "भला उससे क्या कहना-सुनना था?"

"यह अच्छा किया। पहले अच्छे हो जाओ, यह ऐसी चीज़ नही जो फिर हाथ न आए। इसपर खूब अच्छी तरह से विचार करना और सोचना-समझना ज़रूरी है "

---

* बहू। (फ्रेंच) – स०

"लेकिन तय तो तुम कर चुके हो, कर चुके हो न?"

"बेशक, तय कर चुका हू, और इसके लिए आपका तहे-दिल से शुक्रगुज़ार हू। अब मैं चलता हू। आपके लिए विश्राम करना जरूरी है। ज्यादा आवेग और विह्वलता आपके लिए अच्छी नही इसपर फिर वाते करेगे। अब सो जाइए, मेरे प्यारे भाई, खुदा आपको खूब भला-चगा बनाए।"

"यह शुक्रिया किस लिए?" अकेला रह जाने पर पावेल पेत्रोविच ने सोचा। "मानो यह उसपर निर्भर न हो! और जहा तक मेरा सम्बन्ध है, विवाह के होते ही मैं यहा से कही दूर चल दूगा—ड्रेस्डन, या फ्लोरेन्स, और जीवन के अन्तिम क्षणो तक वही बना रहूगा।"

पावेल पेत्रोविच ने माथे पर यू-द-कोलोन के छपके दिए और आखें मूद ली। दिन की रोशनी से आलोकित उनका क्षीण पीला चेहरा शव के सिर की भाति तकिए पर टिका था और सचमुच वह एक जीवित लाश थे भी!

२५

निकोलस्कोये के बगीचे में कात्या और आरकादी एक ऊचे ऐश वृक्ष की छाव में एक हरी-भरी मेंड पर बैठे थे। उनके पाव के पास उनका शिकारी कुत्ता फिफी पसरा था। उसका लम्बा बदन, बहुत ही कमनीय ढग से कमान की भाति बल खाए था—बिल्कुल 'खरहे की मुद्रा' में जैसा कि शिकारी लोग कहते है। कात्या और आरकादी दोनो चुप थे। आरकादी अपने हाथ में एक अधखुली किताब थामे था जबकि कात्या टोकरी में बाकी बचे रोटियो के चूरे को चुन चुनकर गौरैयो के एक छोटे से परिवार के सामने फेंक रही थी। गौरैया भी, अपनी सहज भीरु

ढिठाई के साथ, उसके पाव के पास ही फुदक और चहचहा रही थी। हल्की हवा के झोके ऐश वृक्ष के पत्तो को सरसरा रहे थे और थिरकते प्रकाश के स्वर्ण-पीत धब्बे छावदार पथ तथा फिफी की कत्थई पीठ पर नाच रहे थ। आरकादी और कात्या गहरी छाव में लिपटे थे और प्रकाश की एकाध रेखा जब तब कात्या के बालो को चमका जाती थी। दोनो में से वोल एक भी नही रहा था, लेकिन उनकी यह खामोशी और जिस प्रकार वे पास पास बैठे थे, विश्वासपूर्ण घनिष्ठता के ही सूचक थे। ऐसा मालूम होता था जैसे वे एक दूसरे के अस्तित्व से बेखबर हो, और फिर भी मन ही मन इस समीपता से प्रसन्न हो। उनके चेहरे भी—पिछली बार जब हमने उन्हे देखा था तब से—बदल गए थे। आरकादी अब पहले से ज्यादा शान्त और स्थिर नजर आ रहा था, और कात्या पहले से अधिक प्रफुल्ल तथा अधिक साहसपूर्ण।

"क्या तुम ऐसा नही सोचती, कात्या," आरकादी ने कहना शुरू किया, "कि ऐश वृक्ष के लिए रूसी शब्द बहुत ही फबता है। कोई भी अन्य वृक्ष इतने अछूते अन्दाज और सुस्पष्टता के साथ हवा में सिर ऊचा किए नजर नही आता।*"

कात्या ने अपनी आखें ऊपर उठाईं और बुदबुदा उठी "हा।" और आरकादी ने सोचा "कविता बघारने के लिए इसने मुझे झिडका नही।"

"हाइने मुझे पसन्द नही," आरकादी के हाथवाली किताब की ओर अपनी आखो से सकेत करते हुए कात्या ने घोषणा की। "न उस समय

---

* ऐश वृक्ष को रूसी में 'यासेन' कहते हैं जिसका दूसरा अर्थ है स्पष्ट, उजला।—अनु०

जब वह हसता है, और न तब जब वह रोता है। जब वह किसी सोच में डूबा और उदास होता है, तभी मुझे अच्छा लगता है।"

"और मुझे तब अच्छा लगता है जब वह हसता है," आरकादी ने अपनी राय दी।

"व्यग करने की तुम्हारी पुरानी आदत का असर अभी तक नही गया। इस समय वही प्रकट हो रहा है " ("पुरानी आदत का असर!" आरकादी ने सोचा, "काश, बजारोव यह सुन पाता।") "जरा धीरज रखो, तुम्हारी बाकायदा कायापलट हो जाएगी।"

"कौन करेगा मेरी कायापलट? —तुम?"

"कौन क्या—मेरी बहिन, पोरफिरी प्लातोनिच जिसके साथ तुम अब नही झगडते, और मेरी मौसी जिसके साथ तुम उस दिन गिरजा गए थे।"

"लेकिन मैं इन्कार भी तो नही कर सकता था, नही कर सकता था न? और जहा तक अन्ना सेर्गेयेवना का सबध है, तुम्हे याद होगा कि अनेक बातो में वह येवगेनी से सहमत थी।"

"मेरी बहिन उन दिनो उसके असर में थी, जैसे कि तुम थे।"

"जैसे कि मैं था? तो क्या मैं अब तुम्हे उसके प्रभाव से मुक्त मालूम होता हू?"

कात्या चुप रही।

"मैं जानता हू," आरकादी ने फिर कहा, "तुमने कभी उसे पसन्द नही किया।"

"मैं उसके भले-बुरे होने की परख नही कर सकती।"

"और क्या तुम जानती हो, कातेरीना सेर्गेयेवना? जब भी तुम्हारे मुह से मैंने यह उत्तर सुना, मुझे विश्वास नही हुआ ऐसा

एक भी व्यक्ति नही है जिसपर हममें से जो भी चाहे अपनी राय न दे सके। यह तो निरा वहाना वनाना है।"

"अच्छा तो सुनो, मैं तुम्हे बताती हू कि वह हा, यह तो मै ठीक से नही कह सकती कि उसे नापसद करती हू, लेकिन मुझे ऐसा लगता है जैसे वह मेरी प्रकृति से भिन्न जाति का जीव है और मैं उसकी प्रकृति से भिन्न जाति की जीव हू और वह तुम्हारी प्रकृति से भी भिन्न है।"

"सो कैसे?"

"किन शब्दो में मै इसे व्यक्त करू – वह बनैला है और हम-तुम पालतू।"

"मै भी पालतू हू?"

कात्या ने सिर हिलाया।

आरकादी ने अपना कान खरोचा।

"देखो, कातेरीना सेर्गेयेवना, ऐसा कहकर क्या तुम मेरी भावनाओ को ठेस नही पहुचाती?"

"क्यो, क्या तुम बनैला बनना पसन्द करोगे?"

"बनैला – नही, लेकिन सबल और प्राणवान – अवश्य।"

"यह ऐसी चीज नही जिसे तुम चाह सको लेकिन तुम्हारा वह मित्र – वह इसे चाहता नही, मगर फिर भी इससे लैस है।"

"हु! सो तुम्हारा खयाल है कि अन्ना सेर्गेयेवना पर उसका काफी जवर्दस्त असर था?"

"हा," कात्या ने कहा और फिर दवे स्वर में जोडा "लेकिन अधिक दिनो तक कोई भी उनपर हावी नही रह सकता।"

"यह तुमने कैसे जाना?"

"वह बहुत ही गर्वीली है नही, सो नही वह अपनी आजादी को सबसे ज्यादा महत्व देती हैं।"

"कौन ऐसा है जो नही देता?" आरकादी ने पूछा और उसी क्षण उसके मस्तिष्क में कौंधा "बेकार, बिल्कुल बेकार!" कात्या के मन ने भी यही कहा "बेकार, बिल्कुल बेकार!" युवा लोग जो अक्सर मिलते और मित्रतापूर्ण आदान-प्रदान करते हैं, उनके मस्तिष्क भी बराबर एक-से विचारो में रमने लगते है।

आरकादी मुसकराया और कात्या के थोडा और निकट खिसकते हुए फुसफुसाया

"देखो, मुकरना नही। साफ साफ कह दो कि तुम उससे डरती हो?"

"किससे?"

"उसी से," आरकादी ने अर्थभरे अन्दाज में दोहराया।

"और तुम ?" कात्या ने पलटकर पूछा।

"मैं भी, लेकिन ध्यान रखना, मैंने कहा, मै भी।"

कात्या ने अपनी तर्जनी उगली हिलाई।

"अजीब बात करते हो," वह कहती गई, "बहिन जितनी प्रसन्न नजर से तुम्हे अब देखती हैं, उतना पहले कभी नही देखती थी,—पहली बार जब तुम यहा आए थे तब से कहीं ज्यादा!"

"ऐसा?"

"क्या तुम्हे ऐसा नजर नही आता? क्या तुम इससे खुश नही हो?"

आरकादी ने सोचा, फिर बोला

"ऐसा मैंने क्या किया है जो अन्ना सेर्गेयेवना मुझपर इतनी प्रसन्न है? इसका कारण क्या वास्तव में तुम्हारी मा के वे पत्र नही हैं जो मैंने उन्हे लाकर दिए हैं? क्यो, ठीक है न?"

"हा, इसी लिए, साथ ही अन्य कारणो के लिए भी जो मै तुम्हे नही बताऊगी।"

"क्यो?"

"नही बताऊगी, बस!"

"ओह, समझा—तुम बडी ज़िद्दिन हो!"

"हा, हू।"

"और तेज नज़रवाली भी।"

कात्या ने कनखियो से उसकी ओर देखा।

"क्यो, क्या तुम इससे झुझला उठे हो? आखिर तुम सोच क्या रहे हो?"

"मैं सोच रहा हू—इतनी पैनी नजर तुमने कहा से पाई? तुमने, जो इतनी भीरु हो, जो इतनी अविश्वासपूर्ण हो और सबसे इतना कतराती हो"

"बहुत कुछ मुझे अपने ही भरोसे छोड दिया गया है। सो जाने-अनजाने मै कुछ अपने में ही रमना—सोच-विचार करना—सीख गई हू। लेकिन क्या मै सबसे कतराती हू?"

आरकादी ने कृतज्ञ नज़र से उसकी ओर देखा।

"यह सब तो ठीक," उसने कहना शुरू किया, "लेकिन तुम जैसी स्थिति के लोग—मतलब यह कि तुम जैसे सम्पन्न लोग—बिरले ही इस प्रतिभा के धनी होते है। राजा-महाराजाओ की भाति सत्य उनके पास भी आसानी से नही पहुच पाता।"

"लेकिन मैं सम्पन्न कहा हू?"

आरकादी सकपका गया। एकाएक उसका आशय पकड नही सका। "बेशक," उसे जैसे चेत हुआ, "जागीर तो सारी इसकी बहिन की है," और यह विचार उसे कुछ बुरा नही मालूम हुआ।

"कितने वढिया, नफीस ढग से तुम यह कह गई," वह वुदवुदाया।

"सो कैसे?"

"वहुत ही नफासत से कहा तुमने। वडी सरलता से, विना किसी लाज या वनावट का सहारा लिए। और सुनो, मुझे ऐसा लगता है कि जो लोग यह जानते और मानते हैं कि वे गरीव हैं, उनकी भावना में एक अपना निरालापन—एक खास किस्म का दम्भ—घर कर जाता है।"

"ऐसी किसी चीज़ का मैंने कभी अनुभव नही किया, और इसके लिए मै अपनी वहिन की कृतज्ञ हू। मैंने तो यो ही, सो भी वात चलने पर, अपनी स्थिति का उल्लेख कर दिया।"

"सो तो ठीक। लेकिन तुम्हे यह भी मान लेना चाहिए कि तुम में उस दम्भ के भी कुछ कण मौजूद हैं जिसका कि मैं अभी जिक्र कर रहा था।"

"जैसे?"

"जैसे यह कि तुम—इस वात के लिए माफ करना—किसी धनी से व्याह नही करोगी, नही करोगी न?"

"अगर मै उसे अत्यधिक प्यार करती हू लेकिन नही, मेरा खयाल है कि तव भी मैं उससे विवाह नही करूगी।"

"ओह, देखा तुमने!" आरकादी ने हुमककर कहा और फिर कुछ रुककर वोला "तुम उससे विवाह क्यो नही करोगी?"

"इसलिए कि हीन दुलहिन का राग सुन चुकी हू"

"शायद तुम अपना हाथ सख्त रखना चाहती हो, या"

"ओह, नही! आखिर किस लिए? उल्टे, मैं समर्पण के लिए तैयार हू। केवल असमानता असह्य है। समर्पण करते हुए आदमी अपना

आत्मसम्मान बनाए रह सकता है। यह बात मेरी समझ में आती है। यह सुख है। लेकिन गुलामी का जीवन नही, बाज़ आई मैं ऐसे जीवन से! "

"बाज़ आई ऐसे जीवन से! " आरकादी ने प्रतिध्वनि की। "क्यो न हो," वह कहता गया, "प्रत्यक्षत तुम्हारी रगो में भी वही खून दौड रहा है जो अन्ना सेर्गेयेवना की। तुम भी उतनी ही आज़ाद हो जितनी कि वह। केवल अन्तर इतना ही है कि तुम उससे ज़्यादा घुन्नी हो। मेरा पक्का विश्वास है कि तुम, कभी भी, अपनी भावनाओ को व्यक्त करने में पहल नही करोगी, चाहे वे कितनी ही प्रबल और पवित्र क्यो न हो "

"इसके सिवा अन्यथा क्योकर हो सकता था?" कात्या ने पूछा।

"तुम उतनी ही चतुर भी हो। चरित्र की दृढता भी, अगर ज्यादा नही तो, तुममें उतनी ही है जितनी कि उसमें "

"कृपा कर मेरी तुलना मेरी बहिन से न करो," कात्या ने तुरत टोका। "इस तरह तुम मुझे भारी टोटे में डाल देते हो। ऐसा मालूम होता कि तुम्हे यह याद नही रहा कि मेरी बहिन सुन्दर है, चतुर है और कम से कम तुम्हे ऐसी बाते मुह से नही निकालनी चाहिए, सो भी इतना गम्भीर चेहरा बनाकर।"

"'कम से कम तुम्हे'–भला, क्या मतलब है इसका? और यह तुमने कैसे जाना कि मैं मज़ाक कर रहा हू?"

"बेशक, तुम मज़ाक कर रहे हो! "

"क्या तुम ऐसा सोचती हो? लेकिन जो कुछ मैं कह रहा हू, अगर वही मेरा विश्वास भी हो तो? अगर मैं यह समझता हू कि अपनी बात को काफी ज़ोरदार ढग से मैं व्यक्त नही कर सका, जैसा कि मुझे करना चाहिए था?"

"तुम्हे समझना मेरे बूते से बाहर है।"

"क्या सचमुच? तो यह कहो कि तुम्हारी तेज नजर की तारीफ में मै कुछ जरूरत से ज्यादा आगे बढ गया था!"

"मतलब?"

आरकादी ने कोई जवाब नही दिया और उसने दूसरी ओर मुह फेर लिया। कात्या ने कुछ और चूरे के लिए डलिया को टटोला और जो मिला उसे गौरैयो के लिए फेंक दिया। लेकिन उसके हाथ की हरकत कुछ इतनी तेज़ी से हुई थी कि चुगने के बजाय गौरैया दूर उड गई।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," सहसा आरकादी ने कहा, "शायद तुम्हारे लिए यह महत्व की बात न हो, मगर मै तुम्हें इस बात का भान कराना चाहता हू कि तुम्हारी बहिन हो या कोई और, इस दुनिया में तुमसे बढकर मेरे लिए अन्य कोई नही है।"

वह उठ खडा हुआ और तेज़ डगो से वहा से चल दिया, मानो इस विस्फोट ने खुद उसे ही चौंका दिया हो।

कात्या के दोनो हाथ, मय डलिया के, उसकी गोद में आ गिरे, और वह सिर झुकाए देर तक आरकादी के ओझल होते हुए आकार को देखती रही। धीरे धीरे उसके गाल लाली से चुनचुना उठे। उसके होठ अभी भी मुसकराहट से सूने थे और उसकी काली आखो में एक हैरानी छाई थी, साथ ही कुछ और भी, एक ऐसी भावना जो अभी तक सज्ञाविहीन थी।

"अरे, तुम अकेली हो?" पास ही अन्ना सेर्गेयेवना की आवाज़ सुनाई दी। "मै तो यह समझे थी कि तुम आरकादी के साथ बगीचे मे गई हो।"

कात्या ने फुरसत के भाव से नज़र उठाकर अपनी बहिन की ओर देखा (बहुत ही सुचारु, बल्कि कहिए कि उत्कृष्ट ढग से सजी वह

पगडडी पर खडी थी और अपनी खुली हुई छतरी की नोक से फिफी के कानो को गुदगुदा रही थी) और उतने ही फुरसत के भाव से बोली

"हा, मै अकेली ही हू।"

"ओह, समझी!" लघु हसी हसते हुए वहन ने चुटकी ली। "तो यह कहो कि वह अपने कमरे में चला गया है, क्यो?"

"हा।"

"क्या तुम दोनो मिलकर पढ रहे थे?"

"हा।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने कात्या की ठोडी पकडकर उसका सिर ऊचा किया।

"कही ऐसा तो नही कि दोनो लड पडे हो?"

"नही," कात्या ने कहा और चुपचाप अपनी वहिन का हाथ हटा दिया।

"कितने भारी अन्दाज़ में जवाब देती हो तुम! मैंने सोचा कि वह यहा मिल जाएगा और कुछ देर साथ टहलने के लिए उससे मै कहूगी। जब देखो तव इसके लिए पीछे पडा रहता था। और सुनो, शहर से तुम्हारे लिए एक जोडी जूता मगाया है। जाओ और पहिनकर देखो कि ठीक है या नही। कल मेरी नज़र गई तो देखा कि तुम्हारे जूते फट चले हैं। जाने तुम्हारी क्या आदत है कि तुम अपना काफी ध्यान नही रखतो—सो भी तव जब तुम्हारे छोटे छोटे पाव इतने लुभावने हैं। तुम्हारे हाथ भी बहुत प्यारे हैं गोकि कुछ वडे ज़रूर हैं। सो तुम्हे अपने पावो पर सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए। लेकिन किया क्या जाए, रीझना-रिझाना तो तुम जानती ही नही।"

अन्ना सेर्गेयेवना पगडडी पर आगे बढ गई। उसका सुन्दर गाऊन सरसराहट की धीमी ध्वनि कर रहा था। कात्या भी उठ खडी हुई और

हाइने की पुस्तक हाथ में लिए वहा से चल दी—लेकिन जूते पहनकर देखने के लिए नही।

"छोटे छोटे लुभावने पाव!" धूप से झुलसती तिदरी की पत्थर की सीढियो पर धीमे और हल्के डग रखते समय वह सोच रही थी। "छोटे छोटे लुभावने पाव यही कहा न तुमने   तो सुनो, इन्ही पावो पर वह पसरा हुआ नजर आएगा!"

वह तुरत लाज से कट गई और लपककर एक ही सास में बाकी पैडियो को लाघ गई।

आरकादी गलियारे को पार कर अपन कमरे की ओर जा रहा था। तभी भडारी भागता हुआ उसके पास पहुचा और बताया कि बजारोव आपके कमरे में बैठे आपकी प्रतीक्षा कर रहे है।

"येवगेनी!" त्रस्त-सी मुद्रा में आरकादी बुदबुदाया, "क्या वह काफी देर से आए हुए है?"

"नही मालिक, अभी अभी आए है। बोले कि अन्ना सेर्गेयेवना को उनके आने की सूचना न दी जाए, बल्कि सीधे आपके कमरे में उन्हें पहुचा दिया जाए।"

"कौन जाने, घर पर कोई गडबड हो गई हो? आरकादी ने सोचा और भागकर जीना चढते हुए एक ही झटके में दरवाजा खोल डाला। बजारोव पर नजर पडते ही वह तुरत आश्वस्त हो गया, हालाकि और अधिक पारखी आखो से यह छिपा नही रहता कि इस अप्रत्याशित आगन्तुक के पहले से कुछ दुबले लेकिन अभी भी चेतन—स्फूर्तिवान—आकार-प्रकार में आन्तरिक बेचैनी के चिन्ह मौजूद है। कधो पर अपना धूल-धूसरित कोट डाले और सिर पर टोपी लगाए वह खिडकी की ओटक पर बैठा था, और वह उस समय भी वैसे ही बैठा रहा जब आरकादी शोर मचाता उसके गले से लिपट गया।

"भई वाह, तुमने तो चकित कर दिया! कहो, कैसे आए?" आरकादी बार बार दोहरा रहा था और उस आदमी की भांति इधर-से-उधर उचक रहा था जिसे न केवल अपने खुश होने का विश्वास है बल्कि जो अपनी इस खुशी का प्रदर्शन भी करना चाहता है। "आशा है कि घर पर सब ठीक-ठाक है और सब भले-चगे हैं, क्यो?"

"ठीक-ठाक तो सब है, लेकिन भले-चगे सब नही हैं," बज़ारोव ने कहा। "लेकिन यह चहकना छोडो, क्वास पेय लाने के लिए किसी को रवाना करो, यहा आकर बैठो और गिने-चुने किन्तु—जैसी कि आशा है—सटीक शब्दो में जो कुछ मैं कहने जा रहा हू, उसे सुनो।"

आरकादी ठडा पड गया, और बज़ारोव ने पावेल पेत्रोविच के साथ अपने द्वन्द्व-युद्ध का किस्सा उसे बताया। आरकादी स्तब्ध ही नही, बल्कि त्रस्त भी हो उठा। लेकिन उसने अपने भावो को प्रकट नही होने दिया। इसी में उसे बुद्धिमानी दिखाई दी। उसने केवल इतना ही पूछा कि ताऊजी का घाव सचमुच में खतरनाक तो नही है, और यह मालूम होने पर कि घाव दिलचस्प ज़रूर है, लेकिन डाक्टरी दृष्टिकोण से नही, उसके होठो पर एक वक्र मुस्कान फैल गई, और हृदय एक अज्ञात भय और शर्म से घिर गया। बज़ारोव से उसके मस्तिष्क की स्थिति छिपी न रही।

"हा, मेरे प्यारे साथी," उसने कहा, "सामन्तो के साथ रहने का ऐसा ही नतीजा होता है। तुम खुद भी सामन्त बन जाओगे—तुम्हे पता भी नही चलेगा कि क्या से क्या हो गया—और एक दिन, अनायास ही, राजा-बहादुरो के दगलो में मूछो को पैनाते नजर आओगे। सो अपना बधना-बोरिया समेट घर का रास्ता नापने का मैंने तय किया," अपनी कहानी को समेटते हुए बज़ारोव ने कहा, "और रास्ते में यहा आ उतरा बेकार झूठ बोलना अगर मूर्खता न समझता तो कहता—

तुम्हे यह सब बताने के लिए ही यहा आया। नही, यहा आने की यह हरकत शैतान ही जानता है कि मैंने क्यो की। देखो न, यह अच्छा ही है अगर आदमी, कभी कभी, आज़ाद होने के लिए इतना तिलमिला उठे कि अपना टेंटुआ पकडकर खेत की मूली की भाति अपने आपको जड से उखाड फेंके मेरी यह नयी हरकत ठीक ऐसी ही है लेकिन जिस चीज़ से मैंने नाता तोडा है उसे—उस ज़मीन को जिसमें मै जमा हुआ था—चलते-चलाते एक वार फिर देखने के लिए मन ललक उठा।"

"मै विश्वास करता हू कि जो कुछ तुमने कहा उसका मुझसे सम्बन्ध नही है," आरकादी ने विचलित भाव से कहा, "मै भरोसा करता हू कि तुम मुझसे अलग होने की वात नही सोच रहे हो?"

वज़ारोव ने उसे गहरी, करीब करीब मर्मभेदी, नज़र से देखा।

"ओह, तो क्या सचमुच तुम्हे इससे इतना त्रास होगा? मुझे तो लगता है कि तुम पहले ही मुझसे अलग हो चुके हो। तुम कुछ इतने ज़िन्दादिली और ताज़गी में पगे हो जैसे डेज़ी का फूल अन्ना सेर्गेयेवना के साथ निश्चय ही तुम्हारी ठाठ से गुज़र रही होगी।"

"ठाठ से गुज़र रही होगी, मतलव?"

"वस, रहने दो। क्या तुम, मेरे छौने, उसके लिए ही यहा नही आए? और हा, तुम्हारे रविवारी स्कूलो का क्या हाल है? वोलो, क्या तुम उससे प्रेम नही करते? या मामला यहा तक पहुच चुका है कि तुम विनम्रता का प्रदर्शन कर सकते हो?"

"येवगेनी, तुम जानते हो कि मैंने कभी तुमसे दुराव नही रखा। मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हू, खुदा को साक्षी करके कहता हू, कि तुम्हारा खयाल गलत है।"

"हु ! यह भी एक नयी बोली है," बज़ारोव ने दबे स्वर में कहा, "लेकिन तुम्हे इस तरह ओर-छोर नापने की ज़रूरत नही। सच तो यह है कि मुझे इसमें ज़रा भी दिलचस्पी नही। कोई रोमान्सवादी होता तो कहता लगता है कि अब अलग अलग रास्ता पकडने का समय आ गया। लेकिन मै केवल इतना भर कहूगा कि हम एक-दूसरे से आजिज़ आ चुके हैं।"

"येवगेनी "

"मेरे प्यारे मुनुआ, ऐसा कहने में कोई हज नही है। जरा सोचो तो, यह दुनिया ऐसी चीज़ो से कितनी भरी है जिनसे लोग आजिज़ आ जाते हैं। हा तो अब अलविदा की रस्म पूरी कर ली जाए। जब से यहा पाव रखा है, जाने कैसी एक मनहूस-सी भावना का मैं अनुभव कर रहा हू, मानो कलूगा के गवर्नर की पत्नी के नाम गोगोल के पत्रो की दलदल में मैं धसा हू। जो हो, मैं कोचवान से कह आया था कि घोडो को खोले नही, उन्हे तैयार रखे।"

"ओह नही, यह नही हो सकता।"

"क्यो ?"

"अपनी मै कुछ नही कहूगा, लेकिन अन्ना सेर्गेयेवना के प्रति यह बेहद बेअदबी होगी , जो निश्चय ही तुमसे मिलने की चाह अपने हृदय में सजोए हैं।"

"तुम्हारा यह खयाल गलत है, समझे ! "

"उल्टे, मेरी समझ में बिल्कुल ठीक है," आरकादी ने पलटकर जवाब दिया। "बेकार नाटक न करो। और सच पूछो तो, क्या तुम उसकी खातिर ही यहा नही आए?"

"हो सकता है। लेकिन तुम्हारा खयाल फिर भी गलत है।"

जो हो, आरकादी की बात ठीक थी। अन्ना सेर्गेयेवना बज़ारोव

से मिलना चाहती थी और भडारी के जरिये उसने उसे बुला भेजा। जाने से पहले बजारोव ने कपडे बदले। पता चला कि उसने अपना नया सूट सबसे ऊपर ही रख छोडा था ताकि उसे आसानी से निकाला जा सके।

ओदिनत्सोवा ने उसका स्वागत किया – उस कमरे में नही जहा उसने इतने अचानक रूप में अपने प्रेम का इज़हार किया था, बल्कि ड्राइगरूम में। उसने कृपापूर्ण अन्दाज़ में अपनी उगलियो के छोर उसकी ओर बढाए, लेकिन उसके चेहरे पर कशमकश का एक भाव छाया था।

"अन्ना सेर्गेयेवना," बज़ारोव ने अविलम्ब कहा, "सबसे पहले एक बात का मै तुम्हे यकीन दिलाना चाहता हू। तुम्हारे सामने इस मर्त्यलोक का एक ऐसा जीव मौजूद है जो अर्से से अपने होश में आ चुका है और उम्मीद करता है कि उसकी मूर्खता भूली जा चुकी होगी। मै अब एक मुद्दत के लिए विदा हो रहा हू, और बावजूद इसके कि मैं मोम का पुतला नही हू, यह तुम भी मानोगी कि हृदय में एक ऐसी खटक लेकर जाना कोई सुखद बात नही होगी कि एक घिनौनी स्मृति मैं तुम्हारे पास छोडे जा रहा हू।"

अन्ना सेर्गेयेवना ने एक गहरी सास खीची – उस आदमी की भाति जो एक ऊची पहाडी पर चढता हुआ उसकी चोटी पर पहुच गया हो, और उसका चेहरा मुसकानो की वन्दनवार से खिल गया। उसने फिर बज़ारोव की ओर अपना हाथ बढाया और खुद अपने हाथ की दाब से उसके हाथ की दाब का जवाब दिया।

"गडे मुर्दे उखाडने से कोई लाभ नही," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "इसलिए और भी अधिक – अगर सच पूछो तो – इस मामले मे मैं खुद भी कुछ बेदाग नही हू, गुनाह मैंने भी किया, अगर

रीझने-रिझाने से नही तो किसी और ढग से। सो, जैसे हम पहले मित्र थे, वैसे ही बने रहे। वह सब एक सपना था, क्यो, था न? और सपनो को कोई याद नही रखता।"

"बेशक, कोई याद नही रखता। और फिर प्रेम प्रेम एक ढकोसला है।"

"क्या सचमुच? यह जानकर मुझे बेहद खुशी हुई।"

सो अन्ना सेर्गेयेवना ने इस प्रकार अपने आपको व्यक्त किया, और इस प्रकार बज़ारोव ने अपने आपको व्यक्त किया। दोनो ने सोचा वे सच बोल रहे है। लेकिन क्या वह सच था, पूर्ण सच था, वह जो उन्होने कहा? यह वे खुद भी नही जानते, और यह लेखक भी इस मामले में उतना अनजान है। लेकिन बातो में वे कुछ इस तरह रमे थे जैसे वे एक-दूसरे की बातो को एकदम सच मान रहे हो।

अन्य बातो के साथ साथ अन्ना सेर्गेयेवना ने यह भी बज़ारोव से पूछा कि किरसानोव परिवार के साथ किस प्रकार उसका समय गुजरा। पावेल पेत्रोविच के साथ द्वन्द्व की बात उसके होठो तक आई ही थी कि उसने अपने आपको रोक लिया, यह सोचकर कि कही वह यह न समझे कि वह बन रहा है। सो उसने जवाब दिया कि वह हर घडी अपने काम से ही वास्ता रखता था।

"और मै," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "जाने क्यो, उदासी के भूत ने मुझे कुछ इस तरह दबोचा कि ओह, ज़रा सोचो तो कि मै विदेश तक जाने की बात सोचने लगी फिर वह उतर गया। तुम्हारे मित्र आरकादी निकोलायेविच आ गए, और फिर वही पुराना चरखा चलने लगा, अपना वास्तविक चोला मैने धारण कर लिया।"

"वास्तविक चोला,—क्या मै जान सकता हू कि वह क्या है?"

"चाची, कुवारी कन्या की अभिभाविका, मा–जो भी चाहे, कह ले। लेकिन यह तो वताओ, तुम जानो, आरकादी निकोलायेविच के साथ तुम्हारी मित्रता को मैं पहले कुछ ठीक से समझ नही सकी थी। मैं उसे अपेक्षाकृत नगण्य खयाल करती थी। लेकिन अव उसे अच्छी तरह जानने का मौका मिला, और मैंने देखा कि वह चतुर है और सब से वडी वात यह कि वह युवा है तुम्हारी और मेरी भाति नही, येवगेनी वसीलियेविच!"

"क्या वह अव भी तुमसे शरमाता है?" बजारोव ने पूछा।

"अरे, तो पहले क्या वह " कहते कहते वीच में ही अन्ना सेर्गेयेवना रुक गई, और क्षण भर कुछ सोचने के वाद वोली "अब वह कुछ अधिक आश्वस्त वन गया है, मुझसे वाते करता और वतियाता है। पहले वह कतराता था। साथ ही यह भी सच है कि मैंने कभी उसका सग नही चाहा। कात्या और वह–दोनो में खूब घुटती है।"

बज़ारोव कुछ खीज-सा उठा। मन-ही-मन सोचा "नारी के छल-कपट का क्या कभी अन्त नही होता?"

"तुमने कहा कि वह तुमसे कतराता था," उसके स्वर में ताने का कुछ पुट था, "लेकिन यह वात शायद तुमसे छिपी न थी कि वह तुमसे प्रेम करता था।"

"क्या? तो क्या वह भी ?" अचानक अन्ना सेर्गेयेवना के मुह से निकला।

"हा, वह भी," गम्भीर अन्दाज़ में सिर झुकाते हुए वज़ारोव ने दोहराया। "लेकिन क्या तुम कहना चाहती हो कि तुम्हे इसका पता नही था, और पहली वार ही यह समाचार तुम सुन रही हो?"

अन्ना सेर्गेयेवना ने अपनी आखें झुका ली।

"तुम्हारा यह खयाल गलत है, येवगेनी वसीलियेविच।"

"मैं ऐसा नही समझता। लेकिन शायद मुझे इसे जुबान पर नही लाना चाहिए था।" फिर मन-ही-मन कहा "मतलब यह कि तुम्हे अभी और अधिक कौशल से काम लेना सीखना होगा।"

"जिक्र क्यो नही करना चाहिए था? लेकिन मेरा खयाल है कि इस मामले में फिर एक क्षणिक प्रभाव को अत्यधिक महत्व दे रहे हो?"

"लेकिन छोडो, अन्ना सेर्गेयेवना, इस विषय को न छेडना ही अच्छा है।"

"सो क्यो?" उसन पलटकर कहा और इसके बाद खुद ही दूसरा विषय छेड दिया। बावजूद इसके कि उसने उससे यह कहा था और अपने मन को भी यह समझा लिया था कि सारी बाते भुलाई जा चुकी हैं, बजारोव की सगत में उसे बडा अटपटा-सा लग रहा था। अत्यन्त निस्सग भाव से बतियाते और यहा तक कि हसी-मजाक करते हुए भी वह एक अस्पष्ट-सी घबराहट का अनुभव कर रही थी। बहुत कुछ वैसे ही जैसे कि जहाज के यात्री निस्सग भाव से बतियाते और हसते हैं– मानो वे समूची दुनिया को यह जताना चाहते हो कि ठोस धरती पर उनके पाव टिके हैं, लेकिन जैसे ही कोई हल्का-सा हिचकोला या किसी अनहोनी घटना का चिन्ह नजर आता है, उनके चेहरो पर अजीव हवाइया-सी उडने लगती है और अनवरत खतरे से त्रस्त उनकी अनवरत चेतना निरावरण हो जाती है।

बजारोव के साथ अन्ना सेर्गेयेवना की बातचीत ज्यादा देर तक नही चली। वह जाने किस चिन्ता में खो गई, बेमन से जवाब देने लगी और अन्त में सुझाव दिया कि चलो, बैठक में चले। वहा

राजकुमारी और कात्या मौजूद थी। "और आरकादी निकोलायेविच कहा है ?" मालकिन ने पूछा और जब यह मालूम हुआ कि एक घटे से भी अधिक समय से वह दिखाई नही दिया तो उसे बुलवा भेजा। उसे खोजने में कुछ वक्त लग गया वह बाग़ की गहराइयो में पहुच गया था और दोनो हाथो पर ठोडी टेके किन्ही विचारो में डूबा था। उसके इन विचारो में गहराई और गम्भीरता चाहे जितनी हो, लेकिन निराशा की वेदना नही थी। वह जानता था कि अन्ना सेर्गेयेवना बज़ारोव के साथ अकेली बैठी है, फिर भी उसके हृदय में ईर्ष्या की कोई चुभन नही थी, जैसे कि पहले हुआ करती थी। उसका चेहरा एक तरह के कोमल आलोक से निखरा था। एसा मालूम होता था जैसे वह अचरज का, आन्तरिक सुख और एक तरह के सकल्प का, भाव व्यक्त कर रहा हो।

२६

नवीनताओ के प्रति स्वर्गीय ओदिनत्सोव में कोई मोह नही था, लेकिन "परिष्कृत रुचि के लिए थोडा खिलवाड" कर लेने में वह कोई हर्ज नही समझते थे। इसी का यह नतीजा था कि उनके बगीचे में, ग्रीष्म-घर और ताल के बीच, रूसी ईंटो से बनी एक इमारत नज़र आने लगी थी जो देखने में यूनानी बारहदरी की भाति मालूम होती थी। इस बारहदरी या छतदार गलियारे की सबसे पिछली मुह-बद दीवार में प्रतिमाए सजाने के लिए छै आले बने थे। इन प्रतिमाओ को ओदिनत्सोव विदेशो से मगानेवाले थे। प्रत्येक प्रतिमा निम्न भावो को व्यक्त करती — एकान्त, मौन, चितन, उदासी, लज्जा और भावुकता। इनमें से एक, मौन की देवी, अपनी एक उगली होठो पर रखे, आ भी गई थी और उसे उसके स्थान पर प्रतिष्ठित भी कर दिया गया

था। लेकिन उसी दिन गढी के बच्चो ने उसकी नाक तोड डाली। एक स्थानीय प्लास्तरसाज ने जिम्मा लिया कि वह नयी नाक लगा देगा जो "पुरानी से दूनी बढिया होगी", लेकिन इस सबके बावजूद ओदिनत्सोव ने उस प्रतिमा को वहा से हटवाकर खलिहान-घर के एक कोने में रखवा दिया। सो बरसो से वह वही विराज और स्त्रियो के हृदयो में अध-विश्वासी भीरुता का सचार कर रही थी। बारहदरी का अग्र भाग जाने कब से झाडियो ने तोप रखा था केवल खम्बो के शिरोभाग—उनके मत्थे—इस झाड-झखाड से कुछ उभरे नज़र आते थे। बारहदरी के भीतर, दोपहर में भी, ठडक रहती थी। अन्ना सेर्गेयेवना, उसी दिन से जब एक घसियल साप पर उसकी नज़र पडी, इधर नही फटकती थी। लेकिन कात्या अक्सर यहा आती और प्रतिमा के लिए बने एक बडे-से पत्थर के आसन पर बैठा करती। यहा की ठडी छाव में बैठकर वह पढती, काम करती या अपने आपको भावुकता में—चरम शान्ति के उन स्पन्दनो में—तिरने देती जिनसे हम सभी परिचित हैं। वे मोहक क्षण जिनमें हमें अपने चारो ओर तथा भीतर, निरन्तर तरगित जीवन के तेज़ प्रवाह का नाम मात्र को ही भान होता है और एक मूक चेतना हमें अभिभूत कर लेती है।

बज़ारोव के आगमन के अगले दिन कात्या अपनी उसी प्रिय जगह पर बैठी थी। आरकादी इस समय भी उसके साथ था। खुद उसने ही यहा, बारहदरी आने के लिए कात्या को तैयार किया था।

कलेवा से करीब एक घटा पहले का समय था। ओस में भीगी सुबह दिन की उमस में बदल चली थी। आरकादी के चेहरे पर अब भी कल जैसा ही भाव छाया था। कात्या कुछ चिन्तित नज़र आती थी। नाश्ते के बाद उसकी बहिन उसे अध्ययनकक्ष में लिवा ले गई थी। थोडा थपकने और दुलराने के बाद—एक ऐसी चीज़ जिससे

कात्या हमेशा कुछ आशंकित-सी हो उठती थी—उसने सलाह दी कि आरकादी की ओर से ज़रा चौकस रहे, खासतौर से अकेले में उससे ज्यादा न घुले-मिले। साथ ही यह भी जता दिया कि मौसी और समूचे घर की नज़र इसपर पड चुकी है। इसके अलावा पिछली साझ अन्ना सेर्गेयेवना की तबीयत कुछ बेहाल-सी थी, और वह खुद भी एक तरह की सचेत बेचैनी का—जैसे उसने कोई अपराध किया हो—अनुभव कर रही थी। सो आरकादी का अनुरोध तो उसने मान लिया, लेकिन मन ही मन निश्चय किया कि बस, आखिरी बार वह उसके साथ जा रही है।

"कातेरीना सेर्गेयेवना" एक प्रकार की सकोच युक्त स्थिरता के साथ उसने कहना शुरू किया, "एक ही छत के नीचे तुम्हारे सग रहने का जब से मुझे सुख नसीब हुआ है, जाने कितनी चीज़ो पर मैंने तुमसे बाते की है, लेकिन एक अरे एक मसले को मैंने अब तक नही छुआ जो मेरे लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कल बातो ही बातो में तुमने मेरी कायापलट होने के बारे में कुछ कहा था," कात्या की नज़रो की थाह लेते और साथ ही उनसे बचने का भी प्रयास करते हुए वह कहता गया। "सच ही मै बहुत कुछ बदल गया हू, और इसे तुमसे ज्यादा भला और कौन जान सकता है—तुम जो कि मेरे इस परिवर्तन का वास्तव में आधार हो।"

"मैं ? मुझे ?" कात्या के मुह से निकला।

"अब मुझमें वह लडकपन—निरा बछेडापन—नही रहा जो कि पहले था," आरकादी कहता गया। "आखिर चौबीसवे वसन्त की ओर मै बढ रहा हू। अपने को उपयोगी बनाने की कामना मुझमें मौजूद है, सत्य की खोज में अपनी सारी शक्तिया मै लगाना चाहता हू। लेकिन मेरे आदर्शो का केन्द्र अब वह नही है जो पहले था। पहले की भाति अब

मै नही भटकता। मैं देखता हू   वे आदर्श बहुत निकट हैं। अब तक मैं खुद अपने से भी बेखबर था, ऐसे निवालो पर मुह मारता था जिन्हें निगलना मेरे बूते से बाहर था   आखिर, हाल ही में, मेरी आखें खुली, एक ऐसी भावना का मेरे हृदय में उदय हुआ   ओह, मैं अपने आपको ठीक स्पष्टता के साथ व्यक्त नही कर पा रहा हू, लेकिन आशा है कि तुम मुझे समझ रही होगी "

कात्या ने कुछ नही कहा, लेकिन उसकी आखें अब आरकादी की ओर नही देख रही थी।

"मै समझता हू," पहले से भी अधिक विह्वलता के साथ उसने कहना शुरू किया और ऊपर, बर्च वृक्ष पर, चाफिच पक्षी हुमक कर अपना गीत गाए जा रहा था, "मेरा विश्वास है कि हर ईमानदार आदमी का यह कर्तव्य है कि उनके   उन लोगो के थोडे में यह कि उन लोगो के साथ जिन्हे वह अपना समझता है कतई छिपाव न रखे   सो मै   मेरा इरादा है "

और यहा तक आकर आरकादी की ज़बान जवाब दे गई, उसने झोका-सा खाया, लडखडाई और विराम लेने के लिए मजबूर हो गई। कात्या की आखें अभी भी धरती पर जमी थी। लगता था जैसे उसकी समझ में यह नही आ रहा है कि वह कहना क्या चाहता है। सो वह अधर में लटकी मालूम होती थी।

"मुझे डर है कि कही तुम चौंक न उठो," साहस बटोरकर आरकादी ने फिर कहना शुरू किया, "इसलिए और भी अधिक कि एक हद तक यह भावना—ध्यान रहे—यह भावना   तुमसे सम्बन्ध रखती है। कल, तुम्हें याद होगा, तुमने मुझे झिडका था कि मै वाजिब सजीदगी से काम नही लेता," उस आदमी की भाति जो

दलदल में फस गया है, जो अनुभव करता है कि हर डग पर वह गहरा धसता जा रहा है लेकिन फिर भी दलदल से उबरने की आशा में ज़ोर लगाना नही छोडता, आरकादी कहता गया, "जो युवक हैं अक्सर उनपर. उन्हें अपना निशाना बनाकर उस समय भी जबकि वे इसके हक़दार नही होते इस झिडकी की बौछार की जाती है . अगर मुझमें कुछ और आत्मविश्वास होता " (डूबते आदमी की भाति आरकादी जैसे छटपटा रहा था– "अरे, खुदा के लिए तुम क्यो नही मुझे सहारा देती!" लेकिन वह अभी भी कोई जुम्बिश नही कर रही थी।) "अगर मैं सिर्फ यह आशा कर सकता "

तभी अन्ना सेर्गेयेवना की सुस्पष्ट आवाज़ सुनाई दी

"हा, अगर मुझे सिर्फ तुम्हारे मन पर–जो कुछ तुम जुबान पर लाने जा रहे हो उसपर–भरोसा होता!"

आरकादी के होठो तक आए शब्द वही के वही मुरझाकर रह गए। कात्या भी पीली पड गई। बारहदरी को ओट में करनेवाली झाडियो के पास से एक पगडडी गुजरती थी। अन्ना सेर्गेयेवना उसपर टहल रही थी। साथ में बज़ारोव भी था। कात्या और आरकादी को वे दिखाई नही दिए, लेकिन उनका एक एक शब्द उन्हे सुनाई दिया। अन्ना के गाउन की सरसराहट, यहा तक कि उनके सास लेने की आवाज़ तक सुनाई दे रही थी। वे कुछ डग बढे और फिर एकदम रुक गए, मानो जानबूझकर, ठीक बारहदरी के सामने ही।

"हा तो देखा तुमने," अन्ना सेर्गेयेवना कह रही थी, "हम दोनो ही गलत है। यौवन का वह पहला वसन्त–वह उल्लास और हुमक–न तुम्हारे पास है, न मेरे, खासकर मेरे। हम दुनिया में थोडा-बहुत रम चुके हैं। हम थके-मादे हैं। हम दोनो–इधर-उधर करने से क्या फायदा–चतुर है। पहले हममें एक-दूसरे के लिए

दिलचस्पी पैदा हुई, कौतुक ने अपने पख पसारे और फिर ''

"और फिर बासी कढी में उबाल आया," बज़ारोव ने बीच में ही कहा।

"नही, तुम जानते हो कि हमारे छिटकने का वह कारण नही है। लेकिन कारण चाहे जो भी हो, तत्व की बात यह है कि हमें एक-दूसरे की ज़रूरत नही थी। हममें ज़रूरत से ज्यादा ओह, क्या कहते है भला उसे . ज़रूरत से ज्यादा समानता थी। इसे हम तुरत ही नही समझ सके। इसके प्रतिकूल आरकादी ''

"क्या तुम्हे उसकी ज़रूरत मालूम होती है?" बज़ारोव ने पूछा।

"ओह, बस करो, येवगेनी वसीलियेविच । तुम कहते हो कि उसका मन मुझमें रमा है, खुद मुझे भी बराबर कुछ ऐसा महसूस होता रहा है कि मै उसे पसद हू। मै जानती हू कि उम्र में मै उसकी चाची-मौसी के बराबर हू, लेकिन तुमसे मै नही छिपाऊगी कि वह अब मेरे खयालो में रमता जा रहा है। ओह, एक अजीब लुभावनापन है इस नवजात, और ताजगी में पगी इस भावना में ''

"ऐसे मामलो में, आमतौर से, सम्मोहन शब्द का ज्यादा प्रयोग किया जाता है," बज़ारोव ने बीच में ही कहा। शान्त और स्थिर होते हुए भी उसकी आवाज किसी रिसती हुई कसक के कारण धुधली-सी पड गई थी। "कल आरकादी मोम की भाति पिघलकर घनिष्ठ हो उठा था, लेकिन उसने तुम्हारे या तुम्हारी बहिन के बारे में एक भी शब्द नही कहा यह एक महत्वपूर्ण लक्षण है।"

"कात्या को जैसे वह अपनी बहिन समझता है," अन्ना सेर्गेयेवना ने कहा, "और उसकी यह विशेपता मुझे पसद है। फिर भी,

शायद, उनके बीच इतनी घनिष्ठता मुझे नही पनपने देनी चाहिए।"

"यह क्या वहिन की आवाज़ है?" वज़ारोव ने अलसा कर पूछा।

"वेशक . लेकिन हम खडे क्यो हैं? चलिए, टहलते चले। हमने भी क्या अनोखी वार्ते शुरू कर दी? क्यो, क्या तुम्हे ऐसा नही मालूम होता? मैं यह सोच तक नही सकती थी कि तुमसे कभी इस तरह से वाते कर सकूगी। जानते ही हो, मैं तुमसे कुछ डरती हू और फिर भी तुमपर भरोसा करती हू। कारण, तुम सचमुच मे वहुत ही भले हो।"

"पहली वात तो यह कि मैं कतई भला नही हू। दूसरे यह कि तुम्हारे लिए अव मैं कोई अर्थ नही रखता। फिर भी तुम मुझे कहती हो यह ऐसा ही है जैसे कोई मुर्दे के सिर पर माला चढाए।"

"येवगेनी वसीलियेविच, हममें इतना वल नही " उसने कहना शुरू किया, लेकिन हवा का एक झोका पत्तो को सरसराता उसके शव्दो को वहा ले गया।

"लेकिन तुम, फिर भी, आज़ाद हो," कुछ रुककर वज़ारोव ने कहा। वाकी शव्द एकाकार हो गए। कुछ सुनाई न दिया। पावो की आहट दूर तक होती गई सन्नाटा घिर आया।

आरकादी कात्या की ओर मुडा। वह अभी भी उसी मुद्रा मे वैठी थी। केवल उसका सिर और अधिक झुक गया था।

"कातेरीना सेर्गेयेवना," उसकी आवाज़ काप रही थी और उसके हाथो की मुट्ठिया भिची थी, "मै तुम्हे प्यार करता हू, आखिरी तौर पर और हमेशा के लिए। तुम्हारे सिवा मै और किसी को प्यार नही करता। यही वह चीज़ है जो मैं तुम्हें वताना,

तुम्हारे मन की वात जानना और तुमसे पाणिग्रहण के लिए कहना चाह रहा था। कारण, मै धनवान नही हू और मेरा हृदय सभी कुछ न्योछावर करने के लिए हुमक रहा है तुम जवाव क्यो नही देती? क्या तुम मेरा विश्वास नही करती? क्या तुम समझती हो कि मै यो ही छलछला रहा हू? लेकिन पिछले कुछ दिनो की याद करो! क्या तुमने नही देखा कि बाकी सभी कुछ—विश्वास करो—बाकी सभी कुछ, वह सब, कभी का विलीन हो चुका है और उसका एक भी चिन्ह अब शेष नही रहा है? मेरी ओर देखो, कुछ तो मुह से कहो मै प्यार मैं तुमसे प्यार करता हू विश्वास करो मुझपर!"

कात्या ने गीली उजली आखो से उसे देखा और काफी हिचकिचाहट के बाद होठो पर मुसकान की एक परछाई-सी लाती हुई वुदबुदाई

"हा।"

आरकादी हुमककर खडा हो गया।

"'हा'! तुमने 'हा' कहा, कातेरीना सेर्गेयेवना! इसका अर्थ क्या है? क्या इसका अर्थ यह है कि मै तुमसे प्यार करती हू, या यह कि तुम मुझपर विश्वास करती हो या या ओह, मुझमें साहस नही कि उसे अपनी जुबान पर ला सकू "

"हा," कात्या ने दोहराया, और इस बार उसके समझने में कसर नही रही। उसने उसके बडे बडे सुन्दर हाथो को अपन हाथो में थामा और आनन्दातिरेक से आत्मविभोर हो उन्हे अपने हृदय से सटा लिया। अपने पैरो पर खडा होना तक उसके लिए दुश्वार हो रहा था, और वह बार बार दोहरा रहा था "कात्या, कात्या!"

उधर कात्या थी कि उसने एक अजीब अल्हड अन्दाज में आसू चुआने

शुरू कर दिए थे। वह रोती भी जाती थी और अपने इन आसुओ पर मृदु मृदु मुसकराती भी जाती थी। जिसने अपनी प्रेयसी की आखो में ऐसे आसू न देखे, जिसका हृदय नही थरथराया, वह भला क्या जाने कि क्षणभगुर मानव इस धरती पर कितना सुखी हो सकता है!

अगले दिन, तडके ही, अन्ना सेर्गेयेवना ने बज़ारोव को अध्ययनकक्ष में बुलाया और अटपटी-सी हसी हसते हुए मुडा हुआ एक कागज़ उसे थमा दिया। यह आरकादी का पत्र था जिसमें उसने उसकी बहिन से विवाह करने का प्रस्ताव किया था।

बज़ारोव जल्दी से पत्र पढ गया और कुत्सित प्रसन्नता की भावना को, जो सहसा उसके हृदय में उमड आई थी, व्यक्त करते करते रुक गया।

"सो यह बात है," उसने कहा, "और तुम, मेरी समझ में कल ही तो, यह सोच रही थी कि वह कातेरीना सेर्गेयेवना को अपनी बहिन मानता है। हा तो अब क्या इरादा है?"

"तुम क्या सलाह दोगे?" अभी भी वैसे ही हसते हुए अन्ना सेर्गेयेवना ने पूछा।

"अच्छा तो सुनो," बज़ारोव ने भी हसते हुए कहा, हालाकि अन्ना सेर्गेयेवना की भाति हसने की मनःस्थिति में वह भी नही था, "मेरा खयाल है कि तुम्हे इन युवा जनो को अपना आशीर्वाद देना चाहिए। जोडी हर लिहाज़ से अच्छी है। किरसानोव काफी सम्पन्न है, इकलौता लडका है, और उसका बाप बहुत ही भला आदमी है, वह विरोध नही करेगा।"

ओदिनत्सोवा ने कमरे में एक चक्कर लगाया। उसका चेहरा लाल से सफेद हो चला।

"सो तुम ऐसा सोचते हो ?" उसने कहा। "अच्छी बात है, मुझे भी इसमें कोई आपत्ति नही दिखाई देती   कात्या की खातिर मैं प्रसन्न हू   और आरकादी निकोलायेविच की खातिर भी। बेशक, उसके पिता का जवाब आने तक मै राह देखूगी। मै खुद उसे ही इसके लिए रवाना करूगी। आखिर वह सही निकला जो कल मैंने तुमसे कहा था—यह कि हम दोनो बुढा चले है   लेकिन यह कैसे हुआ कि मै कुछ भी नही जान सकी ? बडे अचरज की बात है।"

अन्ना सेर्गेयेवना फिर ठठाकर हसी और उसी क्षण दूसरी ओर घूम गई।

"आज के युवा डाल-डाल पात-पात चलने में बडे चतुर है," बज़ारोव ने भी हसते हुए टीका की। फिर कुछ रुककर बोला "अच्छा तो अब विदा। उम्मीद है कि इस मामले को तुम खुशी के साथ निबटा सकोगी। मै भी दूर से ही देखकर खुश हो लूगा।"

ओदिनत्सोवा तेज़ी से उसकी ओर मुडी।

"क्यो, क्या तुम जा रहे हो ? अब तुम्हे रुकने में भला क्या आपत्ति हो सकती है ? रुको न   तुमसे बाते करने में एक अजीब थरथराहट का अनुभव होता है   जैसे किसी गहरे खड्ड के कगारे पर चल रहे हो। एक बार तो हृदय सकपका जाता है, लेकिन फिर—जाने कैसे—हिम्मत बाध बढ चलता है। सच, रुक जाओ !"

"रुकने के लिए निमत्रण, और बात करने की मेरी प्रतिभा की खुश कर देनेवाली प्रशसा, दोनो के लिए धन्यवाद, अन्ना सेर्गेयेवना। लेकिन मुझे लगता है कि मैं कुछ जरूरत से ज्यादा लम्बे अर्से से अजनबी वातावरण में रम रहा हू। उडन-मछली कुछ समय के लिए ही हवा में निराधार टिकी रह सकती है, लेकिन फिर अविलम्ब पानी

में उसका फडफडाकर गिरना अनिवार्य है। सो कृपा कर अब मुझे भी अपने असली ठौर-ठिकाने पर लगने दीजिए।"

ओदिनत्सोवा ने ध्यान से उसे परखा। बज़ारोव का चेहरा कटु मुसकान से वल खा रहा था। "यह आदमी मुझे प्यार करता था!" उसने सोचा, अचानक तरस का एक भाव उसके हृदय में उमडा और सवेदना से अपना हाथ उसकी ओर वढा दिया।

लेकिन उसका यह भाव उससे छिपा न रहा।

"नही," एक डग पीछे हटते हुए उसने कहा, "मैं ग़रीव हू, लेकिन आज तक मैंने कभी किसी के सामने हाथ नही फैलाया। अच्छा तो विदा मैडम, और बस, भली-चगी रहना।"

"मेरा विश्वास है कि हमारी यह मुलाकात आखिरी मुलाकात नही सिद्ध होगी," अन्ना सेर्गेयेवना ने सहज स्निग्धता के साथ कहा।

"हमारी इस दुनिया में जो भी हो जाए थोडा है," वज़ारोव ने जवाव में कहा, सिर झुकाया और वाहर चल दिया।

"सो तुमने अपने लिए एक घोसला वनाने का निश्चय कर लिया है," उमी दिन, उस समय जवकि अपने सूटकेस के सामने वैठा वह कपडे रख रहा था, उसने आरकादी से कहा, "जो हो, खयाल बुरा नही है। लेकिन इतनी-सी वात के लिए यह लुकाव-छिपाव क्यो? मै उम्मीद करता था कि तुम किसी दूसरी, सर्वथा भिन्न, डोगी का पाल सभालोगे। या फिर हो सकता है कि तुम खुद भी अनजाने में ही पकडे गए?"

"सच पूछो तो तुम्हे छोडकर आते समय खुद मुझे भी इसका गुमान नही था," आरकादी ने जवाव दिया, "लेकिन यह वेकार का वन्धन किस लिए? तुम्हारा यह कहना कि 'खयाल अच्छा है,'—विवाह के वारे में तुम्हारे विचार क्या ऐसी चीज़ हैं जो मुझसे छिपे हो?"

"ओह, मेरे प्यारे मित्र!" बजारोव ने कहा। "तुम्हारी बाते भी एक तमाशा होती हैं। देखो न, तुम्हारी आखो के सामने ही मैं क्या कर रहा हू मेरे सूटकेस में कुछ जगह खाली है, उसे मैं घास-फूस से भर रहा हू। जीवन के सूटकेस का भी यही हाल है। जो मन में आए भर लो, बस शून्य नही रहना चाहिए। बुरा न मानना, मेहरबानी करके। कातेरीना सेर्गेयेवना के बारे में मेरी जो सदा राय रही है, उसे शायद तुम भूले न होगे। कुछ लडकिया केवल इसी लिए दक्षता का सर्टीफिकेट पा जाती हैं कि वे बडी चतुराई से आहे भरना जानती हैं। लेकिन तुमने जिस लडकी को चुना है वह तुमसे अपनी बाते मनवाकर छोडेगी और तुम्हें अपने कब्ज़े में रखेगी, यह मैं दावे से कह सकता हू। और ऐसा ही होना भी चाहिए।" सूटकेस का ढक्कन फटाक से बद करते और फर्श से उठते हुए वह कहता गया। "और अब, उस समय जबकि मैं विदा हो रहा हू, मैं फिर दोहराना चाहता हू अपने को भुलावा देने से कोई लाभ नही, हम हमेशा के लिए अलग हो रहे हैं, और यह तुम खुद भी समझते हो तुमने समझदारी का काम किया हमारे जैसे कड़वे, ऊबड-खाबड और एकाकी जीवन के लिए तुम पैदा नही हुए। तुममें न साहस है, न क्रोध। तुममें केवल हौसला है, युवक सुलभ जोश है जो हमारे मसरफ का नही। कुलीन वर्ग के तुम लोग बहुत ज़ोर मारने पर भी शरीफाना नम्रता या शरीफाना विक्षोभ से आगे नही बढ पाते, जो बिल्कुल बेकार है। लडाई से तुम दूर भागते हो, और फिर भी अपने को तीसमारखा से कम नही समझते, लेकिन हम हैं कि लडने के लिए कसमसाते रहते हैं। क्यो न हो, हमारी धूल तुम्हारी आखो को घायल कर देगी, हमारी गदगी तुम्हारे उजलेपन को चटकर जाएगी। इसके अलावा हमारे लिए अभी तुम्हारे दूध के दात तक नही टूटे है, तुम अनजाने ही अपने को लगाते हो, आत्म-भर्त्सना

में—अपने को कोचने में—तुम रस लेते हो। इन सब चीजो से हम ऊब चुके है, कोई नयी चीज हम चाहते हैं। तोडने को और बहुत हैं! यो तुम एक अच्छे लडके हो, लेकिन हो आखिर एकदम मुलायम, कुलीनो के एक उदार घराने की एक चिन्दिया—हा, वोलातू*, जैसा कि मेरे पिता कह उठते।"

"हमेशा के लिए तुम अलविदा कह रहे हो, येवगेनी," आरकादी ने उदास मुद्रा में कहा, "उसके अलावा क्या और कुछ तुम्हारे पास कहने के लिए नही है?"

बजारोव अपनी कनपटी खुजलाने लगा।

"है, आरकादी, मेरे पास अन्य शब्द भी है, लेकिन मै उनका प्रयोग नही करूगा, कारण कि ऐसा करना रोमाण्टिकता होगी, दूसरे शब्दो में, छलछला पडना होगा। तुम जाओ, शादी करो, अपने नन्हे-से घोसले को गुदगुदा बनाओ, नन्हे मुन्नो की फौज पैदा करो—जितने अधिक हो, उतना ही अच्छा। वे बढिया जीव होगे, अन्य किसी लिए नही तो केवल इसी लिए कि उन्हे इस दुनिया में वाजिब समय पर आने का सौभाग्य प्राप्त होगा—हमारी-तुम्हारी तरह नही। ओह, देखता हू कि घोडे तैयार हैं। चलने का समय हो गया। विदा भी सबसे ले चुका अच्छा तो . आओ, गले मिल लिया जाए, ठीक है न?"

आरकादी अपने भूतपूर्व निर्देशक और मित्र के गले से लिपट गया। उसकी आखो में आसू छलछला रहे थे।

"ओह, यौवन का यह आवेश!" बजारोव ने स्थिर भाव से कहा। "लेकिन मुझे कातेरीना सेर्गेयेवना पर भरोसा है। देख लेना, कितनी जल्दी वह तुम्हारे घावो पर मरहम लगाती है!"

---

* बस और क्या। (फ्रेंच)—स०

"अच्छा तो विदा, मेरे पुराने साथी," गाडी में बैठ जाने के बाद बज़ारोव ने आरकादी से कहा और फिर अस्तबल की छत पर सटकर बैठी कागो की जोडी की ओर सकेत करते हुए बोला "वह देखो, तुम्हारे लिए एक प्रत्यक्ष दृष्टान्त मौजूद है!"

"मतलब?" आरकादी ने पूछा।

"अरे, प्रकृति के इतिहास का क्या तुम्हे इतना भी ज्ञान नही, या तुम भूल गए कि घर बसाकर बैठनेवाले पक्षियो में काग का दरजा बहुत ऊचा है? बस, उसका अनुकरण करो   अच्छा तो विदा, श्रीमान!"

गाडी उचककर बढ चली।

बज़ारोव ने सच ही कहा था। उसी साझ कात्या से बाते करते समय आरकादी अपने निर्देशक को एकदम भूल गया। वह अभी से उसके असर में आना शुरू हो गया था। खुद कात्या ने भी यह महसूस किया और इससे उसे कोई अचरज नही हुआ। अगले दिन आरकादी को मारिनो जाना और निकोलाई पेत्रोविच से बाते करके मामले को ठीक करना था। अन्ना सेर्गेयेवना युवा लोगो के लिए बाधा नही बनना चाहती थी, और केवल दुनियादारी का खयाल कर उन्हे ज़रूरत से ज़्यादा देर तक अकेले नही रहने देती थी। राजकुमारी को उनकी राह से अलग ही रखने में उसने काफी शानदार भावना का परिचय दिया। आसन्न परिणय के समाचार ने आसुओ और बेहद झल्लाहट के भवर में उसे डुबा दिया था। अन्ना सेर्गेयेवना भी शुरू शुरू में आशकित हो उठी थी कि उनके सुख का दृश्य उसके लिए कष्टकर होगा, लेकिन हुआ इससे उलटा न केवल यह कि उनके सुख को देखकर वह त्रस्त नही हुई, बल्कि यह कि वह उसे रमणीय – यहा तक कि हृदय-स्पर्शी मालूम हुआ। उसकी इस अनुभूति में प्रसन्नता भी थी, और उदासी भी। "लगता है कि बज़ारोव का

कहना ठीक था," उसने सोचा, "उत्सुकता, निरी उत्सुकता—इसके सिवा कुछ नही, आराम-पसन्दी और स्वार्थपरता "

"बच्चो!" उसने सस्वर कहा, "प्यार क्या कोई ढकोसला है?"

लेकिन न कात्या और न आरकादी, उसकी बात समझ सके। दोनो उससे सकुचाते थे। अनजान में सुने शब्द उनके मस्तिष्क में गहरे अटक गए। लेकिन अन्ना सेर्गेयेवना ने जल्दी ही उनकी खटक दूर कर दी। और इसके लिए उसे विशेष प्रयास भी नही करना पडा—कारण, वह खुद भी अब अपनी सहज स्वाभाविक स्थिति में आ गई थी।

२७

बेटे के अचानक लौट आने पर वृद्ध बज़ारोव दम्पत्ति की खुशी का और भी वारपार नही रहा। उन्हे कतई उम्मीद नही थी कि वह इतनी जल्दी लौट आएगा। अरीना व्लासियेवना घर में फिर्की बनी घूमती थी और इस हद तक अभिभूत हो गई थी कि वसीली इवानिच ने 'कुडक मुर्गी' से उसकी तुलना की, और सचमुच दुमकटी अपनी छोटी जाकेट पहने वह पक्षी की ही भाति दिखाई भी देती थी। और खुद उनका जहा तक सम्बध था, वह केवल काखते-बखियाते, अपने पाइप के अम्बर के छोर को दातो से कुतरते, दोनो हाथो में गरदन को पकडकर अपने सिर को ऐंठते, मानो यह जाचना चाहते हो कि कोई कब्जा तो ढीला नही हो गया है, और मौन आल्हाद में उनका मुह मटका-सा खुला रह जाता।

"पूरे छै सप्ताह तक जमकर रहने के लिए मै आया हू, समझे बुढऊ," बज़ारोव ने उनसे कहा, "और कुछ काम मैं करना चाहता हू, सो कृपा कर कोई बाधा न डालना।"

"बाधा डालने की बात – ओह, मै ऐसा करूगा कि तुम्हे मेरी शक्ल तक याद नही रहेगी!" वसीली इवानिच ने जवाब में कहा।

और उन्होने अपना वचन निभाया भी। बेटे को अपने अध्ययनकक्ष में जमाने के बाद उन्होने अपने आपको उसकी आखो से अगर एकदम नही तो करीब करीब ओझल-सा ही कर लिया, साथ ही अपनी पत्नी की भी लगाम कसी कि वह अपने प्रेम-प्रदर्शन को ज़रा काबू में रखे – एकदम छलछला न पडे। "सुनो प्रिय," उन्होने कहा, "पिछली बार जब येवगेनी यहा था तो हमने इतना लाड-दुलार जताया कि उसे कुछ अपच-सा हो गया। अब हमें ज़रा समझदारी से काम लेना होगा।" अरीना व्लासियेवना ने यह मजूर तो कर लिया, लेकिन इससे उसके पल्ले कुछ नही पडा। अपने बेटे को अब वह केवल खाना खाने के समय ही देख पाती, और उसे सम्बोधित तक करते भय से काप उठती। "प्यारे येवगेनी," वह कहना शुरू करती, और इससे पहले कि वह मुह फेरे, उसकी उगलिया जालीदार बटुवे की डोरियो पर फिसलने लगती और उसकी ज़ुबान लडखडाने लगती – "नही, कुछ नही, मैं तो केवल " इसके बाद वह वसीली इवानिच के पास पहुचती, और अपनी ठोडी को हाथ की अजुली में टिकाती हुई कहती "यह कैसे मालूम करे प्रिय कि आज कलेवे में कौन चीज़ येवगेनी को ज्यादा पसन्द आएगी – गोभी का शोरबा या पुलाव?" "लेकिन यह खुद तुमने उससे क्यो नही पूछ लिया?" "मैं उसके काम में बाधा डालना नही चाहती थी!" लेकिन बज़ारोव ने जल्दी ही अपना वह एकान्तवास छोड दिया। उसकी क्रियाशीलता का ज्वार ठडा पड चला और एक क्लान्त अलसाहट तथा सुन्न कर देनेवाली बेचैनी उसके रोम रोम में सरसराने लगी। उसकी सभी हरकतो में एक अजीब बेहोशी छाई थी, यहां तक कि उसकी चाल-ढाल भी – जिसमें सदा एक दृढता और

अदम्य आत्मविश्वास नजर आता था – वदल गई थी। अब वह अकेले घूमने न जाता और संग-साथ के लिए उसका हृदय हुमकता। वराण्डे में बैठकर अब वह चाय पीता, वसीली इवानिच के साथ वगीचे में चक्कर लगाता और उसके साथ धूम्रपान करता। एक वार उसने फादर अलेक्सेई के वारे में भी पूछा-ताछा। यह परिवर्तन देख वसीली इवानिच का हृदय शुरू में तो उछल उठा, लेकिन उसकी यह खुशी कुछ ज्यादा नही टिकी। "येवगेनी को देखकर चिन्ता होती है," अकेले में उसने अपनी पत्नी से दुखडा रोया। "यह नही कि वह नाखुश या नाराज हो, अगर ऐसा होता तो भी गनीमत थी, लेकिन वह त्रस्त और दुखी मालूम होता है, और यही सबसे वुरा है। किसी घडी भी अपने मुह से एक शब्द नही निकालता। इससे तो अच्छा होता अगर वह हमें झिडकता, डाट-डपट ही करता। दिन दिन दुवलाता आ रहा है और चेहरे का रग ऐसा हो गया है कि जरा भी नही देखा जाता।" "भगवान ही मालिक है," वृद्धा फुसफुसाकर कहती, "मैं तो उसके गले में पाक तावीज़ ही डाल देती, लेकिन उसे भला यह कहा सुहाएगा?" एक या दो वार, वडी चतुराई से, वसीली इवानिच ने उसकी थाह लेनी चाही – उसके काम, स्वास्थ्य और आरकादी का जिक्र छेडा लेकिन वजारोव अनमने और उडते हुए ढग से टाल गया और एक दिन तो, यह आभास पाकर कि उसके पिता उसकी टोह लेने की कोशिश कर रहे है, झल्लाकर वोला "यह चोर की तरह तुम क्यो मेरे इर्द-गिर्द मडराते रहते हो? यह तो पहले से भी वुरा है।" "अरे, वस वस, सो कुछ नही!" वेचारे वसीली इवानिच ने हडवडाकर कहा। राजनीति के सहारे टोह लेने में भी उन्हे अधिक सफलता नही मिली। एक वार उन्होने प्रगति और किसान-वर्ग की आसन्न मुक्ति की चर्चा छेडी – इस आशा से कि शायद वेटे की दिलचस्पी कुछ

जाग जाए, लेकिन उसने अनमने अन्दाज़ में जवाव दिया "कल जव मैं वाड़े के पास से गुजर रहा था तो पास ही कही कुछ किसान लटको के गाने की आवाज सुनाई दी। पुराने वढिया गीतो को छोड वे कोई चलताऊ गीत रेक रहे थे—"मेरी जान तेरी अदाओ ने मारा,"—यह है तुम्हारी प्रगति!"

कभी कभी वजारोव टहलता हुआ गाव मे निकल जाता और खिल्ली उडाने के अपने पुराने अन्दाज मे किसी एक किसान से वतियाना शुरू कर देता। "हा तो वुढऊ," वह उमसे कहता, "झटपट यह तो वताओ कि जीवन के वारे मे तुम्हारे क्या विचार है? कहते है कि रूस की समूची शक्ति और उसका भविष्य तुममें समाया है, कि इतिहास में तुम एक नये युग का सूत्रपात करोगे—कि तुम हमें एक प्रामाणिक भाषा देनेवाले और हमारे लिए विधान की दाग-बेल डालनेवाले हो!" बुढऊ या तो गुमसुम बने रहते या ऐसे ही कुछ कह उठते, "एइयो, सो तो हम कर सकते है अव, तुमी देखो, पैंट जे है जो है, सो हमारा दरजा जे है "

"मुझे तो वस तुम यह वता दो कि तुम्हारा यह 'मीर'* क्या है?" बज़ारोव बीच में ही टोकता, "क्या यह वही 'मीर' है जो तीन मछलियो पर टिका कहा जाता है?"

"सो तो मालिक जे धरती है जो तीन मच्छियो पर टिकी है," स्थिर-गम्भीर अन्दाज़ और बडे वडे वुजुर्ग की भाति कृपापूर्ण तथा लयदार आवाज़ में देहाती वुढऊ कहते, "हमारा जे 'मीर' तो, जो है सो, सव कोई जानें, मालिको की मर्ज़ी पर टिका है, चोकि मालिक, आप

---

* रूसी भाषा में 'मीर' शव्द के तीन अर्थ है देहाती समाज, ससार और शान्ति।—अनु०

ही हमारे भाई-वाप हो। औ, मालिक जित्ता सखत होता है, उत्ता ही जादा दहकान उसे चाता है।"

इस तरह के प्रलाप को सुन एक बार बज़ारोव ने घिन्नाकर कधे बिचकाए, दहकान को वही फटफटाता छोड़ा और मुह मोडकर चल दिया।

"क्या बतिया रहे थे, बाबा?" मजीदा चेहरेवाले अधेड आयु के एक किसान ने अपनी झोपडी की चौखट पर खडे खडे ही अपने उस गाव-भाई से पूछा, "क्या बकाया के बारे में बतिया रहे थे?"

"अजी राम कहो, जो है सो बकाया का उससे भला क्या वास्ता!" पहलेवाले किसान ने जवाब दिया, और इस बार उसकी आवाज़ में बडे-बूढो जैसे उस लयदार लहजे का कही नाम तक नही था, उलटे उसमें हिकारत से भरा एक भारीपन आ गया था। "यो ही कुछ बूकने के लिए छोकरे का जी चर्रा उठा, सो लगा बाबा आदम का राग अलापने। निरा लिफाफा, देखा नही तुमने, क्या जाने कि कुत्ते के कित्ती टाग होती है!"

"एइयो, वह क्या जाने?" दूसरे दहकान ने प्रतिध्वनि की और सिर हिला हिलाकर तथा अपनी पेटियो को कसते हुए वे अपने घर-बार की चर्चा में जुट गए। आह! वज़ारोव जिसने घृणा से अपने कधे बिचका लिए थे, बज़ारोव जो किसानो से बतियाना जानता था (पावेल पेत्रोविच के साथ बहस में उसने ऐसी ही शेखी बघारी थी), बजारोव जो अपने आपमें इतना आश्वस्त था—उसने कभी सपने में भी यह गुमान न किया होगा कि किसानो की नजर में वह गपोडशखो की बिरादरी का जीव है

लेकिन, अन्ततोगत्वा, बज़ारोव को भी अपने लिए एक रास्ता मिल गया। एक दिन—उस समय वह भी मौजूद था—वसीली

इवानिच किसी किसान की लुजी टाग में पट्टी वाधने मे जुटे थे, लेकिन वुढऊ के हाथ काप रहे थे और पट्टी सभाले नही सभल रही थी। बेटे ने उनकी मदद की, और इसके बाद उनकी डाक्टरी में हाथ वटाना शुरू कर दिया, हालाकि वह अब भी खुद अपने तजवीज़े इलाजो की – जिन्हे उसके पिता तुरत अमल में लाते थे – खिल्ली उडाने से नही चूकता था। बज़ारोव की इस छीटाकशी से वसीली इवानिच ज़रा भी विचलित नही होते, वल्कि वह गुदगुदा तक उठते। अपने चीकट चोगे को पेट के ऊपर दो उगलियो से थामे और अपने पाइप से धुवा छोडते हुए चिन्दिया उडानेवाली अपने बेटे की टिप्पणियो को खुशी से वह सुनते, और कडुवाहट की मात्रा जितनी ही अधिक उनमें होती, उतनी ही अधिक हार्दिकता के साथ खुशी से मगन पिता हसते और कालौंछ-चढी उनकी वत्तीसी का एक एक दात चमक उठता। यहा तक कि इन वेतुकी या वेमतलव 'फुलझडियो' को कभी कभी वह खुद भी दोहराने लगते। मिसाल के लिए, कई दिन तक, मौके-बेमौके, एक इस मिसरे की माला जपते रहे – "खुदा के घर में कही ऐसा न कर बैठना!" – सिर्फ इसलिए कि यह मालूम होने पर कि वह प्रात प्रार्थना के लिए गिरजे में जाते हैं, बजारोव ने यह फिकरा उनपर कसा था। "खुदा का शुक्र है," उन्होने अपनी पत्नी से फुसफुसाकर कहा, "वह अब कुछ खुश नजर आता है। वस क्या कहू, आज तो उसने मुझे एकदम चित्त ही कर दिया!" ऐसा सहयोगी पाने की कल्पना मात्र से उनके हृदय का रोम रोम छलछला उठता और गर्व से वह भर जाते। "अरे, अपना भाग्य सराहो प्रिय," मटमैला मरदाना ओवरकोट पहने और सिर पर रूसी देहाती टोपी लगाए किसी किसान स्त्री को गुलाब-लोशन की शीशी या हरवेन-मलहम की डिबिया देते हुए कहते, "तुम अपना भाग्य सराहो भली औरत, कि मेरा वेटा आजकल यहा आया हुआ है, और एकदम नये

वैज्ञानिक तरीको से तुम्हारा इलाज किया जा रहा है, समझी ? इतना वढिया डाक्टर फ्रान्स के शाह नैपोलियन को भी नसीब न हुआ होगा।" और वह स्त्री जो 'आव-मरोडे' की शिकायत लेकर आई थी (हालाकि न वह आव का मतलब जानती थी और न मरोडे का) धरती पर माथा टेकती और अगिया के भीतर से डाक्टर की फीस—अगोछे के छोर में लिपटे चार अडे—खोज खाज कर वाहर निकालती।

एक वार वज़ारोव ने सामने से गुज़रते कपडे की फेरी करनेवाले का दात भी उखाडा और हालाकि वह एक वहुत ही मामूली दात था, लेकिन वसीली इवानिच ने उसे एक तोहफे के रूप में रख छोडा, फादर अलेक्सेई को उसे दिखाया और यह कहते न अघाए

"ज़रा इस दन्तुल्ले की जडो पर तो ध्यान दो! वज़ारोव का ही दम था जो उसने इसे उखाड डाला। और वह फेरीवाला, वह तो दात के साथ ही उठता चला आया सच, ओक का पेड भी उस झटके की ताव न ला पाता "

"वहुत खूव!" अन्त में, और कुछ न सूझने पर खुशी से छलछलाते वृद्ध से पिड छुडाने के लिए फादर अलेक्सेई ने कहा।

एक दिन पास के गाव का एक किसान अपने भाई को लेकर वसीली इवानिच को दिखाने लाया। वह टाइफस ज्वर से पीडित था। घास के एक पूले पर पडा वेचारा दम तोड रहा था। सारे वदन पर काले चकत्ते हो गए थे और काफी देर से वेहोश था। वसीली इवानिच ने खेद प्रकट किया कि डाक्टरी मदद लेने की वात लोगो को पहले क्यो नही सूझती, और ऐलान किया कि अव कोई उम्मीद नही है। और ऐसा ही हुआ भी। किसान अपने भाई को लेकर घर पहुच भी न पाया कि गाडी में ही उसकी मृत्यु हो गई।

इसके तीन दिन बाद बज़ारोव ने अपने पिता के कमरे में दाखिल होते हुए पूछा

"लूनर कास्टिक होगा थोडा-सा ?"

"हा, है। क्या करोगे ?"

"जरूरत है   कटे को दागना है।"

"किसके ?"

"खुद अपने।"

"खुद तुम्हारे ? सो कैसे ? क्यो कर कटा ? किस जगह ?"

"यहा, उगली में। आज मैं गाव गया था – जहा से वह टाइफस पीडित किसान आया था न, वही। जाने क्यो, लाश की चीर-फाड की जानी थी। और इस तरह के काम का मेरा अभ्यास बहुत दिनो से छूटा था।"

"तो ?"

"तो यह कि मैंने स्थानिक डाक्टर से कहा कि मुझे करने दो। नतीजा यह कि अपनी उगली काट ली।"

वसीली इवानिच का चेहरा अचानक पीला पड गया और बिना एक शब्द कहे दौडकर अपने अध्ययनकक्ष में पहुचे और हाथ में लूनर कास्टिक का एक टुकडा लिए तुरत लौट आए। बजारोव उसे लेकर चलने को हुआ।

"खुदा के लिए,' वह बुदबुदा उठे, "यह मुझे ही कर लेने दो।"

बज़ारोव के होठो पर एक वक्र मुसकराहट फैल गई।

"अभ्यास का मौका हथियाने के लिए उतावलापन तुममें भी कुछ कम नही है।"

"दया करो, मजाक न करो। जरा अपनी उगली दिखाओ। नही, ऐसा कुछ ज्यादा कटा-वटा नही है। क्या दुखता है ?"

"डरो नही, खूब जोरो से दबाओ।"

वसीली इवानिच ठिठके।

"तुम्हारा क्या खयाल है येवगेनी, लोहे से दागना क्या ज्यादा अच्छा नही रहेगा?"

"यह सब बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अब, सच पूछो तो, लूनर कास्टिक भी बेकार है। जो छूत लगनी थी, लग चुकी, उसे अब नही रोका जा सकता।"

"क्यो रोका क्यो नही जा सकता " जैसे-तैसे, लडखडाते शब्दो में वसीली इवानिच ने कहा।

"मुझे तो ऐसा ही लगता है। चार घटे से भी ज्यादा हो चुके है।"

वसीली इवानिच ने घाव को एक बार फिर कास्टिक से दागा।

"क्या उस डाक्टर के पास लूनर कास्टिक नही था?"

"नही।"

"ओह, भगवान, भला यह कैसे हो सकता है? कहने को डाक्टर, और उसके पास इतनी आवश्यक चीज़ भी नही!"

"और उसके चीरफाड के सामान—काश कि तुम उन्हे देख पाते!" बज़ारोव ने कहा और कमरे से चल दिया।

उस सारी रात और अगले दिन अपने बेटे के कमरे में जाने के लिए हर सम्भव बहाने का वसीली इवानिच ने आविष्कार किया, और बावजूद इसके कि उन्होंने दुनिया भर की तो बाते की लेकिन घाव के बारे में एक शब्द भी मुह से नही निकला, वह कुछ इतना नज़र जमाकर उसकी आखो में देखते और इतनी व्यग्रता से उसे निहारते कि बज़ारोव अधिक धीरज न रख सका और उसने वहा से भाग जाने की धमकी दी। वसीली इवानिच ने वायदा किया कि अपनी उद्विग्नता को अब वह

काबू में रखेंगे, इसलिए और भी अधिक कि अरीना व्लासियेवना ने भी, जिससे उन्होने बिला शक सारी बातें छिपा रखी थी, उनकी जान खानी शुरू कर दी थी कि रात को सोते क्यो नही है, तुम्हे हो क्या गया है? पूरे दो दिन उन्होने जैसे-तैसे निभाया, हालाकि बेटे के चेहरे की रगत उन्हे कतई अच्छी नही मालूम हो रही थी, लुक-छिपकर वह उसे देखते रहते थे। लेकिन तीसरे दिन, कलेवे के समय, वह और अधिक जब्त नही कर सके। बज़ारोव आखे झुकाए बैठा था और खाने को उसने छुआ तक नही था।

"खाते क्यो नही, येवगेनी?" जितना भी उनसे हो सकता था, निर्लिप्तता जताते हुए उन्होने पूछा। "खाना तो काफी स्वादिष्ट बना है, क्यो?"

"जी नही करता, इसलिए खाया भी नही जाता।"

"क्या भूख नही है? सिर कैसा है? दुखता तो नही?" सहमी-सी आवाज में उन्होने पूछा।

"दुखता है। और दुखता क्यो नही?"

अरीना व्लासियेवना चौकस हो सीधी बैठ गई।

"कृपा कर नाराज़ न होना, येवगेनी," वसीली इवानिच कहते गए, "न हो तो जरा मुझे अपनी नाडी ही देख लेने दो।"

बज़ारोव उठ खडा हुआ।

"बिना नाडी के ही मै तुम्हे बता सकता हू कि मुझे तेज बुखार है।"

"क्या झुरझुरी भी मालूम होती है?"

"हा। मैं चलकर लेटता हू। मेरे लिए थोडी लीमू के फूलो की चाय भेज देना। शायद ठड लग गई है।"

"तभी तो! रात तुम्हारे खासने की ग्रावाज ग्रा रही थी," ग्ररीना व्लासियेवना ने कहा।

"ठड लग गई है," वज़ारोव ने दोहराया ग्रौर कमरे से चल दिया।

ग्ररीना व्लासियेवना लीमू की चाय बनाने में जुट गई। वसीली इवानिच वरावरवाले कमरे में चले गए ग्रौर निर्वाक ग्रान्तरिक वेदना में ग्रपने बालो में उगलिया गडा दी।

उस दिन वजारोव विस्तरे में पडा रहा ग्रौर रात भर एक वोझिल ग्रधजगी तन्द्रा उसे घेरे रही। रात को, एक वजे, जैसे-तैसे जब उसने ग्राखें खोली तो विस्तरे पर झुके ग्रौर देवमूर्ति के दिये की मद्धिम लौ में टिमटिमाते पिता के पीतवर्ण चेहरे पर उसकी नजर पडी। उसने उनसे चले जाने के लिए कहा। वृद्ध ने बात मान ली, लेकिन फिर तुरत ही दवे पाव लौट ग्राए ग्रौर कितावोवाली ग्रलमारी की ग्रोट में ग्राधा छिपकर स्थिर नजर से ग्रपने वेटे को ताकते रहे। ग्ररीना व्लासियेवना भी निश्चल नही थी। ग्रधखुले दरवाजे के पास चुपचाप खडी होकर वह ग्रपने प्यारे येवगेनी की सासो को सुनने ग्रौर वसीली इवानिच की एक झलक पाने का प्रयत्न करती रही। लेकिन सिवा उसकी झुकी हुई पीठ के, जो जरा भी हरकत नही कर रही थी ग्रौर कुछ नजर न ग्राता। वह इतने को ही वहुत मान एक हल्केपन का ग्रनुभव करती। सुवह होने पर वजारोव ने उठने की कोशिश की। उसका सिर चकराया ग्रौर नाक से खून ग्राने लगा। वह फिर विस्तरे पर पड गया। वसीली इवानिच चुपचाप टहल में लगे रहे। ग्ररीना व्लासियेवना ग्राई ग्रौर पूछा कि उसका जी कैसा है। उसने जवाव दिया "ठीक हू," ग्रौर दीवार की ग्रोर ग्रपना मुह फेर लिया। वसीली इवानिच ने ग्रपनी पत्नी को उडनछू करने के लिए एक साथ दोनो हाथ हिलाए। रुलाई रोकने के लिए

पत्नी ने अपने होंठो में दात गडाए और वहा से चली गई। ऐसा मालूम होता था जैसे समूचा घर अचानक अधेरे में डूब गया हो। सभी के चेहरे उतरे थे और हर चीज को एक अजीव सन्नाटे ने घेर लिया था। खलिहान का मुर्गा, जो बहुत शोर मचाता था, पकडकर दूर गाव में पहुचा दिया गया। उस वेचारे की समझ मे ही नही आया कि उसके साथ इतनी वेमुरौवती का सलूक क्यो किया गया। वजारोव अभी भी वैसे ही दीवार की ओर मुह किए पडा था। वसीली इवानिच ने उससे तरह तरह के सवाल पूछने की कोशिश की, लेकिन वज़ारोव उनसे दिक हो उठा, और वृद्ध ने – विना हिले-डुले – अपनी आरामकुर्सी की शरण ली। वस, वह कभी कभी, अपनी उगलिया चटखा लेते। कुछ क्षणो के लिए वह बाहर वगीचे में भी जाते, और पत्थर की मूर्ति की भाति वहा जाकर खडे हो जाते, मानो किसी अकथनीय आश्चर्य ने उन्हे वही-का-वही जाम कर दिया हो (उन दिनो उनके चेहरे पर, आमतौर से, स्थायी आश्चर्य का भाव जैसे जमकर रह गया था), और फिर अपने वेटे के पास लौट आते। पत्नी के वेचैन प्रश्नो से वह बचने की कोशिश करते, लेकिन अन्ततोगत्वा वह उनकी वाह पकड ही लेती और मरोड-सी खाती, करीव करीव आतकपूर्ण, स्वर में फुकार उठती "उसे क्या हुआ है?" तब वह अपने आपको वटोरने की कोशिश करते और जवाब में अपने होठो पर जबर्दस्ती एक मुसकराहट लाना चाहते, लेकिन वह भय से काप उठते, जव देखते कि मुसकराने के वजाय वह ठठाकर हसने लगे है। आज सुबह ही डाक्टर को वुलवाने के लिए उन्होने आदमी भेजा था। उनका वेटा कही इससे नाराज़ न हो जाए, इसलिए उसे इसकी खवर देना वह ज़रूरी समझते थे।

सहसा वज़ारोव करवट लेकर सोफे पर मुडा, पथराई-सी आखो से पिता की ओर उसने ताका और पीने के लिए कुछ मागा।

वसीली इवानिच ने उसे थोडा पानी दिया और इस बहाने उसे उसका माथा छूने का मौका मिल गया। वह बुखार से भभक रहा था।

"क्या देखते हो, बुढ्ऊ," धीमी भरभराई आवाज़ में बज़ारोव ने कहा, "मेरा परवाना आ गया। छूत ने अपना दखल जमा लिया है, दो-एक दिनो में ही मुझे दफनाने का नम्बर आ जाएगा।"

वसीली इवानिच का समूचा वदन डोल गया, जैसे उनके पावो के नीचे की ज़मीन एकदम खिसक गयी हो।

"येवगेनी," लडखडाती आवाज़ में उन्होने कहा, "ये कैसी बाते करते हो? खुदा तुम्हे सलामत रखे। थोडी ठड खा गए हो "

"बस बस," बिना किसी उतावली के बजारोव ने टोका, "डाक्टर होकर ऐमी बाते नही करनी चाहिए। सारे लक्षण छूत के हैं, यह खुद तुममे भी छिपा नही है।"

"नही तो कहा हैं छूत के लक्षण तुम भी अजीब बात करते हो, येवगेनी!"

"यह मव क्या है?" बज़ारोव ने कहा और कमीज़ की आस्तीन उलटकर अपने पिता को वे भयानक लाल चकते दिखाए जो उमके समूचे वदन पर उभर आए थे।

वसीली इवानिच को जैसे काठ मार गया और उनका खून सर्द हो चला।

"तो इससे क्या?" आखिर जैसे-तैसे उन्होने कहा। "अगर यह छूत जैमी कोई चीज़ हो भी तो इससे क्या "

"प्याएमिया," उसके बेटे ने चेताया।

"ए हा महामारी ऐसी "

"प्या-ए-मि-या," निर्मम स्पष्टता के माथ बज़ारोव ने दोहराया, "मालूम होता है कि आप डाक्टरी का क-ख-ग-घ तक भूल गए है।"

"ओ हा बिल्कुल ठीक यही सही बीत जाएगा यह सब भी।"

"कोई सम्भावना नही। लेकिन छोडो, सो कुछ नही। मुझे उम्मीद नही थी कि इतनी जल्दी बिस्तरा गोल करना पडेगा। इसी को कहते हैं भाग्य की मार। तुम और मा दोनो का धर्म में ज़बर्दस्त विश्वास है। सो उसका दामन पकडना, जितना भी पकडा जा सके। परखकर देखना, कितना दम है उसमें।" कुछ और पानी पीकर उसने गला तर किया। "और जब तक मेरा यह दिमाग सही सलामत है मैं चाहता हू कि मेरा एक काम कर दो जानते ही हो, कल या परसो तक यह दिमाग भी इस्तीफा दे देगा। मैं तो अब भी निश्चय से नही कह सकता कि मेरे होश-हवास एकदम दुरुस्त हैं। अभी यहा पडे पडे मुझे लगा जैसे लाल शिकारी कुत्ते चारो ओर से मेरा पीछा कर रहे हैं, और तुम मुझपर ऐसे नज़र गडाए हो मानो मैं कोई जगली मुर्ग होऊ। लगता है जैसे एक नशा-सा मुझपर सवार हो। क्यो मेरी बात तो ठीक से समझ में आ रही है न?"

"सच, येवगेनी, तुम बिल्कुल अच्छे आदमियो की भाति बोल रहे हो।"

"तब तो और भी अच्छा है। तुमने मुझे बताया कि डाक्टर को बुलवा भेजा है चलो, तुम्हारा यह खेल भी सही अब मुझपर भी एक इनायत करो किसी को भेजकर "

"आरकादी निकोलायेविच के पास?" वृद्ध ने बीच में ही कहा।

"आरकादी निकोलायेविच कौन?" बज़ारोव कुछ शकित-सा बुदबुदाया। "ओह, वह नये परोवाला पछी? न, उसे परेशान न करो, वह अब घोसले का जीव बन गया है। चौंको नही, अभी सरसाम शुरू नही हुआ। ओदिनत्सोवा—अन्ना सेर्गेयेवना

ओदिनत्सोवा — के पास किसी को भेज दो। इधर ही उसकी जागीर है क्या तुम उसे जानते हो ?" वसीली इवानिच ने सिर हिलाया। "उसके पास मेरा, येवगेनी वज़ारोव का, सलाम भेजना और उसे यह खवर करना है कि वह मृत्यु-शय्या पर पडा है। क्यो, इतना कर दोगे न ?"

"ज़रूर लेकिन तुम मृत्यु-शय्या पर ? भला यह कैसे हो सकता है, येवगेनी अव, खुद तुम्ही सोचो क्या यह ठीक है ?"

"सो मैं नही जानता। लेकिन देखो, सन्देश ज़रूर भेज दो।"

"मै अभी आदमी रवाना किए देता हू, और खुद अपने हाथ से उसे एक पुर्ज़ा लिखकर दे दूगा।"

"नही, यह सव किस लिए ? उससे सिर्फ इतना कहना है कि मैंने सलाम भेजा है, वस और कुछ नही। हा तो अव मै फिर अपने उन शिकारी कुत्तो के पास पहुचता हू। अजीव तमाशा है। मै मौत का चेहरा देखना चाहता हू — चाहता हू कि अपनी कल्पना के डोरो से वाधकर उसे अपनी आखो के सामने खडा करू लेकिन सव वेकार। ले-देकर एक धव्वा-सा नज़र आता है वस इतना ही, और कुछ नही।"

कसमसाकर उसने फिर दीवार की ओर मुह कर लिया। वसीली इवानिच अध्ययनकक्ष से वाहर आ गए, पावो को घसीटते अपनी पत्नी के सोने के कमरे में पहुचे और देवमूर्तियो के आगे घुटनो के वल गिर पडे।

"दुआ करो, अरीना, दुआ करो," वह कराह उठे, "हमारा वेटा मर रहा है।"

डाक्टर आया — वही डाक्टर जिसके पास वज़ारोव के लिए लूनर कास्टिक तक नही था। रोगी की जाच करने के वाद उसने

चिकित्सा की प्रतीक्षा-प्रणाली तजवीजी और बडी तत्परता के साथ यह भी विश्वास प्रकट किया कि रोगी के चगे होने की सम्भावना है।

"क्या आपने मुझ जैसी हालतवाले लोगो को कभी मौत के मुह मे से लौटते भी देखा है?" बजारोव ने पूछा और अचानक सोफे के पास पडी भारी मेज का पाया पकडकर उसे इतने ज़ोरो से हिलाया कि वह डगमगा गई।

"जीवन की सारी हुमक अभी भी मौजूद है," उसने कहा, "फिर भी मुझे मरना होगा! वृद्ध आदमी के लिए, कम से कम, इतना तो है ही कि उसके जीने का अभ्यास शेष हो चुका होता है, लेकिन मैं शक्ति हो तो अब मौत से इन्कार करके उसे आज़माओ। वह तुमसे इन्कार करती है, और बस, सारा खेल खत्म। लेकिन यह रो कौन रहा है?" थोडा रुककर उसने कहा। "मा? बेचारी मा! अपना लाजवाब पुलाव अब वह किसे खिलाएगी? और तुम, वसीली इवानिच, देखता हू कि तुमने भी आसुओ का नल खोल दिया है। अच्छा, अगर ईसाइयत सहारा न दे तो दार्शनिक, या वैरागी बन जाना। क्यो, दार्शनिक होने का तो तुम दावा भी किया करते थे न?"

"कहा का और कैसा दार्शनिक!" वसीली इवानिच, शोक से मर्माहत, चीख़ उठे और आसू उनके गालो पर से ढुरक ढुरककर धरती को भिगोने लगे।

बज़ारोव की हालत हर घडी बद से बदतर होती गई। रोग तेज़ी से लपक रहा था, जैसा कि जर्राही ज़हरबाद में अक्सर होता है। अभी उसकी चेतना लुप्त नही हुई थी और कही हुई बात समझ लेता था। वह अभी भी लड रहा था। "नही, मैं अपने को बदहवास नही होने दूगा," अपनी मुट्ठियो को कसते हुए वह फुसफुसाया, "क्या वाहियात है?"

इसके वाद कहता – "आठ में से दस घटाओ, – क्या बचा ?" वसीली इवानिच ऐसे मडरा रहे थे, जैसे सिर पर भूत सवार हो, एक के बाद दूसरी दवाई तजवीज रहे थे और अपने बेटे के पावो को निरन्तर ढक रहे थे। "ठडी चादर लपेटे रहो कै कराओ पेट पर अलसी की पुलटिस वाधो गदा खून निकालो," वार-वार वह दोहरा रहे थे। डाक्टर, जिसे उन्होने आग्रहपूर्वक रोक लिया था, सिर हिलाकर उनकी हर वात पर हामी भरता, रोगी को लैमोनेड देता, अपने लिए कभी पाइप की फर्माइश करता और कभी 'रूह अफज़ा' की – यानी वोदका की। अरीना व्लासियेवना दरवाज़े के पास एक छोटे से मोढे पर वैठी थी और वीच वीच में केवल दुआ करने के लिए वहा से थोडा खिसक जाती थी। अभी उस दिन एक दस्ती आईना उसकी उगलियो से फिसलकर टूट गया था, और इसे वह सदा ही एक बुरा सगुन मानती थी। अनफीसुश्का की समझ में न आता था कि क्या कहकर वह उन्हे ढारस वधाए। तिमोफेइच घोडे पर ओदिनत्सोवा को खवर देने चला गया था।

वज़ारोव ने रात वुरी तरह विताई जानलेवा ज्वर ने उसे एक घडी चैन नही लेने दिया। सुवह होते होते उसने कुछ हल्कापन अनुभव किया। अरीना व्लासियेवना से कहकर उसने अपने वालो में कघी करवाई, उसके हाथ को चूमा और चाय की एकाध चुस्की ली। वसीली इवानिच के चेहरे पर खुशी की एक रेखा दौड गई।

"शुक्र है खुदा का," उसने आश्वासन के साथ कहा, "एक सकट था जो आया और टल गया।"

"भई वाह!" वज़ारोव ने कहा, "भला शब्दो में क्या है। कोई एक शब्द चुन लो, जैसे 'सकट' और वस – जी हल्का हो गया। आश्चर्य, मानव किस प्रकार आज भी शब्दो मे विश्वास रखता है।

मिसाल के लिए, उससे कहो कि तुम मूर्ख हो फिर देखो कि किम प्रकार विना मार खाए ही उसका चेहरा धूल चाटने लगता है, कहो कि तुम वडे होशियार हो, और फिर देखो कि विना कुछ दिए ही किस प्रकार वह गुदगुदा उठता है।"

वज़ारोव के इम लघु सम्भापण से, जो उसकी पुरानी फब्तियो की याद दिलाता था, वमीली इवानिच का हृदय खिल गया।

"भई वाह! खूव—वहुत खूव कहा!" उनके मुह मे वरवम निकला और हाथो को ऐमे डुलाया जैसे तालिया वजा रहे हो।

वजारोव के चेहरे पर उदास मुसकराहट दौड गई।

"सो, तुम्हारी समझ मे," उमने पूछा, "क्या सही है—सकट का आना या टल जाना?"

"मुझे तो यही सूझता है कि तुम अव वेहतर हो, और यही मुख्य चीज है," वसीली इवानिच ने जवाव दिया।

"ठीक, तो खुशी मनाओ, यह हमेशा अच्छा होता है। उसके पास तो किसी को भेज दिया है न?"

"हा, वेशक।"

वज़ारोव की तवीयत ज्यादा देर तक सभली नही रह सकी। रोगी ने फिर पलटा खाया। वसीली इवानिच वज़ारोव की पाटी के पास वैठे थे। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई खास तीव्र वेदना उन्हे झझोड रही हो। कई वार उन्होने वोलने की कोशिश की, पर वोल नही सके।

"येवगेनी," आखिर उनके मुह से निकला, "मेरे वेटे! मेरे लाल! मेरे जिगर के टुकडे!"

इस असाधारण गुहार से वजारोव द्रवित हो उठा उसने अपना सिर तनिक-मा फेरा, और गशी की स्थिति को छिटककर दूर करने का प्रत्यक्ष प्रयाम करते हुए वोला

"अरे यह क्या प्यारे दद्दा?"

"येवगेनी," कहते कहते वसीली इवानिच बज़ारोव के सामने घुटनो के बल गिर गए। बज़ारोव की आखें मुदी थी और वह उन्हें देख नही सकता था। वह कहते गए—"येवगेनी, अब तुम पहले से अच्छे हो। खुदा ने चाहा तो तुम अब ज़रूर ठीक हो जाओगे। लेकिन, अपनी मा की और मेरी खातिर, यह ऐसा समय है जब तुम्हे अपना ईसाई कर्तव्य पूरा कर लेना चाहिए। मेरे लिए बडा हौलनाक है तुमसे यह कहना, लेकिन न कहना और भी ज्यादा हौलनाक होता .. यह चिर काल के लिए है, येवगेनी ज़रा सोचो तो, क्या अर्थ है इसका .."

वृद्ध का गला रुंध गया, और उसके बेटे के चेहरे पर एक अजीब-सी छाया रेंग गई, हालाकि वह अभी भी वैसे ही आखें मूदे पडा था।

"अगर तुम्हे इससे कुछ राहत मिलती हो तो मुझे कोई उज्र नही," आखिर वह बुदबुदाया। "लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि अभी ऐसी जल्दी क्या है। खुद तुम्ही ने तो कहा था कि मेरी हालत अब बेहतर है।"

"सो तो है, येवगेनी, तुम्हारी हालत पहले से बेहतर है। लेकिन कौन जाने, खुदा की क्या इच्छा है, और अगर तुम अपना यह फर्ज़ पूरा कर लेते.. "

"नही, अभी नही," बज़ारोव ने बीच में ही कहा, "मै तुमसे सहमत हू कि सकट आ धमका है। और अगर हमारी बात गलत निकलती है, तो फिर! —बेहोशी की हालत में भी तो आदमी इस अन्तिम धर्माचरण का लाभ ग्रहण कर सकता है..."

"लेकिन, प्यारे येवगेनी .."

"नही, अभी कुछ नही। और मै अब सोना चाहता हू। दिक न करो।"

और उसने अपना सिर फिर पहलेवाली स्थिति में कर लिया।

वृद्ध वहा से उठा आरामकुर्सी में बैठ गया, और ठोडी को अपनी हथेली में थामे दातो से उगलिया काटने लगा।

सहसा, देहात की निस्तब्धता मे और अधिक मखर होकर, कमानीदार गाडी की आवाज़ उनके कानो से आकर टकराई। गाडी के हल्के पहियो की घरघराहट निकट से निकटतर आती जा रही थी, और अब तो घोडो का हिनहिनाना तक सुनाई देने लगा था। वसीली इवानिच तेज़ी से खिडकी की ओर लपके। दो सीटो की एक गाडी, जिसमें चार घोडे जुते थे, झपाटे के साथ अहाते में आ गई। भीतर से एकाएक निर्बन्ध खुशी का ऐसा ज्वार उमडा कि क्या उचित है और क्या नही की सुध विसरा, वह दौडकर बाहर बराण्डे में निकल आए वर्दी-कसे एक प्यादे ने गाडी का दरवाज़ा खोला और काला नक़ाब तथा काला लबादा पहने एक महिला गाडी में से प्रकट हुई।

"मै ओदिनत्सोवा हू," उसने कहा, "येवगेनी वसीलियेविच तो अभी सही-सलामत है न? और आप,—क्या आप उनके पिता हैं? मै अपने साथ एक डाक्टर भी लिवा लाई हू।"

"देवी, फ़रिश्ता हो तुम!" वसीली इवानिच के मृह से निकला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने उद्विग्नता के साथ अपने होठो से लगा लिया। इस बीच वह डाक्टर जो उसके साथ आया था, इत्मीनान के साथ गाडी से उतर आया। आखो पर चश्मा चढाए वह एक मुख्तसिर-सा आदमी था और शक्ल से जर्मन मालूम होता था।

"वह जीवित है, मेरा येवगेनी अभी जीवित है, और अब वह निश्चय ही बच जाएगा। मालकिन, मालकिन, देखो न, ईश्वर ने ऐन वक्त पर इस फरिश्ते को हमारे यहा भेजा है . "

"ओह क्या है, भगवान तुम्हारा भला करे," अधूरी-पूरी आवाज में यही कहती वृद्धा बैठक से बाहर दौड आई और एकदम भ्रमित-सी होकर अन्ना सेर्गेयेवना के पावों से लिपट गई। वह जैसे आपे में नही थी और अन्ना सेर्गेयेवना के गाउन के छोर को बार बार चूम रही थी।

"अरे, बस, बस, यह आप क्या कर रही है!" अन्ना सेर्गेयेवना उन्हे रोक रही थी, लेकिन अरीना व्लासियेवना को जैसे कुछ सुनाई नही दे रहा था। उधर वसीली इवानिच अलग अपनी माला जपे जा रहे थे–"फ़रिश्ता, फरिश्ता!"

"Wo ist der Kranke?"* जब नही रहा गया तो अन्त में डाक्टर ने कुछ झुझलाकर पूछा, "रोगी कहा है?"

वसीली इवानिच ने अपने आपको सभालकर स्थिर किया।

"यहा, इधर–आइए मेहरबान," उन्होने कहा और फिर पुराने दिनो की याद कर जर्मन में बोले–"इधर आइए, वेरतेसतेर हेर कोल्लेगा!**"

"अच्छा!" खीज के साथ बत्तीसी दिखाते हुए जर्मन ने कहा।

वसीली इवानिच उसे लेकर अपने अध्ययनकक्ष में पहुचे।

"अन्ना सेर्गेयेवना ओदिनत्सोवा के यहा से ये डाक्टर साहब आए हैं," बेटे के कान के पास झुकते हुए वह बोले, "और वह खुद भी यहा मौजूद हैं।"

---

* रोगी कहा है? (जर्मन)–स०

** मेरे मानवीय सहकर्मी। (जर्मन)–स०

बजारोव ने तुरत अपनी आखें खोल ली:'

"क्या-आ . क्या कहा आपने ?"

"मैंने कहा कि अन्ना सेर्गेयेवना यहा आ गई हैं और तुम्हारे लिए एक डाक्टर को भी ले आई हैं,–यह है वह महानुभाव!"

बज़ारोव की आखें कमरे में घूम गईं।

"वह यहा है . ? मै उन्हे देखना चाहता हू।"

"देखोगे, येवगेनी, ज़रूर देखोगे। पहले डाक्टर साहब से निवट लिया जाए। सीदोर सीदोरिच (यह ज़िले के डाक्टर का नाम था) तो चले गए, इसलिए मै इन्हे तुम्हारे रोग का इतिहास वता दूगा और फिर थोडा सलाह-मशविरा करेगे।"

बज़ारोव ने जर्मन पर एक नज़र डाली।

"अच्छी वात है। लेकिन ज़रा जल्दी कीजिए। और देखिए, लैटिन न वूकिएगा, मै जानता हू कि 'जाम मोरितूर'* का क्या मतलब है।"

"साफ है कि महोदय जर्मन खूब जानते हैं," वसीली इवानिच की ओर मुडते हुए धन्वन्तरि के इस नये अवतार ने जर्मन में कहा।

"इख . हावे . अच्छा हो, आप रूसी में वात करे," वृद्ध ने कहा।

"आख ! बौत्त अक्खा . "

और सलाह-मशविरा होने लगा।

---

* मौत आ पहुची। (लैटिन)–स०

आधे घंटे बाद वसीली इवानिच के साथ अन्ना सेर्गेयेवना ने रोगी के कमरे में प्रवेश किया। डाक्टर ने पहले ही उसके कानो में फुसफुसाकर बता दिया था कि रोगी के अच्छा होने की कोई उम्मीद नही है।

उसने बज़ारोव की ओर देखा और दरवाज़े पर जडवत् खडी रह गई। बज़ारोव की पथराई-सी आखें उसपर जमी थी। चेहरे पर सूजन थी और रग राख जैसा हो गया था। देखकर उसे काठ मार गया। भय की सुन्न कर देनेवाली मर्मवेधी भावना से वह आतकित हो उठी। यह खयाल कि अगर वह उससे प्यार करती होती तो उसकी संवेदनशीलता इससे भिन्न होती, उसके दिमाग में कौंध गया।

"शु-क्रि-या," उसने सप्रयास कहा, "मुझे उम्मीद नही थी। यह आपकी मेहरबानी है कि हम फिर मिल रहे हैं, जैसा कि आपने आश्वासन दिया था।"

"अन्ना सेर्गेयेवना इतनी भली है " वसीली इवानिच ने कहना शुरू किया।

"पिता, हमें अकेला छोड आप यहा से चले जाइए। क्यो, अन्ना सेर्गेयेवना, आपको तो इसमें आपत्ति नही? मैं समझता हू कि अब "

सिर के एक हल्के से सचालन से उसने अपनी पस्त और कमज़ोर देह की ओर सकेत किया।

वसीली इवानिच कमरे से बाहर चले गए।

"तो शुक्रिया," बज़ारोव ने फिर दोहराया, "यह शाही मेहरबानी है। कहते हैं कि बादशाहत भी मरते हुओ के पास आकर उन्हे दर्शन दे देती है।"

"येवगेनी वसीलियेविच, मुझे उम्मीद "

"हे-हो, अन्ना सेर्गेयेवना, अच्छा हो कि हम सच को आखो की ओट न करे। मेरा तो अब किस्सा ही तमाम है। दलदल में फस चुका हू। आखिर यही निकला कि भविष्य के तूमार बाधने में कोई तुक नही थी। मौत की कहानी बडी पुरानी है, और पुरानी होते हुए भी नयी बनकर हरेक को वह भेंटती है। अभी भी मैंने घुटने नही टेके हैं लेकिन विराम आएगा और तब—यह बुलबुल फुर्र हो जाएगी!" उसने एक क्षीण-सा सकेत किया। "हा तो क्या कहू मैं तुमसे यह कि मैं तुमसे प्यार करता था? लेकिन इसमें तब भी कोई तत्व नही था, अब तो और भी नही है। प्रेम एक आकार है और खुद मेरा आकार निराकार हो रहा है। सो अच्छा यही है कि मैं कहू, तुम कितनी सुन्दर हो। ओह, तुम वहा खडी ऐसी मालूम होती हो जैसे सौन्दर्य इस धरती पर उतर आया हो "

अन्ना सेर्गेयेवना बरबस थरथरा उठी।

"लेकिन छोडो। इतना उद्विग्न होने की ज़रूरत नही वहा, उधर, बैठ जाओ ओह नही, मेरे पास न आना जानती ही हो मेरा यह रोग उडकर पकडता है।"

अन्ना सेर्गेयेवना क्षिप्र गति से कमरे में आई और जिस सोफे पर बज़ारोव पडा था, उसके पास आरामकुर्सी पर बैठ गई।

"मेरी अधिष्ठात्री देवी," वह फुसफुसाया, "ओह कितनी निकट, कितनी यौवनमय, ताज़ा और निर्मल इस वीभत्स कमरे में ! हा तो विदा! बहुत बहुत दिनो तक जियो, इससे बढकर कुछ नही, और चूको नही—जो पा सको उसका अच्छे से अच्छा उपयोग करो। देखो न, कितना घिनौना दृश्य है यह अधकुचला कीट, लेकिन फिर भी अपनी अकड से बाज़ न आता हुआ। ओह, क्या शान थी मेरी भी—सोचता था, मरना कैसा, अभी इन हाथो में बहुत दम है, बहुत

कुछ मुझे करना है, भीम का सा बल मेरे रगो-रेशो में सरसरा रहा है। लेकिन अब अब उस भीम की मुख्य चिन्ता यह है कि किस प्रकार आबरू के साथ मरा जाए, हालाकि इसकी रत्ती भर भी किसी को पर्वाह नही है कि वह कैसे मरता है जो हो, दुम मैं कभी नही हिलाऊगा।"

वज़ारोव चुप हो गया और पानी का गिलास टोहने लगा। अन्ना सेर्गेयेवना ने विना दस्ताने उतारे ही उसे पानी दिया। सास लेने का साहस तक उसे मुश्किल से हो पा रहा था।

"तुम भूल जाओगी मुझे," उसने फिर कहना शुरु किया। "मृतक जीवितो के सगी नही हुआ करते। मेरे पिता, इसमें शक नही, तुम्हे वताएगे कि कितनी वडी विभूति रूस से विदा हो गई निरी वकवास, लेकिन वूढे का यह भ्रम न तोडना। जानती ही हो जीवन की इस नीरवता में जो भी सहारा मिल जाए और मा का ध्यान रखना। चिराग लेकर तुम्हारी दुनिया का कोना कोना छान लेने पर भी ऐसे लोग ढूढे नही मिलेगे रूस को मेरी ज़रूरत है नही, प्रत्यक्षत नही है। तो फिर किसकी ज़रूरत है? ज़रूरत है मोची की, दर्ज़ी की, कसाई की जो मास वेचता है वह कसाई लेकिन देखो ओह, मेरा दिमाग गडवडा रहा है वह एक जगल "

वज़ारोव ने माथे पर अपना हाथ रखा।

अन्ना सेर्गेयेवना ने अपना वदन आगे को झुकाया।

"येवगेनी वसीलियेविच, इधर मेरी ओर देखो "

उसने तुरत अपना हाथ हटा लिया और कोहनियो के सहारे उचक गया।

"विदा," श्राकस्मिक श्रावेग के साथ उसने कहा श्रौर उसकी श्राखो में लौ की श्राखिरी लपक चमक उठी। "विदा सुनो उस बार मैने तुम्हे चूमा नही था, तुम जानती हो इस बुझते हुए दिए को श्रपनी सास का स्पर्श दो, वह बुझ जाए "

श्रन्ना सेर्गेयेवना ने उसके माथे पर श्रपने होठ रख दिए।

"बस, श्रौर कुछ नही," वह बुदबुदाया श्रौर फिर श्रपने तकिए पर लुढक गया। "श्रब श्रधकार "

श्रन्ना सेर्गेयेवना दबे पाव कमरे से बाहर चली गई।

"क्यो?" वसीली इवानिच ने फुसफुसाकर पूछा।

"सो गए है," उसने इतने धीमे से कहा कि सुनना मुश्किल था।

बज़ारोव की मुदी हुई श्राखें फिर नही खुली। साझ होते न होते उसपर मौत से पहले की बेहोशी छा गयी श्रौर श्रगले दिन वह चल बसा। फादर श्रलेक्सेई ने धार्मिक कृत्य पूरे किए। श्रन्तिम क्रिया के दौरान में—उस समय जबकि उसकी छाती को पवित्र तेल से सिक्त किया जा रहा था—उसकी एक श्राख खुली। ऐसा मालूम हुश्रा जैसे धार्मिक लबादे से लैस पादरी, धूपदान से उठते हुए गूगल के धुवे श्रौर देवमूर्तियो के सामने जलती मोमबत्तियो को देखकर मरनेवाले के बेजान चेहरे पर दारुण भय की एक कपकपी-सी दौड गई हो। श्रन्त में जब प्राण-पखेरू उडे श्रौर समूचा घर स्यापे की चीखो से गूज उठा, तब वसीली इवानिच को एकाएक जैसे उन्माद ने जकड लिया। "मैने कह दिया था कि मै यह बरदाश्त नही करूगा!" भरभराई-सी श्रावाज़ में वह चिल्ला उठे। उनका चेहरा ऐंठ श्रौर दहक रहा था श्रौर किसी की श्रवज्ञा करने की मुद्रा में श्रपनी मुट्ठी को हवा में हिला हिला कर वह कह रहे थे—"श्रौर मैं यह बरदाश्त नही करूगा, कभी

नही करूगा !" लेकिन अरीना व्लासियेवना, आसुओ में डूबती-उतराती, उसके गले से लिपट गई और वह दोनो घुटनो के बल फर्श पर ढह गए। "और वे उसी प्रकार घुटनो के बल बैठे रहे," बाद में नौकरो के बासे में अनफीसुश्का ने वर्णन करते हुए कहा। "एक-दूसरे से सटे, सिर झुकाए, ठीक दोपहर में दो निरीह मेमनो की भाति "

लेकिन दोपहर की तपन ढल जाती है, फिर साझ आती है और फिर रात अपना शीतल आचल फैला देती है जिसकी छाया मे थके-मादे शाति की नीद सोते है

२८

छै महीने बीत चुके थे। श्वेत-केशी शिशिर ऋतु आ गयी थी। निर्मेघ पाले की क्रूर निस्तब्धता, कचर कचर करती बर्फ का बोझिल कबल, पेडो पर गुलाबी चमक लिए हिम के फाहे, मुरझाया मरकती आकाश, धुआरो से उठते धुए के गुब्बारे, पटापट खुले दरवाजो से निकलते भाप के घूमदार बादल, पाले से खिले चेहरे और ठिठुरे घोडो की हडबडाई-सी दुलकिया। जनवरी का दिन था वह। साझ होने को आ रही थी। शाम की सर्द सास ने स्थिर हवा को अपने बर्फीले पजे में जकड लिया था और सूर्यास्त की रक्तिम चमक बडी तेजी से धुधला गयी थी। मारिनो के घरो में बत्तिया जल उठी थी। काली अचकन और उजले दस्ताने पहने प्रोकोफिच आज गैरमामूली बाज़ाब्तगी के साथ सात जनो के लिए दस्तरख़ान चुन रहा था। आज से हफ्ता भर पहले, बस्ती के छोटे-मे गिरजे में, एक

साथ दो दो शुभ लग्न सपन्न हुए थे—विना किसी तडक-भडक के श्रौर लगभग विना किसी साखी-साक्षियो के। इन दोनो शादियो में एक तो थी श्रारकादी श्रौर कात्या की, दूसरी निकोलाई पेत्रोविच श्रौर फेनिचका की। श्रौर श्राज निकोलाई पेत्रोविच श्रपने भाई की विदाई में भोज दे रहे थे। भाई कारोवार के सिलसिले में मास्को जा रहे थे। अन्ना सेर्गेयेवना पहले ही, विवाह के तुरत वाद, मास्को चली गयी थी। विवाह में उसने छोटे नव-दम्पत्ति को काफी उदारता से दहेज दिया था।

ठीक तीन बजे सभी कोई खाने की मेज पर श्रा वैठे। मित्या को भी पगत में जगह मिली थी। श्राजकल उसके लिए एक घाय रख ली गयी थी जो किमखाव की टोपी पहनती थी। पावेल पेत्रोविच, कात्या श्रौर फेनिचका के वीच में वैठे थे। दोनो 'शौहर' श्रपनी श्रपनी बीवी के पासवाली कुर्सी पर थे। हमारे दोस्त इधर कुछ वदल गए थे, सभी पहले से अधिक परिपक्व जान पडते थे श्रौर सभी के रूप निखर श्राए थे। सिर्फ पावेल पेत्रोविच दुवले नज़र श्राते थे। लेकिन उनका यह दुवला होना भी उनकी वोलती मुद्रा श्रौर श्राभिजात्य में पगी शानदार भाव-भगिमा की नफासत में श्रौर भी वृद्धि कर रहा था। फेनिचका भी वदल गई थी। ताज़ा रेशमी लबादा, चौडी मखमली टोपी श्रौर गले में सोने की लडी पहने वह श्रदब के मारे निश्चल वैठी थी। वह श्रपने प्रति श्रौर श्रपने चारो श्रोर की हर चीज़ के प्रति सम्मान की भावना से भरी थी। श्रौर वह कुछ इस तरह मुसकुरा रही थी कि मानो कह रही हो "माफ करना, इसमें मेरा दोष नही है।" सच पूछो तो वहा श्रन्य सव भी मुसकुरा रहे थे श्रौर हरेक के चेहरे पर इस मुसकराने के लिए माफी मागने का सा भाव छाया था। हरेक को कुछ श्रटपटा-सा श्रौर कुछ उदास-सा लग रहा था। मगर

सच पूछो तो हर कोई बहुत ही खुश था। हर कोई हरेक के साथ बडे ही मजेदार ढग से तकल्लुफ बरत रहा था मानो मौन सहमति से सब ने आज कोई निश्छल प्रहसन खेलने का निश्चय कर लिया हो। कात्या उपस्थित जनो में सबसे ज्यादा इतमीनान से बैठी थी; उसकी नजरो में विश्वास की झलक थी और यह आसानी से देखा जा सकता था कि निकोलाई पेत्रोविच उसे अपनी आखो की पुतली की भाति प्यार करते हैं। भोज शेष होने के पहले वह उठकर खडे हुए और अपना जाम उठाकर पावेल पेत्रोविच की ओर मुडे।

"तुम हमें छोडकर जा रहे हो तुम हमें छोडे जा रहे हो, प्यारे भाई," उन्होने कहना शुरू किया, "लेकिन बेशक ज्यादा दिनो के लिए नही! फिर भी मुझे कहने दीजिए कि मैं .. यानी हम किस प्रकार मैं यानी हम—किस प्रकार हम . ओह, यही तो मुसीबत है। स्पीचबाज़ी मेरा धधा नही। तुम्ही कुछ कहते न, आरकादी!"

"नहीं पिताजी, यो ही अललटप्पू नही।"

"और मुझे क्या तुम तीसमारखा समझते हो? अच्छा तो भाई साहब, आओ, तुम्हे सिर्फ गले ही लगा ले, तुम्हारे लिए शुभ से शुभ कामना करे। बस, इतना ही है कि जल्द से जल्द लौट आना।"

पावेल पेत्रोविच ने हरेक को चूमा—और मित्या को तो खैर कुछ कहना ही नही। इसके अलावा उन्होने फेनिचका के हाथ को भी चूमा, यद्यपि बेचारी ने चुम्बन के लिए कायदे से हाथ पेश तक करना अभी नही सीखा था। फिर नये भरे गये अपने जाम को एक ही बार में खाली करते हुए पावेल पेत्रोविच ने गहरी आह भरी और कहा "तुम सभी के सितारे चमके, मेरे दोस्तो! फेयरवेल!" इस अगरेज़ी के फुदने पर किसी का ध्यान नही गया, पर हरेक का दिल भर आया।

"बज़ारोव की याद में," कात्या ने अपने पति के कान में फुसफुसाकर कहा और दोनो ने अपने जाम खनकाए। प्रत्युतर में आरकादी ने उसकी हथेली अपनी मुट्ठी मे लेकर कसके दाबी। मगर उसे यह साहस न हुआ कि बजारोव की याद में इस जाम का सबके सामने खुलकर प्रस्ताव करे।

तो क्या कहानी यही शेष हो जाती है? लगता तो ऐसा ही है। लेकिन शायद कोई पाठक यह जानने के लिए उत्सुक हो कि हमारी कहानी के अन्य पात्र इस समय, ठीक इस क्षण, क्या कर रहे है। पाठक की जिज्ञासा को शात करने को हम तैयार है।

हाल में ही अन्ना सेर्गेयेवना ने शादी कर ली है। प्रेम की बदौलत नही, बल्कि एतकाद की बदौलत। जिनसे शादी हुई है, वह रूस के भावी जन नेता है। ठोस सूझ-बूझ, बहुत ही चतुर वकील। इरादे के पक्के और शब्दावली के बेजोड धनी। अभी नौजवान हैं, स्वभाव के अच्छे और दिल के इतने ठडे जैसे हिम। दोनो में खूब निभती है। हो सकता है मिया-बीवी आगे चलकर जीवन के सुख का, शायद प्रेम के सुख का, आनद भी ले सके,—कौन जाने? राजकुमारी 'एक्स' तो मर गई, और मरने के बाद से ही याद से उतर गई। किरसानोव पिता-पुत्र मारिनो में ही बस गए। हालत सुधरने लगी। आरकादी लगन से किसानी करता है। काश्त से खासी आमदनी हो जाती है। निकोलाई पेत्रोविच ने मीरोवोय पोसरेदनिक* का चोला धारण कर

---

* शाति का मध्यस्थ। यह पद रूस में किसान मुक्ति के बाद कायम हुआ था। मध्यस्थो का काम था किसानो और ज़मीदारो के बीच के झगडे सुलझाना।—अनु०

लिया है और खूब जी जान से काम करते है। लगातार अपने जिले का दौरा ही करते रहते हैं। लम्बी लम्बी तकरीरे झाडते है (वह यह विश्वास सजोए बैठे हैं कि मूजिको को बातें समझा दी जानी चाहिए, मतलब यह कि उनके कानो के पास बराबर एक ही बात का ढोल पीट पीटकर उन्हे सुन्न कर देना चाहिए।) हालाकि सच बात यह है कि वह न तो उस शिक्षित कुलीन वर्ग को ही ठीक से सतुष्ट कर पाते हैं जो किसान मुक्ति के सवाल पर (जिसे कि वे सानुनासिक उच्चारण के साथ यमासिपास्यो कहते है) जैसा भी मौका हो—या तो मुह फुलाये या मुह लटकाये नजर आते है, और न ही वह उन अशिक्षित कुलीनो को ठीक से सतुष्ट कर पाते हैं जो किसान मुक्ति को फ्रासीसी में यमासिपास्यो नही कह पाते, इसलिए उसे सीधे मुशीपेशन कहते और "उस मरदूद मुशीपेशन" को बुरी तरह कोसते है। दोनो के लिए ही वह जरूरत से ज्यादा बोदे थे। कातेरीना सेर्गेयेवना एक पुत्र की माता बन गई है, जिसका नाम निकोलाई है। मित्या पैरो से खूब चलने और बोलने लगा है। फेनिचका—फेदोसिया निकोलायेवना—अपने पति और मित्या के बाद अपनी बहू को जितना चाहती है, उतना दुनिया मे और किसी को नही। बहू जब पियानो बजाने बैठती है तो वह बिना अघाए सारे दिन बैठी सुनती रह सकती है। लगे हाथ एकाध शब्द प्योत्र के बारे में भी। हिमाकत और मियामिट्ठूपन ने उसे एकदम जड बना दिया है। उसने अपने उच्चारण का इतना परिष्कार किया है कि उसे समझना मुश्किल है। पर साथ ही, उसने शादी भी कर ली है। दुलहिन के साथ साथ उसने अच्छे खासे दहेज पर भी हाथ साफ किया है। दुलहिन का पिता शहर के लिए साग-भाजी उगाता है। बेटी ने दो अच्छे चाहनेवालो को सिर्फ इसलिए ठुकरा दिया कि उनके पास घडी नही

पाठको से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विपय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें वडी प्रसन्नता होगा। हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

पाठको से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन सम्बन्धी आपके विचारो के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बडी प्रसन्नता होगा। हमारा पता है

२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

ТУРГЕНЕВ

ОТЦЫ И ДЕТ I